

त्रेरक.

सद्गत् शास्त्रविशारद जैनाचार्य योगनिष्ट श्रीमद् बुद्धिसागर सूरीश्वरजी.

छपावी प्रकट करनार

श्री अध्यात्मज्ञान प्रसार्क मंडल

हा. वकील मोहनलाल हीमचंद-पादरा.

संवत १९८२ प्रथमावृत्ति. पत १००० सने १९२६

मृत्य १-८-०

अमदावाद:---

भी " प्रजाहिताये सुद्रालय " मां पटेल सोमाभाइ दलपतशमे छाप्युं ठे० शाहपुर नवी पोळ-अमदाबाद.

निवेदन.

श्रीमद् बुद्धिसागरस्रितं वृद्धिकी यूंश्लोक १०६ तरीके श्री जैन श्रवेतांबरादि प्रदित ग्रंथ नामाचे क्षिक् (भ्राहट) वांचकोना करकपळमां सादर करतां हर्षे थाय छे.

सं. १९८० ना चैत्र मासमां स्रत खाते भरायेकी श्री जैन साहित्य परिषद्ना उरावो पर आचार्य महाराज श्रीमद् बुद्धिसाग-रजी महाराज समक्ष पेथापुर मुकामे चर्चा चालतां परिषद्ना त्रीजा उरावना समर्थनमां विश्वमां छपायेका जैन ग्रंथोनी पद्धतीसरनी एक नामाविक तैयार कराववानी सूचना श्री अध्यात्म ज्ञानमसारक मंडळना कार्यवाहकोने करतां गुरुश्रीनो आदेश मंडळे शिरोषार्य कर्यो.

आ कार्य माटे विद्वानोने रोकी मोटां मोटां शहेरोना भंडारोनां पुस्तकोनी यादीओ छेवा भंडारो तपासाववा जहरी जणायुं. आ माटे पैसानी अने सारा विद्वाननी जहरीआत इती. पण मंडळे ते कार्य जपाडयुं अने इंडर वासी वकील वर्धमान स्वहपचंद जेओ आ कार्य माटे योग्य जणाया तेमने सारा पगारे रोक्या अने महाराज-श्रीनी सूचना प्रमाणे वडोद्रा अमदाबाद सूरत विगेरे सारा सारा मोटा भंडारो त्यां जाते जह तपासी मळी आव्यां तेटळां पुस्तकोतुं लीस्ट तैयार करवामां आव्युं.

आ कार्य एटलुं विशाल छे, भारतवर्ष अने बहार एटला बधा मंहारों छं के जुदी जुदी संस्थाओए आ कार्यों उपादी, अनेक विद्वानों रोकी लक्षावधी रुपीआनों खर्च करी आवी अनेक नामावलीओं तैयार करवी आवस्यक छे. जेसलमेर. काठीयावाह मारवाह मेवाह जोधपूर उदेपूर कच्छ महाराष्ट्र ने गुजरातमां अनेक भंहारों अमृश्य पूस्तकोना भर्या पहथा छे. केटला बधा प्रयासों करवा जहरी छे ते अमने आ कार्य उपाड्या पछी मतित ययुं छे.

Â

आष्टुं छतांए मेंडळे '' शुभे यथाशक्ति यतनीयं ' ए न्याये औ सत्कार्य छपाडयुं अने गुरुदेवनी इमेशां मळतीं सूचनाओ प्रमाणे आ नामाविक तैयार करवामां आवी अने गुरुश्रीने बतावी पेसमां आपी.

मेसमां काम घणीज ढीलमां पढ्युं, निहं तो या श्रंथ गुरुश्रीनी हयातीमांज प्रकट थइ शक्ते. पण तेमां पुस्तकोनी यादीओतो मळ-तीज गई अने काम वधतुं गयुं.

आ नामाविल्मां प्रथम गुरुश्रीना फर्मान प्रमाणे एवं टराववामां आव्यं हतुं के दरेक प्रंथ अकारथी गोठवी ते प्रंथ क्यां रचायो कोणे रच्यो कह सालमां रच्यो तेमां वस्तु शी छे तथा तेना पर भावार्थ—अनुभवार्थ—टीका अवचुरि टबो विगेरे कोणे कोणे क्यारे क्यारे क्यां क्यां भर्या. आम पत्येक ग्रंथ पर दुक विवेचन आपवं. श्रुरुआत आम करी छतां पालळथी कोण जाणे कया संजोगो वच्चे फेरफार थयो अने हालमां प्रसिद्ध थया प्रमाणे ग्रंथ गोठवायो.

आमां छेवटे प्रख्यात फ्रेंच तत्वज्ञ विद्वान डॉ गॅरिनोए सन १८९५ सुधीना जैन पंथोनी नामाविल तथा १९०५ सुधीना ज्ञिला लेखो साथे अकारादि पद्धतिथी लेवामां आवी छे.

श्रहजातमां ग्रंथोपलब्धस्थाननी सूचि आपवामां आवी छै. तेमां क्यां क्यां पुस्तको मळे छे ते आपवामां आव्युं छे.

तत्पश्चात् गंथोपलन्य गाम स्थळ संख्या अकारादिथी आपी छे. ते पछी धुस्तक मसारक संस्थाओ, जैन ग्रंथ वैचनार बुकसेलरो तथा अन्य संस्थाओ, तेमज मंडलो, सभाओ, समानो, सोसाइटीओ, कोन्फरन्स, ज्ञान धुस्तक भंडारो; इत्यादिनी नामाविल आपवामां आवी छे.

आ तमाम जोवा सारु अँक अने अक्षरोने माटे संकेतसूचिनां चिन्हो आप्यां छे जेथी पुस्तकोनी नामाविल जोवामां सरळता थाय.

आ पंचकुर (lxxx) पृष्टमां सूक्ष्मी के;

अहींथी हवे मुद्रित जैन नेवतांब क्रिक्ट्रिसंध नूमाविक (गाइड) वि-शेष परिचयादिसह अकारादिथी द्वार्ष्य प्रांत्र आवेल छे. अने पृष्ट ? थी मंबर नांखवामां आव्या छे. दरे प्रस्तकने छेडे तेना कर्ता कयो भंडार, क्यांनो ते जोवा संख्यांक नांखवामां आव्या छे. आमां पुस्तको, शिलालेखो, स्विओ, नकशा, विगेरेनो पण समावेश थाय छे. तथा दरेक पुस्तकनी किंमत पण उपलब्ध थइ होय ते आपवामां आवी छे.

केटलांक पृष्टो लपाइ जबा बाद उपलब्ध थयेलां पुस्तको माटे वच्चेज पुरवणी पण करवामां आवी ले.

२६५ पृष्ट आ नामाविष्ठमां रोक्यां छे. ते पछी २६७ पृष्ट्यी प्रख्यात फ्रेंच हॉ. गेरिनोबाळी सूचि आवे छे. तेमां कर्तावार ग्रंथ तथा शिला लेखोतुं लीष्ट आप्युं छे.

हमो सारी पेठे समजीए छीए के आ नामाविल अपूर्ण छे.
भारतवर्ष तथा बीजा देशोमांना अनेक प्रंथो हजी लेवाना बाकी छे.
तेमज आ पढ़तीमां तेमज बीजी बाबतोमां खामीओने अवकाश रहेज
छतांये गुरुश्रीनी आ बाबतमां थयेछी पेरणा बताबी आपे छे के
तेओ बोछीनेज बेसी रहेनार न हता. भावना भाववी स्हेछ छे पण
तेनो अपल दुष्कर छे पण गुरुश्रीएतो पोताना मंतव्य प्रमाणे आ कार्य
छपर रही सूचनाओ आपी आपी तैयार करावराच्यो. बचनाढंबर
निहं पण कर्वच्यशिछता ए सत्य सद्गुण छे एम गुरुश्री हमेशां
कहेता ते सत्य करी बताच्यं. आ ग्रंथ पकट यह जवा माटे गुरुश्रीनी अपूर्व छागणी हती ने अंतीय समय सुधी हमेशां ते माटे पुछपरछ कर्या करता पण येसनी दी छने छीधे तेना पाकक्ष्यमां ढीछ यह

ने गुरुश्रीना जवा पछी ते प्रकट था श्रीवयो छे. छतां श्रीपय्नी आभार मंडळ कदीये विसरी शके तेम नथीज.

प्रंथ प्रकाशन, गरीबोने मदद, ज्ञाननुं बहूमान, अभ्यास जेथी समाजना अंग बळ तथा आत्मबळ वधे ते माटे गुरुश्री हमेशां सतत् काळजीपूर्वक सबने उपदेश देता रह्या हता. ने तेनेज परिणामे आ गंथ प्रकाशने पामे छे.

आ समये अमो मंडळ तरफथी आ कार्य माटे परिश्रय उठाव-नार वकील वर्धमान स्वरूपचंदनो तथा तेमने वारंवार उपयुक्त मा-हीती आपनार साहित्य मेमी भाइ वकील केशवलाल मेमवंद मोदी-नो आभार मुक्तकंटे मानीए छीए.

आ गंथ तैयार करवामां भंडारोमांथी ग्रंथोनी यादीओ छाववी अकारादिमां तैयार करवी, गंथो जोवा छीस्टो ते परथी तैयार करवां, तेने गोठववां, तेनां छपातां मुकस तपासवां विगेरे तमाम कार्यो वकीछ वर्धमान स्वरुपंदने स्वतंत्र रीते सोपेछां होवायी तेमां जे छे ते तेमने आभारीछे. जोके अमारी धारणा प्रमाणे आ गंथ तैयार थयो नथी.

ग्रंथमां आवता आचार्यो साधुओ ग्रुनिवर्योना नामनी आग-ळ श्री के श्रीमद् अने पाछळ जी शद्धनो उपयोग करवानुं पण तेम-नायी रही गयुं छे आ माटे सङ्जनो दरगुजर करशे.

आ ग्रंथ जेवा अनेक उपयुक्त ग्रंथो घणा प्रकाशने पामे ए अमारी सदोदित वांच्छा छे ने गुरुश्रीनी तेवी महदेच्छा हती. तेशा-शनदेव सफळ करो एज इच्छा साथे विरमीए छीए.

पादरा फागण सुद १५ १९८२ श्री अ० ज्ञा० प० पंडळ वकील मोहनलाल हीमचंद.

वक्तव्य.

ज्ञानयात्रा संघप्रयोजन अने प्रबंध.

तीथेयात्रा संघ पाछळ द्रव्यव्यय करनार करावनार संघपितओनी जेम ज्ञानयात्रा संघनुं पयोजन पण आवश्यक जणायायी
संवत १९७० ना फागण सुद ६-७-८ मार्च सने १९१४ना दिवसोमां जोधपुर सुकामे ''जैन साहित्य संमेछन '' श्री विजयधमे
सूरिजीना नेतृत्व नीचे थयुं हुतुं, अने ते वखते जैन जैनेतर विद्वाः
नोना निबंधोनुं वांचन थवा उपरांत कमीटीओ नीमी-ठरात्रो करी
संमेछन पूण कर्युं हुतुं (जुओ जैन साहित्य संमेछन कार्य विवरण
भा. १-२) पण पाछळथी कमीटीओ मळी शकी नही ने सूरिजीए
कार्यविवरण प्रसिद्ध कर्युं अने बीजा अधिवेशन माटे सूरिजीए घणा
प्रयासो सेव्या छतां तेओ ते जोइ शक्या नहिं.

सने १९२४ ना में पासनी २२-२३-२४-२५ ना दिवसो-पां सुरत मुकामे श्री जैन साहित्य परिषद् भराइ. तेमां जैन जैनेतर विद्वानोना निवंधोनुं वांचन थइ ठरावो विगेरे थयां अने तेनी ओ-फीस मुंबाइ मुकामे रखाइ तेना ऑन. सेक्रेटेरीओ तरीके जवेरी जीवणचंद साकरचंद साथे रा. पणिलाळ पोइनळाल पादराकर अने रा. पोइनलाल भगवानदास जवेरी सोलीसीटर निमाया. (परिषद् विवरण पाटे जुओ पहिला भूषण पु. ५ अंक १-२ सं. १९८० जेष्ट अषाडनो सुरत जैन साहित्य परिषद् अंक)

आ परिषद् परत्वे पेथापुर ग्रुकामे योगनिष्ठ साहित्याचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरजी सूरीश्वरजी समक्ष चर्चा चालतां परिषद्ना श्रीजा ठरावना त्रीजा ठरावने वधु समर्थन योगा जाणी श्रीमद् ग्रुक-ए ज्ञानयात्रा संघमयोजनने सार्थक करवा माटे लागणीपूर्वक मबंध

करतां तेने श्रीअध्यात्मज्ञानपसारक मंडळना आगेवान श्रीमान मोइनछालभाइ हिंमचंदभाइए विरोधार्य करतां मंडळना भाइओनी अनुमतीपूर्वक मंडळ तरफथी एक यात्रीने सबळ साधन आपीने अनेक
स्थळेथी प्राचीन इतिहास, साहित्य, कळा, धर्म, तत्त्वज्ञान विगेरेनी
शोधखोळ करी परिणाम प्रसिद्ध करवाना करेल निश्चय प्रमाणे आ
एक न्हानी सरखी ज्ञानयात्रानी तवारीख छे: बधु पळीने १०१
दीवसनुं आ मंथन छे तेमां मात्र ३० दीवसनी यात्रामां थयेलां जुदां
श्रुत मंदिरोनी यात्रा वर्णन तथा बाकीनो वखत पोष्टदारा ज्ञानयात्रानी तीर्थस्थानोनी विगतो एकठी करवा विगेरे समारंभ खाते रोकायेल छे. तोपण आ साहित्ययात्रामां मळेली इवारतो—जेविके—अजब
यात्रा, भ्रमयात्रा इत्यादि सविस्तर वर्णन आपवामां आवेल छे.

अस्प समय, अस्प द्रव्य सहायना कारणथी आ यात्रा अघव-चथी बैंग पड़ी छे, तोपण आवी यात्रा माटे एक निह पण अनेक व्यक्तिओनो संघ काढी—झन्यात्रानां न्हानां मोटां सघळा तीर्थोनी पवित्र भूमियां उपराउपरी संघो मोकली—अनेक व्यक्तिओने दर्शन कराचवा जोइए. अने तवारीखो बहार लाववी जोइए.

आ ग्रंथ पकट करवाना विचारो पकट करतांज एक प्रशावळी तैयार करी छपावी साधु मुनिराजो आवार्यो तथा विद्वान जैनजेनेतरो तरफ रवाना करी तैमनी जाणमां, कबजामां, के ध्यानमां होय
ते बधां पुस्तकोनी नोंधो मांगी हती पण केटलाक—मुनि महाराजाओ
तरफथी फॉर्म अधुरां भराइने आव्यां हतां आवेलां फॉर्ममां लखाइ
आवेला ग्रंथो अमे नजरोनजर जोया नथी—पण तेमां आवेली हकीकत प्रमाणे दाखल कर्या छे—एक बीजा ग्रंथोनी साथे मुकाबला माटे
उपयोगी ग्रंथो जणाया ते जैनेतर छतां—अथवा स्वेतांम्बरोना समुहामनी साथे तेने पण अनुक्रममां गोठव्या छे.

नाम वगरनां अने अपूर्ण विगतनां फॉर्म पण आव्यां छे के तै फॉर्म कोना तरफयी आव्युं छे ते पण समजवामां आव्यां नथी.

केटलाकोए लीप्टो मोकली आपवाना जवाबो आपेला छतां पण अने तेमने बबे, त्रण त्रण अने केटलाकोने चोथी बलत रुख्या छतां जवाबज आप्या नथी.

बुकसेलरोनां लीच्टो परथी पण नोंघ लेवामां आवी छे.

फॉर्मस आप्या छतां अने वारंवार विनंति कर्या छतां-पण जाणे आ कामने इसी काढता ना होय एम करी दरकार पण करी नथी. छतां मल्युं तेटला पर तथा मेळच्युं तेटला परथी मंय तथार करवामां आव्यो छे. केटलीक विगतो आपवामां आवी छे तेथी बधु स्पष्टीकरण थशे:—

दिगंबर समुदाय जुदो पाडवामां आव्यो छे ते अनुंक्ळताए छपाशे पण हाळना छीष्ट साथे केटलाक जरूरी गंथोने मेगाज दा- खळ कर्या छे.

जैन पंडितोए लखेला—अन्य गंथोनी पण नोंध सेवामां आबी है. एकनो एक गंथ अनेक स्थळेयी उपलब्ध यतो होय छे तेनां जुदां जुदां ठेकाणां पण बताव्यां छे.

छपावनार पासे ग्रंथ सीलकमां ना होय तो पण जोनारने जोवा मली शके. ते हेतुसर तेवी लानगी लायब्रेरीओनां स्थळ पण बताच्यां छे.

केटळाक बुकसेलरो तथा तेमनी खानगी लायब्रेरीओ छे. तेमां उपलब्धस्थान भेगां जणाव्यां.

तपासेळी लायबेरीओ. (१) के. मे पोदी पूर्ण. (२) पं. मेघ विजयनो भंडार. अपूर्ण-(३) सुरत, अपूर्ण जैनानंद पुस्तकालय पूर्ण (४) तथा समितिनी मोहनलालजी महाराजनो ज्ञानभंडार. सुरत. (५) शेट देवचंदलालभाइनी लायबेरी अपूर्ण. (६) ज्ञानमंदिर वहोदरा अपूर्ण (७) वहोदरा सेन्टरल लायबेरी संस्कृत विभाग अपूर्ण (८) शेट वर्षमान सरुपचंद लायबेरी अपूर्ण.

केटलाक पंथोमां तो तेना छपावनार नुं नाम, कई प्रेसमां छपायो, कया शहरमां छपायो, वयांथी उपलब्ध यह शकशे—तेमां नुं कंड पण अणावेलुं निह होवाथी, तेने जेमना तेम रहेवा देवा पडचा छे. तोपण तेवा मांथो ज्यांज्यांथी जहचा तेनुं स्थान पण केटलेक ठेकाणे बनाव्यां छे. केटलीक संस्थाओ एक बीजा साथे जोडाइ गइ छे, बहीवटदारो अने नामो बदलाइ गया छे, तेना स्पष्ट खुलासा छपाया नथी खूणे खोचरे पडेलाओनुं नाम के निशान जहतुं नथी तेथी तेवा मांथो ज्यां ज्यां जणाया ते स्थाननो परिचय कराव्यो छे.

रीवाज प्रमाणे वे पांच हपैयानी लागतनुं पुस्तक होय तोपण तेनी कींमत नामनी मात्र एक आनो अथवा मेट अमूल्य वांचन, मनन, शान दृद्धि अथवा ते संबंधमां कंद इसारो पण नथी जणायो पटले बगर कींमतना ओली कीमतनां, अथवा, भेट तरीके ब्हेची दीघेलां न्हानां अने नकामां पुस्तको हशे एम समजवामां कोइए मूल करवी नहि. कारण के अदींसो पृष्टना ग्रंथनी कींमत एक आनो अने तेथीं वधारे कदना ग्रंथ विना मूल्य.

न्हाना कदनां पुस्तकोमांथी केटलांकनां घणांज महत्तावाळा ज्ञान कीरणोनो रोक्षनीरूप छे.

एकाद सूत्र उपर महोटा महोटा ग्रंथो छखाया छे ते विबुद्ध-जनोने उपयोगी होवा छतां साधारण समुद्रायने विस्तारथी बोधवा बाट तेना ते सूत्रने अवछंबीने अनेक—सेंकहो ग्रंथो छखायेछा नजरे बावे छैं, तोपण ते मूळ सूत्रना कीरणनी रोग्ननी पटछो मोटो प्रकाश

पाडे छे. के ते विस्तार थइ शके तेटको करीने क्खी नाखवा मागेतो संकडो, इजारो के लाखोनी गणत्रीथी नहीं पण करोडोनी गणत्री उपरांत थवा जाय छे आटलो विस्तार होवा छतां पण तेवां सूत्रो अर्थ साथे रुवरुमां रहेजे शिखवी शकाय तेवां छे. साधारण संस्कृत जाणनार पात्रने आ जैन शैलोनो जाणीतो विद्वान रहेजे समजाबी शके छे.

दालला तरिके:—एकेक श्लोकना सो सो अर्थ जणावनारां छपायेलां तथा छपाया विनानां पुस्तको, एकज लेखमांथी सात पहा पुरुषोनी जीवनी निष्पन्न थनारां पुस्तको एक सूत्रना करायेला ८०००० आठ लाख अर्थ, लेख एकने वे महापुरुषोनी जीवनी वर्णन करतां पुस्तको, सूत्र एक अने तेना अर्थावबोवनी व्याप्ति छुओतो अढार हजार, अढार लाख उपरांत, तेर करोड उपरांत तेमज खास जुदाज विषयना बोधनारा अन्य विद्वानोना, तेमज अन्य मतवालाओना बनावेला, माघ, नैषिय, मेघद्तादि काल्योने पादपूर्तिमां गोठवी धर्म बोधनां, अने समर्थ महात्माओनी जीवनीओ छखाय—तेनी पण योडीक थोडी नोंध लीधी छे. तेटलेथीज समजनवामां आवशे.

श्राविकाओना छखेला ग्रंथो साध्वीओना छखेला ग्रंथो जैनेतरोना छखेला ग्रंथो अंग्रेज विद्वानीना छखेला ग्रंथो

प्रमाद अने अज्ञानने लीघे अपूर्ण नोंघ लेवह गइ एम पाछलथी जणाया छतां फरी-तेने पुरु करवानी जोगवाईनी गेरहाजरीने कीथी तेवुं अपूर्ण रहेवा दीधुं छे.

केटलाक ग्रंथकर्ताओ अने संस्थाओनो पत्तो पण मस्यो नयी तेमने मली आवेले ठेकाणे लखी पूछतां कागळो डेडलेटर ऑफीस-

यांची पाछा आव्या छ तोपण अनुभवीओए बतावेले ठेकाणे लखी पुछतां पण जवाबो मळ्या नयी माटे जे जे लायब्रेरीओमां जणाया छे ते ते स्थान पण उपलब्ध स्थानोनो परिचय कराव्यो छे.

केटलाक पुस्तकोमां एम जणायुं छे के तेनी कीमतनी जगाए मेट एम लख्या छतां तेना तेज पुस्तक उपर अम्रुक कीमत पण छ-खेल जणाइ छे अम्रुक पुस्तक कोने कोणे छपान्युं, कोणे मसिद्ध कर्युं, कोणे संग्रह कर्युं, कोणे भाषान्तर कर्युं, कोणे शोध्युं, अगर कोणे बनान्युं तेनी पण मछी आवी तेटली नोंघ लेवामां आवी छे.

मोटा शहेरमां रहेनारनुं मात्र नामज पुस्तकना डीबाचा उपर आपी शहेरनुं नाम छखेछुं होय पण तेनुं ठेकाणुं जणावनारु पोळ बजार के छतो जणावेछो नथी आवुं नाम मात्र जडवाथी तपास कर्या छतां पण नकामो प्रयत्न निवडे ते पण ठीक निहं ए एटछा माटे ज्यां ग्रंथ जडयो ते ठेकाणानी नोंघ छीधी छै.

मात्र आगळ जणावेलो पुस्तक मसिद्ध करनारी संस्थाओ तथा मुकसेलरोनी टीपज चोकस ठेकाणाना माटे उपयोगी साधन छे.

ग्रंथ वेचनार निहं छतां घारण करनाराओनी टीप पण जुदी आपी छे.

छायब्रेरीओ छे तेमां रहेलां पुस्तकोनो लाभ लेवाने अनुंकुळ पढे तेनी खातर ते नंबरो वारंबार उपलब्धस्थानमां बताच्या छे.

पुस्तक वैचनारनां नामो पण आप्यां छे-केट छीक संस्थाओना मिद्ध करेळा ग्रंथोमां ग्रंन्थांक नंबर १२ मो. मणको नं २१, पुष्य नंबर ४६; अने सर्ग नंबर, विभाग ८, भाग १६ अने गुच्छक विगेरे संज्ञाओं डींबाचा उपर जणाय छे. पण ते ते संस्थाओना

बहार पाढेला बीजा केटला अने कया कया ग्रंथो छे ते जोवाने अपने मस्या नथी तेम तेनी याद के छीष्ट पण मस्यां नथी. ग्रुख्य छापेलां फॉर्म मोकस्या पछी उघराणी पत्रो लखेला पण नकामा यया छे.

प्रैय प्रकाश करनारी संस्थाओना वहीवटदारोए पोताना खांनगी सरनामां पण जुदां जणावेळां होवाथी तेनी नोंध साथे साथे छेवा-पां आबी छे.

एकतुं एक नाम अने कीमतना रासो पण जुदा जुदा पंडितोना बनावेला छे अने विगतो जुदी जुदी छे.

स्वेताम्बरोना घणा ग्रंथोना उपरथी दोइन अने टीकाइप दिगंबर पंडितोए टीकाओ छखी छे तेमां थयेछी गेर समजावटो जोवाजोग छे.

जोवा नहीं पळेलां पुस्तकोनां नाम कीमत के वर्णनमां तकात जणाया प्रयाणे जुदी नोंध लीधी छे. तेथी दुवार दोष दृष्टिए आवशेज पण बखते एकना एकज पुस्तकने सुधारा वधारा साथे बीजाए छपाव्युं होय तेने छोडी देवाय तो ते एक खरेखर शुटी गणाय तेथी तेवा दुवार दोषने अमे लक्षमां क्लीधो नथी.

विशेष हकीकत.

असल फरमान शेठ आणंदजी कल्याणजी है. श्रवेशिवाड अमदावादनी पेढीमां छे. बीजा छ मळी सात खास जोवालायक अने एक सारो गंथ भंडार छे.

- १ वीरचंद राघवजी गांधी कृत अंग्रेजी कर्म फीछोसोफी दे. ला. फंड छपाइ छे कींमत ०-५-०
- २ चंद्रसेन जैन वैद्य इटावा (दि) वि. भाग १-२-३-४-५ जैन फीलॉसॉफी ऊ. स्था. ५०

उपलब्ध स्थान नं. १५३ नां बधां पुस्तकोनी नोध छीधी नथी नवमो नंबर जणायो छे.

मुलाचार-दि. माणेकचंद नं. १९ तेनी सुखछाछकृत पंचपति-क्रमुणमां नोंघ छे.

उपिति भावप्रवंच कथापीठ वंधनुं भाषान्तर नशुराम प्रेमीए कर्यु छे.

धनपाळ पंचाशिकाना कर्ता. धनपाळ पंढित भोजराजाना मान्यवर पंढितो पैकिना एक इता. आ धनपाळनां बखाण हेप-चंद्राचार्ये पण कर्या छे. जुओ अष्टापदकस्प, गिरनार गिरिश्वरकस्प, श्री. समेदशिखरकस्प (कविधनपाळ).

गृहस्य स्तीओए छखेछा ग्रंथो. जैनेतर हिंदुओए छखेछा गंथो. दिगंबरोए-प्रसिद्ध करेछा गंथो. साधवीओए छखेछा ग्रंथो. पारसी ग्रहस्थोए छखेछा गंथो

एकतुं एक पुस्तक एकनो एक अनुवादक होवा छतां प्रका-श्रको. जुदा, नाम जुदा कीमत जुदी आवी विचीन्नता पण जणाइ छे. पण तेम थवां ना खासकारणो मली आव्याना अभावे ते वातने विशेष तारवी नथी.

मूळ ग्रंथनुं नाम बीज होय-पण मसिद्ध करनाराओए तेनां नांमो बदलीने रूपांन्तर करी नारूयां छे तेथी-केटलाक प्राचीन ग्रंथोने जेनी तेज स्थितिमां प्रकाशमां आणवामां आच्या छे के-जेओ ना-ममां रूपान्तर—तेम कृतिमां पण रूपान्तर छे. ते मेळववाना बख-तना—अभावे-कंइ पण करी शकायुं नथी तो पण केटलाक पंडि-तोए पोताने ना समजायुं तेथी. अगर बीजा कारणथी—तेओ तेटला भागने रूपान्तर करवामां—अथवा—उढावी देशने चुक्या नथी.

संग्रह गंथोमां आवेला गंथो.-

सं. १२३१ - उदयसिंह राजा परलोकवासी थयो ते बसते आ गंथकार (श्री जिनदत्तसूरि) इयात इता. (जुओ विवेक विलास श्री जिनदत्तसूरिकृत. भाषान्तर कर्ता पंडित दामोदर गोविंदाचार्य.

मेघदूतना टीकाकारोनी नोंध.

(१) वलभदेव-(२) मिल्लनाय. (३) मिहमितहगणि (४) सुमतिविजय (५) लक्ष्मीविलास (६) मेघराज (७) भरत (८) सनातन
(९) रामनाय (१०) हरगोविंद (११) कस्याण (१२) सारोद्वारिणी (१३) मेघलना (१४) दक्षिणावर्त (१५) नाय (१४)
(१६) सरस्वती तीर्थ (१७) पूर्ण सरस्वती (१८) बीजी अवच्रीसो (१९) इश्वरचंद्र विद्या सागर.

आ मेघद्तनी पादम्र्तिओ-

सिद्धदृत काव्य-कर्ता-अवधृतरांमयोगि जुओ. (ग्रंथोप क्रम्थ-स्यान. नंबर.-३७२

मेघविजयनो विज्ञप्ति रुपपत्र और बादयी छखेछो ज्योतिषसार-हिन्दी दु. ०-१२-०

प्राचीन ग्रन्थकी अनुवादक पं. कि भगवानदास मेघपहोदय वर्ष प्रबोध (सेटिया) ज्योतिषसार संग्रह (१६-१-)

आ प्रमाणे मळी आवेळा साहित्य साधन द्वारा तैयार करेळी आ नामावळी ज्ञानपिपासु सज्जन विद्वद् वर्गने उपयोगी यशे. एम आश्चा राखी विरम्न छुं.

वकील वर्षमान स्वरुपचंद.
(इंडर-महिकांठा).

अनुक्रमणिका.

\$	निवे दन	3	१६	फंड	lxiv
ર	वक्तब्य	7	१७	विद्यामंदिरो	77
३	अनुक्रमणिका	17	26	स्त्री ग्रंथकारो	25
8	संकेतसूचि	19	1 -	जैन पंडितो	25
	केटळांक जाणवाजोग		1 "	जैन साहित्यनी शो	-
·	इ क्ट्रस	20		खोळ करी रहेळा आ	
8	ग्रंथो पळब्धस्थान	Ī		र्यो अने म्रुनि गण	
-	ग्रंयोपछब्ध ग्रामस्थळ	•	20	* I	TVAT
•	the state of the s			ईंडरना इतिहासनां	1
	संख्या अकारादि 🗴		ì	•	lxvii
9	आखी सीरीजो जोव		२ २	आणंद विमलसूरि 1	XVIII
	रुायक गंथमालाओ	xlvi	2,3	विजयदेवसूरि	lxx
6	पुस्तक ्षसारक		२४	हीरविजयसूरिना वर	ाते
	संस्थाओ	1		विद्यमान १८ शाखा	
९	जैन ग्रंथ वेचनार तथ	ī			
	युकसेळरो तथा बीजी	•			xxiv
	संस्थाओ	Ì	२५	विदेशस्य विद्वान वर्ग	
90	पंडळो	li		परिचय १८ शाखाअ	ri ,,
•	सभाओ समाजो	4.4	२६	अजबयात्रा इत्यादि	
• •	सोसाइटीओ	liii		१८ शाखाओ	"
•	कान्फरन्सो		२७	मृद्रित जैन खेताम्बरा	दे
		liv lv		ग्रंथ नामावली १ र्थ	•
	शनपुस्तक भंडारो	10		हाँ गेरीनो कृत छीष्ट	
48	अठवाडीक तथा			- Lat	
_		lxii	I	अंग्रजीयां कत्तीवार ब्र	
१५	दिगंबर अठवाडीका-			साथे तथा शिलालेख	rt
	दि पत्र परिचय]	xiii '		विगेरे	250

संकेत सूचि.

भ॰) अस्त्रभ्यः अकारादि ग्रन्थ अस्त्रभ्य-ग्रंथ छपावनारनी पासे शीलक नथीः

(१) अंक संख्या प्रन्थातुकम (उपकब्ध स्थानातुकम) ज्ञानभंडारस्थानातुकमादि

अ० क० अर्थकर्ता.

अनु० अनुवादक.

ई० इसुनोसन.

अं.० अंग्रेजी.

क० कर्ता.

गु० गुजराती.

१० शंकासुचकस्थान.

दि० दिगम्बर

दे० देवनागरी छिपि

दे० देवचंद लालभाइनी लायबेरी

नं० नंबर.

पं० पंत्र्यास पंहित्.

पा० पान.

पु० बसो वर्ष पूर्वेनो पुरातन.

দ০ দকায়ক

पा० पाकृत.

पृ० पृष्ठ.

भा० क० भाषान्तर कर्चा

भा० भाषान्तर.

मू० मूळ.

र॰ सं० ग्रन्थ रचन संवत∢

वि० विवेचन करनार

वि० विशेष हकीकत माटे परि-शिष्ट जुओ.

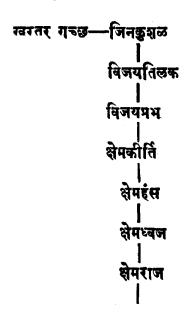
सं०) संस्कृत. विक्रम संवदः शंशोधक

सं० क० संग्रह कर्ता हिं० हिन्दी.



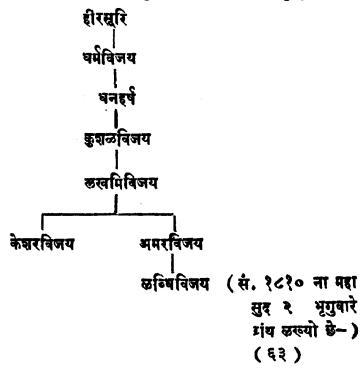
जाणवाजोग कुखबृक्ष.

उपदेश सप्ततिका (नन्या) श्री क्षेमरान मुनि विरिचता स्वोपन्न टीका सहित कत्तीनुं कुलहक्ष.



पान्डव चिरित्रे महाकाव्यना कर्ता पंडित शुभ वर्षेनचं कुळदृक्ष सोळसुंदर | साधुविजयगणि

इरिवल माछीनो रास-कर्ता ग्रुनि लन्धिविजयजी तेमनुं कुलहर्स.



कुगार विहार शतक—सुधा भूषण गणि विरिचत अवचूर्णी. (५०) सोमसुंदर | विशालराजपंडित

> विवेकसागर | च्याभवणगणि

श्री अध्यात्मज्ञानप्रसारक मंडळ तरफथी श्रीमद् बुद्धिसागरसूरिजी यन्थमाळामां प्रगट थयेळा प्रन्थो.

	~≈#e ~		
	द्रांयांक.	पृष्ट	किमत.
#	१ अध्यात्म व्याख्यानमाळा.	२०६	0-8-0
#	२ भजनसंग्रह भाग २ जो.	इ३६	0-5-0
株	३ भजनसंग्रह भाग ३ जो.	२ २ ५	0-5-0
*	४ समाधिशतकम्.	६१२	o-C-0
*	५ अनुभवपृचित्री.	388	0-2-0
*	६ आत्मनदीप.	३१५	0-6-0
*	७ भजनसंग्रह भाग ४ थो.	३०४	0-6-0
	८ परमात्मदर्शन.	800	8-82-0
*	९ परमात्मज्योति	५००	०-१२-०
*	१० तत्त्वविदु.	२३०	o-8-o
*	११ गुणानुराग (आहत्ति बीजी)	२४	0-1-0
*	१२-१३ भजनसंग्रह भाग ५ मो		
	तया ज्ञानदीपिका.	१००	o-Ę-o
*	१४ तीर्थयात्रानुं विमान (आ॰बीजी)	६४	0-2-0
*	१५ अध्यात्मभजनसंग्रह	१९०	o − ξ− o
#	१६ गुरुबोध. आ० २	२९०	0-6-0
*	१७ तस्वज्ञानदीपिका	१२४	∘ − ६−०
4	१८ गईकीसंब्रह भा. १	११२	0-3-0
炊	१९-२० श्रावकधर्मस्वरूप भाग १-२	80-80	0-8-0
*	२१ भजनपदसंग्रह भाग ६ हो.	२०८	०-१२-७
*	२२ व्चनामृत.	८३०	0.58.0
	२३ योगदीपक.	३०८	0-58-0
	२४ जैन पेतिहासिक रासमाळा.	३०८	8-0-p

* २५ आनन्द्यनपद (१०८) संग्रह	, 200	રે−૦−૦
* २६ अध्यात्मशानित (आवृति बीव		o-3-o
२७ कान्यसंग्रह भाग ७ मो.	१६६	o-6-0
* २८ जैनधर्मनी प्राचीन अने अर्वाच	ीन स्थिति ९६	0-2-0
* २९ कुमारपाल (हिंदी)	₹6'9	o-E-o
३० थी ३४ सुखसागर गुरुगीवा	. ३००	0-8-0
३५ षड्द्रव्यविचार.	२४०	0-8-0
*÷३६ विजापुरवृत्तांत.	९०	0-8-0
× ३७ साबरमती गुणशिक्षण काव्य	•	o-Ę-o
३८ प्रतिज्ञापाळन.	११०	٥-4-0
३९-४०-४१ जैनगच्छमतप्रबंघ,	• •	•
संघप्रगति, जैनगी		?-0-0
४२ जैनधातुप्रतिमा लेखसंग्रह भा		2-0-0
क ४३ पित्रमैत्री.	१७०	0-6-0
* ४४ शिष्योपनिषद्.	કટ	0-3-0
४५ जैनोपनिषद्	४८	o- २- 0
४६-४७ घार्मिक गद्यसंग्रह तथा		•
पत्र सदुपदेश भाग १ छ	ो. ९७६	₹-0-0
४८ भजनसंग्रह भा. ८	९७६	₹-0-0
अध्यक्ष्यात् देवचंद्रभाः १	१०२८	2-0-0
× ५० कमेयोग.	१०१२	₹-0-0
* ५१ आत्मतस्वद्शन ₊	११२	0-80-0
÷५२ भारतसहकारशिक्षण काव्य.	१६८	0.80-0
 4 ५३ श्रीपद् देवचंद्र भा. २ 	१२००	3-6-0
५४ गहुं छी संग्रह भा. २	१३ 0	0-8-0
* ५५ कम्प्रकृ तिटीकाभाषांतर•	600	3− 0− 0
५६ गुरुगीत गुंहळीसंग्रह.	890	0-98-0
५७.५८ आगमसार अने अध्यात		0-5-0
५८ देववंदन स्तुति स्तवन संग्रह	•	0-8-0
We 12 dadde the sugar sixt	. 1-1	

ξo	पूजासंग्रह भा. १ छो.	४१६	?-o-o
	भजनपद्संग्रह भा. ९	५८०	१-८-०
•	भजनपदसंग्रह भा. १०	२००	?−o−o
	पत्रसदुपदेश भा. २	५७६	१-८- ०
	घातुनतिमालेख संग्रह भाग २	१८०	{-e-0
	जैनदृष्टिए ईशावास्योपनिषद्		
	भावार्थविवेचन.	३६०	?-0-0
33	पूजासंग्रह भाग १-२	ક શ્પ	₹-0-0
	स्नात्रपूजाः	- , ,	0-2-0
	श्रीपद् देवचंद्रजी अने तेपनुं जीव	नचरित्र.	0-8-0
	-७२ शुद्धोपयोग वि. संस्कृत ग्रथ		0-97-0
	-७७ संघकतेन्य वि. संस्कृत ग्रंथ		o-१ २- 0
•	लाला लाजपतराय अने जैनधर्म.		o-8-o
	चिन्तापणि	१२०	0-8-0
•	-८१ जैनधर्म अने खिस्ति धर्मनो	• •	
	मुकाबलो तथा जैनिखिस्ति संवाद	२२०	१ -0-0
૮ર	सत्यस्वरूप.	200	ο–ξ–ο
	ध्यानविचार.	૮५	c-S-0
•	आत्मशक्तिप्रकाञ्च.	380	∘ <i>−</i> 8−∘
	सांवत्सरिक क्षमापना.	60	o- 3 -o
	आत्मदर्शन (मणीचंद्रजीकृत		•
• •	सज्जायों) नुं विवेचन.	१५०	o-8-o
43	जैनधार्विक शंकासमाधान.	થ્લ	o- 3 -0
	क्रियाविक्रय निषेध	२००	0-4-0
	आत्मशिक्षा भावनामकाशः	११५	0_0_0
	आत्मप्रकाशः	પે દેખ	१-८-0
•	शोक विनाशक ग्रंथ	60	0-2-0
	र तत्त्वविचार.	१२५	o- ६ -0
•	त्तापापारः १–९७ अध्यात्मगीता वि.संस्कृत ग्रंथ	•	3-q-o
2.4	(— ३० चन्नारचनाता । न∙सरश्रेश प्रद	11 /-4	1-0-0

९८ जैनसूत्रमां मूर्तिपूजा.	९६	0-3-0
९९ श्री यशोविजयजी निबंध.	११०	o-Ę-0
१०० भजनपदसंग्रह भाग ११	२२०	०-१२-०
१०१ , भाग १ आ. ४थी	२००	•-6-0
१०२ गुजरात बृहद विजापुर दृतांत	300	1-8-0
१०३-४ श्रीमदु देवचंद्रजी विस्तृतजीवन	च-	
रित्र तथा देवविद्यास	२३०	०-१२-०
१०५ मुद्रितजैन र्रवे प्रयगाइड		१-८-०
१०६ ककावळी-सुबोध	४६०	\$-8-0
२०७ स्तवन संग्रह (देववंदन सहित)) २७५	0-80-0
१०८ पत्र सदुपदेश भाग ३	,	
१०९ श्रीबुद्धिसागर सूरिश्वर स्मारकः	प्रंथ	
(सचित्र)	२३०	०-१२-०

- * आ निशानीवाला ग्रंथो शिलकमां नथी.
- × आ ग्रंथो ब्रीटीश केळवणी खाताए मंजुर करेला छे.
- 🛨 आ ग्रंथो श्रीमंत गायकवाड सरकारना केळवणी-खाताए मंजुर करेला छे.

ं ग्रंथो मळवानां ठेकाणां

- १ वकीस मोहनलाल हीमचंद—पादरा(गुजरात)
- २ शा. आत्माराम खेमचंद-साणंद.
- ३ शा. नगीनदास रायचंद जाखरीया-महेसाणा
- ४ शा. चंदुखाल गोकळभाइ—_{विजापुर}
- ५ शा. रतीखाल केशत्रखाल−मांतिज
- ६ श्री बुद्धिसागरसूरि जैनसमाज्ञ-_{पेथापुर}
- ७ शा. मोइनलाल नगीनदास भांखरीया— १९२-९४ बनार गेट, कोट, ग्रुंबाई.

ग्रंथोपलब्ध स्थानः

- १ शेंठ देवचंद छालभाइनी आगमोदय समितिनी लायबेरी ठा. गोपीपूरा, सुरत.
- २ इरीदास अन्ड कंपनी मु. काइमगंज.
- ३ शा. नानचंद वेळचंद गोपीपुरा बडेखां चकलो स्रत.
- ४ पंडित. त्रिभ्रंवनदास अपरचंद पाछीटाणा.
- 4 जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय. हस्ते मुन्सी केसरीमल मोती-काल रांका. ब्यावर.
- ६ जैनधर्म प्रसारक सभा. तथा लायब्रेरी समाज. भावनगर.
- ७ श्रावक भीमसींह माणेक. मांडवीबंदर. मुंबइ. [ख्खन.
- ८ शेट. शिवदानजी पेमाजी गोटीवाले साकीन पुना. मुल्क द-
- ९ पंडित. काशीनाथ जैन. २०१ हरिसनरोड कलकत्ता.
- १० निर्णयसागर पेस. ग्रुंबइ. ठा. कालबादेवीरोड.
- ११ शेठ. मनसुखभाइ भगुभाइ, शाहापुर वंगली, अमदावाद.
- १२ मोहनलालजी महाराजनो ज्ञानभंडार. गोपीपूरा सूरत. चुनीलाल गुलाबचंद दालीया. मेनेजींग ट्रस्टी.
- १३ मोतीचंद झवेरचंद महेता. फर्स्ट, आसीस्टंट मास्तर, भावनगर.
- १४ यशोविजय जैन ग्रंथमाला भावनगर, हेरीसरोड, प्रेमचंद रत-नजी, तथा नं. ४७
- १५ अध्यात्मज्ञान मसारक मंडल. पादरा. वकील मोहनलाल हेमचंद तथा नं. ५८-५९-६०-६१-६२
- १६ शेठ. देवचंद लालभाइ पुस्तकोद्धार फंड. सुरत. गोपीपुरा.
- १७ आत्मानंद सभा भावनगर.
- १८ मुक्तिकमल जैन मोइनलाल नं. ६७ आ साथे जोडायेलो छे. ८/० शाइ. लालचंद नंदलाल वकील. कोठीपोळ वडोदरा.

II

- १९ रत्नपभा ज्ञान पुष्पमाला लोहावट. मारवाड. हाल ऑफीस फलोधी मारवाड.
- २० शाह. हरगोविंद वर्द्धमाननी कंपनी. रहेवासी. सीनोर.
- २१ हुकप मुनिनो उपाश्रय. गोपीपुरा. सूरत.
- २२ क्यूरेटर सेन्ट्ल लायब्रेरी राज्य. वहोदरा.
- २३ जैन विजय भीं. प्रेस. कोट. बजारगेट. मुंबइ.
- २४ रायधनपतिसह बहादूरकी कोठी अजीमगंज.
- २५ विजय कमल, केसर ग्रंथमाला. मुंबइ. C/o पोपटलाल दलमु-खराम पटना. झवेरी बजार.
- २६ श्री हेमचंद्राचार्य सभाना सेक्रेटरी, शाह. लहेरुभाइ भोगीळाल पाटण (हेमचंद्राचार्य ग्रंथावली,)
- २७ देशी केलवणी खातुं. वडोदरा. [ग्रुंबई.
- २८ आगमोद्य समिति. C/o शेठ. जीवणभाइ साकरचंद. ४२६
- २९ एसीआटीक. सोसाइटी. बेन्गाल. नं. ५७ यार्क स्ट्रीट कलक-त्ता. (जुओ. नं. १४४)
- ३० भा. अचरतलाल जगजीवन. भावनगर.
- ३१ मोतीचंद ऑपवजी आत्मानंद प्रकाशना तंत्री, भावनगर.
- ३२ पंडित. हीरालाल इंसराज जामनगर.
- ३३ जैन. श्रेयस्कर मंडल, महेसाणा.
- ३४ बुद्धिमभा ऑफीस अमदावाद. (नं. १५ पादरा साथे जोडाइछे.)
- ३५ अध्यात्म ज्ञान प्रसारक मंडळ चैपागळी ग्रुंबइ. (फेरवीने नं. १५ पादरामां छे.)
- ३६ गुजरात पुरातत्व मंदिर. एलीसबीज. अमदावाद.
- ३७ अभिधान राजेन्द्र कार्यालय. रतलाम.
- ३८ सुरजगळजी सोइनलालजी जालोरी बोहरा अजमेर.
- ३९ आत्मानंद जैन पुस्तक मचारक मंडल रोसन महोल्ला. आगरा

m

- ४० सोभागमळ इरकावत नया बजार, अजमेर,
- ४१ उजमबाइनी धर्मशाळा वाघणपोळ रतनपोळ. अमदाबाद.
- ४२ पंजाब युनिवरसीटी लाहोर.
- ४३ सेविया जैन ग्रंथालय. C/o भैरोदान जेमल सेविया. महोल्ला मरोटीयोंका. वीक।नेर राजपूताना. [भावनगर.
- ४४ " जैन " पत्रनी ऑफीस. अमदावाद, मुंबइ, अने हाळ
- ४५ सलारांव नेपचंद. सोलापूर.
- ४६ यशोविजय ग्रंथमाला बनारस भावनगरमां-आग्रामां वहीवट छे जुओ. नं. १४-४७
- ४७ श्री विजयधर्म लक्ष्मी मंदिर बेलनगंज आग्रा.
- ४८ आत्मानंद जैंन ट्रेकट सोसाइटी अंबाला शहेर.
- ४९ गुजरात वर्नाक्युलर सोसाइटी. अमदावाद.
- ५० जैनानंद पुस्तकालय. गोपीपुरा सुरत.
- ५१ श्री रामावतार श्रमणा. मुरादपुर-पटना.
- ५२ हंसविजयजी फी लायबेरी ऑ. सेक्रेटरी जेशंगमाइ मोतीलाछ शाह. लुणसावाडे अमदावाद.
- ५३ जैनन्वेताम्बर कॉन्फरन्स ओफीस पायधुनी मुंबइ.
- ५४ जैनधर्म हितेच्छ सभा. भावनगर.
- ५५ शारदाविजय प्रंथमाळा. मोहनळाळ गीरधरळाळ. भावनगर.
- ५६ जैन विविध साहित्य शास्त्रमाला कार्याख्य बनारस सीटी. यू. पी आमांथी केटलांक पुस्तकोनो हक विमेरे नं. ४७ मां तबदील थया छे.
- ५७ श्री इक्षमीचंदजी जैन लायब्रेरी नं. ४७ साथे मळी गई आब्रा.
- ५८ ज्ञा. आत्मारांम खेमचंद. साणंद. [१९२-९४ ग्रंबई.
- ५९ भांखरीआ मोइनङाङ नगीनदास. कोट बजार गेटस्ट्रीट नं.

- ६० बुकसेळर. मेघजी हीरजी ५६६ पायधुनी मुंबइ.
- ६१ शेट. नगीनदास रायचंद. भांखरीआ. म्र. मेसाणा.
- ६२ विजपुर जैन ज्ञानमंदिर. C/o शा. चंदुलाल गोकळदास विजापुर.
- ६३ वकील. केशवलाल पेपचंद मोदी. बी. ए. एल. एल. बी. ठा. हाजापटेलनी पोल. अमदावाद (खानगी लायब्रेरी.)
- ६४ ज्ञान प्रसारक मंडळ. (नं. १५ प्रमाणे नाम बदलावुं) अमदाबाद.
- ६५ त्रिभोवनदास भाणजी स्मारक ग्रंथमाळा (नं. ६ साथे पण छ)
- ६६ नरोतमदास भागजी छीपीचाली. ग्रुंबइ. [भावनगर.
- ६७ म्रुक्तिकपल जैन मोइनमाला पालीता**णा. (नं. १८ साथे)** जोडाया छे. वडोदरा.
- ६८ रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला मु. ओसीया जील्ला जोधपुर-मा-रवाडमां हती. पछी लोहावट अने हाल फलोधी मारवाड.
- ६९ सरस्वती ग्रंथमाला बनारसना केटलांक पुस्तको नं. ४७ मां लीघां छे. बनारस.
- ७० विजय धर्भसूरि पंडल (शान्तिनाथजी जैन कलब) नमकपंडी
- ७१ ज्ञानमंदिर. ठा. नरसिंहजीनी पोळ वडोदरा. शागरा.
- ७२ हिंदी जैन कार्यालय. मुंबई.
- ७३ " श्री दयाविमलं गंथमाला " देवसानो पाडो. अवदाबाद.
- ७४ " जैन विजय तरंग '' ना अधिपति मोइनळाळ अमरसी ठा. जैनविजय मेस ग्रंबइ. (मासीक)
- ७५ कल्याणजी मूळजी, ठा, दाणाबंदर पुल नीचे मांडवी मुंबइ.
- ७६ शेठ. हरगोविंददास पंडित. ठा. नं. २६ जकडीया स्ट्रीट जुओ नंबर १३६७ कळकत्ता.
- ७७ अभयदेवसूरि गंथमाला वहा उपाश्रय वीकानेर (राजपूताना) (जुओ नं∙ २१३)

- ७८ " खरतरगच्छ गंथमाला '' श्री मंडकाचार्य कमकसूरि विका-सितम् कालवाग संवर्ध.
- ७९ खेडा जैनोदय सभा. शेट. सोमचंद पानाचंद. खेडा.
- ८० '' तत्व दीपक मोहन मंदली '' जैन पाठशाळा सुंबई.
- ८१ माणेकचंद दिगंबर जैन गंथमाला समिति. मुंबई.
- ८२ शा. बालाभाइ छगनलाल ठा. कीकाभटनी पोळ अमदाबाद.
- ८३ " जैन साहित्य संशोधक समिति '' पूना सीटी. फरग्युसन-रोड. पूना. (जुओ नं. १५८)
- ८४ मो. रवजीभाइ देवराज. कच्छ कोडाय.
- ८५ शा. तळकचंद् पीतांमर. मांन्डल. ताबे वीरमगाम.
- ८६ अ. सौ. बाइ रूपाळी स्मारक माळा. (जुओ नं. ६)भावनगर.
- ८७ श्री आठले संस्कृत गुजराती भाषान्तर माला. प० त्रीश्चवन-दास कल्याणदास गज्जर अमे. ए. बी. अंस, सी. वडोदरा.
- ८८ " आत्म तिलक गंथ सोसाइटी " भारत जैन विद्यालय
- ८९ चुनीलाल गंथमाला. ग्रंबई. [पूना सीटी.
- ९० वेजलपुरनो संघ. भरुच.
- ९१ " सद्दिचार पुस्तकमाला. "
- ९२ श्री महावीर जैन सभा शेट. नानजीभाइ पोपटबंद. खंमात.
- ९३ न्युतन साहित्य मंदिर C/o यशोविजय ग्रां. माला भावनगर. मालीक पशुदास अमृतलाल महेता. वंसी.
- ९४ '' वीरसमाज '' अमदावाद से. केशवळाळ दळसुखरांम ग्रेटनी पोळ अमदावाद.
- ९५ पन्यास मेघविजयजी लायब्रेरी. ठा. दोसीवाडानी पोळमां विद्याशाळामां अमदावाद.
- ९६ बाड्वी भीखाभाइ खीमचंद रेश्वपवाद्धाः भावनगर,

ΥÌ

- ९७ नयानगरका संघ समस्त.
- ९८ (जुओ नं. ९४) [अपदाबाद(जुओ नं. २३९)
- ९९ राज्यचंद्र साहित्य मंदिर. (पूरा तत्वमंदिर साथे जोडायुं छे)
- १०० पुनाजी इन्द्रमछ कावहिआ रतलाम.
- १०१ बाबु सुमेरमळ सुराणा. टा. बनोरदासका कटरा बढाबजार कळकत्ता. (जुओ ६४७) [दाबाद.
- १०२ ज्ञा. बालाभाइ खुशाल हाजी झवेरीवाही निशापोळ. अम-
- १०३ ज्ञा. सुरचंद सरुपचंद विजापुर.
- १०४ गुलाबबाइ लायब्रेरी नं. ४६ मीररस्ट्रीट कलकत्ता.
- १०५ सेताबचंद नहार अजीमगंज निवासी.
- १०६ जैन गंथ रत्नाकर कार्यालय (दि) मुंबइ हीरालाल.
- १०७ आत्मवीर ग्रंथमाला (जुओ. नं. १०१) कळकत्ता.
- १०८ कवि. सांकळचंद पीताम्बरदास ठा. श्यामलानी पोळमां.
- १०९ फरेचेंद कपुरचंद लालन मढहा. शिवसदन. [अमदावाद.
- ११० शा. हीरजी कानजी भणश्री. टा. खारेकबजार मांडवी. सुंबई.
- १११ बहेचरदास दुर्लभदास. पादरा.
- ११२ '' जैन स्वयं सेवक मंडळ '' मोरसळी गळी नं. ९ इन्दौरसीटी.
- ११३ नंदलाल मोतीलालनी बजाजलाना चौक इन्दोर सीटी.
- ११४ नथमळजी कनैयाळाळजी ममादेवी पोष्टके उपर मुंबई.
- ११५ शा. नवलचंद हीराचंद. ठा. जैनोदय मीं. मेस. मुंबई.
- ११६ बा. चन्द्रसैन जैन वैद्य. इटावा. (दि.)
- ११७ शेट. जीवणचंद साकरचंद झवेरी. ४२६ झवेरी बजार. मुंबई.
- ११८ शा. जमनादास जेटाभाइ. टा. कीकाभटनीपोछ.अपदावाद.
- ११९ मोतीचंद गीरधर कापडीया. मीन्सेस स्ट्रीट मुंबई.
- १२० शेरसिंह जैन कोटा.

VII

- १२१ पंडित लिलतविजय.
- १२२ " जैनमित्र " कार्यालय. हीरावाग मुंबई (दि.)
- १२३ '' जैन शासन '' ना मालीक. पुरुषोतम गीगाभाइ (अठबा-डीक पत्र भावनगर.)
- १२४ शा. मगनलाल दलपनरांम अपदावाद.
- १२५ " जैन तत्व प्रकाशीनी सभा " बनारस.
- १२६ '' जीवद्या प्रबोधक मंडळ '' छोडुभाइ दाजीभाइ अंबाजी-रोड सुरत.
- १२७ राजा शिवपसाद सितारे हिन्द इस्राहाबाद.
- १२८ मोइनलाल वैद्य. आग्रा.
- १२९ सवाइभाइ रायचंद. अमदाबाद (जुओ नं. १४७)
- १३० शाह. नगीनदास मोतीचंद. मांडवी सूरत.
- १३१ जैन ज्ञानपसारक मंडळ मुंबइ.
- १३२ 🤄 मित्रमंडळ '' हे. मणिकाल घेलाभाइ हेरीसरोड भावनगर.
- १३३ उत्तमचंद गीरधर कापडीया स्मारक माळा C/o (नं. १३२)
- १३४ सोभाग्यचंदनी विधवा केसरबाइ जापनगर. शावनगर.
- १३५ जीवराज घेलाभाइ दोशी नवा दरवाजा अमदावाद.
- १३६ (जुओ नं. ७६) कलकत्ता.
- १३७ म्रनिमाणेक.
- १३८ गायकवाड ओरीॲन्टल सीरीज वढोद्रा.
- १३९ शा. सोपचंद धारसी कच्छ-अंजारा.
- १४० " अंचळ गच्छ स्थापक-आर्य रक्षितसूरि पुस्तकोदारक खातुं " जापनगर (जुओ ३२)
- १४१ शास्त्री हरीशंकर वदवाण.
- १४२ शेठ वसनजी त्रिकमजी जे. पी. प्रयमाला ग्रुंबर्,
- ५४३ जैन धर्म विद्यापसारक वर्ग पाळीताला.

VIII

१४४ एसियाटीक सोसाइटी नं. ५७ पार्कस्ट्रीट कलकत्ता (जुओ

१४५ शा. रवचंद जेचंद जैन विद्याशाळा. [नं. २९)

१४६ पंडित. लालचंद भगवानदास. कोठीपोळ वदोदरा.

१४७ सवाइभाइ रायचंद्र. अमदाबाद. (जुओ नंबर. १२९)

१४८ आत्म कमस्र जैन ग्रंथमाला अंबाला पंजाब.

१४९ श्री इंसविजयजी जैन फी लायब्रेरी. वडोद्रा. ऑ. से. ला-लचंद एम शाह. (जुओ नं. ३२६)

१५० " तरंग मासीक " संपादक मोइनलाल. अमरसी.

१५१ सूराणा चान्दमळजी खावरोद जीला उज्जन.

१५२ शाह. हीरालाल वर्धमान वढवाण.

१५३ हिन्दी साहित्य कार्यालय (हिन्दी साहित्य ग्रंथावली.)

१५४ श्री महावीर नव युवक मंडल. बाली.

१५५ जैन विद्याशाळा दोशीवाडानी पोळ.

१५६ पं. जीवानंद विद्यासागर, बी. ए, सुपी. फी. सं, कोलेज, कलकत्ता. प्रस्रोड-

१५७ वर्जिंग विजयचंद सदानी जैन वागरा. (मारवाड) एरण-

१५८ जैन साहित्य संशोधक समिति पूना (जुओ नं. ८३)

१५९ सोभागमल इरकाबन. देइछी.

१६० वेलजी शीवजी दाणावंदर मुंबइ.

१६१ शेट. खेमरान पुंजाभाइ बायट (कच्छ)

१६२ शेठ. हीरालालजी केसरीचंदजी सवेरी नागपुर.

१६३ जैन युवक पंडळ साणंद.

१६४ पंडित त्रिश्चवनदास अने झवेरचंद पालीताणा.

१६५ डाह्याभाइ पीतामर देरासरी बार अ. ला. अमदाबाद.

१६६ साहित्य गंथ सम्रुचय (निर्णयसागर)

TX

- १६७ महासुखभाइ चुनीळाळ विसनगर.
- १६८ सरकारी केलवणी खातुं ग. से. प्रे. मुंबइ.
- १६९ झवेरी मुलचंद आशाराम वैराटी. श्री कुसुम विजयजी जैन विताम्बर पुस्तकालय अने पुस्तकमालाना ग्रंथी. अमदावाद.
- १७० श्री कांन्तिविजय प्रंथमाला (जुओ नं. १७) भावनगर.
- १७१ भोगीलाल घोळशा दोसीव।डानी पोळमां अमदावाद.
- १७२ श्री कान्तिविजय जैन इतिहासमाछा पुष्पो (जुओ नं. १७) भावनगर,
- १७३ जैन भावपकाशक मंडली मेसाणा केशवलाल लल्खभाइ पटवा.
- १७४ साहित्यसेवा समाज से. शा. व्रजलाल उजमसी. खारगेट.
- १७५ प्राचीन पुस्तकोद्धार फंड सूरत. [भावनगर.
- १७६ प्रजाबंधु ऑफीस अमदावाद.
- १७७ सनातन जैन (मासीकनी ऑफीस.)
- १७८ जैन मित्र मंडल मांडल. C/o लालचंद नागजीभाइ शाह.
- १७९ मगनलाल हठीसिंह ज्ञान. प्र. ना मालोक. अमदावाद.
- १८० राजा शीवपसादजी सितारे हिन्दकी बहिन गौतमी बीबीने
- १८१ ज्ञा. बाळाभाइ ककळभाइ. अपदावाद. [बनारस.
- १८२ जैन युवक मित्र मंडल लोहावट मारवाड.
- १८३ जैन युवक मंडल शामळानी पोळ. अपदावाद.
- १८४ शेठ रतिलाल केशवलाल पान्तीज.
- १८५ यति कॉन्फरन्सना प्रमुख माणेकचंद जगरुपयति प्राचीन शि-छा छेखोना ज्ञाता. इन्दौर.
- १८६ आत्मोन्नति सभाना प्रमुख मांणेकचंदजी जगरुपयति. इन्दौर.
- १८७ जैन तस्व विवेचक सभा पांजरा पोळ अमदावाद.

X

१८८ (संघ ज्ञान खातुं) मेसाणा. [ककलभाइ.

१८९ जैन पाठशाळा फताशानी पोळ अमदावाद. हा. हीराचंद

१९० शेट. भोगीलाल ताराचंद झवेरी दोश्चीवाडानीपोळ.अमदावाद.

१९१ जैनोदय बुद्धिसागर समाज साणंद.

१९२ शा. खेताजी भीखाजीना ची. पानाचंद खेताजी मुं. नडोद.

१९३ शा. प्रेमचंद केवळदास अमदावाद.

१९४ शा. मेपचंद काळीदास अपदावाद.

१९५ शा. बालाभाइ त्रीकमलाल, अमदावाद,

१९६ पेमचंद रतनचंद अमदावाद.

१९७ शेठ जमनाभाइ मगुभाइ अमदावाद.

१९८ देवसानापाडे विमळना उपाश्रयना वहीवटदार अपदाबाद.

१९९ वांरा लल्खभाइ मोतीचंद शाह. पालीताणा.

२०० शा. देवकरण मृलजी. टा. मृलजी जेटा मारकेट मुंबई.

२०१ मगनलाल दलपतराम खरुखर.

२०२ मेसर्स ॲन ॲम त्रिपाठीनी कंपनी मुंबइ.

२०३ यति माणेकचंदनी ठा. सराफेये खामगाम (प्रा. वेरार.)

२०४ जैन तत्त्व प्रकाशिनी सभा, इटावा. अमदाबाद.

२०५ शा. गीरथरलाल हीराभाइ मांडवीनी पोळमां मंकोडी पोळ.

२०६ फुल कुंवरबाइ रोठ चंद्रमलजी रतलामवाळानां पहिन राजपूताना.

२०७ सेलोत अभरतलाल अगरचंद पालीताणा.

२०८ ज्ञान लातुं (जैन.) नडीयाद.

२०९ पुजाभाइ हीराचंद. अमदावाद.

२१० जसवंतराय जैन लाहोर.

२११ शा. पानाचंद खेताजी काळीआवाडी.

२१२ कोठारी जमनाळाळ वीकानेर.

२१३ अभयदेव सूरि शंथमाला वीकानेर (जुओ नं. ७७)

XI

२१४ मोहनलाल दलीचंद देसाइ ग्रंबाइ. तवाबीरडींग लुहारचाल. ग्रंबई.

२१५ कापड मारकेट वेपारी जैन मंडल तरफथी मणीकाक मोती-२१६ जैनशाळा खंभात. िलाल चंपागळी ग्रंबह.

रे१७ स्याद्वाद रत्नाकर कार्यालय मुंबइ.

२१८ जैन ग्रंथ प्रकाशक सभाना कार्यवाहक वाडीलाल **वापुलाल शाह**

२१९ जिनागम प्रकाश सभा अमहाबाद (जुओ २०९)

२२० श्री वीर विद्योतेजक सभा पालणपुर.

२२१ शेट. वधुभाइ माणेकचंद मुंबई.

२२२ सनातन जैन ग्रंथमाला.

२२३ मुक्ति कमल जैन मोहनमाला पाळीताणा (नं. १८ जुओ.)

२२४ श्री जैन ज्ञान इच्छक सभा घोलेरा.

२२५ शा. उत्तमचंद केसरीचंद झवेरी रांमपुरा सुरत.

२२६ ज्ञानवर्धक पुस्तकमाळा C/o जीवणलाल अमरसी महेता.

२२७ " जैन समाचार " अपदावाद.

२२८ श्री आत्मानंद जैन पुस्तक प्रचारक मंडल नौघरा दिल्ली छोटा दरीवा दील्ली.

२२९ श्री यशोविजय जैन संस्कृत पाठशाळा महेसाणा. वेणीचंद सुरचंद.

२३० श्री ज्ञानवर्धक जैन मित्र मंडल सैलाना (मालवा.)

२३१ व्यास मणिलाल बकोरदास. गोधरा.

२३२ शा. माणेकलाल अवाराम डॉकटर वडोदरा.

२३३ शा. मूळचंद कीशनदास कापिडया सूरत.

२३४ सोलापुर जैनशाळाना अद्यापक गोपाळदास शर्मा फरकुले.

२३५ कॅान्फरन्स हेरल्ड ऑफोस. पायधुनि मुंबइ. [मुंबई.

२३६ राजा शिवपसाद सितारे दिन्द बनारस.

XII

२३७ श्री महावीरजिन मंडली अमदावाद.

२३८ केशवलाल भोगीलाल पहेता चोळावाडो खंभात.

२३९ रायचंद्र साहित्य मंदिर अमदाबाद. (जुओ नं. ९९)

२४० शा जग नीवन पानाचंद मास्तर पीपरडीनी पोळ अमदाबाद.

२४१ शाह जेठानी पदमाजी पोरवाड मंडवारीयावाळा शिरोइ.

२४२ लाला निरंजनदास रामलाल श्रावक डब्बी बजार लाहोर.

२४३ शा. त्रिभोवनदास रुगनायदास तथा शा. छोटाछाछ मोती चंद सुतारवाडो खंभात.

२४४ शा. खेमचंद पीताम्बरदास वलाद अपदाबाद.

२४५ शा. फतेचंद हजारीमळ कोयबतुर.

२४६ गुजरात आर्य औषधालय अमदावाद. मालीक वैद्य जटार्स-

२४७ जसवंतराय जैनी लाहोर. [कर लीलाधर त्रिवेदी.

२४८ महेरचंद लक्ष्मणदास श्रावक सैदमिहाबाजार लाहोर.

२४९ के. मो. रांका मुन्धी.

२५० जैन फ्रेन्डली सोसाइटी मुंबइ.

२५१ शा. अनोपचंद मलुकचंद भरुच.

२५२ जैन धर्म ज्ञान दीपक मासीक.

२५३ " जैन दिवाकर " मासीक अमदावाद.

२५४ ज्ञान प्रकाश मासीक अमदावाद.

२५५ हिन्दी जैन शंथमाला कस्तुरचंद सेवरचंद गादिया ठा. का-लवादेवी मुंबइ.

२५६ '' हिन्दी जैन '' पत्रनी ऑफीस कालवादेवी रोड मुंबई.

२५७ मास्तर उमेद्चंद रायचंद पांजरा पोळ अमदाबाद.

२५८ पंडित सुखलालजी ८/० पूरातत्व मंदिर. अमदीवाद.

२५९ शा. पुष्करराज पुनमचंद, बाली मारवाड.

२६० शास्त्री रांमचंद्र दीनानाथ, सांकडीशेरी जतिनीपोळ अंगदाबाँद,

XIII

२६१ आत्मतिलकांथ सोसाइटी पूना.

२६२ हिन्दी साहित्य ग्रंथमाला (जुओ नं. १५३) आचुरोड.

२६३ कुमुमविजयजी जैन श्वेताम्बर लायब्रेरी C/o मु. आ. वैराटी रीचीरोड अमदाबाद.

२६४ महावीर जैन लायब्रेरी. मारवाड सोजत.

२६५ शा. प्रेमचैद दलसुखभाइ. पादरा.

२६६ मंगलविजयजी, आग्रा.

२६७ संघ. फलोधी.

२६८ शीतलपसाद छाजेड झोइरी. बनारस.

२६९ हे. मुनिचंद्र.

२७० काळचंद एम शाह.

२७१ अभयचंद भगवानदास. भावनगर.

२७२ जै. थे. संघ. जील्ला खानदेश. पाचोरा.

२७३ श्रावक ठाकुरदास मूलराज ओसवाल, गुजरावाला पंजाब.

२७४ जगननाथदास. ग्रुरादाबाद.

२७५ पदममूनि हर्षविजयना शिष्य.

२७६ (खंभातनो संघ) ग्रुंबइ.

२७७ नाथुरांम प्रेमी (दि) ग्रुंबई.

२७८ भगुभाइ फर्तेचंद कारभारी. ग्रंबड. (जुओ ४४)

२७९ डाह्याभाइ नथुभाइ देसाइ. विजापुर.

२८० संघ. सायळा मरुधर.

२८१ समस्त संघ. मांडवळा पोष्ट. जाळोर.

२८२ चपनलाल सांकलचंद मारफतीया. ग्रुंबइ.

२८३ पूर्णचंद नहार. ॲम. ए. वी. ॲल. वकील हाइकोर्ट कळकत्ता जैन वि. सा. शा. वनारस मेम्बर मीरर स्ट्रीट कळकता.

XIV.

- २८४ श्री गुलाबकुमारी लायब्रेरी. नं. ४६ इन्डीयन मीरर स्ट्रीइ कलकत्ता.
- २८५ थरानो संघ. थरा.
- २८६ जैन विवेक प्रकाश. (मासीक)
- २८७ जैन शासन. (जुओ १२३ मां जोडायो छे संपादक हरख-
- २८८ जैन एसोसीएशन ओफ इन्डीआ मुंबइ. [चंद भ्रुराभाइ.
- २८९ जैन धर्म विद्याशसारक मंडळ. मुंबइ.
- २९० सौभाग्यवती " उषा " प्रकाशक ग्रंथ भंडार छेडी हार्डिंग रोड मादुंगा ग्रंबइ. ग्रंथभंडारना मालीक भाइ कृष्णलाकवर्मा.
- २९१ जैन समाज मासीक (दि)
- २९२ मनसुख कीरतचंद महेता. मोरबी.
- २९३ पंडित. बेचरदास जीवराज, प्ररातत्व मंदिर अमदावाद,
- २९४ करोडीचंद्र मंत्रि जैन सिद्धान्तभवन, आरा.
- २९५ सद्बोध रत्नाकर कार्यालय बडावजर-सागर (सी. पी.) मूलचंद मेनेजर. [अपदावाद.
- २९६ शो. कचराभाइ गोपाळदास धनासुतारनी पोळमां पढीपोळ
- २९७ शा. जेसंगभाइ कस्तुरभाइ टा. कीकाभटनी पोळ अपदावाद.
- २९८ जीताजी रुपाजी. तखतगढ.
- २९९ शा. सांकळचंद हीराचंद मास्तर. अमदाबाद.
- ३०० शा. पाशुभाइ परवतभाइ मुंबइ.
- ३०१ घिया लक्ष्मीचंद शंकरळाळजी. प्रतापगढ.
- ३०२ ज्ञा. वालजी हीरजी भांडुप स्ट्रीट मुंबह.
- ३०३ झवेरी भाइचंद कस्तुरचंद. ग्रुंबइ.
- ३०४ फुलचंद गोवेच्छक् भोंदी.
- ३०५ झवेरी वाडीलाल वखतचंद दोशीवाडानी पोळ अमदाबाद. ३०६ जै. बो. बुद्धिसागर सभा, साणंद.

XV

३०७ वंथली, जैनशाळा.

[बादेवीरोड. ग्रुंबइ.

२०८ डॉ. त्रिभोवनदास लहेरचंद. ॲल. ॲम. ॲन्ड ॲस. काल-

३०९ पंडित इंसराज शर्मा. पंजाबी-वडोद्रा.

३१० मेनेजर ब्रह्मभेस इटावा.

३११ कुवर दिग्विजयसिंह जैन. बीधुपुरा इटावा.

३१२ शा. डाह्याभाइ दलपतराम भरुच.

३१३ जैन सुभेच्छक मंडळ. सुंबइ.

३१४ पंडित भगवानदास, वीकानेर.

३१५ श्री सत्यविजय ग्रंथमाला. C/o बालाभाइ मूलचंद. ठा. री-चीरोड-अमदावाद माहाबीरस्वामीना देरा सामे.

३१६ शकरचंद कालीदास. सादरा. (पेथापुर निवासी)

३१७ मनु अने नातु. स्वदेशी दुकान सुरत.

३१८ भोगीलाल घोळशा. दोशीवाडानी पोळ-अमदावाद.

३१९ हीराचंद सचेती. अजमेर.

३२० शा. रतनचंद दगडुशा पटनी. आमलनेरा.

३२२ जैन श्वेता-श्रेयस्कर वर्गना सेक्रेटरी शा. छाछचंद छगनछा छ

३२३ शेट. वर्धमान सरुपचंद वकील. (इंडरवाला) टा. अमदाबाद हाजापटेलनी पोळ-खाराजुवानी पोळ. (इंडर महिकांटा.)

३२४ धर्मदृद्धि गंथमाला. भावनगर (जुओ नं. १७)

३२५ रायचंद जैन शास्त्रमाला ग्रुंबइ.

३२६ ईसविजय फी लायब्रेरी वडोदरा. (जुओ नं. १४९)

३२७ सागरगच्छनो उपाश्रय गोवीपुरा-सुरत.

३२८ केसरीचंद रुपचंद झवेरी सुरत-गोपीशुरा.

३२९ बबलचंद केशवलाल मोदी. हाजापटेलनी पोळ अमदाबाद.

३३० आत्मानंद जैन सभाना सेक्रेटरी चिरंजीलाल, अंबाझा शहेरू,

XVI

३३१ हेमचंद्राचार्य ग्रंयावली. (जुओ नं. २६) पारण.

३३२ परीख. मोतीलाल मगनभाइ. महुधाबाळा गुसापारेखनी पोळ ३३३ ... महुधा. अमदाबाद.

३३४ यति बाछचंद्राचार्येशी महाराज. हैदराबाद दक्षिण.

३३५ मोतीचंदजी केवळजी वांकानेरवाळा. वांकानेर.

३३६ लाला जैनीलाल जैन मालिक. जैन धर्म प्रचारक पुस्तकालय मु. देवबंद जि. सहरानपुर.

३३७ श्री जैन धर्माभ्युदय ग्रंथमाला. भावनगर.

३३८ ज्ञा. लक्ष्मीचंद अमीचंद पोरवाद (मारवाद) गुढा बालोतरा.

३३९ शा. कुंवरजी मूलजी मुंबाई (कच्छी)

३४० बाबु धनपतिसिंहजी प्रतापसिंहजी. मकसुदाबाद.

३४१ रतनप्रभाकर ज्ञान पुष्पपाला मु. ओसीया जोधपुर.

३४२ शा. मलीचंद बुलाखीदास. हा. त्रिभुवनदास रुपनायदास. ठा. आकाशेठनाकुवानी पोळ-अमदावाद.

३४३ सांकळचंद माणेकचंद घडीयाळी. घाटकोपर कामागली गुंबइ. पण हाल भुलेश्वर अनंतवाही मदनजी मोनजीनो माळो गुंबई.

३४४ आत्मकमल ग्रंथमाला. हे. शा. सरुपचंद दोलतराम माणसा.

३४५ शेरचंद जुरट. जोधपुर.

३४६ आत्मानंद जैन ग्रं. माळा (जुओ नं. १७) भावनगर.

३४७ जैन मित्रप्रंडळ. देहली.

३४८ बीबी. ॲन्ड. महाश्रया कंपनी खारगेट. भावनगर.

३४९ श्री हेमचंद्राचार्य ग्रंथावली. (जुओ ३४८) भावनगर.

३५० छोटालाल नरभेरांम भट्ट. वडोदरा.

३५१ दोलतराम मगनलाल शाह. वडोदरा.

३५२ जैनविजय पेस. बजरगेट कोट ग्रुंबई.

३५३ जैन विद्याविजय प्रेस. रीत्रीरोड-अमदानाद.

३५४ मुलसागर गंथमाल आनु (जुओ १५३)

XVII

३५५ शा. फुलचंद गुलेखा. फलोधी.

३५६ शेरसिंह. रतलाम निवासी रतलाम.

३५७ गर्वनेमेन्ट सेन्टरल पेसमां सरकारी केळवणीखातामां संस्कृत अने पाकृत सीरीझ मुंबई.

३५८ डाह्याभाइ दीमतलाल. रावत. वडोदरा. अमदावाद.

३५९ जीवणलाल अमरसी महेता. मेनेजर ज्ञानवर्धक पुस्तकमाला

३६० जैन थे. आनंद वर्धक मंडल. उजैन.

३६१ दळपतरांम भाइशंकर. रावल. धांगद्रा.

३६२ नाराण हीराचंद कानुनी. मुंबई.

३६३ म्रुनि. अमरविजय जैन पाठशाळा गांम सीरसाळा. ता. आ-मलनेर. जी. खानदेश.

.३६४ शा. बाढीळाळ वर्धमानचंद.

३६५ शा. छालचंद चतुरदास जी. पुना गांप जूनेरवाला.

३६६ सेताबचंद नहार कलकत्ता. C/o गुलाबबाइ लायबेरी मीरर-

३६७ सरस्वतो सदन बनारस. [स्ट्रीट कलकत्ता.

३६८ ग्रुनि. रामविजय. अमदावाद. विद्याशाळा.

३६९ जैनसस्ती वांचनमाळा भावनगर.

३७० नागरदास केसवलाल शेट. कलोल. उत्तर गुजरात.

३७१ स्रजभान (सहरानभान) नं. ६३)

३७२ श्री हेमचंद्राचार्य ग्रंथमाला. (जुओ, २६) (सेकटरी जुओ

३७३ आत्मावीर सभा.

३७४ आत्मवीर ग्रंथमाला भावनगर.

३७५ मासाजी फताजी. खीवाणदी पारवाड.

३७६ रतीसास प्राणजीवनदास सुडीवासा इरीपूरा सुरत.

३७७ मास्तर शवचंद दामोदर शाह. मान्डल.

३७८ श्री रत्नसागरजी जैन स्कुळ. सूरत.

XVIII

- ३७९ आत्मानंद सभा अंबालाशहर पंजाब (सेक्रेटरी जुओ ३८०)
- ३८० गोपीचंद जैन. B A L L B. सेक्रटरी (नं. ३७९) अं-बाळाशहर पंजाब.
- ३८१ शा. वीसाजी बुबाजी मुंबई.
- ३८२ शा. दलाजी हरनाथजी कोठारी. मुंबई. [सुरतः
- ३८३ मास्तर चुनीलाल मेमचंद. ठा. गोपीपुरा खीमाभाइनी वाढी.
- ३८४ आद्य जैन धर्म प्रवर्त्तक सभा- अमद्वाद. टा. ग्रुसापारेख-नी पोळ.
- ३८५ जैन ग्रंथ प्रकाशक सभा अमदावाद. (जुओ नं. १८) ऑ. से. वाडीलाल बायुलाल.
- ३८६ शा. वाडीलाल बापुलाल टा. पांजरा पोळ अपदावाद.
- ३८७ गांघी कोदरलाल छगनलाल मु. वेजलपुर. जिल्ला. पंचमहाल. (स्टे. परसालीया.)
- ३८८ जैन ज्ञान प्रसारक मंडल मुंबई.
- ३८९ मनसुखळाळ इरीळाळ वेजळपुर. विजळपुर पंचमहाळ.
- ३९० कान्तिलाल महासुखराम नायंजी गांधी स्टे. परसाळीया
- ३९१ श्री रुपभदेवजी केसरीमलजी ठा बजावा रतलाप.
- ३९२ भार्वंदजी ग्रंथमाळा सांमलानी पोळ अमदावाद.
- ३९३ दिगंबर जैन पुस्तकालय लाहोर. पंजाब. बाबुझान चंद्र जैन. (जुओ ३९४)
- ३९४ बाबु ज्ञानचंद जैनी पुराणी अनारकली लाहोर.
- ३९५ '' श्री अभयदेव सरि ग्रंथमाला गुच्छक. '' कलकत्ता. मा-छिक स्ट्रीट कलकत्ता. (जुओ नं. ३९६)
- ३९६ कोठारी जमनालाल नं. २ मिल्लक स्ट्रीट कलकत्ता.
- ३९७ पृथ्वीराजजी रतनलालजी मुहुता. आकोला निवासी.
- ३९८ शा. चंदुलाल नांनचंद मास्तर ठा. झवेरीवाड अमदावाद.

IXX

३९९ पृथ्वीं रतनलाळजी मुद्रुता खामगाम बराड.

४०० यति बाळचंदजी केवळचंदजी खामगाम बराह.

४०१ ज्ञानवर्धक प्रस्तकालय अमदावाद.

४०२ अ. सौ. मणि मीसीस वर्धमान सरुपचंद. शेठ ईटर.

४०३ छगनलाल गोडीदास वकील सायला झालावाह.

४०४ शाह, कंकुचंद मुलचंद मुंबई चोपाटी पो. नं. ७

४०५ ,, ,, ,, पाटण.

४०६ तत्व विवेचक सभा राजनगर.

४०७ अमृतविजय रत्नविजय विजापुर गुजरात.

४०८ ग्रुनि छन्धिविजयजी.

४०९ इरीदास & C/o कलकता.

४१० रायबहादुर शेठ. सौभाग्यमधनी दहा. अनमेर.

४११ पनाळाळ जैन. (दि.) ग्रुंबई.

४१२ खुबचंदजी बंसीधरजी.

४१३ दळीपसिंह ज्हॉइरी (१-२ मळुआ बजार कळकत्ता.

४१४ शेठ. वीरचंद दीपचंद सी, आइ, इ, अने जे. पी. अमदाबाद.

४१५ पन्नालाल जैन. काशी.

४१६ शेट. मगनभाइ कपुरचंद पुनावाळानी विधवा समस्तवाइ पुना.

४१७ स्वर्गवासी ब्हेन नवळबाइ पोपटळाळ केवळचंद, मोरबी.

४१८ पोपटळाळ केवळचंद झवेरी मोरबी.

४१९ मोहनळाळ डासाभाइ इद्रकोट दोशीवाडानी पोळ अपदाबाद.

४२० आत्म तिलक ग्रंथ सोसाइटी जामनगर.

४२१ बीब्ळीओ थेका इन्हीका. कळकत्ता.

४२२ देवचंद सवाइचंद सणंदी वकील पाळणपुर.

४२३ संघसपस्त साचोर.

४२४ शा. पोपटकाळ अमृतकाळ पाठशाळा संभात.

XX

४२५ यराद संघ. शु. थराद.

४२६ शेठ. लखमीचंदजी अमीचंदजी पोरवाड वेंगलोर. (दिसणः)

४२७ मणिलाल नथुभाइ दोसी रतनपोळ अमदावाद.

४२८ उदयराज कोचर, फलोधी.

४२९ गांधी भूराभाइ ताराचंद. कपडवणज.

४३० यशोविजय जैन ग्रंथमाळा. बनारस. (जुओ नं. १४)

४३१ बहेरामजी महेरवानजी द।दाचानजी वीए मांडबी वडोदरा.

४३२ शा. मोहनलाल लन्छभाइ. थॉ. सेक्रेटरी. श्री पाटण जैन श्वेताम्बर संघाळुनी सरभरा करनारी कपीटीना.

४३३ श्री पाटण जैन श्वेताम्बर संघाळनी सरभरा कमीटी पाटण.

४३४ विद्याविजय मेस. भावनगर.

४३५ संघवी. शिवलाल झवेरचंद. देवसाना पाडे अमदावाद.

४३६ कृष्णलाल वर्मा, प्रेस, मुंबई.

४३७ जैन संसार ओफीस. ज्युबीळी बाग तारदेव मुंबई.

४३८ यति गुळाबचंदजी महाराज. उद्यपुर.

४३९ ज्ञा. बालाभाइ मुलचंद. सत्यविजय बंथमाला, रीचीरोड-

४४० काच्यमाळा. निर्णयसागर मुंबई. [अमदावाद.

४४१ शा. मंगळदास लल्खभाइ. सांमळानी पोळ अमदाबाद.

४४२ मोदनकालजी गंथमाला ग्रंबइ.

४४३ बाबु. चुनीळाल पन्नालालनी वि. परिन भीखीबाइ मुंबई.

४४४ चंदनबाइ जैन कन्याशाळा. मुंबई ठा. पायधुनि गो**ढीजीना** उपाश्रयमां

४४५ गुजरात धुरातत्व मंदिर ग्रंथावली ठे. एकीसब्रीज अमदावाद.

४४६ मुनि संपतविजयजी.

४४७ शारदाविजय गंथमाला.

४४८ शेट, नानजीमाइ पोपटचंद, खंभात.

XXI

४४९ शा. शिवजी देवशी. गहडा-काठीयावाद.

४५० इन्द्रलास्त्र शास्त्री, जयपुर,

[(जुओ ३२५)

४५१ परमश्रुत प्रभावकमंडल खाराकुवा नं २ मुंबई झवेरीबजार

४५२ खीमजी भीमसिंह माणेक. मांडवी शाकगली मुंबई.

४५३ शा. नरोतमदास रीखवचंद छाडवाशेरी राधनपुर.

४५४ विद्याशाळा दोशीवाटानी पोळ अपदावाद.

४५५ इटीसंग दामोदरदास. टा. झवेरीवाडे शेखने पाडे अमदाबाद.

४५६ माणेकळाळ नानजी भावनगर मास्तर. भावनगर.

४५७ संघवी गोमरा फतेचंद पोरवाड. शिवगंज.

४५८ शेंड. मोहनलाल मगनलाल दोशीवाडानी पोळ अमदावाद.

४५९ विद्यावर्धक गंथमाळा. दोशीवाडानी पोळ (४५४) बिद्या-शाळा अमदावाद.

४६० जैन धर्माभ्युदय ग्रंथमाळा (जुओ २७१, १४६) भावनगर.

४६१ श्री जिनदत्तसूर प्राचीन पुस्तकोधार फंड बुहारी.

४७२ पीताम्बर पन्नाजी शेठ. बुहारीनिवासी. बुहारी.

883 Messers Markert of Petters Leipzig.
(Seeburgstr 53)

४६४ इरखचंद भूराभाइ. बनारस.

४६५ शेठ आणंदजी पुरुषोतम ग्रंथमाळा. [अनदावाद.

४६६ पटेळ. विठलभाइ जीवाभाइ ठा. नागोरीसराय श्रवेरीबाट

४६७ '' पं. (सूरि) अजितसागर गणि शास्त्र संग्रह. '' शा. श्वांप-ळ्टास तळजाराम ठा. मोटो माढ प्रांतिज.

४६८ ज्ञा. शांमळदास तुळजाराम कापडीआ. मोटो माढ पांतिज.

४६९ मणिकाल न्यालचंद. अमदावाद.

४७० चुनीळाळ खनांची. सरदारपुरकी छावणी.

४७१ सनि चंद्रस्रि. मेवाड-जाळंपर.

XXII

४७२ शा. चुनीळाळ छगनदास मगनदास. आमळनेर.

४७३ लाळचंद नंदलाल वकील. कोठीपोळ-वडोदरा.

४७४ मुळचंद नथुभाइ वकील. भावनगर.

४७५ जैन इटोसींग सरस्वती सभा. सांपलानी पोळ अपदावाद.

४७६ अध्यात्म ज्ञान मसारक मंडल मुंबइ (जुओ नं. १५)

४७७ जैन ग्रंथमाळा समिति. मुंबई.

४७८ पंन्यास चारित्रविजय.

४७९ जैन विद्याशाळा. मुंबई.

४८० शास्त्री रांपचंद्र दीनानाथ सांकडीशेरीना नाके जितनी पोळ

४८१ मेसर्स. मगनळाळ C/o ग्रुंबई.

ि अमदावाद.

४८२ चकळदास सांकळचंद देवसानो पाडो अपदावाद.

४८३ जैन पाठशाळा. फलोधी.

४८४ लल्लुभाइ वल्यमदास बाह. झवेरीवाड अपदावाद.

४८५ लल्छभाइ वस्यमदास शाह. धोलेरा.

४८६ आनंदसागर मेस. दरबार धार.

४८७ शा. रवचंदभाइ गीरधरलाल फताशानी पोळ अमदावाद.

४८८ संघवी भोगीछाळ काळीदास. हाजापटेळनी पोळमां पाच्छा-नी पोळ अमदावाद.

४८९ सा. जे. मास्तर. नं. १९ छीपीचाळ मुंबई.

४९० झवेरी. फकीरचंद घेळाभाइ. सुरत.

४९१ भावसार गांडाळाल मानचंद वेळाणी. भावनगर.

४९२ सी. बाइ इरकोर शा. मोइनळाळ गोविंदजीनां धर्म पत्नि.

४९३ पंडित बहेचरदास जीवराज, वळा. [पाछीताणा.

४९४ शेठ. दल्लीचंद पीतांम्बरदास. मीयांगाम.

४९५ कीनारीवाला डाह्याभाइ काळीदास. सुरत.

४९६ रमेश्चचंद्र दत्त.

XXIII

४९७ गोरीशंकर हीराचंद ओझा. रायवहादूर टा. हिन्दी साहित्य मंदिर. इन्दौर सी. आइ.

४९८ हिन्दी साहित्य मंदिर. इन्दौर.

४९९ (कान्तिविजय ग्रंथमाळा) (जुओ १७)

५०० लालचंद एम. शाह. वहोदरा ऑ. से. (जुओ १४९)

५०१ प्रवर्त्तक कान्तिविजय जैन इतिहासमाला (जुओ १७)

५०२ अंबालाल जेटालाल ज्ञाह खंभात (जुओ ९२)

५०३ युवकोद्दय मित्रमंडलना प्रमुख लक्षमीचंद मेमचंद राधनपुर.

५०४ लक्षमीचंद वेपचंद. राधनपुर.

५०५ नरसीभाइ इश्वरभाइ पटेल. स्वराजमंदिर आणंद.

५०६ मित्रमंडळ, वेटलाद.

५०७ फार्बस गुजराती सभा. मुंबई (जुओ नं. ५०९)

५०८ फार्बस गुजराती सभा. ग्रंथमाळा ग्रुंबई (जुओ नं. ५०९)

५०९ रा. रा. उत्तमरांम केशवलाल त्रिवेदी बी, ए, ॲल, ॲल, बी. मोरारजी गोकलदास. चाल नं. ५ सेन्डइस्ट रोड ग्रुंबई.

५१० फुलचंद अग्रवाल. आबुरोड.

५१२ इिन्दी जैन ग्रन्थमाला. आबुरोड.

५१२ बाबु गंगापसाद. गुप्त काशी.

५१३ गोविंददेव शास्त्रि बनारस. प्रोफेसर संस्कृत कॉलेज.

५१४ भद्रशंकर जयशंकर शास्त्री. खंभात.

५१५ कलामकाशक पेस. मालेगाम धुळीआ.

५१६ नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अमदावाद.

५१७ किशोरलाल घनश्यामलाल मशस्त्राळा. ठा. राष्ट्रीय विद्या-मंदिर. सत्याग्रहाश्रय अमदावाद.

५१८ अवतारबीला लेखमाला. (जुओ नं. ५१६)

५१९ मणिलाक बाडीलाल, साणंद.

XXIV

५२० संभव जिन मंडळी. झवेरीवाड अमदावाद.

५२१ त्रिभोवनदास द्छपतभाइ वकीळ. पादरा.

५२२ मणिलाल मोइनलाल, पादरा,

५२३ भोगीलाल मनसुखराम.

५२४ छालाजी.

५२५ रणजीतसिंहजी.

५२६ अभयदेव सूरि ग्रंथमाला. (जुओ नं. ५२८) सुरत.

५२७ जिनदत्तसूरि ज्ञानभंडार (जुओ नं. ५२८) गोपीपुरा सीतलवाडी. जैन उपाश्रय. सुरत.

५२८ शा. पानाचंद भगुभाइ जिनदत्त सूरिना ज्ञानभंडारना कार्य-वाहक माळी फळीया सुरत.

५२९ कवि हेमराज. ग्रुंबई.

५३० भाइचंद कस्तुर गोपीपुरा सूरत.

५३१ पेमचंद रतनजो वीरजी शेठ. भावनगर.

५३२ गीरधरलाल इरजीवनदास बॅरना ब्यापरी. घोघा.

५३३ शा. मगनलाल नारणदास पाटण.

५३४ ,, ,, ,, ग्रंबई.

५३५ रायचंद जिनागम संग्रह अमदावाद. (जुओ २०९)

५३६ पंडित बहेचरदास. मुंबई.

५३७ शेठ. जवाहरलाल जैनी सिकन्दराबाद जिल्ला बुलन्दशहर.

৬২০ Johannes Hertel, In Commission dei Markert & Petters Leipzing Seeburgstr 53

५३९ अचरतलाल जगजीवन भावनगर. [ग्रुंबई.

५४० झवेरी सोभागचंद दोलतचंद नवी कापड मारकेटनी सामे.

५४१ शा. श्रान्तिदास बेनसी जामनगर. [नं. १४

५४२ मास्तर जेचंद नेणसी वोरा. ठा. नायगांम म्यु. स्कुल, ग्रंबई.

XXV

५४३ मुलसागर ज्ञानपचारक सभा छोहावट मारवाट. (जुओ

५४४ बाळुचंद्रनाय लाहोर.

[नं, ६८ १९)

५४५ वकील ल्हेरभाइ अणहीलपुर पाटण गुजरात.

५४६ क्षेमराज दखनदास मुंबई.

५४७ उकाभाइ शीवजी, ज्ञानदीयक छापलानाना मास्रीक ग्रुंबई.

५४८ ज्ञा. गंभीर ज्ञामजी मुंबई.

५४९ जैन एडवोकेट शी. त्रेस अपदावाद.

५५० पं. भगवानदास. सेखनो पाडो झवेरीवाड अमदाबाद.

५५१ जा. उमरसी रायसीनी वखारे. पोष्ट नं. ३ भात बजार मां-

५५२ ज्ञा. हीरालाल वर्धमान. अमदावाद. [डवी. ग्रुंबई.

५५३ आत्मकपल गंथमाला. खंभात.

५५४ वेगचंद अगरचंद ठा. जैन विद्यात्राळा. वांकानेर. राजपूताना.

५५५ जैन विद्याञ्चाळा. वांकानेर (जुओ ५५४)

५५६ पंडित कान्तीविजयजी (पंन्यास जोइए)

५५७ भीमजी इरजीवन (जुओ नं. ४४९)

५५८ सुशीळ.

५५९ जैन सस्ती वांचनमाला. भावनगर.

५६० मुखसागर गंथपाला. लोहावट.

५६१ देवचंद दामजी. कुंडळाकर. मालीक जैन भावनगर. (जुओ

५६२ मेसर्स. देवचंद अमरचंद. पाछीताणा. [नं. ४४)

५६३ पंडित. लालचंद एम शाह. वडोद्रा. (जुओ नं. ५००)

५६४ शेठ. वर्धमन स्वरुपचंद. इंडर. महिकांठा.

५६५ शिरपुरनो संघ शिरपुर.

५६६ संस्कृत कोलेज. काशी.

५६७ च्यास. पूनमचंद तनम्रुल वैध्य. ब्यावर राजपूताना.

५६८ जैन धर्मविजय पुस्तकालय. वीरमगाम.

XXVI

५६९ पं. हीराळाळ शर्मा. अमृतसर.

५७० लाला चुनीलाल दुग्गड. अपृतसर.

५७१ अंबालाल जेटालाल. वितामिण बजार. मू. खंभात.

५७२ मंछारांम घेलाभाइ " देशीमित्र " पत्रना अधिपति मुंबइ.

५७३ किलाभाइ घनश्याम.

५७४ डेकन कॉलेज, पुना,

५७५ जैन प्रंथोत्तेजक मंडळीना प्रमुख (जुओ नं. २००) मुंबई.

५७६ श्री खंभात सुबोधक पुस्तकालय. खंभात.

५७७ मंडनग्रंथ संग्रह ग्रंथो-हेमचंद्राचार्व ग्रंथावली पाटण. (ग्रन्या

५७८ (क्रु॰ नं. ५)

५७९ संस्कृत प्रधानाध्यापक इंगरकॉलेज, बीकानेर.

५८० आत्मवीर ग्रन्थावली. (जुओ ३७३)

५८१ पुरुषोतमदास जयमलदास. सूरत.

५८२ भोगीलाल सांकलचंद. वहोरा. वडनगर (गुजरात)

५८३ यति ज्ञानचंद्र अक्षयचंद्रजी. टा. पायघोणी श्री शांन्तिनाथ-

५८४ श्री लत्तर शर्म्भणा, बनारस. [जीना देरासरमां मुंबई.

५८५ इश्वरलाल करसनदास कापडिआ. सूरत.

५८६ टी, ए, गोपीनाय, राव, ॲम. ए. सुपीन्टेन्डेन्ट, ऑफ, आर्चीऑळॉजी त्रिवन्द्राम तान्जोर.

५८७ सरस्वनीविलास सीरीझ. त्रिवन्द्राम.

५८८ भगवानजी छुंबाजी (मारवाड) सियाना.

५८९ आत्मतिलक गंथ सोसाइटी रतनपोळ अमदावाद.

५९० भ्रवेरी बापुलाल चुन्नीलाल. पाटण.

५९१ बाढीलाल पानाचंद. पाटण.

५९२ मो. ॲल. सुएली. डी. पी. ॲच. (संशोधक).

५९३ शा. मंछुचंद कल्याचंद, सूरत.

XXVII

५९४ शा. चुन्नीळाल इकपचंद. अपदावाद.

५९५ माङ्गरोळ जैन सभा ग्रंथमाला. मुंबई.

५९६ शेट. चान्दमळ्जी. बेदका पुत्र जोगीराज बेद. फक्कोचि.

५९७ रामछालजी ठा. वडा उपाश्रय. बीकानेर.

५९८ जैन लक्ष्मी मोहनशाळा. ठा. वडा उपाश्रय. बीकानेर

५९९ तत्वदीपक मोहनमंडली. कलकत्ता.

६०० ,, ,, जैन पाठशाळा. ग्रुंबई.

६०१ श्री हीरजी इंसराज. मुंबई.

६०२ ताराचंद निहाछचंद. रतछाम.

६०३ शा. चंदुलाल छगनलाल. झांपडानी पोळ. अमदाबाद.

६०४ सनातन जैन. कार्यालय. मुंबई. (जुओ ४५१)

६०५ जैन मीन्टीन्ग वर्कस् लोगीटेड कोट मुंबई.

६०६ मनस्रखभाइ रवजीभाइ महेता. झवेरीबजार सुंबई.

६०७ मनसुखभाइ रायचंद वांचनग्रह. अमदावाद.

६०८ भभूतमळ. डी. सी. इ. आबुरोड सिरोही.

६०९ बी. पी. सिंधी. आबुरोड सिरोही.

६१० त्रणथुइनो संघ. सूरत.

६११ संभव जिनमंडळी छणसावाडे मोटीपोळ. अमदावाद.

६१२ गुजरात वर्नाक्युळर सोसाइटी. अपदावाद.

६१३ भोगीळाळ भीखाभाइ गांधी. हेडमास्तर. स्कूळ कढी.

६१४ वाडीळाळ पुरुषोतमः राणपुर काठीयावादः

६१५ शेठ. नागरचंद उजमचंदना वहीवटदार प्रेमचंद रतनचंद. कनासपाटा पाटण.

६१६ वकील मोहनलाल हीमचंद, पादरा.

६१७ श्री ज्ञानोदीपक पंडळी. लोहावट.

६१८ चीमनळाळ मेमचंद मोदी.

XXVIII

६१०	, जी	राज	मणसीं.	भावनगर.
	_	_		

६२० श्री वीरशासन आनंद समाज, पाछीताणा,

६२१ लल्लुभाइ गुलाबचंद झवेरी. ३०९ सराफ बजार संबई.

६२२ जीवदया ज्ञानप्रसारक फंड. ग्रुंबई (जुओ नं. ६२१)

६२४ ज्वाछात्रसाद्जी मुरादाबाद नीवासी.

६२५ पं. श्रीधर शिवलाल. ज्ञानसागर मी. मे. मुंबई पोस्ट माहिम. मु. श्री कृष्णगंज मुंबई.

६२६ पंडित बळदेवप्रसाद मित्र. ग्रुरादाबाद निवासी. ग्रुरादाबाद.

६२७ ए. जी. (जे.) सुनावाला बी, ए, अल, अल, बी.

६२८ डॉ. अंछ पी ट्रेसीटोरी.

६२९ भा. इरीलाल भिवलाल बी. ए.

६३० मगनलाल नगीनदास.

६३१ M. V. मोक्षाकर. (बल्लभ विजयना शिष्य.)

६३२ बीसनगर संग समस्त. वीसनगर.

६३३ मास्तर यदुराम हरिदास कोडाय. कच्छ.

६३४ जगजीवनदास केवळदास सूरत.

६३५ हरगोवन कालीदास अगदावाद.

६३६ जैन इंटोसींग सरस्वती सभा. शामकानी पोळ अमदाबाद.

६३७ मोतीकाल छगनलाल.

,

६३८ सांकळचंद वाढीलाल.

77

६३९ इरीलाल वाडीलाल.

**

"

६४० सरस्वती ग्रंथमाला. बनासर.

६४१ दामोदर गोविदाचार्य.

६४२ टायमंड ज्युविली. मीं. मेस. अमदावाद.

६४३ विचारामृत संग्रह.

६४४ मेड, क्षमीचंद अपरचंद, वेक्नगंज आगरा.

XXIX

- ६४५ प्रवर्त्तक कान्तिविजय जैन इतिहासमाळा. (जुओ १७) भा-
- ६४८ बाबुजी सुमेरमळजी सुराणा वीकानेर. वनगर.
- ६४७ ,, (जुओ नं. १०१) ,, मनोहरदासका कटरा.
- ६४८ शा. प्रेमचंद सांकळचंद घांचीनी पोळ. अपदावाद.
- ६४९ श्री मोहनलालजी जैन लायबेरी (पाठशाळा) अमदावाद.
- ६५० मोइनळाल ढाग्राभाइ सुरती. दोशीवाडानी पोळ. १९६९ अमदाबाद.
- ६५१ आत्मानंद जैन स्वेताम्बर महामंडलका द्वितीय अधिवेशन छुधियाना सीटी पंजाब.
- ६५२ माउनल भनसाली श्वेतापर जैन मालीक आर्ट प्रीन्टींग ब-कैस फतइपुरी देहली.
- ६५३ " साहित्य प्रकाशक मंडल " ना सेक्रटेरी जुओ. (६५४)
- ६५४ चुन्नीलाल चत्रभुज. जामनगर. [जामनगर.
- ६५६ " जैन ग्रंथावली. " का. भगुभाई फतेचंद्र. पेथापुर.
- ६५६ वीरसमान गंथावली अमदावाद. [मदावाद.
- ६५७ स्रघु जैन धर्म पर्वत्तक सभाना सेक्रेटेरी (जुओ ६५८) अ-
- ६५८ वाडीलाल मनसुखराम सेकेटरी ल. आ. जै. घ. स. गुसा-पारेखनी पोळ अमदावाद.
- ६५९ मोजाञ्चानी धर्मशाळा. " जैन धर्मशाळा श्रेयस्कर मंडळ " पाळीताणा. (जुओ ३३)
- ६६० पवर्त्तक कान्तिविजय जैनइतिहासमाला. (जुओ १७)
- ६६१ दोळतराम मगनछाल शाह. वडोदरा. [भावनगर.
- ६६२ पंडित जीवानंद विद्यासागर भट्टाचार्थेण प्रकाशितम नं. ९ भामसेट स्टीट कळकत्ता.
- ६६७ ज्ञारदाविजय मेस. भावनगर.

XXX

६६८ " जैन शासन " बनारस. (जुओ १२३)

६६९ ळींबडी संघ. (काठीयावाड)

६७० हरगोवन बहेचरदास. बनारस. वाराणसी काशी.

६७१ लालारांम शास्त्री, सूरत. (दि.)

६७२ पादरा संघ.

६७३ अमेरिकन ओरीऍन्टल सोसाइटी.

६७४ हरिभद्रस्टरि कृत ग्रंथमाला भावनगर. (जुओ नं. ६)

६७५ रोट. हवसीळाळजी पानाचंदजी बालापुर. आकोला. मुस्क

६७६ शिवानंद ग्रंथमाला पढडा. (जुओ नं. ४४९) [वराद.

६७७ अंग्लोबनियुलर पी. पेस. अपदावाद.

६७८ शाह. झवेर डाह्याभाइ घोलेरा वंदर.

६७९ ज्ञाह. देवसी डाह्याभाइ घोलेरा बंदर.

६८० " प्राचीन काव्यमाळा " गायकवाड वडोदरा.

६८१ हरगोवनदास द्वारकांदास कांटावाला वडोदरा.

६८२ रायबहादुर मायसिंहजी मेघराज कोठारी.

६८३ रोठ. कस्तुरभाइ लालभाइ दलपतभाइ. अमदावाद.

६८४ झवेरी कस्तुरचंद कल्याणचंद. मुंबई.

६८५ लालचंद हेमचंद सुखडीआ. मूरत.

६८६ " वॉरा. इठीसिंह झवेरचंद. सीरीझ " (नं. १७ जुओ.)

६८७ " जैन प्रभाकर " बनारस नानकचंद जती. [भावनगर.

६८८ आनंद मीन्टींग पेस भावनगर.

६८९ " जैन गंथावली " भावनगर. (जैन जुओ ४४)

६९० विवेकचंद ज्ञानमळ. धार.

६९१ उदयसागर छापखानुं धार.

६९२ ग्रुनि अनन्तकीर्त्ति दि. जै. ग्रं. मा.

६९३ " किञ्चोर पणिपाला. " भावनगर.

XXXI

६९४ शा. वाडीलाल मोतीलाल मुंबई. С/० शकराभाइ मोतीलाल

६९५ '' श्री आत्मानंद जय गंथमाला '' हभोइ. [ग्रुंबई.

६९६ " प्राचीन जैन काव्य संग्रह. " (जुओ नं. १६) मौक्तिक.

६९७ "गुर्जर साहित्योद्धार" (जुओ १६, ६९६ ग्रंथाङ्क, सूरत.

६९८ आनंद काव्यमहोदधि. (जुओ नं. १६)

६९९ श्रावक उमेदमल चंद्रभाणजी ऍन्दला गुडा ठा. चपनाजी डुंगार्जी. ठा. चीकपेट मु. बेंगलोर.

७०० पनोहरलाल शास्त्री.

७०१ जैन ग्रंथ उद्धारक कार्यालय मुंबई. ठा. खहरगली हौदावा-डी पोस्ट गीरगाम. मुंबई.

७०२ शेठ, खेमचंद फुलचंद सीनोर.

७०३ बाइ समरथ स्मारक माळा प्रणको. १ छो.) भावनगर.

७०४ ज्ञा. बह्लभजी हीरजी पोरबंदर.

७०५ ,, ,, कलकत्ताः

७०६ चोखंभा संस्कृता सीरिझ.

७०७ बाबु सुरजभानु वकील (दि.)

७०८ एसीआटीक सोसाइटी मुंबई.

७०९ " मुंबइ संस्कृत ऍन्ड प्राकृत सीरीझ " ए. सो. मुंबई.

७१० मुन्सी नाथुरांम लभेचुभाइ. लखनड.

७११ ज्ञा. अंबालाल गोवर्धनदास मंगळदास मारकीट चोथीगळी

७१२ शेठ वीरचंद दीपचंद अमदावाद. [ग्रुंबई.

७१३ ब्हेन सुरज भावसार मनसुखभाइ पुरुषोतमना पत्नि खेडा.

७१४ शा. लल्लुभाइ करमचंदनुं छापखानुं शिलानुं अमदावाद.

७१५ शा. सांकलचंद जेचंद. अमदावाद.

. ७१६ त्रीभोवन रुघनाथदास आकाशेठना कुवानी पोळ अमदावाद.

७१७ लल्छभाइ इश्वरदास ठा. मदनगोपालनी इवेली अमदावाद.

XXXII

७१८ " शिक्षा रत्नमाला " इन्दौर.

७१९ श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति इन्दौर.

७२० श्रावक इरशीभाइ देवराज कच्छ सरदीवाळा.

७२१ धुळजी गणेश. महेदपुर मालवा.

७२२ " धर्मदृद्धि प्रन्थमाळा " (जुओ नं. १४ ४७)

७२३ हरगोवनदास त्रीकमचंद राधनपुर.

७२४ शेठ चांपसीभारा C/o. लखमसी नेणसीनी दुकाने मांदवी पुल उपर मुंबई.

७२५ सागरचंदजी गुलाबचंदजी दहा.

७२६ माणेकलाल दीयाळजी भावनगरी. भावनगर.

७२७ माघवजी प्रेमजी तोरीवाळा.

७२८ दोलतचंद इकपचंद ग्रुंबई.

७२९ ''जैन ज्ञान मसारक मंडल'' ग्रुंबर ठा. सराफ बजार ग्रुंबर्र.

७३० कीर्त्ति प्रसादजी वकील मेरट.

७३१ डॉ. भूलणदास प्रभुदास.

७३२ राय लक्ष्मीपतिसिंह बहाद्र मुशिदाबाद.

५३३ आत्मानंद जैन सभा लाहोर पंजाब.

७३४ " जैन यूनीयन " जामनगर.

७३५ मणिशंकर इरगोविंद. भट.

७३६ बीरचंद राघवजी गांधी.

७३७ जवेरी नगीनदास लल्लुभाइ पायधोनी मुंबई.

७३८ कनार्टक मेस. मुंबई.

७३९ वेणीचंद सुर्चंद. महेसाणा.

७४० जैन सभा. तीवरी-मारवाड.

७४१ चुन्नीलाल पनालाल. ग्रुंबई.

७४२ चंद्रमभा यंत्रालय.

XXXIII

७४३ कालीदास वनमालीदास, अमदावादः ठाः मनसुखभाइनी स्कुलना हेडमास्तर.

७४४ कचराभाइ गुलाबचंद शाह. अमदावाद.

७४५ शा. रायचंद खुशाल. मुंबई.

७४६ बीसनगर जैन ज्ञानभंडार ग्रंथावली.

७४७ वींसनगर जैन ज्ञानभंडार समाज. टा. जैन उपाश्रय वीसनमर.

७४८ पुनमचंद आनंदमलजी वीकानेर राजपूताना.

७४९ खर्जी देसर. सायण-कच्छ.

७५० जुगराज सेटिया. सेटि बीकानेर.

७५१ वाडीलाल डाह्याभाइ पंडित. नवाद्रवाजा अमदावाद.

७५२ जैन सरस्वतीभवन, अमदावाद.

७५३ धर्म नीति ग्रंथावली (२) अमदावाद.

७५४ ऍज्युकेशन सोसाइटी पेस ग्रुंबई. भोंयखला (जुओ ७९५)

७५५ मनसुखलाल हरीलाल गांधी. गोधरा-(दाहोद)

७५६ नाथजी मनसुखलाल गांधी, गोधरा.

७५७ गांधी कान्तिलाल महासुखनाथजी वेजलबुर स्टे. खरसाळीया.

७५८ मास्तर कुंवरजी दामजी. बुद्धिसिंहजी जैनशाळा पाळीताणा.

७५९ कपुरचंद ठाकरसी. पालीताणा.

७६० शा. नगीनचंद झवेरचंद.

७६१ " जैन सुभेच्छक मंडळ. " वेंताळ पेट पूना.

७६२ रामगोपाल दुवे मुरादावाद.

७६३ होट. पाणेकचंद कुंबर, कुंडळा.

७६४ पीथालाल C/o शा. गुलाबचंद नगीनदासनी दुकाने सिमी

७६५ श्री पद्म जिनमैंडली. सागंद.

िगकी संबर्धः

७६६ शेंड चुनीकाल उमेदभाइ साणंद.

७६७ शेढ मंगळदास वालचंद साणद जुओ (नं १६३)

XXXIV

- ७६८ तस्व प्रकाशक सभा (नाम बदलीने) ग्रंथ प्रकाशक सभा नाम राष्ट्युं छे (जुओ नं. २१८) अमदावाद.
- ७६९ शा. वाहीलाल बापुलाल. पांजरापोळ-अमदावाद.
- ७७० " सत्यविजय ग्रंथमाला " (जुओ नं, ४३९) अमदावाद.
- ७७१ चाह. वाडीलाल मोतीलाल. (जुओ नं. २२७) अमदावाद.
- ७७२ हीराचंद कस्तुरचंद झवेरी. बावासिधि गोपीपुरा सुरत.
- ७७३ दोशी रामचंद जेठाभाइ.
- ७७४ सेवग सुगनचंद ठा. जैनमंदिर च्यारकमानका हैद्राबाद दक्षिण.
- ७७५ नेमिचंद्र यति. हैद्राबाद दक्षिण ठा. च्यारकमानका जैनमंदिर.
- ७७६ शा. भूरमळजी जीवाजी. जाळोर-मारवाड.
- ७७७ शा. सोमचंद इठीसींग बुकसेलर, हाजापटेलनी पोळमां ळां-
- ७७८ बोइरा मिश्रीमल जैन रतलाम. [बेसर अमदावाद.
- ७७९ शा. ककलचंद लल्लभाइ भावनगर.
- ७८० शेठ. रतनजी वीरजी भावनगर.
- ७८१ शेठ. मोतीचंद गीरघर कापडीया. भावनगर.
- ७८२ लक्षमीचंद ठा. कल्याणमल भडगना त्यां मोतींकटरा. अजमेर.
- ७८३ माणेकलाल घेलाभाइ वहोदरा.
- ८८४ इंसराज शास्त्री पश्चनन्दीय (पंजाबी) अपृतसर.
- ७८५ श्री आत्मानंद जैन सेन्टरल लायब्रेरी. अमृतसर पंजाब.
- ७८६ देवचंद दामजी. भावनगर.
- ७८७ " जैन सुभेच्छक मित्रमंडल " भावनगर. जुओ (इनामी नि-वंघो बहार पाडया छे) (नं. ७८६)
- ७८८ महादेव रामचंद्र जागुष्टे त्रण दरवाजा-अमदावाद.
- ७८९ भीमतरांम नवलरांम लक्ष्मीरांम ठा. वैद्यकिव दुर्लभक्ष्याम धु-वना कालकादेवी पर्तुं दवाखानुं बदामवाढी पासे ग्रुंबई.
- ७९० नाथुरांम प्रेमी. (जुओ नं.) ग्रुंबई.

XXXV

७९१ जी. अम. गेकटीवाला अन्ड. ब्रथ्स सूरते. बुकसेलर्स अन्ड

७९२ पण्डित कीर्तिविजय गणि. [कमीशन एजन्ट सूरत.

७९३ अमरचंद बहेचर. पाळीताणा.

७९४ मेमचंद जेठाभाइ राधनपुर,

७९५ मुंबई जुओ ७५४

७९६ Joh Kirste, Vienna विएना.

७९७ जैन धर्माभ्युदय ग्रंथमाला वडोदरा कोठीपोळ.

७९८ धन्तुळाळ सुचंति मु. बिहार.

७९९ मावजी दामजी शाह. भावनगर.

८०० ज्ञानपाल सेठिया. वीकानेर.

८०१ शा. रतनचंद लाधाजी. काविटा पेटलाद.

८०२ ज्ञा. झवेरभाइ भगवानदास, (पेटलाद) (काविटा,)

८०३ गुजराती भीं. पेस. मुंबइ.

८०४ शाह. दीपचंद छगनलाल बी. ए. भावनगर.

८०५ बाह. हरीछाछ छगनलाल. भावनगर.

८०६ शा. खीमचंद हीराचंद दलाल.

८०७ प्रभुदास अमरतलाल महेता बंसी (जुओ नं. ९३) भावनगर.

८०८ '' सनातन जैन ग्रंथमाळा '' ग्रंबई.

८०९ जिनविजयजी (जुओ ३६) अमदावाद.

८१० चंचळबाइनो ज्ञानभंडार. फताशानी पोळ हरकोर ग्रेटाणीनी हवेळी अमदावाद.

८११ मोहनळाळजी ळायब्रेरी ठा. काळुपुर रोट कागदीओळ फर-नान्डीझ ब्रीज पासे अमदावाद.

८१२ पं. मेघविजय शास्त्र भंडार. टा. विद्याशाळा दोशीवाडानी पोळ अमदावाद.

८१३ श्रीपूज्य नृपचंद्रजीनो जुनो ज्ञानभंडार. माळवा कुवळगढ,

XXXVI

- **८१४ भर्मध्यज (इस्त** लिखित मासीक) वीरतत्व प्रकाशक श्रीवपुरी.
- **८१५ मंडळना विद्यार्थी मंडल.** शीवपुरी गवालीयेर.
- ८१६ बुद्धिसिंह जैन पाठशाळा. पालीताणा.
- ८१७ चुनीछाल इकमचंद, अमदावाद.
- ८१८ फूलचंद इरीचंद दोसी. महुवाकर.
- ८१९ वर्जिंग विजयचंन्दजी सदाजी जैन, बागरा.
- ८२० मूळचंद बोहरा, अजमेर.
- ८२१ मदनचंद थाडीलाल, अजमेर,
- ८२२ मुंशी नवलकिशोर. सी.आइ.इ. पीं. पेस. लखनड कानपुर.
- ८२३ सोमचंद जेटालाल. अमदावाद ढाळनीपोळमां खाराकुवानीपोळ
- ८२४ शाहा उदयमल करयाणमल, ब्यावर.
- ८२५ आणंद्जी ताराचंद. जामनगर.
- ८२६ चोथमळ चुनीळाळ. झालोर-मारवाड.
- ८२७ मदास कोलेज. त्रो. अम. रंगाचार्य. मद्रास.
- ८२८ शा. फकीरचंद इश्वरदास, ठे. शिवलाल झवेरचंद संघवी दे-वसाना पाडा-अमदावाद. [नी पोळ.
- ८२९ दोलतचंद पुरुषोतमः बरोडीया-बी. ए. अमदाबादः ठेमळा-
- ८३० चुनीळाळ वर्द्धमान शाह. अमदावाद.
- ८३१ चीमनळाळ डाह्याभाइ, वडोदरा.
- ८३२ कृष्णलाल मोहनलाल झवेरी.
- ८३३ सुगनचंद श्रावणसुखा. वीकानेर.
- ८३४ रावत शेर्रासहजी जैन. कोटा.
- ८३५ श्रीपद् राजेन्द्र सूर्याभ्युद्यावळी. रतलाम.
- ८३६ शा. हेमचंद मोइनलाल चोकशी. बोरसद.
- ८३७ " चंद्रसिंहस्रि जैन मंथपाळा. "

XXXVII

- ८३८ इरगोवनदास मगनलाल शाह. " जैन मुधाराखाताना कार-
- ८३९ छगनकाळ उमेदचंद. भारी " मेसाणा.
- ८४० गीरधर इक्सचंद.
- ८४१ पाचीन सुभाषित संग्रह. (जुओ नं. २८३) कळकता.
- ८४२ पंडित. करुणाशंकर भर्मा. वांसवाडा. (राज्य दुंगरपुर)
- ८४३ झवेरी मनसुखलाल दोलतचंद. पाटण.
- ८४४ पंजाब संस्कृत प्रस्तकालय लाहोर.

ग्रंथोपलब्ध ग्राम स्थळ संख्या अकारादि

३ अजमेर. ३१९, ४१०, ७८२, ८२०, ८२१,

२ अजीमगंज, २४, १०५,

१४५ अमदाबाद राजनगर, ११, ३४, ३६, ४१, ४९, ५२, ६३, ६४. ७३, ८२, ९४, ९५, ९८, (९९-२३९) २६०, १०२, २०८, ११८, १२४, (१२९-१४७) १३५, १५५, १६५, १६९, २६३, (१७१, १९०) १७६, १७९, १८१, १८३. १८७. १८९, १९३. १९४, १९५, १९६, १९७, १९८, २०५, २०९, २१८, २१९, २२९, २२७, २३७, २४०, २४६, २५३, २५४, २५७, २५८, २९६–२९७, २९८. ३०५. ३१५. ३१८, ३२३, ३२३, ३२९, ३३२, ३४२, ३५३, ३५९, ३८४, ३८५, ३८६, ३९२, ३९८, ४०१. ४०२. ४०६. ४१४. ४१९. ४२७. ४३५, ४३९, ४४१, ४४५, ४५४, ४५५, ४५८, ४५९, ४६६, ४६८, ४७५. ४८०. ४८२, ४८४, ४८७, ४८८. ५१६. ५१७, **५१८, ५२०,** ५३५, ५४९, ५५०, ५५१, ५८९, ५९४, ६०२, ६०७-६११, ६१२, ६३५, ६३६, ६३७, ६३८, इ३९, ६४०, ६४१, ६४२, ६४८–६४८ अ, ६५०, ६५६ ६५७, ६५८, ६७७, ६८३, ७१२, ७१४, ७१५, ७१६. ७१७, ७४३, ७४४, ७५१, ७५२, ७५३, ७६८, ७६९, ७७०, ७७१, ७७७, ७८८, ८०९, ८१०, ८११, ८१२, ८१७.

- ४ अमृतसर-(पंजाब) ५६९, ५७०, ७८४, ७८५,
- १ आकोला बराद ३९७
- ९ आग्रा-१४, ३९, ४६, ४७, ५७, ७०, १२८, ६४४, ७२२

ixl

- १ आणंद ५०५
- ६ आबुरोड १५३, २६२, ३५४, ५१०, ६०८, ६०९
- २ आमळनेरु ३२०-४७२
- १ आरा २९४
- ४ इटावा ११६, २०४, ३१०, ३११
- २ इंडर ३२३, ४०२
- ९ इन्दौर ११२, ११३, १८५, १८६, ४९७, ४९८, ७१८,
- १ इलाहाबाद १२७

[७१९, ७२•

- १ उजैन ३६०
- १ उदयपुर ४३८
- ३ ओसिया ६८, ३४१
- १ अंनारा (.कच्छ) १३९
- ५ अंबाला बहेर ४८-१४८, ३३०, ३७९, ३९०
- १ कपडवणज ४२९
- १ कडी-ग्रुजरात ६१३
- २३ कलकत्ता ९, (२९-१४४), (७६–६३६) (१०१, ६४७) (१०४–२८४) १०७, १५६, २८३, ३६६, ३९५, ३९६, ४०९, ४१३, ४२१, ५९९, ६४७, ६६२, ७०५, ८४१
 - ? कलोल-गुजरात ३७०
 - १ काइपगंज २.
 - १ कानपुर ८८२,
 - १ कालीयावाडी २११.
 - २ काविटा-पेटलाट् ८०१, ८०२
 - १ कुंडळा ७६३
 - २ कोटा १२०-८३४
 - २ कोडाय (कच्छ) ८४-६३३

rl

- १ कोयबतुर २४५
- १ खाचरोद-(उजैन) १५१
- ३ खामगाम (प्रान्त वेरार) वराह २०३, ३९९, ४००
- १ खीवाणदी (मारवाड) ३७५
- २ खेडा ७९. ७१३
- ११ खंभात ९२, २१६, २३८, २४३, ४२४, ४४८, ५०२, ५१४, ५५३, ५७१, ५७६
 - १ गुजरातवाला (पंजाब) २७३
 - १ गुढा बाळोतरा (मारवाड) ३३८
 - ३ गोधरा २३१, ७७५, ७७६
 - १ घोषा ५३२
 - २ जयपुर ७२५, ४५०
 - ९ जामनगर ३२, १३४, १४०, ४२०, ५४१, ६५३, ६५४,
 - १ जाळंघर (मेवाह) ४७१

[७३४, ८२५

- २ जालोर-झालोर-(मारवाह)
- २ जोधपुर ३४१-३४५
- १ ठाणा ३२२
- ५४ ठेकाणां निर्धः मळेलां ९१, १२१, २०१, २२२, २४९, २५२, २६९, २७०, २७५, २८६, २७१, २९३, ३६४, ३६४, ३७१, ४०८, ४१२, ४४६, ४४६, ४४७, ४६५, ४९६, ५२३, ५२४, ५२८, ५३८, ५७३, ५९२, ६१८, ६२७, ६२८, ६२८, ६२८, ६३१, ६३०, ६४३, ६४४, ६७३, ६८२, ६२२, ७००, ७०६, ७०७, ७२७, ७३१, ७३५, ७३६, ७४२, ७६१, ७७३, ८०६, ७९२, ८३२, ८३७, ८३९, ८४०

१ दमोइ (वडोदरा) ६९५

xli

- १ तखतगढ २९८
- १ तीवरी-(मारवाड) ७४०
- २ त्रिवन्द्राम तान्जोर ५८६, ५८७
- १ यरा २८५
- १ यराद ४२५
- १ देवबंद (जील्ला सहरानपुर) ३३६
- ५ देहली, दील्ही, दिल्ली १५९, २२८, ३२१, ३४७, ६५२
- ३ घार ४८६. ६९०, ६९१
- १ ध्रांगद्रा (काठीयावाद) ३६९
- ४ घोलेरा २२४, ६७८, ६७९
- १ नहीआद २०८
- १ नहोद १९२
- १ नयानगर ९७
- १ नागप्र १६२
- १ पाचोरा २७२
- १२ पाटण २६, ३३१, ३७२, ४०५, ४३२, ४३३, ५३३, ५४५, ५७७, ५२०, ५९१, ६१५
 - ७ पादरा १५, १११, २६५, ५२१, ५२२, ६१६, ६७२
 - २ पाछणपुर २२०, ४२२
- १४ पाकीताणा ४, (६७, २२३) १४२, १६४, १९९, २०७, ५६२, ६२०, ६५९, ७५८, ८१६, ७५९, ७९३
 - ९ पूना ८, (८३, १५८), ८८, २६१, ३६५, ४१६, ५७४, ७६१
 - १ पेटलाद ५०६
 - १ पेयापुर ३१६
 - १ पोरबंदर-काठीयावाद ७०४

xlii

- १ प्रतापगढ ३०१
- रे पान्तीज १८४, ४६७, ४६८.
- ६ फळोघी २६७, ६८, ३५५, ४२८, ४२३, ५९६
- १८ बनारस ५६, ६९, १२५, १८०, २३६, २६८, २८७, ३६७, ४१५, ४३०, ४६४, ५१२, ५१३, ५६६, ५८४, ६६८, ६७०, ६८७
 - १ बायट (कच्छ) १६१
 - १ बाळापुर (जील्ला आकोळा वराड) ६७५
 - २ बास्टी (मारवाड) १५४, २५९
 - १ बिहार ७९८
 - २ ब्रहारी ४६१-४६२
 - २ बेंगलोर (दक्षिण) ४२६, ६९९
 - १ बोरसद ८३६
 - ३ ब्यावर (राजपूताना) ५, ५५७, ८८४
 - २ भरुच २५१, ३१३
- ५९ भावनगर ६, १३, १४, १७, ३०, ३१, ४४, ५४, ५५, ६५, ८६, ९३–९६, १२३, १३२, १३३, १७०, १७१, १७४, २७४, ३२४, ३२४, ३३७, ३४६, ३४८, ३४९, ३६९, ३७३, ३७४, ४४६, ४६०, ४७४, ४९९, ५३१, ५३९, ५५९, ५६१, ५८०, ६१९, (६४५, ६६०) ६६७, ६७४, ६८६, ६८८, ६८९, ६९३, ७०३, ७०२, ७२६, ७७९, ७८०, ७८१, ७८६, ७९९, ८०७, ८०४, ८०५,
 - १ मकसुदाबाद ३४०.
 - ३ मददा १०९, ४४९, ६७६.
 - १ मद्रास ८२७.
 - १ महुधा ३३२.

xliii:

- १ महुवा (काठीयावाड) ८१८.
- १ महेदपुर (माळवा) ७२१.
- ं ७ महेसाणा—मेसाणा ३३, ६१, १७३, १८८, २**२**९, ७३९, ८३८.
 - १ माणसा ३४४.
 - ३ माण्डळ ८५, १७८, ३७७.
 - १ माण्डवला (पोस्ट जाळोर) २८१.
 - १ मालेगाम घुळीया ५१५.
- - १ मुरादपुर (पटना) ५१.
 - ४ ग्रुरादाबाद २७४, ६२४, **६**२६, ७६२.
 - १ मुर्शिदाबाद ७३२.
 - १ मेरट ७३०.

xllv

- ३ मोरबी २९२ ४१७, ४१८.
- १ मंडवारीया (शिरोही) २४१.
- ८ रतलाम ३७, १००, २०६, ३५६, ३९१, ६०२, ७७८,८३५
- १ राजकोट १५०.
- १ राणप्र ६१४.
- ५ राघनपुर ४५३, ५०३, ५०४, ७२३, ७९४.
- २ लखनड ७१०, ८२२.
- ९ लाहोर ४२, (२०१, २४७), २४२, **२४**८, ३९३, ३९४, ५४४, ७३३.
- १ छीप्झीग् (जर्मनी) ४६३.
- १ छीम्बरी (काठीयाबार) ६६९.
- १ लुधियाना (पंजाब) ६५१.
- ५ छोहाबट १९, १८२, ५४३, ५६०, ६१७.
- १ वंडनगर ५८२.
- २५ वहोदरा १८, २२, २७, ७१, ८७, १३८, १४६, (१४९, ३२६) २३२, ३०९, ३५०, ३५१, ३५८, ४३१, ४७३, (५००, ५६३), ५०१, ६६१, ६८०, ६८१, ७८३, ७९७, ८३१.
 - २ वढवाण १४१, १५२.
 - १ बळाद-(अपदाबाद) २४४.
 - १ बागुरा (मारवाड) १५७, ८१९.
 - १ वाङ्कानेर ३३५.
 - १ वांसवादा ८४२.
 - १ विएना ७९६.
 - ४ विजापुर ६२, १०३, २७९ ४०७.
 - १ बीरमगाम ५६८.
 - १७ बीकानेर ४३, (७७, २१३), २१२, ५५४, ५५५, ५५६,

xlv

६५७, ६६८, ५७९, ५९७, ५९८, ६४६, ७४८, ७५०, ८००, ८३३.

- ४ वीसनगर १६७, ६३२, ७४६, ७४७.
- ४ वेजलपुर ९०, ३८७, ३८९, ७५७.
- १ वंथकी ३०७.
- १ शिरपुर ५६५.
- १ शिवगंज ४५७.
- ३ जीवपुरी (गवाछीयेर) ८१४, ८१५, ८१६.
- १ सरदारपुरकी छावणी ४७०.
- १ सागर (सी. पी.) २९५.
- १ साचोर ४२३.
- ८ साणंद ५८, १६३, १९१, ३०६, ५१९, ७६५, ७६६,७६७
- १ सादरा ३१६.
- १ सायण (कच्छ) ७४९.
- १ सायका ४०३.
- १ सायला (मरुधर) २८०.
- १ सिकंदराबाद ५३७.
- १ सियाना (मारवाड) ५८८.
- २ सीनोर २०, ७०२.
- १ सीरसाळा ३६४.
- ३३ स्रात १, ३, १६, २१, ५०, १२६, १२, १३०, १७५, २२५, २३३, ३१७, ३२८, ३७६, ३७८, ३८३, ४९५, ५२६, ५२७, ५२६, ५२०, ६३४, ६७१, ६८५, ६९६, ६९७, ६९८, ७७२, ७९१.
 - १ सैळाना २३०.
 - १ सोजत (मारवाड) २६४.
 - १ सोकाप्रर ४५.
 - ३ हैदराबाद (दक्षिण) ३३४, ७७४, ७७५.

xlvi

आखी सीरीजो जोवालायक प्रन्यमालाओ.

आ वंश्यमाळाओना मथाळे के नंबरो आपेळा छे तेनां संपूर्ण ॲड्रेस (सोरनामु) जोवा माटे छे. जुओ ग्रंथोपळब्यस्थान-ना नंबरो.

- २५ विजयकमलकेसर ग्रन्थमाला मुंबई.
- १४ यशोविजय जैन ग्रन्थमाला भावनगर.
- ४८ आत्मानंद जैन ट्रेकट सोसाइटी अंबाला शहेर.
- ५५ शारदाविजय ग्रन्थमाला मुंबई.
- ५६ जैन विविध साहित्य शास्त्रपाला. बनारस. २२३
- ६५ त्रिभोवनदास भाणजी स्मारक ग्रंन्थमाला. भावनगर.
- ६६ मुक्तिकमल जैन मोइनमाला, पालीताणा.
- ६८ रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला. ओशिआ.
- ६९ सरस्वती ग्रन्थमाला. बनारस.
- ७३ दयाविमल ग्रन्थमाला. अमदावाद.
- ७७ अभयदेवसूरि ग्रन्थमाला. वीकानेर. २१३
- ७८ खरतरगच्छ ग्रन्थमाला. मुंबई.
- ८१ माणिक्यचंद दि. जैन ग्रन्थमाळा. मुंबई
- ८३ जैन साहित्य संशोधक समिति. पुना.
- ८६ अ. सो. बाइ रुपाळी. स्मारकमाळा. भावनगर.
- ८७ आठले संस्कृत गुजराती भाषान्तर ग्रन्थमाला. बढोदरा.
- ८९ चुनीलाळ प्रन्थमाला. मुंबई.
- ९१ सद्विचार पुस्तकमाळा.
- ९३ न्युतन साहित्यमंदिर.
- १०७ आत्मवीर ग्रंन्थमाला. कलकत्ता.
- १३३ उत्तमचंद गीरधर कापडीआ. स्मारकमाळा. भावनगर.
- १३८ गायकवाड ओरीॲन्टळ सीरीझ. वडोदरा.

xlvii

१४० अंचळगच्छ स्थापक आर्यरक्षितसूरि पुस्तकोद्धारखातुं जामनगर

१४२ शेठ. वसनजी त्रिकमजी जे. पी. ग्रन्थमाला. मुंबई.

१४८ आत्मकमळ जैन ग्रन्थमाळा अंबाला. पंजाब.

१५३ हिन्दी साहित्य ग्रंथावळी. आबुरोड.

१६६ साहित्य ग्रन्थ समुचय. निर्णयसागर. मुंबई.

१६८ सरकारी केलवणीखातुं. ग्रुंबई.

१७० कान्तिविजय ग्रंथमाला. भावनगर.

१७२ कान्तिविजय जैन इतिहासमाला, भावनगर,

२१६ जैन विद्याशाळा, खंभात.

२२२ सनातन जैन ग्रंन्थमाला.

२२६ ज्ञानवर्धक पुस्तकमाला.

३०७ वंथकी जैनशाळा.

३१५ सत्यविजय ग्रंन्थमाला. अमदावाद.

३२४ धर्मवृद्धि ग्रंथमाला. भावनगर.

३२५ रामचंद्र जैन शास्त्रमाळा. अमदाबाद.

३२७ सागरगच्छना उपाश्रयनी सीरीझ. सुरत.

३३१ हेमचंद्राचार्य गंथावळी. पाटण.

३३६ जैनधर्म प्रचारक पुस्तकालय.

३३७ जैन धर्माभ्युदय ग्रंथमाला.

३४१ रत्नवभाकर पुष्पमाला ओसीया.

३४४ आत्मऋमळ ग्रंथमाळ, माणसा.

३४६ आत्मानंद जैन ग्रन्थपाला. भावनगर.

३४९ हेमचंद्राचार्य ग्रंथावळी. भावनगर.

३५४ सुखसागर ग्रन्थमाला. आबु.

३५७ गवर्नमेन्ट सॅन्ट्ल प्रेस. सरकारी केलवणी खातामां संस्कृत अने प्राकृत सीरीज.

xlviii

१५९ ज्ञानक्षेक पुस्तकमाला. अमदावाद.

३६३ म्रनि अमरविजय जैनपाठवाळा. सीरसाळा.

३६९ जैन सस्ती वांचनपाला. भावनगर.

३७४ आत्मवीर ग्रंथमाला.

३९२ भातृचंद्जी प्रन्थमाला. अमदावाद.

३९५ अभयदेवसूरि ग्रन्थमाला. कलकत्ता.

४२१ बीव्लीओथेका इन्हीका. कलकत्ता.

४४० काव्यमाला (निर्णयसागरना.) ग्रुंबई. काव्यमाला बोजी छे (ठेकाणुं जणायुं नयी.) गुच्छक ७ जणावा छे.

४४२ मोहनलालजी ग्रन्थमाला. ग्रुंबई.

४४५ गुजरात पुरातत्व मंदिर प्रम्थावली. अमदावाद.

४४७ ज्ञारदाविजय ग्रन्थमाला.

४५१ परमश्रुत प्रभावक मंण्डल, ग्रुंबई.

४५९ विद्यावद्धेक प्रन्थमाला, अपदावाद.

४६० जैन धर्माभ्युदय ग्रन्थमाला. भावनगर.

४६५ रोट. आणंदजी पुरुषोतम ग्रन्थमाला.

४७७ जैन ग्रन्थमाळा समिति. ग्रंबई.

४७९ जैन विद्याशाळा. ग्रुंबई.

४८३ जैन पाठशाळा. फलोधि.

५०८ फार्बस गुजराती सभा प्रन्थमाला. मुंबई.

५११ हिन्दी ग्रन्थमाला. आबुरोड.

५१८ अवतारलीका लेखमाळा. अमदावाद.

५२६ अभयदेवसूरि ब्रन्थमाला. स्रत.

५३५ रावचंद्र जिनामम संग्रह अमदावाद.

५३२ आत्पकमछ ग्रन्थमाळा, खंभात.

xlix

५७७ पंदनग्रन्थ-संग्रहना ग्रन्थो.

५८७ सरस्वतीविलास सीरीझ् तान्जोर.

६४३ विचारामृत संग्रह.

६७४ इरिभद्रसूरिकृत ग्रन्थपाला.

६७६ शिवानंद ग्रंन्थमाला.

६८६ व्हारा. इठीसींग झवेरचंद सीरिझ्.

६८९ जैन ग्रन्थावली. भावनगर.

६९२ म्रुनि अनन्तकीर्त्ति. दि. जै. गं. मा.

६९३ किशोर मणिमाला.

६९५ आत्मानंद जय ग्रन्थमाला. हभोई.

६९६ प्राचीन जैन काव्य संग्रह.

६९७ गुर्जर साहित्योद्धार.

६९८ आनंदकाव्य महोद्धि. सुरत, (आगमोद्य समिति.)

७०३ बाइ समर्थ स्मारकमाला.

७०६ चोखंभा संस्कृत सीरिझ्.

७०९ संस्कृत ॲन्ड पाकृत सीरिश् ए. सो. धुंबई.

७१८ शिक्षारत्नमाला इन्दौर.

७२२ धर्मद्दद्धि ग्रन्थमाला. आग्रा.

७४७ वीसनगर जैन ज्ञानभंडार ग्रन्थावस्त्री.

७५३ धर्मनीति ग्रन्थावली.

७७० सत्यविजय ग्रन्थमाला. अपदावाद.

७९७ जैन धर्माभ्युद्य ग्रन्थमालाः वहोद्राः

८०८ सनातन जैन ग्रंन्थमाला ग्रुंबई.

८३७ चंद्रसिंहसूरि. जैन ग्रन्थपाला.

८४१ पाचीन सुभावित संग्रह, कळकत्ता.

1

पुस्तक प्रसारक संस्थाओ.

५ जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय ब्यावर.

६ जैन धर्म प्रसारक सभा भावनगर.

७२ हिन्दी जैन कार्यालय मुंबई.

१०६ जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय (दि.) मुंबई.

१४३ जैन धर्म विद्या प्रसारक वर्ग पालीताणा.

४९८ हिन्दी साहित्य मन्दीर.

६०४ " सनातन जैन " कार्यालय.

७०१ जैन प्रन्थोद्धारक कार्यालय.

७०८ एसीयाटीक सोसाइटी ग्रुंबई.

७१९ मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति इन्दौर.

८१६ बुद्धिसिंह जैन पाठशाळा.

जैन ग्रन्थ वेचनार बुकसेलरो तथा बीजी संस्थाओ.

७ श्रावक भीमसिंह माणेक मुंबई.

९ पंडित काञ्चीनाथ जैन कलकत्ता.

१० निर्णयसागर-प्रेस ग्रुंबई.

१५ अध्यात्म ज्ञानप्रसारक मंडल पादरा.

६ जैन धर्म प्रसारक सभा भावनगर.

१६ शेड. देवचंद लालभाइ पुस्तकोद्धार फंड सुरत.

१७ आत्मानंद सभा भावनगर.

१८ म्रक्तिकमल जैन मोइनमाला वडोदरा.

१९ रत्नप्रभा ज्ञान पुष्पमाला लोहावट.

२४ राय धनपतिसिंह बहार्र की कोठी अजिमगंज.

२७ देशी केलवणी खातुं वडोदरा.

२८ आगमोदय समिति सुरत (मुंबई)

li

- २९ एसीयाटीक सोसाइटी बॅन्गाल कलकता.
- ३३ जैन श्रेयस्कर पंडल मेसाणा.
- ३७ अभिधान राजेन्द्र कार्यालय रतलाम.
- ४२ पंजाब युनिवरसीटी लाहोर.
- ४३ शेठिया जैन ग्रंथालय वीकानेर.
- ४९ गुजरात वर्नाक्युलर सोसाइटी अमदावाद.
- ५३ कॉन्फरन्स ओफीस मुंबई.
- ६० मेघजी हीरजी मुंबई.
- ८२ शा. बाळाभाइ छगनलाल अमदावाद कीकाभटनी पोळ.
- १४५ जैन विद्याशाळा.
- १५३ हिन्दी साहित्य कार्यालय आबुरोड.
- २१७ स्याद्वाद रत्नाकर कार्याख्य (दि.) ग्रुंबई.
- २९४ जैन सिद्धान्त भवन आरा (दि.)
- ४५२ खीमजी भीमसिंह माणेक ग्रुंबइ.

मंडळो.

- ३५ अध्यात्म ज्ञान मसारक मंडळ. (१५) पादरा.
- ३९ आत्मानंद जैन प्रस्तक प्रसारक मंडल. आगरा.
- ६४ ज्ञानप्रसारक मंडल.
- ७० विजय धर्मसूरि मंडल.
- ८० तस्व दीपक मोइनमंडळी.
- ११२ जैन स्वयं सेवक मंडळ मारसळीगळी इन्दौर.
- १२६ " जीवद्या प्रबोधक मंडल. " सुरत.
- १३१ जैन ज्ञान प्रसारक मंदळ मुंबई.
- १३२ जैन " मिन्नमंडळ " भावनगर.
- १५४ भी महावीर नव युवक मंडल. बाली.

锆

१६३ जैन युवक मंदछ, साणेद,

१७३ जैन भावमकाशक मंडली. मेसाणा.

१७८ जैन मित्रवंडळ. मान्डळ.

१८३ जैन युवक मित्रमंडल. लोहावट-मारवाड.

२१५ कापड मारकेट वेपारी जैन मंडळ.

२२८ आत्मानंद जैन पुस्तक पचारक मंडळ. दिल्ही.

२३० ज्ञानवर्धक जैन मित्रमंडल. सेलाना-माळवा.

२३७ महावीर जिन मंडली. अपदावाद.

२६२ हिन्दी साहित्य ग्रन्थपाछा. आबु.

२८९ जैनधर्म विद्या प्रसारक मंडल. मुंबाई.

३१३ जैन सुभेच्छक मंडळ. सुंबई.

३४७ जैन मित्रमंदल, देहली.

३६० जैन स्वेताम्बर आनंद वर्धक मंडळ उजेन.

३८८ जैन ज्ञान प्रसारक मंडल. मुंबई.

५०३ युवकोदय मित्रमंडल. राधनपुर.

५०६ मित्रमंडळ पेटळाद्.

५२० संभव जिन मंडळी. अमदावाद.

५७५ जैन ग्रन्थोत्तेजक मंडळी. ग्रुंबई.

५९९ तत्वदीपक मोहन मण्डली. कलकत्ता.

६०० तस्वदीपक मोहन मण्डली. ग्रुंबई.

६११ संभव जिनमंडळ छणसावाडे मोटीपोळ अमदावाद.

६१७ ज्ञानोदीपक मंडळी लोहावट.

६२० वीरशासन आनंदसमाज. पाळीताणा.

६२३ जीवदया ज्ञान प्रसारक मंडळ.

६११ आत्मानंद जैन श्वेताम्बर महामंदल, लुधियाना.

६५३ साहित्य प्रकाशक मेटळ. जामनगर.

hii

६५५ जैन ग्रन्थावली.

६५६ वीरसमाज प्रन्थावली.

७२९ जैन ज्ञानमसारक मेडल. मुंबई.

७३३ आत्मानंद जैन सभा लाहोर.

७३४ जैन युनियन. जापनगर.

७४० जैन सभा. तीवरी.

७६१ जैन सुभेच्छक पंडल. प्रना.

७६५ श्री पद्म जिन मंडळी. साणंद.

७८७ जैन सुभेच्छक मंडल. भावनगर.

८१४-८१५ वीरतन्त्व प्रकाशक मंदल तेतुं विद्यार्थी मंदल.

सभाओ समाजो सोसाइटीओ.

मयाळे आपेळा नंबर प्रमाणे ग्रंथोपळब्धस्यानमां जोवायी तेनो पुरेषुरो पत्तो मळशे.

२६ हेमचंद्राचार्य सभा पाटण.

४८ आत्मानंद जैन देकट सोसाइटी अंबाला शहेर.

५४ जैन धर्म हितेच्छु सभा भावनगर.

७९ खेडा जैनोदय सभा खेडा.

८८ आत्मतिलक ग्रन्थ सोसाइटी पुना.

९२ महावीर जैन सभा खंभात.

९३ वीरसमाज.

१२५ जैनतत्व काशीनी सभा कळकता.

१७४ साहित्य सेवा समाज भावनगर.

१८६ आत्मोन्नति सभा.

१८७ जैनतत्व विषेचक सभा अपदावाद.

१९१ जैनोदय बुद्धिसागर सभा साणंद.

२०४ जैनतस्य प्रकात्रिनी सभा इटावा.

liv

२१८ जैन मंय प्रकाशक सभा अपदावाद.

२१९ जिनागम प्रकाशक सभा अमदाबाद.

२२० श्रों विद्योत्तेजक सभा पालणपुर.

२२४ जैन ज्ञान इच्छक सभा घोलेराः

२५० जैन फ्रेन्डली सोसाइटी ग्रुंबई.

२६१ आत्म तिळक ग्रन्थ सोसाइटी प्रना.

२८८ जैन ॲसोसीएशन ओफ इन्डीआ मुंबई.

३०६ जैन बोध बुद्धिसागर सभा साणंद.

३२२ " जैन श्रेयस्कर वर्ग " ठाणा.

३३० आत्मानंद जैन सभा अंबाला शहर पंनाब.

३७३ आत्मवीर सभा भावनगर.

३७९ आत्मानंद सभा अंबाला पंजाब.

३८४ आद्य जैन धर्म प्रवर्त्तक सभा अमदावाद.

४०६ तत्व विवेचक सभा राजनगर.

४२० आत्म तिळक ग्रन्थ सोसाइटी जाभनगर.

४७५ जैन हठीसींग सरस्वतीसभा अपदावाद.

५०७ फार्बस गुजराती सभा ग्रुंबई.

५४३ सुख सागर ज्ञान प्रचारक सभा छोहावट.

५८९ आत्म तिळक ग्रंथ सोसाइटी रतनपोळ अमदाबाद.

५९५ माङ्गरोल जैन सभा ग्रुंबई.

६५७ छघु जैन धर्म पर्वत्तक सभा अमदावाद.

६७३ अमेरीकन ओरीएन्टळ सोसाइटी.

७६८ तन्त्र मकाशक सभा अमदावाद.

कॉन्फरन्स.

१८५ यति कॉन्फरन्सः जैन श्वेतापर कॉन्फरन्सः

lv

ज्ञान-पुस्तक भंडारो.

अमदावाद १ थी २२

- १ पुरातत्व मंदिर-रायचंद्र तथा महात्मा गांधी विगेरे अने विद्वा-नोनी पसंदगीना कीमती पुस्तकोनो संग्रह. (जुओ नं. ३६)
- २ जिनविजयजी-पासे अनेक सोघो करीने संग्रह करेकां पुस्तको, चित्रपटो, शिकालेखो, अने जुदी जुदी कायब्रेरीओ झानभंडा-रोनां कीष्ट के. (जुओ ८०९) खंभात शा. नगीनदास करम-चंदना ताडपत्रना भंडारनुं कीष्ट तेमनी पासे के. पूनामांथी मास्तर कक्षमीचंदे आपेलुं के.
- ३ वकील केसवलाल पेमचंद मोदी-अंग्रेजी, फेन्च, जर्मन, तेमज आर्य देशीय प्राकृत-संस्कृत, गुजराती, हिन्दी, विगरेनो संग्रह होवा उपरांत आधुनिक विदेशीय, तथा आर्यवृत्तना जुदा जुदा धर्मना अनेक आचार्यों साधुओ, अने विद्वानोनी साथ घणोज घाढो संबंध धरावे छे. (जुओ नं. ६३)
- ४ विद्याशाळामां त्रण भंडार (जुओ नं. १५५)
- ५ डेळाना उपाश्रयनो श्रेष्ट इस्तिकिखित गृंथनो भंडार शेठ. मंग-ळदास ताराचंद झवेरी दोसीवाडानी पोळमां.
- ७ इंसविजय महाराजनी लायबेरी (जुओ नं. ५२)
- ८ मोइनळाळजी महाराजनी ळायब्रेरी (जुओ नं ८११)
- ९ चंचळबाइनो भंडार (८१०) शेठ उपाभाइना घरवाळां चंचळ-बाइ फतासानी पोळ. अपदावाद.
- १० वर्द्धपान पुस्तकालय (जुओ नं. ३२३)
- ११ पैन्यास मेघविजय शास्त्र भंडार (जुओ ८१२)
- १२ कुसुमम्रुनिनो ज्ञान भंडार (जुओ १६९)
- १३ विजयनेमि सूरिनो ज्ञान भंडार पांजरापोळ.
- १४ बीरविजयनो ज्ञान भंडार वीरना उपाश्रय ठाः भद्वीनी बारी.

lvi

- १५ दया विमळजीनो ज्ञान भंडार. छिखित तथा मुद्रितनो.
- १६ उजनबाइनी धर्मशाळामां आचार्य कमलविजयनो लिखितम्रद्रित.
- १७ विमळगच्छना उपाश्रयनो भंडार ठा. काळुसीनी पोळ अमदा-बाद कवाटमां डा. १८ गंथ संख्या ५६४-५५५ छे.
- १८ विपळगच्छना उपाश्रयनो भंडार. टा. हाजापटेलनी पोळ उ-पाश्रयनो. डा. ४२ ग्रंथ संख्या १४९६
- १९ ,, उद्योत विमळजी गणीना पटारा वे नं. १ मां डा. १५
- २० रायचंद्र साहित्यमंदिर. (जुओ ९९)
- २१ जैन सरस्वती भवन (७५२)
- २२ ज्ञानवर्द्धक पुस्तकालय. (४०१)

अमृतसर. (२३)

२३ श्री आत्मानंद जैन सेन्टरल लायब्रेरी-पंजाब आग्रा. (२४)

२४ विजय घमें छक्ष्मी ज्ञान मंदिर बेलनगंज आग्रा. छ इजार लिखित गंथनो भंडार छे. फुलचंद हरींचंद क्यूरेटर आनी साथे श्री लक्ष्मीचंदजी जैन लायबेरी जोडाइ गइ छे. (७८५)

आमोद. (२५)

२५ इस्तक्रिस्तित भंडार छे यतिना कबजामां छे आमोद (भरुचपासे) आहोर. (२६)

२६ शेठ गोडीदासजी वाघमलजी एरणपूरा स्टेशन.

कळकता. (२७-२८)

२७ गुळाबकुमारी ळायब्रेरी.

२८ पूरणचन्द्र नहार वकीलनी लायब्रेरी.

कुश्चळगढ. (२९)

२९ श्री पूज्य नृपचन्द्रजीनो जुनो भंडार. (जुओ नं.८१३) (दंत-क्या प्रमाणे ग्रुगळाइ संसर्गथी अस्पर्श्वित.) कुशळगढ.

lvii

डुंगरपुर, (३०)

३० वडगच्छना श्री पूज्यजीनो जुनो भंडार **डुंगरपुर.** कोटा, (३१)

३१ कोटानो ज्ञानभंडार संघनी देखरेखमां छे. कोडाय (कच्छ,) (३२)

- ३२ संघनो भंडार त्यांना संघनी देखरेखमां छे. कोडाय-कच्छ खंभात. (३३-३७)
 - ३३ श्री शान्तिनाथना मंदिरनो जुनो मंदार. नाहपत्रनो पोटो नगीनदास शेटनो खंभात.
 - ३४ श्री खंभात सुबोधक पुस्तकाळय. (४०१)
 - ३५ शेट. पोपटभाइ अवरचंदनो ज्ञान भंडार. (जैन शाळा)
 - ३६ विजयनेपिसरिनो ज्ञान भंडार.

जैसलमेर. (३७)

३७ आ भंडार त्यांना संघनी देखरेखमां छे जेसलमेर. जामनगर. (३८)

३८ म्रुनि विनयविजयनो भंडार छे. संघनो ज्ञान भंडार संघनी देखरेखमां छे जामनगर.

देवबंद (३९)

- ३९ देवबंद जि.सहरानपुर जैनधर्म प्रचारक पुस्तकाळय(३३६) पाटण. (४० थी ४७)
- ४० (१) झवेरीवाडामां श्री पार्श्वनाथजीना भंडारना नामे ओळलाय छे अने ते वाडीछाछ हीराचंदनी देखरेखमां छे.
- ४१ (२) संघवीपाडानी लोढीपोसाळना उपाश्रयनो भंडार छ अने ते पाटवानी देखरेखमां छे.
- ४२ (३) फोफळियावाडानी आगली शेरीनो भंडार छे ते हालाभाइ शेटनी देखरेखमां छे.

lviii

- ४३ (४) फोफळियावाडानी वलतजीनी शेरीमां संघनो जुनो भंडार छे अने ते संघनी देखरेखमां छे.
- ४४ (५) फोफळियावाडानी वखतजीनी शेरीमां संघनो नवो भंडार छे अने ते संघनी देखरेखमां छे.
- ४५ (६) झवेरीवाडामां शा. चुनीळाळ मूळचंदनो घर भंडार छे अने ते तेमनीज देखरेखमां छे.

आ भंडारोनुं छीष्ट गायकवाड सरकार तरफथी तैयार ययुं छे. योडा वखतमां छपाइने बहार पडरो.

- ४६ (७) पूर्णिमागच्छीय श्रीपूज्यनो अपूर्व अलभ्य लिखित कागळ तथा ताडपत्रनो भंडार.
- ४७ (८) तपगच्छीय विजय शाखानो ज्ञान मंडार.

पूना. (४८ थी ५०)

- ४८ (१) भांडारकरनो जुनो भंडार जे फरग्युसन रोड तरफ छे जेमां डेकन कॉलेजनो अने भंडारकरनो एम वे भंडार एकत्र छे.
- ४९ (२) पं. जिनविजयनी (जुओ अमदावादना भंडारो)
- ५० (३) रॉयलएसीआटीक सोसाइटी. पुना (सरकारी).

भान्तीज. (५१)

५१ अजितसागरसूरि शास्त्र संग्रह. (४६७)

बनारस. (५२)

- ५२ संस्कृत कॉलेज-जैन अने हिंदुधर्मनां हस्त लिखित गंथो सरकारना हुकमथी खरीचांतेनां लीष्ट.
 - (१) इ. सने १८९७ थी १९०२ सुधीनुं वॉल्युप.
 - (२) ,, १९०४ थी १९०६ ,, ,,
 - (३) ,, १९०९ यी १९१६ ,, ,, अल्हाबाद.
 - (४) ,, १९०२ थी १९०४ ,, ,,

lix

- (५) ,, १९०५ थी १९०७ ,, ,,
- (६) ,, १९१० थी १९१७ ,, ,,

भावनगर. (५३ थी ५५)

- ५३ (१) जैनधर्म प्रसारक सभा-पासे सं. १९७७ नी साळ सुधीमां ६३ इस्त लिखित पुस्तको तथा १७०६ छापेळां पुस्तको छे. ते शीवाय इतर पुस्तकोनो सारो जथ्यो छे.
- ५४ (२) संघनो जुनो ज्ञान भंडार त्यांना संघनी देखरेखमां छे.
- ५५ (३) यशोविजय जैन ग्रंथमाला. (१४)

मुंबई. (५६ थी ६५)

- ५६ (१) श्री शान्तिनाथजीना मंदिरमां प्रवच पूजक सभानो ज्ञान भंडार ठा. पायधुनी सुंबइ.
- ५७ (२) बंदर उपर कच्छीओनो बहुज मोटो अने घणो सारो
- ५८ (३) मोहनकाळजी ज्ञानभंडार टा. ळाळवागमां. [ग्रुंबइ)
- ५९ (४) गौडीजी महाराजना मंदिरनो ज्ञानभंडार (ठा. पायधुनी
- ६० (५) श्रीआदेश्वरजीना मारवाडी मंदिरनी भंडार ठा. पायधुनी मंबइ. क्लिस्वित
- ६१ (६) दशाओसवाळ कच्छी अनंतनाथजीनामंदिरमां जुना इस्त-
- ६२ (७) दशाओसवाळ सेवक समाजमंडळनो मुद्रित प्रन्य संप्रह.
- ६३ (८) मोइनलालजी सेन्टरल लायब्रेरी मुंबई.
- ६४ (९) मोहनळाळ दळीचंद देसाइ वकीळ ग्रुंबई. [५०९)
- ६५ (१०) फार्बस गुजराती सभाना इस्तिकितित गंथोनीयाद (जुओ ६६ राधनपुरनो ज्ञानभंडार संघनी देखरेखमां छे.

स्राहोर. (६७)

६७ दिगंबर जैन पुस्तकालय. (३९४)

६८ (१) र्छीवडीनो भंडार त्यांना संघनी देखरेखमां छे ग्रंथ ३००० चपरांत छे.

İx

(२) बीजो स्थानकवासीनो मोटो भंडार शेठ नानजी डुंगरसीना जपाश्रयमां.

बहोदरा. (६९ थी ७२)

- ६९ (१) पाटणना मसिद्ध भंडारोमांथी खास जरुरी ग्रंथोर्नु लीष्ट. (१८९७?) (छपाववानी तैयारीमां.)
- ७० (२) इंसविजयजी महाराजनो ज्ञान भंडार. ठा. नरसीं इजीनी पोळ्यां. ज्ञानमंदिर पुस्तक संख्या १७४८ छे. प्रति आ-कारना इस्त लिखित जुदा.
- ७१ (३) प्रवर्त्तक कॉन्तिविजयजी महाराजनो ज्ञान भंडार ठा. ज्ञानमंदिर नरसिंहजीनी पोळमां पुस्तक संख्या २८०० अने हस्त लिखित जुळा.
- ७२ (४) सेन्टरल लायब्रेरी तथा तेनो संस्कृत विभाग ताड पत्रना भंडार साथे खास जोवा लायक विदेशमां रहेला जैन ग्रंथो
 (इस्त लिखित) नो समुद्द तपासवाने खास उपयोगी. (रफेन्स
 लायब्रेरी) साथे वे पांच विद्वानोने मोकलीने पुरु जोवानी
 जरुर पुरी पाडे तेवो आ ज्ञान भंडार छे. कुल जुदी जुदी
 जातना ७५००० आसरे पुस्तको, ग्रंथो, ताड पत्रो विगेरे
 मलीने छे ताम्रपत्रो खास ध्यान खेंचवा लायक छे. (२२)

७३ विजापूर ज्ञान मंदिर. (जुओ नं. ६२)

वीरमगाम.

७४ जैन धर्म विजय पुस्तकालय. (४०१)

७५ वीकानेर सेटिया जैन लायब्रेरीमां हस्त लिखित १५०० अने मुद्रित हिन्दी. गु. अंग्रेजी अने संस्कृतादि साडाचार हजार पुस्तको छे.

वीसनगर.

७६ वीसनगर जैन ज्ञान भंडार. (७४७) साणंद. (७७)

lxi

- ७७ मोय गच्छनो भंडार. स्रुरतना भंडारो. (७८ थी ९२)
- ७८ (१) मगन मतापचंदनी लायब्रेरी.
- ७९ (२) जैनानंद पुस्तकालय गोपीपुरा सुरत सारो गं. सं. ८००० व्यवस्थित भंडार छे. झवेरी अमरचंद मूलचंद वहीवट.

(नं. १२)

- ८० (३) मोहनलालजी महाराजनो ज्ञान भंडार गोपीपुरा सुरत.
- ८१ (४) छापरीआ शेरीनो भंडार सुरत.
- ८२ (५) नवा पाडानो भंडार सूरत.
- ८३ (६) स्थानकवासीनो भंडार सगरामपुरामां सूरत. छोटाळाळजी महाराजनो.
- ८४ (७) वडा चौटाना उपाश्रयनो भंडार वहीवटदार शेठ. फकीर-चंद खेमचंद.
- ८५ (८) इरीपुरामां रत्नचंदजीनो ज्ञान भंडार.
- ८६ (९) जैन स्कुलनो ज्ञान भंडार.
- ८७ (१०) रत्नसागर जैन स्कुलनो भंडार.

(नं. २१)

- ८८ (११) हुकम म्रुनिनो भंडार गोपीपुरा सूरत ताडनो तथा कागळनो ळिखित.
- ८९ (१२) जिनदत्त स्नुरिनो ज्ञान भंडार सुरत वहीवटदार शेट. पानाभाइ भगुभाइ मालीफलीआ सुरत.
- ९० (१३) देवचंद लालभाइ बडेखां चकलो सुरत. पुस्तकोद्धार फंडनो, आगमोदय सम्मितिनो तथा तेमनी खानगी लायबेरीनो एम त्रण भेगा हे.
- ९१ (१४) बाल्लभाइ अमरचंदना ज्ञान भंडारमां १२०० थी १५०० अंथ के

lxii

९२ (१५) देसाइनी पोळनो भंडार ३०५ ग्रंथ छे. सोजत. (९३-९४)

९३ (१) महावीरजी ळायब्रेरी. (२६४)

९४ (२) खेताम्बर अठवाडीक पाक्षिक, अने मासीक पत्र परिचय. अठवाडीक तथा मासीक विगेरे.

१ अठ. जैन पत्र. (४४)

२ ,, वीरशासन. (९४)

३ विविध विचार माला. (४७) वडोदरा आगरा.

४ जैन आदर्श ग्रुंबइ.

५ जिनवाणी कलकता.

६ आत्मनंद प्रकाश. भावनगर. (मासीक.)

७ जैन साहित्य संशोधक पुना.

८ महिला भूषण सूरत.

९ विजय धर्म प्रकाश " इस्त छिखित " मासीक भावनगर.

१० सनातन जैन १९०८ मां इतुं. (१७७) (मासीक.)

११ जैन धर्म ज्ञान दीपक. (२५४) (मासीक.)

१२ जैन विवेक प्रकाश. (२८६) (पासीक.)

१३ जैन शासन ,, (२८७)

१४ " धर्म ध्वज " "इस्त छिखित" मासीक शीवपुरी. (८१४)

१५ स्त्री सुख दर्भण अपरनाम. " श्राविका "

१६ बुद्धिप्रभा मासीक.

१७ जैन दिवाकर. (२५३) मासीक.

१८ महावीर पाक्षिक.

१९ " जैन विजय तरंग पासीक " जैन विजय पेस ग्रुंबइ. (७४)

२० " ज्ञान प्रकास. " (१७९ ५४) मासीक.

lxiii

- २१ जैन समाचार अमदावाद. २२७ मासीक.
- २२ " जैन प्रभाकर " ६८७
- २३ प्ररातत्त्व त्रिमासिक अमदावाद.
- २४ जैन युग मासीक.

दिगंबर अठवाडीकादि पत्र परिचय.

- १ जैन मित्र सूरत.
- २ दिगंबर जैन सुरत.
- ३ जैन महिलाद्श सुरत.
- ४ सप्ताहिक जैन गेझेट कलकत्ता.
- ५ जैन गेझेट मद्रास.
- ६ खःडेळवाळ हिनेच्छु मुंबइ.
- ७ जैन आदर्श मुंबइ.
- ८ जइसवाल जैन आग्रा.
- ९ जैन मार्तेड हाथरस.
- १० जैन बोधक सोलापूर.
- ११ प्रगति अने जिनविजय बेळगाम.
- १२ परवार बंधु मेरठ.
- १३ जैन प्रदीप (देवबंद)
- १४ जैन सिद्धान्त सोलापुर.
- १५ गोलापुरव जैन (सागर.)
- १६ वंदे जिनवरम राजहंस निवाणी बेलगाम.
- १७ विश्वबंधु करणाटक.
- १८ उरदु जैन प्रचारक.
- १९ वीर अछीगंज.
- २० जैन समाज.

lxiv

फंड.

३ शा. मानचंद वेलचंद सुरत. (१६)

२८ आगमोदय समिति.

१६ देवचंद लालभाइ. पु. च. फंड.

१७५ पाचीन पुस्तकोद्धार फंड सूरत.

४६१ श्री जिनदत्तसृरि पाचीन पुस्तकोद्धार फंड. बुहारी.

विद्यामंदिरो.

- १ यशोविजय जैन संस्कृत पाठशाळा. मेसाणा.
- २ भारत जैन विद्यालय पुना.
- ३ यशोविजय संस्कृत पाठशाळा. बनारस.
- ४ संस्कृत कोलेज काशी.
- ५ संस्कृत डुंगर कोलेज वीकानेर.
- ६ विद्याशाळा अमदावाद.

स्त्री प्रंथकारो तथा भाषान्तरकारो.

१८० गौतमी बीबी बनारस.

४०२ अ. सौ. मणि. अमदाबाद.

४१७ नवलबाइ पोपटलाल. मोरबी.

७१३ ब्हेन सुरज.

जैन पंडितो.

*४ पंडित त्रीभ्रुवनदास अपरचंद पालीटाणा.

९ पंडित काशीनाथ जैन.

३२ ,, हीरालाल हंसराज.

७६ ,, इरगोविंददास.

* ठेकाणा माटे जुओ ऽप्रंथो पलन्ध स्थानमां नंबर,

JXA

नंबरना स्थळे जोवाथी अड्स मळशे.

६३ केशवलाल प्रेमचंद वकील.

८४ प्रो. रवजीभाइ देवराज कच्छ कोडाय.

१०८ सांकलचंद पीतांपर कवि. अपदावाद.

१४५ लालचंद भगवानदास वडोदरा.

२०३ माणेकचंद जगरुपजी इन्दोर.

२१४ मोहनलाल दलीचंद देसाइ मुंबइ.

२३१ व्यास मणीलाल वकोरदास गोधरा.

२५८ पंडित सुखलालजी अमदावाद.

२८३ पूरणचंद नहार बकील एम. ए.

४९३-२९३ पंडित बहेचरदास जीवराज.

३१४ पंडित भगवानदास.

३२३ वर्धमान सरुपचंद वकील.

३२९ बबळचंद केशवळाळ मे. मोदी.

३४३ सांकलचंद माणेकचंद घडीयाली.

४९७ गौरीशंकर हीरावंद ओझा. इन्दौर.

५०५ नरसीमाइ इश्वरभाइ. जर्मन भाषाना ज्ञाता.

५२२ मणिलाल मोहनलाल पादरा.

५६३ पंडित छालचंद ॲप. शाह, वडोदरा.

७८१ शेट. मोतीचंद गीरधर कापडीआ ग्रुंबई.

रा. रा मोहनछाल हेमचंद वकील पादरा.

- ,, जीवणभाइ साकरचंद ग्रुंबई.
- ,, गुलाबचंद दवचंद्.
- ,, फतेचंद कपुरचंद लालन मढडा.
- . शीवजी देवजी महडा.
- ,, केशवलाल दलसुखभाइ अमदावाद.

lxvi

- ,, कुंवरजी आणंदजी भावनगर.
- ., बद्धभदास त्रिभोवनदास भावनगर.
- ,, उमेदचंद रायचंद खंभात.
- ,, कर्ना भोगीलाल घोळशाजी (रसीक) अपदावाद.
- ,, छल्छभाइ करमचंद मुंबाई.

जैन साहित्यनी सोध खोळ करी रहेला आचार्यो अने मुनि गण,

- १ विजयकमलसूरि.
- २ नेविविजयसुरि
- ३ बुद्धिसागरसूरि (स्वर्गस्थ)
- ४ आणंदसागरसूरि
- ५ सिद्धिविजयसूरि
- ६ नीतिविजयसूरि
- ७ विजयेन्द्रसूरि
- ८ दर्शनविजयसूरि
- ९ विजयदेवसूरि
- १० अजितसागरमूरि
- ११ मोइनविजयसुरि
- १२ मुनिजिनविजयजी#

- १३ सिद्धिम्रनि
- १४ जिनविजय
- १५ इंसविजय
- १६ प्र० कान्तिविजयसुरि
- १७ विद्याविजय
- १८ मंगळविजय
- १९ केसरविजय
- २० देवविजय
- २१ मुनिमाणेक
- २२ लब्धिविजयसूरि
- २३ वञ्चभविजयसुरि
- २४ पं. दानविजयसृरि
- २५ रामविजयम्रुनि

* (पुरा तत्व मंदिर प्रवंध समितिना आचार्थ.)

lxvii

इंडरना इतिहासना सांधनो.

इळामाकार चैत्य परिपाटी (हेमविमलसूरि.) पहिकांठा सिलेक्षन---महिकांठा, डीरेकटरी. महिकांठा मेन्युअछ. गुजरातनी जुनी वारताओ. ऐतिहासीक राससंब्रह भाग ४ थो. तीर्थमाळा संग्रह. प्राचीन छेखावछी. (मुनि. संपत्तविजय संप्रहित. क्रमारपाळ प्रबंध. विजय प्रशस्ति काब्य. गुजरातनो इतिहास फीरस्ताकृत. भारतराज्यमंहळ. इंडरनो संक्षिप्त इतिहास (जोगीदास कृत.) जैनस्तोत्र संब्रह भाग २ जो. इंडरना रावनी वंशावळी. इंटरना राणानी हकीकत. इंडरना राजा पुंजानी वंसावळी. इंडरना रावना कागळो. इंडरना इतिहासनां छ पानां छुटां. इंडरना पटावतोनो इतिहास. पू. ? थी ७५ मुदेटीना चहुवाणो ले. घढवी धीरजी पृ. १ थी ३९. इडरनी रूपात ले. गढवी अमजी. तथा बारोट. रतन संगनी. इंडरनी पोळोनी ख्यात अने रायकवाटनी वात. इदरनी ख्यात छे. अमजी गढवी.

lxviji

इस्रनी ख्यात छै. गढवी सवाइरांम रतनसंघ. पोळोना रावजीनो इतिहास. रासमाळा भाग. १—तथा २. दरेकनी आहती बीजी. जगमाळरावसिंह (जगनाथ) छे.पंडित करुणाशंकर-शर्मा. वांसवाडा इडर चैत्य स्तवन. अनंत इंस. बावन जिनाळयना जीर्णोद्धारनो रीपोर्ट. क्रीयारत्नसमुच्चय. पशस्ति. सोमसौभाग्य काव्यम्. गुरुगुणरत्नाकर काव्यम्.

(आ सघळा प्रेथो मळवानां स्थान यथास्थाने आ ग्रंथमां छे)

इंडरना थयेछा वे पटघर जैनाचार्यो आणंद्विमससूरि.

आ आचार्यनो जन्म सं. १५४७ मां इडरमां थयो हतो मूळ नाम आणंदजी हतुं तेमना पितानुं नाम मेघजी हतुं के जेओ ओश-बाल ज्ञातीना, मातानुं नाम माणेकदे हतुं, पांच वर्षनी न्हानी उम्मर-मां एटले सं. १५५२ मां तेमणे श्री हेमिवमलसूरि पासे दीक्षा लीधी हती तेमने सं. १५६८ मां उपाध्याय पदवी मली हती अने १५७० मां सूरिपद मळ्युं हतुं.

दीक्षा लीधा पछी न्हानी उपरमांज त्हेमणे सारो अभ्यास करी लीधो हतो त्हेमनामां विजयादि गुणो अने वैराग्य उच्च को- दिनां हतां त्हेमना वखतनो जमानो एक विचित्र प्रकारनो हतो. एक बाजुए प्रतिमाना उथ्यापको जोर शोरथी प्रतिमान मानवानी प्रक-पणा करी रहा हता. बीजी तरफ साधुओमां वधती जती शिथिळ- तायी साधु धर्मना उथ्यापको कडुकादि साधु धर्म उपर आक्षेपो

kiz

करवा बहार नीकळी पड्या हता. आ बधा संयोगो गमे तेवा वैरागी ना मनने विचळित करी नाखे त्हेवा हता. छतां पण आणंदविमळे पोतानी वैराग्य द्विने लगारे शिथिळ करी न हती. परंतु उपर्युक्त कारणोथीज तेमणे सं १५८२ मां वडावली ग्रामे (पाटण पासे आवेल) क्रियोद्धार कर्यो हतो. आ क्रियोद्धारमां प्रधान सहायक तरीके विनयभाव हता पहेलां जे मरु भूमिमां श्री सोमप्रभस्तरिए पाणीना दूर्ल भपणाना कारणथी साधुओनो विहार बंध कर्यो हतो तेज मरु भूमिमां आ आचार्यश्रीए त्यांना लोकोना उपर दयानी लागणीथी साधुओनो विहार खुल्लो कर्यो हतो साधुओना विहारना अभावथी जैसलमेरना ६४ देरासरोना बारणे कांटा लाग्या हता ते पण आणंदविमलस्तिए कढावी नंखाल्या हता अने मंदिरोमां पूजा चालु करावी हती.

तेमणे पोताना जीवनमां भव्य प्राणियोने उपदेश आपवा उपरांत तपस्या पण धणी करी हती. १८? उपवास करीने आछोयणा
रूपे संयमनी आराधना करी हती. २२९ छ्ट वीर प्रश्चना करी
हता. वे वस्त्रत वीस स्थानक तपनी आराधना करी हती. तेमां एक
वस्त्रत ४०० चोथ भक्त करीने अने बीजी वस्त्रत ४०० छ्ट करीने
करी हती. २० छ्ट विहरमानना कर्या हता. वळी ज्ञानावरणीय
कर्मना पांच उपवास पांचवार; दर्शना वरणीय कर्मना ४ उपवास
नव वार, अंतराय कर्मना पांच उपवास पांचवार. मोहनीयना २८
अट्टम. वेदनीय कर्मना, गोत्रकर्मना, अने आयुष्य कर्मना अट्टमो अने
चार चार उपवासो घणीवार कर्या. एवी रीत्ये साते कर्मना क्षय
निमित्ते तपस्याओ करी परंतु आटमा नाम कर्मना क्षय निमित्ते
तपस्या यह शकी न्होती. बोजी पण केटळीक तपस्याओ छूटक—

lxx

छूटक त्हेमणे करी हती. तेमणे कोइपण वस्तु उपर मोह के ममत्व राख्यो नहोतो तेमनी त्याग द्वति पण अनिवेचनीय इती-अने तेना ळीधेज तेओ राज दरबारमां अने जन समाज उपर प्र-भाव पाडी शक्या इता घणा सुळतानो, खानो वजीरो तेमने मान आपता इता वळी तेओ वादियोने परास्त करवामां पण कुशळ हता. तैमणे पोताना जीवनमां लोकोपकारने माटे विद्वार पण कंड कम नहोतो कर्यो. माळवा, गुजरात, मेदपाट, मारवाड, सोरठ, दक्षिण, अने कान्हड (कान्हम विगेरे देशोमां तेओ विचर्या हता अने रहेना प्रतापथीज पाटण, अमदावाद, चांपानेर त्रंबावटी, देवगिरि मांडव, गंधार, सुरत, साचोर, जालोर मंडोर, जोधपुर, तीवरी. नागोर, अजमेर, आगरा, हीसार, कोट, सीणोर, रायसेण, दढा-ळीयुं, कुंभछमेर, टूंक-टोडा, दील्छी राजग्रही, सोपारक, पाटण, वांसवाडा, सागचा, इंगरपुर, आहड, जबासा, वीसछनेर, नडुळाइ, आमळेसर, भरुच, नवसारी, वळसाड, गणदेवी, दमण, माहीम, अगासी, वसही, चेउछ, ढभोछ, मलबार, दीव, मांगरोळ, घोघा, अने अदन. विगेरे गामोना श्रावको उपर घणो भाव हतो.

छेवटे पोताना साधु जीवनने सफल करीं तेओ १५९६ ना चै. सु. ७ ना रोज ९ दीवसनुं अणसार पाळी अमदावादमां निजा-मपुरामां स्वर्गवासी थया इता.

विजयदेवसूरि,

जन्म ईडरना रहीश. ओसवाळ वंशीय. शाह थिरानां धर्म पितन बाइ. रुपाइनी कुक्षियी सं. १६३४ मां थयो हतो. तेमणे सं. १६४३ मां अमदावादमां श्री. विजयसेनसूरि पासे दीक्षा छीघी

lxxi

हती. सं. १६५५ सिंकदरपुरमां तेमने पंन्यास पद मन्युं हतुं सं. १६५६ ना वैसाख सुद ४ ना दीवसे खंभातना श्री मछशाहे १८००० रु. खर्चीने करेछा उत्सव पूर्वक. आचार्यपद मन्युं हतुं. आ वखते विययसेन सूरि. साथे ७०० साधु हता. खंभातमां तेमणे सुखसागर पार्श्वनाथ. कंसारीपार्श्वनाथ जीराउछापार्श्वनाथ अने चितामणी पार्श्ववनाथना हश्चन करी प्रसन्नचा मेळवी हती. आचार्य पदवी थया पछी सं. १६५८ ना पोष वद ६ रिववारे पाटणना पारेख सहस वीरे ५००० मुंह मुंडिका खरचीने गणानुं झानोनंदि महोत्सव कर्यो हतो. सं. १६७१ मां तेमने भट्टारक पद मन्युं हतुं अने सं. १५७४ मां मांडवगढमां जहांगीर बादशाहे रहेमने '' महा तपा '' नुं बिरुद आप्युं हतुं.

आ आचार्ये पोतानी विद्वत्ता, त्याग हत्ति अने उपदेश शैलीना प्रभावथी लोको उपर सारो प्रभाव पडयो हतो मोटा मोटा राजाओ बादशाहेक अने राणाओ तेमने मान आपता हता. एटलुंज नही परन्तु तेओ जे कंइ सारा कार्यो बतावता ते तेओ करता.

उदयपुरना माहाराणा. जगतिसहजीए आ आचार्यना उप-देशथी वरकाणातीर्थमां पौष दशमी उपर मेळामां आवता छोकोनुं दाण माफ कर्युं हतुं अने हमेशना माटे तेम थयां करे ते माटे एक शिछालेख बनावीने त्यहांना मंदीरना दरवाजा आगळ रोपवामां आव्यो हतो हजु पण आ पथ्थर मौजुद छे. तेम नाम पत्र पण करी आव्युं हतुं आज राणा. जगतिसहजीऐ पोताना प्रधान झाला कल्याण, ने आचार्य श्री पासे मोकलीने आचार्यने निमंत्रण कर्युं हतुं दयपुरमां चोमासुं फरी ज्यहारे सुरिजीए विहार कर्यो हतो त्यहारे तेओ दलबादल महेलमां रात रह्या हता. त्यहां राणाजीत-सिहजी वंदन करवा गया अने सूरिजीना उपदेशथी प्रसन्न थइ नीचे लिखित च्यार बाबतो स्वीकारी हती.

lxxn

- १ पीछोळा तळाव अने उदयसागरमां माछळाना जाळो नाख-वानो निशेध कर्यो हतो.
- ३ राज्याभिषेकना दीवसे (गुरुवारे कोइ जीव मारे नही
- ३ जन्ममास अने भाद्रमासमां कोइ जीव हिंसा करे नही
- ४ मर्सीच दुर्गमां कुंभाराणाए करावेळ जिनचैत्यनो उद्धार कराववो, आ चार वातो कबुळ करी हती.

आ शिवाय हालार देशमां नवा नगरना लाखाराजाने पण प्रतिबोध कर्यो हतो तेम दक्षिणमां इदलशा नामना बादशाहने प्रति-बोध करी गौवध बंध कराव्यो हतो वळी इडरना कल्याणमलराजा अने दीवना फीरंगीओ पण तेमना उपदेशने बहु मान आपता हता. उटहारे तेओ दक्षिणमां विचारता हता ए ते वखते ते पण हा. ८० साधुओने पंडित पद उपर स्थापन कर्या हता. अने ते शीवाय १७०५ मां इडरमां ६४ पंडितोने बनाव्या हता.

आचार्य विजयदेवसूरिना शिष्यो पण वाद करवामां बहाद्र ता त्हेमणे सादडीमां छंकानुंयायिओनो पराजय कर्यो हतो तेमज उदयपुरना राणानी समक्ष पण लोंकाओने हरावी राणानो पटो सही अने भालाना चीन्हवाळो तपाओनी सत्यतानो कराव्यो हतो. आ पटो सादडीमां वांचीने सूरिजीनी प्रसन्नता मेळवी हती.

आ सूरिजीना हाथे राजनगरमां-पाटणमां-संभात-वडनगर इडर-साबळी आरासण जाळोर मेडता खमणोर, रामपुर, देवकुळ पाटक (देळवाडा) नाही, आघाट, आबू, नवानगर, उज्जन अने दक्षिणना केटळांक जुदां जुदां स्थानोमां प्रतिष्ठाओ पण घणी थइ इती.

lxxiii

तैओ अढी हजार साधुओना उपरी हता—७ सात लाखथी अधिक श्रावको त्हेमना रागी हता. जो के तेमना वखतमां साधु- ओमां केटकोक खळभळाट उठयो हतो अने तेओ सागरपक्षवा- ळाओने एक वखते खुल्ले खुल्ला मली पण गया हता. अने तेथी तेओना उपर मोटो उपद्रव उभो हतो छतां पण तेओ कोइ पण रीत्ये हग्या नहोता.

तेओ तपस्या करवामां पण शूर्वीर इता छह, अहम, आंबिल, निवी उपवास अने एवी बीजी घणी तपस्याओ तेमणे करी इतीं तेओ इमेशां एक वखत आहार करता हता अमीयार द्रव्यथी वधारे द्रव्य तेओ वापरता न इता दीवसे निद्रा लेता न हता अने हमेशां वधारे ओछुं पण सज्जाय ध्यान अवश्य करता हता एकंद्र तेमणे पांचक्रोड सज्याय ध्यान कर्युं हतुं.

तेमणे पोतानुं आयुश नजीक जाणी ऊनानी अंदर सं. १७१३ ना असाद सुद ८ ना दिवसे तिनिहारु अणसण कर्युं हतुं ते पछी दशमें चोविहारु अणसण करी आषाद सुद ११ ना दीवसे स्वर्ग-वासी थया हता. अहिना श्रेष्ठिक रायचंद्र भणशाळीए हीरविजय-सुरिना स्तूभनी पासेज तेमनो (विजयदेवसूरिनो) पण स्तूभ कराव्यो.

lxxiv

१८ शाखाओ हीरविजयसूरिना वखते हती तेनां नाम.

विजय, विमळ, सागर, चंद, हर्षा, सौभाग्य, सुंदर, रत्न, धर्म, हंस, आनंद, वर्धन, सोम, रुचि, सार, राज, कुशळ, उदय. विदेशस्य विद्वान वर्ग परिचय.

- (१) प्, गेरीनो, ॲंछ, आइ टी. टी. डी. १९. रु. ड. बुलेन बीळीएस पारीस.
- (२) ॲल. डी. बारनेट. ऑम, ए, एल, आई, टी. टी. डी. छंडन.
- (३) ॲफ. डबल्यू. थोमस. ॲम, ए. पी. ॲच डी. इन्डीयाओफीस लायब्रेरी व्हाइट हॉल ॲस, डबल्यू लंडन.
- (४) प्रो. एच. जेकोबी, पी. अच. ही. बोन
- (५) हरबट वोरन-लन्डन
- (६) बनारसीछाल. गार. ग्लासगी.
- (७) मो. ॲच. बेळोनी. फीळीपी. ब्यूटी पाइसा इटाळी.
- (८) डॉ. जे. कारपे इन्टीयर अप्सळा. स्वीहन.
- (९) डॉ. रुडॉल्फ. होअरली. पी. अंव. डी. नॉर्थग्ररोड ऑक्सफड.
- (१०) प्रो. ए. बेळीनो फळोरेन्स. (नं. ९ प्रमाणे.)
- (११) घो. ऐ. बेलीनी मोन्डेगनाना (,,,,)
- (१२) डॉ. एन. मीरोनो पी. ॲच. डी. सेन्ट पीटस्बर्ग इत्यादि अंग्रेजी विभागमां-विशेष

अजब यात्रा

एकाक्षर, विचित्र काव्य, पट्श्लोकी, चतुश्लोकी स्तुति. जुओ. स्तोत्र रत्नाकर द्वितीय भाग.

kxv

संबोधन सहित आठ विभक्ती युक्त काव्य. जुओ. सकलाऽहेतनुं काव्य " वीरः सर्वसूरा इत्यादि " वीरस्तुति—पंचपतिक्रण सुत्र.

जोडाअक्षर वगरनां चतुः श्लोकी संस्कृत काव्ये. जुओ संसारदावा-नामक वीर स्तुतिः पंचप्रतिक्रमणसूत्र.

एकज छखाणमांथी-सात महापुरुषोनां जीवनचरीत्रनी निष्पत्ति जुओ (सप्तसंघान महाकान्य. पं. मेघविजयजीकृत्त.

श्री हर्षरचितम् "नैषधीय महाकाव्यस्यप्रति श्लोक प्रतिपादं ययास्थानं विनिदेष्य निजैः पादत्रयैः श्लोक पूर्तिमाधाय—श्री शान्तिनाथ चरितम्—कर्त्ता पंत्र्यास मेधविजयः संवतः १७२७ (मेळवोः हर्षचितितम नैषधीय चरितम् नारायणनी टीकानुं तथा नैषध चरित्र चर्चा—छे. महावीर प्रसाद हिवेदी प्रकाशकः हरीदास ॲन्ड क्रुंपनी. २०१ हेरीसनरोड कळकत्ताः

" देवनंदा भ्युदयम् " माघकाठ्यनी पाद मूर्त्ति रूप सात सर्गवाळ " विजयदेवसूरी चरितम् "—आ चरित्रनो थोढोक भाग यशोविजय प्रंथपाछामां छपायो छे, बाकीना भागनी पति पंढित बहेचरदास पासे छे. पूर्ण छपाववानी जरुर छे. कर्ता. पं. मेघविजय. रचन संवत. १७६१.

lxxvi

मैधद्त समस्या छेख-कालीदासकविकृत मेधद्तनी पादपूर्ति-वाळो ग्रंथ-" मेघद्तान्त्यपाद समस्या गर्भतयाडन्वर्थ नामघेय-मादधानो-नग नगरादि वर्णनसुरसं '' औरंगाबादथी द्वीपबंडदरे विजयनभसूरिने विज्ञाप्ति पत्रिकारूपे लखायेळो आ ग्रंथ छे. कर्जा, पन्यास. मेघविजय,

काशीना प्रदेशमां आधारभूतगणातो जैन ज्योतिष्यग्रंय ''वर्ष प्रबोध '' कर्ता. पंन्यास. मेघ विजय—तेमां संवतसर फल ग्रह गति, नक्षत्र गति. राशि गमन, संक्रान्ति वातचक्रविचार, भूकम्पोत्पा-ताद्यो विगेरे सर्व विषयनो समास छे अने हालमां ज्योतिर्विद—पु-रुषो तेने प्रमाणरूप गणे छे.

पंन्यास मेघविजयनी बीजी अजब कृतियो:--

- (१) दिग्विजय महा काव्यम्—विजयभास्त्रि दृत्तान्त वर्णनपरम्
- (२) चंद्रप्रभा—(व्याकरण ग्रंथ) ८००० श्लोक आगरा नगरे सं. १७५७
- (३) पातृका प्रसाद-धर्म नगरे सं. १७४७ '' ॐ नमः सिद्धम्'' नुं विस्तीर्ण कही ॐकारनुं स्फुट वर्णन प्रतिपादन कर्धुं छे.
- (४) युक्ति पबोध नाटक-केटलीक खंडन युक्तिओ.
- (५) विजयदेव महात्म विवरणम् (पन्यास वल्लभविजय गणिना रचेलामांना केटलाक भागोतुं स्फुट् वर्णन करेल ले

ते शीवाय-तत्व गीता-त्रिशिष्ठश्राका पुरुष चरित्र उदय दीषिका (१७२७ सादडीनंगरे) आ शिवाय बीजी पण कृतिओ छे, अने ते दरेक विविध चमत्कार चुक्त छे.

lxxvii

अपूर्वग्रंथो चार.

अहित प्रवचन व्याख्या—उपास्वातिना तत्वार्थेना जैवोज सूरत्र संकलित ग्रंथ छे. (ताड)

अपम स्वामि चरित्र (ताड) नि:शेष सिद्धन्तसार वे भाग (ताड) वसुदेव हीन्ही संपूर्ण (रूंभक आसरे ४९ छे) (ताड)

अन्य विद्वाननी कृतिना-मात्र एकज श्लोकना सो अर्थः--शतार्थी-सोममभ. (सं. १२४१ मां विद्यमान इता तेमणे बनावी छे, गाथा-

दोस सयमूळजालं, पुन्वरिसि विविज्जिञं जड्वंन अध्यं दहसी अणध्यं कीस अणध्यं तवंचरिस धर्मदास गणिकृत.

आ शतार्थीना कर्ता. उपाधाय बहुरत्नसिंह ? तपगच्छना.

त्रीजी शतार्थीनो श्लोक.
प्राप्त पारमपारस्य, पारा वारस्य पार्य ते.
स्त्री मकृति वक्राणां, दुष्चरित्रस्यनो पुनः ॥१॥
मानसागरः १ उपाधायः

जिनविजये-कुमारपाळ प्रतिबोधना परिशिष्टमां टांक्या छे. त्यां सविस्तर परिचय छे.

lxxviii

माचीन लिपि माला-जुदी जुदी सीचेर उपरांत लिपिओनी स्पष्ट रीते परिचय कराव्यो छे (जुओ: नं. ४९७)

रासाओनी शोध रा. रा. मोइनलाल दलीचंदनां नानां वे पेम्फले बहार पाडी—मळी आवेला ६४६ रासाओनुं लीष्ट बहार पाडयुं छे. तेमां तेना कर्तानुं नाम अने संवत अने ते दरेक उप-लम्ब स्थान परिचय कराच्यो छे अने तेना विसेष परिच माटे आद्य विभाग अने अत्य प्रशस्तिओ विगेरेना परिचय माटे विस्तृत ग्रंथ छपाववो तेमना तरफथी शरू थयो छे. जे पाचीन इतिहास उपर पहान अजवाळ पाडशे (जुओ यथा स्थाने.)

ऑस्ट्रीयामां महावीरकी मूर्ति ।। आष्ट्रीयाके अन्तगत हंगरी प्रान्तके बुदापेष्ट शहेरमें एक अंग्रेजके बगीचेमें खोदते हुये निक-छी हुइ महावीरकी प्रतिमा. '' जुओ गिरिनार कल्प) इसका फोटा साथमें दीया है.

पराग शब्दाष्टोत्तर शतार्थ निवदं साधारण जिन स्तवन वि-विध दृत्त बद्धम् (जुओ प्रकरण रत्नाकर भाग. ४.)

Citronella Oil Ceylon made in Holand

आ नामनुं एक तेल आवे छे. ते केमी छना त्यां (अंग्रेजी द्वा वेचनारना त्यां) मले छे. ते ताड पत्र उपर पीं छीयी चोपडवाथी छलाण अने पत्रनी सपाटी वॉर्निसनी पेठे चक्कीत थाय छे. अने

lxxix

तेम करवाथी तेने जीवडां पडी सडीजतां नथी. ताडपत्रना संरक्ष-णना माटे-आ एक उपयोगी वस्तु गणाय छे. अने वडोदरानी छायब्रेरीमां वपराय छे. जोवा माटे तैयार छे. छखो कयूरेटर ओफ सेन्टरल लायब्रेरी राष्य वडोदरा.

गंथोनी नकलो करावी लेवानी सस्ती फोटोग्राफि. ४२ इंच पहोळाइ अने ४८ इंच छंबाइनी प्लेटनी सपाटी उपर गंथना पाना मुकीने, तेनो सीलवर पेपर उपर—फोटो १८ इंच पहोळाइनो, अने २२ इंच छंबाइनो छेवाय छे. खर्च आसरे रु. २) आवे छे. आ केमेरा आश्चरे सात इजार रुपैया जेटलो खर्च करीने नामदार गायकवाड सरकारे पंगाच्यो छे. अने पब्लीकने पण आनो लाभ लेवानी छुट राखवामां आवी छे. वधु खुलासा माटे—चीफ ॲनजी-नीयर वढोदराने लखवुं.

"अशोकनां दान पत्र" विगेरेना शिला छेखोनो संग्रह. तेमां हिंदनो नकशो आप्यो छे तेमां तेना राज्यनी हिंदमां कयां सुधी हती जणावेलुं छे गीरनार विगेरे स्थळे आ लेख आवेला छे. भा-षा तहन जुदीज लिपिमां छे. तेनो ग्रुद्ध संस्कृत अने अंग्रेजीमां तरजुमो छे.—(१)

डेळाना उपाश्रयना भंडारमां १९६ रासाओ अने चोपाइओ छे. तेनी सविस्तर याद इ. सने. १९०८ ना ऑगस्ट सपटेम्बरना अंकमां सविस्तर ळीष्टु छपायुं छे. कर्त्ता नाम साथे (जुओ नं, ६३)

lxxx

खास भलामण.

आ ग्रंथमां जे जे मुद्रित ग्रंथोनां नामो दाखल थइ शक्यां नथी. तेवां पुस्तको जेमणे छपाच्यां होय तेमणे नीचेना ठेकाणे लखी मोकलवा तस्दी लेबी—के—ते एकठा थया बाद एक परिशिष्ट तरीके छपावी देवानी अमोने एक ग्रहस्थ तरफथी फरमास थइ छे—एटले ते पण साथे साथे छपावी देवामां आवशे.

हे. हाजापटेलनी पोळमां) स्वाराक्कवानी पोळ अमदावाद. विकाल क्षेत्र विकाल

30

॥ मुद्रित जैनश्वेताम्बरादि ग्रंथ नामाविछ ॥ (गाइड) विशष परिचयादिसह.

अ.*

- १ अकवर अने हीरविजयमुरिना फोटा. (१,)
- २ अकवर बादशाहना फरमानोना फोटा नं. १, नं. २, (१. बि. २. आरबी. (जुनी उर्द.) िरू. २-८-० (२.)
- ३ (सम्राट) अकवर, सचित्र. हिं. अनु. पं. गुलजारीलाल
- ४ अघट कुमार चरित्र, प्रमादे निर्द्रेच्य वित्र कथा अने पुण्यम-भावे सिद्धदत्तनी कथा सहित. ह. ०-७-० (३,४.)
- ५ अजित शान्ति स्तवन अर्थेसहित सटीक. रु. ०-४-० (६.सं.)
- ६ अजित शान्ति स्तवनादि स्तोत्र संग्रहः सं क.कान्तिम्रुनि (पा॰) मोइनलाल शिष्य हि. ०-१-० (हि.५.)
- ७ अजैन विद्वानोकी सम्मतियो. जैनधर्मके विषयमे
- ८ अदार दुषण निवारक रु. ०-६-० (६.)
- ९ अदार पायस्थानक तथा बार भावनानी सझाय. अर्थ रहस्ययुक्त यशोविजय उपाध्याय शिष्य जयसोम ग्रुनि. रु. ०-४-०
- १० अद्वार पापस्थानक परिहार भाषा. (१) [(६.गु.)
- ११ अदीद्वीपना नकशानुं वर्णन. विलक्षण जैन भूगोळ. (७.गु.)
- १२ अदीद्दीपना नकशानुं पुस्तक. जैनभूगोळ. (७. पु.) [(गु,७)
- १३ अहीद्वीनना नकशानी इकीकत. रु. २-०-० जैनभूगोळ
- १४ अदीद्वीपनुं संक्षिप्त वर्णन. इ. ०-४-० जैनभूगोळ (गु.)

[#] संकेत सूची जुओ .- (अंक अने अभरोने माटे.)

Ř

१५ अहीद्वीपनो नकशो कपडावाळो. रु. ०-६-० (जैनभूगोळ प्रमाणे चित्रपट) (६) [रु. ०-१२-० (गु.)

१६ भढीइजार वर्ष पूर्वेचं हिंदुस्तान '' गुजराती पेस **ग्रंब**इ ''

१७ अधिक मास दर्पण, रु. ०-२-० (६)

१८ अधिकमास निर्णय. शान्तिविजय (हिं. ८)

१९ अध्यात्म अनुभव रु. ३-८-० हिन्दी सचित्र. (९.)

२० अध्यात्म कल्पद्रुम. मूळ कर्ता म्रुनि सुंदरसूरि निर्मीत षोडश शाख, श्री धनविजयगणि विरचित विषमपदाधिरोहण्यासह. इ. ०-८-० (१०, सं.)

२१ अध्यात्म कल्पद्रुप ग्रुनिसुंदरसूरि भेट. (११. सं.) [१०, सं.)

२२ ,, ,, मूळ सुंदरसूरि कृत धनविजयगणि कृत टीका

२३ अध्यात्म कल्पद्रुम भाषान्तर. रु. १-४-० ६ भा. क. मोती-चैद गीरधर, बीजी आदृति (गु०)

२४ अध्यात्म कलपट्टम मुनि सुंदरसूरि रु. ०-८-० (१०. सं.)

२५ अध्यात्म कल्पद्रुप सटीक (पाना.) रु. २-८-० (६, सं०)

२६ ,, ,, ,, ग्रुनिसुंदरसूरि कृत धनविजयनी व्या-ख्या सहित (११.६४)

२७ अध्यात्म गीता विगेरे. देवचंद्रजीनीरचेळी शिळा छापनी (१२)

२८ अध्यातम छन्तुवी उपदेश. हुकम म्रुनि. (२१.गु.)

२९ अध्यात्म तत्वास्रोक. रु. ४-०-० न्यायविजय विरचित. स्वो-पज्ञ गूर्जर भाषानुवाद विवरण (१३. १४, ४७ सं. गु.)

३० अध्यात्म भजनसंग्रह बुद्धिसागरसूरि ग्रं. नं. १५. रु. ०–६–० (गु० ५८ थी ६२–१८४–१५) पृ. १९०

३१ अध्यात्म मत परीक्षा टीका. स्वोपज्ञ दृत्ति युक्त यशोविजयकृत. रु. ०-६-० (१६ सं०)

३२ अध्यात्म मत परीक्षा. गु. रु. ०-४-० (१७.)

3

- ३३ अध्यातम न्याख्यान माळा बुद्धिसागरसूरि. रू.०-४-० (प्र.१ १५, ५८ थी ६२. १८४ गु.)
- ३४ अध्यात्म शान्ति. ले. बुद्धिसागरसूरि. (१५ ५८ थी ६२ १८४)
- ३५ अध्यात्मसार यशोविजयजी कृत. (१२)
- ३६ अध्यात्मसार-प्रश्नोतर गंग. पंडित कुंवर विजयजीकृत (७.ए.)
- ३७ अध्यात्म सार भाषान्तर रु. २-०-० (६.गु.)
- ३८ अध्यातम सार मूळ. (६)
- ३९ अध्यात्म सार सटीक उपाध्याय श्री यशोबिजयजी विरचित-पन्यास श्रीगंभीरविजयगणि कृत शब्द भावोक्ति टीका-समेत (६)
- ४० अध्यात्मसारादि दश ग्रंथोनो संग्रह यशोवित्य. (६-२२)
- ४१ अध्यात्मसारोद्धार. हुकमग्रुनि (२१. गु.)
- ४२ अध्यात्मिक मतखंडन सटीक. (१४-४७. सं.)
- ४३ अध्यात्मोपनिषद् (६. १४. ४७ सं.)
- ४४ अनमोल रत्नोको अद्भूत खजाना रु. ०-१-० (६.)
- ४५ अनवर गेसेनी जर्मन के २-0-0
- ४६ अनित्य पंचाशत. रु. ०-२-० (६.)
- ४७ अनित्यादि भावनास्वरुप (१८.गु.) [(३. गु.)
- ४८ अनित्यादि भावना स्वरुप मुनि प्रतापिषज्य रु. ०-४-०
- ४९ अनित्यादि भावना स्वरुप. रु. ०-२-० (६.)
- ५० अनित्यादि भावना स्वरूप भेट. (१८. गु.)
- ५१ अनुकंपा छत्तिसी. रु. ०-०-६ (६८. हि.)
- ५२ अनुकंपा छत्रिशि (१९.)
- ५३ अनुत्तरोपपातिक दशासूत्र. रु. ०-६-० संस्कृत अभयदेष-सृरि कृत द्वति युक्त पुद्गल परावर्त्त स्तोत्र साथे. (१०.१७)
- ५४ अनुत्तरोववाइ सूत्र मूळ टीका अर्थ युक्त. (की. नथी.) (६)

¥

५५ अनुपूर्वी. इ. ०-१-६ (६,१.)

५६ अनुपूर्वी. रु. ०-०-६ (१-६)

५७ अनुभव. जैन हुक्म प्रकाश. हुक्मप्रुनि. (२०.)

५८ अनुभव जैन हुकम प्रकाश. हुकम्मुनि. (२१.)

५९ अनुभव पंचिंतसित रु. ०-८-० बुद्धिसागरसूरि. (१५,५८

६० अनुभव प्रकाश. हुकम मुनि. (२१-१.) [थी ६२-१८४)

६१ अनुभव पदीपिका. पाटणना भंडारना जैन ग्रंथनु भाषान्तर बडोदराना देशी केलवणी खाता तरफथी मणिलाल नभुभाइ द्विवेदी बी. ए. (२१, २७.) रु. ०-४-० गु.

६२ अनुभव शतक. रु. ०-३-० (२३.)

६३ अनुयोगद्वार सूत्र. भाषान्तर साथे. (१७) पा० सं.

६४ ,, धनपतसिंह् बाबुवा छुं. (२४.) प्राo सं० हिं०

६५ अनुयोगद्वार सूत्रम् पूर्वार्धम् रु. ०-१०-० टी. हेमचंद्राचार्य

६६ ु,, टबो. गु.ू [प्रा० सं० ग्रं. नं. ३१. (१६.)

६७ अनुयोगद्वार सूत्र उत्तरार्ध (पानाः) रु. १-०-० (१६.) भाग २. टी. हेमचंदाचार्यः मा० सं०

६८ अनुयोगद्वारसूत्र संक्षिप्तभाषान्तर. (२५.) पं. देवविजय गणि.

६९ ,, (संक्षिप्त सारांश.) देवविजयजी गणि. (६.)

७० ,, ,, टी हेमचंद्राचार्य कृत. (१०)

७१ अनेकान्त जयपताका. इरिभद्रसूरि कृत. रु. ४-०-०

७२ ,, मृ. टी. (११.) [(सं. १४–४७)

७३ अनेकान्त वाद प्रवेश. रु. ०-५-० इरिभद्र सूरि विरिक्तो सटिप्पनक. (२६.) सं.

७४ ,, ,, ,, मूळ उपरथी भाषान्तर कर्त्ता मणिलाल नशुभाइ वीए सं १९५५ ह. ०-५-०. २७.

७५ अनेकार्य संग्रह (जुओ अभिघान संग्रह भाग. २)

-

- ७६ अन्तक्रद्याः दी. अभयदेव सूरि र. ०-१०-० (२८.)
- ७७ अज्ञाय उच्छ कुलकम्. आनंद विजय विरचित द्वति सहित. मृ. मा०-टी-सं० यति आचारनुं वर्णन. रु.०-२-०(१७)
- ७८ अन्य योग व्यवच्छेद द्वात्रिशिकाः हेमचंद्रा चार्य कृतः गं नंः (३०) मल्लिषेणसूरि कृतः स्याद्दाद मंजरी नाम्नी टीका सहितः संशोधकः इरगोविंददास एन्ड बेचरदासः बनारसः प्र. हर्षचंद भ्रुराभाइ बनारसः (१४–४७)
- ७९ अन्योक्ति मृक्तावली. रु. १-०-० (६)
- ८० अन्योक्तिश्वतक. रु. ०-६-० (६) [(२९,१.)
- ८१ अपोह सिद्धिआदि बौद्धना छ न्याय. रत्नकीर्ति आदि संस्कृत.
- ८२ श्री अभयकुमार चिरत्र भाग. १ लो. रु. २-०-० (१७.)
- ८३ ,, ,, भाग. २ जो रु. ३-०-० (१७.)
- ८४ (धर्मवीर) अभयकुमार चरित्र रु. ०-२-० (३०)
- ८५ अभयकुमार मंत्री भरतुं जीवन चरित्र (उपाध्याय श्री) अभ-यकुमार महाकाव्यतुं भाषान्तर गुजराती भाग १ स्रो रु. २-४-० (३१.१७)
- ८६ ,, ,, चंद्रतिलक कृत. (३२.)
- ८७ अभयक्रमार चरित्र संस्कृत, रु. १५-०-०
- ८८ अभयकुपार चरित्र भाग. २ जो. रु. ३-०-० (३१.)
- ८९ अभयकुमार मंत्रिश्वरनुं जीवन चरित्र. रु. १-८-०
- ९० अभयकुपार मंत्रीश्वरनो रास. रु. ०-६-० र. सं० १७६१. लक्ष्मीविजय कृत. (७)
- ९१ अभक्ष अनंतकाय विचार. रु. ०-३-० (३३.)
- ९२ ,, ,, भेट. (३४. १५, ५८ थी ६२,१८४)
- ९३ अभाव प्रकरण. च्यार अभावनुं वर्णन, हुकम म्रुनि. (२१.)

	4	
९४	अभिषम्मध्य संगद्दो. र. ०-२-० अनुरुद्धाचार	रे कृत₊
	मा॰ (१, ४४५)	
९५	अभिधान चिन्तामणि. (जुओ अभिधान संग्रह भ	ाग २.)
	अभिधान चितामणि कोष. हेमचंद्राचार्य. सूचि	
	भाग. पहेलाना. रु. ४-०-० (१४, ४७)	
९६	अ. ,, ,, बन्दोनुं अकारादिः, भागः बीजाना	₹-0-0 ?
	(१४, ४७)	
९७	अभिधान चिन्तामणि परिशिष्ट (जुओ अधि	मधान संग्रह
	भाग २ जो.)	[म् (३७.)
	अभिधान राजेन्द्र कोशस्य शब्दानामनुक्रम <mark>णि</mark> क	
૯ ९	अभिधान-राजेन्द्र पंथम भाग रु. २५) पृष्ट	. ८९३ (सं.
	१९४६ नी सालथी आ ग्रंथ लखवो शरू	
	पुरा थया बाद सं. १९६५ मां पहेस्रो भाग	ग अने बीजा
	हजु छपाय छे.) (३७) [११	०७ (३७)
800	अभिधान राजेन्द्र द्वितीयभाग रु. ३५) सं.	
१०१	ु,, तृतीयभाग रु. ३५) सं. १९७० पृ. १	३६२ (३७)
१०२		
१०३	,, पैचमभाग रु. ३८) सं. १९७८ पृ. १ ^६	३५ (३७)
१०४	्र, षष्टमभाग रु. ३८) सं. १९८० पृ. १९	४६५ (३७)
१०५	,, सप्तमभाग रु. ३८) सं. छपाय छे (३७)
१०६	अभिधान संग्रह. संस्कृत प्राचीन कोष. ग्रंन्थ र	तम्रुच्यय, हेम
	चंद्राचार्य कृत. भाग १ लो. तेमां नीचे ग्रुज	ৰ.
	(१) अपरसिंहकृत नामलिङ्गानुशासनम्.	(१०, ९५)
	(२) पुरुषोतम देव प्रणीत त्रिकाण्डशेषः	75
	(३) ,, ,, हारावली.	"
	(४) द्विरुप कोष:	5 •

9

- १०७ अभिधान संग्रह हेमचंद्राचार्य विरचित बीजा भागमां नीचे मुजब.
 - (१) अभिधान चिन्तामणि-
 - (২) ., ,, परिशिष्ट
 - (३) अनेकार्थ संग्रह.
 - (४) निघण्डुशेष.
 - (५) छिङ्गानुशासन कोष.
 - (६) जिनदेव ग्रुनीश्वर विरचितः अभिधान चिन्ताविष शिलोञ्छचः ह. २-४-० (१०-९२)
- १०८ अभिनंदन और सुमितनाथ प्रभुका चरित्र अनुवादक—माणेक सुनि. हिन्दी त्रिषष्ठी शलाका पुरुष चरित्र के आधार रु. ०-२-० (३८)
- १०९ अभिनंदन और सुपतिनाथ प्रश्नका चरित्र हिन्दी (३९-४०. १.)
- ११० अभ्युद्धय मार्ग रु. ०-६-० (६)
- १११ अमदावाद कॉन्फरन्स रीपोर्ट रु. ०-८-० (२३५.)
- ११२ अपदावाद शहेर यात्रा रु. ०-२-० (६.)
- ११३ ,, ,, ,, की अम्रुस्य (४१)
- ११४ अगरकोष टीका सहित. रु. २--- (६,)
- ११५ अगरतेज मुनिनी सज्जाय. हुकपमुनि (२१.६.)
- ११६ अपरदत्त पित्रानंद चरित्र. गद्य. रु. १-०-० (३२.)
- ११७ अपर शतकम् निगेरे अपरुक किव विरचितम् (काव्यमाला १८ अर्जुन वर्षेदेव प्रणीतया रिसक संजीवनी समाख्यया इयाख्यया समेतम्, रु. ०-१०-० (सं. १०.)
 - ११८ अभिधम्मत्थ संगृहो अनुरुद्धाचरिय विश्वितो. रु. २-०-०
 - ११९ अग्रुट्य रस्त संग्रह रु. ०-८-० (६.) [(३६. मा०)
 - १२० अमे साधु का माटे थया. (१९–६८)

1

१२१ अम्बह चरित्रव अपरसूरि, (३२. सं. २२)

१२२ अर्थदीपिका (श्राद्धपतिकपण.) रत्नशेखसूरि सन्द्रव्य विव-रण युतम्, रू. २-०-० (१६ मा. सं.) [४२.मा०अं०)

१२३ अर्घमागधी रीडर. बनारसीदास अप. ए. रु. ३-०-०

१२४ अर्थमागधी व्याकरण. मुनिरत्नचंदजी. सतावधानी (४३मा०)

१२५ अहसीति भाषान्तर. हेमचंद्रचार्य प्रणीत. भा-क मणीलाळ

्नथुभाष दोसी रू. १-४-० (४४-६. गु.)

१२६ अईम्रीति आषान्तर. रु. १-८-० (७. गु-१,)

१२७ अलंकार चिंतामणी. जिनसेनाचार्य रु. ०-१२-० (हि. ४५ सं. दि.)

१२८ अल्प बहुत्व गर्भित श्री महावीर स्तवनम्, समय सुंद्रगणि विरचित स्वोपज्ञावचूरि सहित तथा महादंडक स्तोत्र— अपरनाम अल्प बहुत्व विचार स्तवन ग्रं. नं. १९ रु. ०-२-० (१७. सं.)

१२९ अवच्छेदक तत्व निर्युक्ति विगेरे.

१३० अवतारिका परिछेदद्वयम्

१३० अ. ,, ,, ३-८ परिच्छेद.

आतुं खरु नाम :---

प्रमाणनय तत्वालोकालंकार. रत्नप्रभाचार्यकृत रत्नाकरा-वतारिकाल्यया बाल्यया समलंकृतः (१४-४७.)

१३१ अविद्याम्धकार मार्तेड. छिब्धिविजयजी रु. ०-१-० (४८)

१३२ अब्ययद्वति रु. ०--२-० (६.)

१३३ अशोक, आर्यावर्त्तना महान चक्रवर्त्ती महाराजा. गुर्नरमां छे० जीवणळाळ अमरसी महेता. रु. ०-१०-० (४९.)

१३४ अशोकचंद्र (५०,) [(तेणे बौध धर्म स्वीकार्यो इतो.)

१३५ अन्नोक छेख संग्रह. भियद्श्रि-प्रश्नस्तयः संस्कृताङ्गानुवाद.

अजित]

9

अवधा

पाठभेद-टिप्पणादि सहित. संगृहीताः प्रकाशिताश्च (५१)

" पाछळथी आवेला फॉर्ममांथी लीधेला ग्रन्थो-चालु कामे आववाथी आ नीचे लीधा छे."

४ अ. अजितकाच्य कीरणावली (६,)

४ ब. अजितनाथ जिन होरी. (जुओ-देवचंद्र भाग २.वि. १).

१० अ. अढार पापस्थानक अने बार भावनानी सज्जाय अर्थ रहस्य साथे. रु. ०-८-० (६) [२. वि. १).

१६ अ. अतितचोवींशी पैकी एकवीसी (जुओ देवचंद्र भाग

२६ अ. अध्यात्मगीता प्राय: १७४३ संत्रत र्हीबडी. (जुओ देवचंद्र भाग. २ वि. १).

२६ ब. ,, ,, देवचंद्रजी कृत. (जुओ–आत्मिहितोपदेश.

२९ अ. अध्यात्म बावनी. (जुओ-आत्महितोपदेश.)

२९ ब. ,, ,, (जुओ–क्षमाकुलकादि संग्रह).

३० अ. अध्यात्मिक मतस्वंडन सटीक (जुओ यशोविजय ग्रन्थभाला)

४३ अ. अनगार धर्मामृत रु. ३-८-० (६) [छाछ.)

६१ अ. अनुभव प्रवेशिका. (जुओ-सुमित विलास ग्रन्थ मनसुख-

९० अ. अभय कुलक (जुओ-कुलकसंग्रह १७वाळो.)

९७ अ. अभिधान चिन्तामणि शिलोञ्छश्च जिनदेव ग्रुनीश्वर विरचित (जुओ-अभिधान संग्रह भाग २ जो.)

११९ अ. अग्रुलख खुबचंदनुं जीवन चरित्र. (८४३)

११२ अ. अर्घमागधी कोष भाग १ लो सं. हि. गु. अं. साथे (६)

१२४ अ. अईदादि स्तवन विविध पद्य रचनात्मक (जुओ-प्रक-रण रत्नाकर भाग ४ थो).

१३० ब. अवधानना प्रयोगो (रत्नचंदजी स्वामिना रु. ०-४-०(६)

अष्टक]

20

अष्ट्रम

?३६ अष्टकप्रकरण सटीक. इरिभद्रसूरि कृत. भेट. (??.) (इरिभद्र सूरि) अष्टक भाषान्तर युक्त रु. ?-१२-० सं० गु० (३२.)

> ,, ,, सटीक रु. १-०-० (सं. ३२) अष्टक मूळ. हरिभद्रसूरि कृत. युक्तिपकाशना भेगो छे. रु. ०-८-० (३२.) हरिभद्र सूरि ग्रंथमाळा]

> अष्टक. मूळ बीजो. हरिभद्र कृत ग्रंथमाळा. (६.) [जुओ-अष्टक मूळ तथा जिनेश्वर सूरि निर्मित, अभयदेव सूरि प्रतिसंस्कृत द्वति सहित. (११.)

> अष्टक बीजो-हरिभद्र सूरि कृतान्यष्टकानिः मूळ-तेनो अर्थः अने टीकानो भावार्थः संस्कृत उपस्थी, सं. १९५६ः (७.) अष्टक प्रकरणः हरिभद्रकृतः

,, ,, जिनेश्वरं सूरिकृत्₊ अष्टक वे षट्दर्शन सम्रुचय वे रु. ०–४–० (१६–१)

१३७ अष्ट पकरण सटीक. (११.)

१३८ अष्ट प्रकारी पूजा-(महाराज राजेन्द्रसूरिजीकी.) भेट. ले. पं. तीर्थ विजय. सं. १९७९ (३७.)

अष्ट प्रकारी पूजा (आत्मारामजी कृत.)ह.०-२-० (६.)हि.
,, ,, पूजा वीरविजयजी कृत, अर्थ सहित. ०-४-०
अर्थ क. पं. चारित्रविजय. (६.)

अष्टपकारी पूजा तथा छुटक स्तवनो रु. ०-२-० (६.) गु. अष्टपकारी पूजा. रु. ०-२-० (६.)

अष्टमकारी पूनाओ. २. सं. १७४३ (जुओ देवचंद्र भाग २ वि. १ हो). [२ वि. १)

१३९ अष्ट्रवचनमातानी सज्जाय. (जामनगर-जुओ देवचंद्र भाग

अष्ट्रस ी

33

आउर

- १४० अष्टसहस्री विद्यानंद स्वामिना निर्मिता. (दि.) गांधी-नाथा
 रंगजी. आकळजनीवासी. रु. ३-०-०.
 - १४१ अष्टसहस्री दृत्ति अष्टसहस्री यशोविजयकृत टीका श्लो० ८००० नी छे छिखित छे.(छपाववानी खास जरूर)सुधारेछी पेस-कॅापी विजयोदयसूरि पासे छे.टा. पांजरापोळ अमदावाद.

१४२ अष्टान्हिकाल्यानम्. रु. ०-६-० अलभ्य. (१७.)

,, ,, विगेरे. (५०.)

,, ,, भाषान्तर रार्जेन्द्रसूरि. सं॰ हिन्दी. रु. ०-२०-० (३७. ३२३.)

१४३ अष्टापद कल्प संस्कृत (गुजराती अनुवाद सहित-) धनपाळ पंचाशिकाना मेगो छे. १९६९ (६.) [रु. ०-२-०

१४४ अष्टापद तीर्थ पूजा. वह्रभविजयजी कृत. सं. १९७९ (५२.)

१४५ अष्टोत्तर शत तार लक्षण. (५०.)

१४६ अहिंसा. विद्याविजयजी. गु॰ मेट. (१४-४८)

१४७ अहिंसादिगदर्शन. विजयधर्मसुरि. (४७.१४.)

१४८ अहिंसा परमी धर्म, रु. ०-२-० (९.) हि.

१४९ अहेवाले कान्फरन्स रु. ०-५-० (६. गु. २३५.५३)

१५० अहेवाले कान्फरन्स. (बीजी कान्फरन्सनी हेवाल.) रु. ०-५-० (५३. २३५)

१५१ अक्षय निधि तप संबंधि विधि विधान तथा गहुंछी विगेरेनो संग्रह. सं. १९७४ (६,१,)

१५२ अज्ञान तिमिर भास्कर. १९४४ विजयानंदसूरि कृत. रू. २-८-० (१७,५४,१. हि.)

आ.

१५३ आउर पचलाण विगेरे. चडसरण, आउरपचल्लाण, भक्त-परिज्ञा, संयारग. (६. पा० मूळ)

भागम]

82

आचार 1

१५४ आगम अष्टोतरी हिन्दी भा. (७२-७१) ह.०-४-० (दि०)

१५५ आगम अष्टोत्तरी अभयदेवस्र्रिकृत (जुओ आत्महितोपदेश).

१५६ आगपनिर्णय. ०-२-० (हि. ६८)

१५७ आगम वाचन मीमांसा (७३-१२) गं. नं. २३

१५८ ञागमसार, रु. ०-१०-० (७४-७१)

आगमसार, पं. देवचंद्रजी कृत् मूळ उपरथी वि. कल्याणजी मळजी भेट १९६३ (७५)

आगमसार पं. देवचंद्रजीकृत आगमसार, पांचभावना, अ-ध्यात्मगीता, चिदानंदजीकृत पुद्गलगीता विगरेनो संग्रह के अमल्य सं. १९६७ (२६५)

आगमसारका. हिन्दी अनुवाद देवचंद्रजी विरचित श्रीमिच-दानन्दजी महाराज रु.०-१०-० सं.१९७८ (७६-७७)

आगमसार शास्त्री पं. देवचंद्रजी महाराज अपूर्व करणादि स्वरुप ०-१२-० सं. १९६५ (३७)

आगम सार अध्यात्मगीता. ग्रं. ५७-५८ पृ. ४७० रु. ०-६-०

आगमसार (जुओ देवचंद्र भाग २. वि. १ २. सं. १७६५ फा. सुद ३ मोटा कोटा-मरोट.

आगमसार (जुओ पकरण रत्नाकर भाग १छो.)

१५९ आगमस्तव सावचूरि (जुओ-कान्यमाळा गु. ७ बीजी).

१६० आगमसारोद्धार देवचंद्रजीकृत गुजराती रु. ०-२-० (६)

१६१ आचार दीपक भाग १ छो. तथा २ जो. पांचपकाश रत्नशेखर सूरिकृत रु. १-४-० (प० ७९. प्रा० सं० गु०)

१६२ आचार दिनकर विभाग १ लो पूर्वार्ध सं. वर्धमानसूरि विर-चित पा.१४० ग्रं.नं. २. ४५०० श्लोक (७८) रु.६-०-०

आचार ी

8\$

[आचारां

आचार दिनकर भाग २ जो पा १४१ थी ३९८ रु. १०-०-० (सं. ७८)

१६३ आचार प्रदीप (प्रकाश पहेलो मूळ टीका भाषान्तर) मु. क रत्नशेखर सूरि. रामचंद्र दीनानाथ रु. १-४-० सं. १९५८ (सं. गु. ३२)

१६४ आचार रत्नाकर प्रथम प्रकाश पं. मोहनळाळ ग्रुनिजी. लक्ष्मी प्रधानगणि शिष्य सं. १९४५ (हिं, ८०, १,)

१६५ आचार सार. (दि) सं. १९७४(५०-८१,६.) ह. ०-६-० १६६ आचारांग सूत्र (मूळ, टीका, अर्थ सहित) (की. नथी (६.)

- ,, ,, द्वितीय आरहित मूळ भा. सहित रु. ४--०-०
- ,, प० खनीभाइ देवराज घो० [(वा. गु. ८२.)
- ,, ,, मूळपाठ, विशिष पाठभेद, शब्दकोष समन्वित प्रथम श्रुतस्कंध रु. २-०-० (पा. सं. ८३)
- ,, , शीलाङ्काचार्यकृत विवरण अने भद्रवाहु स्वा-िषकृत-निर्धुक्ति भाग. १ लो रु. १-८-० (२८)
- ,, भाग २ जो रु. २-४-० (२८)
- ,, वाबुवाळुं. रु. ४५-८-० स्वधर्मीओना माटे रु. २२-१२-० (२४, ५०,)
- ,, तथा करप सूत्र रु. ६-१२-० (६. अं.)
- ,, पूर्वभाग (पाना) ह. १-१२-० (६. प्रा०)
- ,, भाषान्तर सहित रू. ३-०-० (गु. ६)
- ,, ,, भाग १ छो. शीलाङ्काचार्य विद्यित विवरण समन्वितं. (१६, ५० प्रा० सं.)
- », भाग २ जो. (१६-५०) (प्रा. सं.)
- ,, भाग १ थी ५ मां मुनि माणेक (पा. गु. १२.) मूळ, निर्धुक्ति अने टीकानुं भाषान्तर

आचारां ी

६८

अात्म

,, गूल अने भा. रु. ३-८-० इ १९९२ (पा० गु० ८४-१) [विरचित. (६.)

१६७ आचारोपदेश मूळ सं. रत्नसिंहसूरि शिष्य चारित्रसुं**दर गणि**

,, ,, त्रुटित (गु, ५०)

,, ,, चारित्रसुंदरगणि रु. ०-४-० (अ० ६७.) आचारोपदेश ग्रन्थ (जुओ-मकरण लघुसंग्रह.)

,, भाषान्तर सहित रु. ०-१२-० षड्वर्ग रुप भा. क. (८५-५०) [विजय.)

,, , (जुओ-सूक्त मूक्तावली भाषान्तर पं. केसर १६८ आजकालनुं हिन्दुस्तान भाग १-२-३ विचारणीय इतर (गु. ७१)

१६९ आजको लाहो लीजीएरे कालकोणे दोठी छे (पाय: देवचंद्र-जी कृत जणाय छे (जुओ-देवचंद्र भाग २. वि. १).

१७० आउ दृष्टिनी सङ्गाय रु. ०-६-० (गु. ६, ५०,)

१ आठ दृष्टिनी सझाय.

२ छटक महा वाक्यो.

३ श्री गिरनारजीनीं तीर्थमाळ (दुहा १०२)

४ आत्मशिक्षाभावना (दुहा १८५)

५ अध्यात्म बावनी त्रण प्रकारनुं आत्म स्वरुप,

६ दया छत्रीशी चिदानंदजीकृत्.

१७१ आते वीर धर्म के विणग् धर्म. (५०. गु.)

१७२ आत्मकान्ति प्रकाशः विविध स्तवनो स्तुति सञ्चायोनो संग्रहः हः ०-४-० (गु. १७,)

१७३ आत्म चितामणि. हुकमग्रुनि (दे. २१)

१७४ आत्म तत्व दर्शनः बुद्धिसागरसूरि ए. ११२ ग्रं. ५१ (१५,५८) ध्र ६२, १८४) रु. ७-१०-०

आत्म ो

१५

बात्म

- १७५ आत्म निन्दाष्टकम् (जुओ-काव्यमालाः गु. ७ बीजी) १७६ आत्म नित्यभावना रु. ०-०-६ (गु. ३.)
- १७७ आत्मनिदा शतक रु. ०-४-० (६.)
- १७८ आत्मपूजा आत्मारामजीकृत पूजाओनो संग्रह, अन्यकृत स्त-वनो गहुं छि अने मंडल सहित नत्रपद पूजा (हि.७.५०,)
- १७९ आत्मप्रकाश-बुद्धिसागरसृरि (१५ ५८ यी ६२ १८४)
- १८० आत्मप्रदीप बुद्धिसागरसृरिकृत स्वोपज्ञ टीका सहित गु. वि. मणिलाल नध्युभाइ दोशी. बी. ए. (१५, ५८ थी ६२ १८४) रु. ०-८-०
- १८१ आत्म प्रबोध. क्रुपारकवि (२२,)
- १८२ आत्म प्रवोध. (पाना) जिनलाभसूरि कृत मूळ कथा विवेचन रु. ८-०-० सं. १९६६ (३२, १७)
- १८३ आत्म प्रबोध. धनविजय रु. ०-६-० सं. १९७१ (३७.)
- १८४ आत्म प्रबोधः भाषान्तर (शास्त्री) रु. २--८-० (१७)
- १८५ आत्म प्रबोध स्याद्वाद ग्रन्थ, सं० १९४५, (९०)
- १८६ आत्मबोध पत्रिका.(जुओ-सुपतिविलास ग्रन्थ. मनसुखलाल.)
- १८७ आत्मबोध प्रकाशः धनचंद्र सूरिजी रु. ०-४-० गु॰ (६)
- १८८ (आत्म शिक्षा भावना विवेचक) बुद्धिसागरसूरि कृत (१५, ५८ थी ६२, १२,१८४)
- १८९ आत्म रहस्य, श्रीयुत जेम्स्. एलन. के. 'Out from the Heart ' नामक ग्रन्थका अनुवाद, रु. ०-४-० इ. १९१६ (७१:९१)
- आत्म रहस्य. दयाचंद्र गोयलीयम चिरंजीलाल.माथुर. हिन्दी
- १९० आत्म लब्धि विकास. स्तवनावलि. (लब्धिविजयजी) (९२)
- १९१ आत्म बल्लभ जैन स्तवनावलि. (ग्रॅं-नं, १६) रु. ०-६-० गु० (१७)

आत्म]

१६

आत्म

१९२ आत्मवल्लभ पूजासंग्रह विधि साथे रु. २-०-० (६)

१९३ आत्म विल्ञास स्तवनावली आत्मारामजी कृत स्तवनी. रू. ०-६-० हि. (५०,८०६)

१९४ आत्म वोरनी कथाओ, रु. ०-५-० गु० (९३,८०७)

१९५ आत्म शक्तिनो उदय. चारित्रविजय. रु. ०-४-० (६)

१९६ आत्मशक्तिपकाशः बुद्धिसागरसूरि. (१५, ५८ यी ६२, १८४)

१९७ आत्म शक्ति प्रकाश. लब्दि विजय. सं.१९७० रु.०–४ -०

१९८ आत्म शान्ति उपाय. रु. ०-३-० (६) [हि० (९५,९६)

१९९ आत्म शिव पश्चोत्तरः आत्मारामजी ओर म्रुनि शिवजी रा-मजी महाराजकी परस्पर बातचीत इ. १८८३ (९७)

२०० आत्मशिक्षा भावना, प्रेमविजयजी, गु० (९८) आत्म शिक्षा भावना, विवेचन कर्त्ता बुद्धिसागरसूरि, (१५, ५८ थी ६२-१८४)

> (आत्म दर्शन) बुद्धिसागरसूरि. (प्राचीन गुर्जर भाषामां जैन साहित्य) ग्रं. नं. ३० अमूल्य. (१५,५८ थी ६२,१८४)

२०१ आत्म सिद्धि शास्त्र रु, ०-५-० (६)

२०२ आत्म हितबोध, तेमां. (१) ज्ञान्ति प्रकाश (२) समाधि मरण (३) मृत्यु महोत्सव (४) समकीत छपनी, (१० १००)

२०३ आत्म हित शिक्षा पद संग्रह अथवा चतुर्दश नियमावली. रू. ०-८-०

२०४ आत्म हित्रिक्षा भावना. सं. १९७४ अमूल्य. (१०१,९५)

२०५ आत्म हितोपदेश रु. ०-८-० (५०,१०२) तेमां (१) अ-ध्यात्मगीता देवचंद्रजी कृत (२) मोटी अध्यात्म गीता-विनयविजयजी कृत. (३) पांच भावना देवचंदजी कृत. आत्म]

१७

[आत्मो

(४) आछोयणा छत्रीसी. समयसुंदरसूरि कृत, (५) आगम अछोत्तरि. अभयदेवसूरि कृत. (६) अध्यात्म बा-वनी. (७) ज्ञान पत्त्रीशी.

२०६ आत्मज्ञान ग्रन्थमाला भा. १ लो. हुकमग्रुनिजी (१–२१)

२०७ आत्मज्ञान प्रवेशिका. पं. केसर्विजय रु. ०-३-० (२५) आत्मज्ञान प्रवेशिका. रु. ०-२-० (६)

२०८ आत्मानुशासन. मूल भा० क० सेतावचंद नहार बहादुर. स० १९३१ सं०, मा०, हि० अलभ्य (१०४)

२०९ आत्मानुशासन ओर प्रज्ञा प्रकाशः पार्श्वनाग सं०, हि० रु. ०-४-०

> आत्मानुशासन ओर प्रज्ञा प्रकाशः (हिन्दी भाषान्तर) रु, २-०-० (१०५)

२११ आत्मानुशासन. भद्रभदंत वंसीधरजी (१०६) [(६-१७)

२११-अ. आत्मानंद जैन गायन संग्रह प्रथम भाग रु. ०-२-०

२१२ आत्मानंद जैन शिक्षावली भाग रलो हिन्दी रु. ०-४-०

२१३ आत्मानंदं मकाश रु. ०-२-० (६-१७)

२१४ आत्मानंद स्तवनावली, अमृल्य (१०७, १०१, ५०)

२१५ आत्मारामजीकृत पूजाओ रु. ८-४-० (६)

२१६ आत्मारामजी महाराजनं जीवनचरित्र पद्य रु.०-१-०(१०८)

२१७ आत्मावबोध कुलक अथवा आत्मज्ञान जयशेखरसूरि रु. ०-८-० प्रा० गु० (१०९)

आत्मावबोध कुलक (जुओ-कुलकसंग्रह १७वाळो.)

२१८ (लालन) आत्मवाटिका. रु.०-१२-० गु० (१०९-११०)

२१९ आत्मोन्नति ग्रं. नं. २३ (अलभ्य) रु. ०-१०-० (१७-६)

२२० आत्मोन्नति सर्वेज्ञ मणीत स्याद्वाद द्रीनरूप (१११?)

२२१ आत्मोन्नति दिग्दर्शन विजयधर्मसूरि सं० १९६६ (१४-४७)

आद्री]

१८

आनंद

२२२ आदर्श जैन स्त्री रत्नो रु. २-०-० गु० (१७)

२२३ आदर्श साधु विद्याविजय. रु. १-४-० हिं० (१४)

२२४ आदिनाथ चरित्र सचित्र. रु. ४-०-० हिं० (९) आदिनाथ चरित्र गु. रु. २-०-० (६)

२२५ आदिनाथ चरित्र. (११२, ११३, ११४)

२२६ आदिनाय चरित्र हिन्दी रु. ०-२-० (६)

२२७ आदी वर चरित्र मुल (त्रिषष्टिमांथी) रु. १-८-० सं० (६)

२२८ आदिनाथ विवाहलो (श्रावक रुषभदासकृत.) सं. १९८८. जै० भंडार सची. (५३७-७१) (३२) अंचल

२२९ थादिनाथजीनो रास. दर्शनसागरजी कृत. रू. ३-०-०

२३० आदिनाथ देशना तथा स्तवनो. पा०. ग० (११५, १)

२३१ आदिनाथ श्लोको. (जुओ-श्लोकासङ्गह शास्त्री.)

२३२ आदि पुराण समीक्षा. (दि०) रु. ०-४-० (११६, ५०)

२३३ आनंदकाव्य महोद्धि (प्राचीन जैन काव्यसंग्रह) मौक्तिक १ छं. जैन गुर्जर साहित्योद्धारे. ग्रन्थांक १ रु १-०-० गु० (१६, ६९६)

> आनंदकाव्य महोद्धि मौक्तिक २ जुं, (प्राचीन जैन काव्य संग्रह) जैन गुर्जर साहित्योद्धारे ग्रथांक २ सं० १९७० (१) रामायण. चार अधिकार. रु. ०-१०-० गु० (१६, ११७)

> आनंदकाव्य महोद्धि (पाचीन जैन काव्य संग्रह) मौक्तिक ३ जुं. रु. ०-१०-० (१६, ११७) तेमां:-

(१) भरत बाहुबळी रास. (२) जयानंद केवळी रास. (३) बच्छराज देवराज रास. (४) सुर सुंदरी रास. (५) नळ दमयंती रास. (६) हरिबळ माळी रास.

मानंद काव्य महोद्धि. (प्राचीन जैन काव्य संग्रह) मौ-

आनंद]

26

[आनंद

क्तिक ४ थुं. शत्रुंजय माहात्म्यः जिनहर्षे प्रणीत. र. ०-१२-० गु. (१६, ११७)

आनंद काव्य महोद्धि (प्राचीन जैन काव्य संग्रह) मौ-क्तिक ५ म्रं. हीरसूरिरास-नयसं १२ प्रणीत क. ०-१०-० गु. (१६, ११७)

आनंद काव्य महोद्धि. मौक्तिक ६ दुं. जैन गुर्जर साहित्यो द्वार-पाचीन काव्य संग्रह. रु. ०-१०-० (१६, ११७)

- (१) रुपकुंवर रास.
- (२) नळ दमयंती रास. नयसुंदर
- (३) शत्रुंजयोद्धार रास.

२३४ आनंदघन चोवीशी. रु. १-०-० हि० (६) आनंदघन चोवीशी. (६८)

> ,, ,, (जुओ प्रकरण रत्नाकर भाग. १छो.) आनंदघनजी कृत चोवीशी. देवचंदजी कृत चोवीशी तथा वीशी विगेरेना स्तवनो. भेट (११८)

> आनंद्घनजीनी चोवीशी. (अर्थ सहित) रु.०-८-०हि.(६) आनंद्घनजीनी चोवीशी. (गुजराती अर्थ वाळी) रु. ०-६-० (६)

,, ,, मां ज्ञान विपल्ली अने देवचंदली बने भेगाथइने बनावेला, २२-२४ वे स्तवनो (जुओ देव-चंद्र भाग, २ वि. १.)

२३५ आनंदघनजीनी तथा चिदानंदजीनी बहोंतेरीक.०-७-०(६)
२३६ आनंदघनजीनी बहोतेरीना पदना अर्थ क. ०-१-० (६)
२३७ आनंदघन पद रत्नावली भा. १छो क.२-०-० ग्रु.(११९)
२३८ आनंदघन पद संग्रह भावार्थ सहित, बुद्धिसागरसूरि, १०८
पद, पृ. ८०८ क. २-०-०, हि० गु० (१५, ५८ थी
६२, १८४)

मानंद]

२०

[आराम

२३९ आनंदमंगल स्तवनावली. रु. ०-२-० गु० (६) आनंदमंगल स्तवनावली भा. २ जो. रु. ०-४-० गु. (६) आनंद रत्नवली रु. ०-४-० (६)

२४० आनंद विनोद, आनंदसागरजी, भेट, (१२०)

२४२ आनंद विमल सूरि. (संक्षिप्त सार रुप तथा मूल रास) जुओ-अतिहासिक रास संग्रह भा. ३ जो)

२४२ आनंद व्याख्यानमाला. रु. ०-६-० (६)

२४३ आप्त परीक्षा अने पत्र परीक्षा, श्री विद्यानंद स्वामिना वि-रचिता, '' सनातन जैन प्रथमाला '' खंड, १ (दि.) सं० कि. ०-२-० (१०६, ८०८)

आप्त परीक्षा (जुओ-जैन ग्रन्थ रत्नाकर अंक त्रीजो.)

२४४ आप्त मीमांसा. समन्तभद्र स्वामि विरचित. हि. (१०६)

,, ,, (जुओ-जैन ग्रन्थ रत्नाकर अंक त्रीजो.)

२४५ आबुजीनो नकशो. रंगीन. रु. ०-४-० (६)

२४६ आबु जैन मंदिरो के निर्माता. पंडित ललितविजय रु. ०-८-० हि० [दृत्तियुक्त.

२४७ आराधक विराधक चतुर्भगी. यशोविजयजी कृत, स्वोपन्न

२४८ आराधना, गु. (१)

२४९ आराधना कथा कोष भा. १ छो. (दि०) ब्र. नेमिकृत. उदयछ।छ कासछीवाला. रु.४-०-० सं.हि. (१२२,५०)

आराधना कथा कोष भा. २ जो. आराधना कथा कोष भा. ३ जो.

२५० आराधना सार, देवसेन, (दि.) (८१, ५०)

२५१ आराम नंदन, रु, ०-२-० (८८)

२५२ आराम शोभा चरित्र हे. समुद्रविजयजी (वर्छभ विजय शिष्य) सं. १९७९ इ. ०-२-० (४८) आरंभ]

२१

आळीच

२५३ आरंभसिद्धि मूल मात्रः उदयप्रभदेवसूरि विरचित श्री हेमहंसगणि विरचितेन शृङ्गाराख्येन वार्तिकेन संविष्ठतः (५०)

आरंभसिद्धि विगेरे भाषान्तर. भा. क. पुरुषोत्तम गीगाभाइ रु. ५-०-० (५०, १२३)

आरंभसिद्धि उदयप्रभदेवसूरि विरिचतः श्री हेमहंसगणि विरिचत टीका सिहतः

- (१) श्री इरिभद्रसृरि विरचित लग्नशुद्धिः
- (२) श्री रत्नशेखर कृत. दिनशुद्धि सं.१९७४ (७,५०) आरंभिसद्धि भाषांतर सहित. रु. ९-०-०
- २५४ आर्य देश दर्पण, शान्तिविजयजी कृत. (आत्मारामजीना) इ. १८८७ हि. (१२४, ७१)
- २५५ आर्यमत लीला. (जैन गजटसे उध्यृत) (दि०) रु. ०-६-० हि. (११६, ७१)
 - (१-२) आर्योका तत्वज्ञान. ट्रे. नं. १-२ (३) इश्वरका कर्तृत्व. ट्रे. नं. ३ (४) भजन मंडली ट्रे. नं. ४ (५) कुरीति निवारण ट्रे. नं. ५ (६) जैनियोके नास्तिकत्व पर विचार. ट्रे. नं. ६ (७) धर्मा-मृत रसायन. ट्रे. नं. ७

२५६ आर्य संशयोनमूलन. (अर्थात, "आर्य समाजी स्वामी द-र्श्वनानंदजी सरस्वती रचित " जैनमत समीक्षा) ट्रेकटका खंडन. (११६, ७१, १२५)

२५७ आर्योका तत्त्वज्ञान, ट्रे, नं, १-२ (जुओ आर्य मत लीला) २५८ आर्योपदेश रत्नमाला दयानंद सरस्वती स्वामी निर्मिता, अजमेर रु. ०-१-० हि० (७१)

२५९ आस्त्रोचना पाठ सटीक रू. ०-१-० (६)

आछोय]

२२

[इंडर्

आलोयणा छत्रिशी समयसंदर सृरिकृत (जुओआत्महितोपदेश) आलोयणा संग्रह हि. (४३)

२६० आवश्यक टिप्पण (हरिभद्रीयावश्यक दृत्ति) (१६,२२) आवश्यक हारिभद्रीया २००० टीका साथ संपूर्ण, नियुक्ति मूल-भाष्ययुक्त आवश्यक सूत्र (२८)

> आवश्यक सूत्र भाग १ लो टी. भद्रबाहु स्वामी तथा हरि-भद्र सुरि रु. २-४-० (१६)

,, ,े, भाग २ जो रु₊ ३-०-० (१६)

,, ,, भा, ३ जो रु, ३-८-० (१६)

,, ,, भा. ४ थो रू. १-०-० (१६)

आवश्यक निज्जुत्ती भद्रबाहु स्वामी कृत मूल ए. १६१ थी २०० प्रा. (१४)

आवश्यक सत्र विभाग १ लो. (इरिभद्र सूरिकृत टीका नि-र्युक्ति मूळ साथे भाषान्तर) लेखक म्रुनि माणेक सं० १९७९ सं० १९७९ रु. २-०-० (१२)

आवश्यक द्यति टिप्पण. हेमचंद्र सूरिजी रु. १-१२-० सं. ग्रन्थ नं. ५३. (१-१६)

२६१ आहार मीमांसा (५०, १२६)

₹.

२६२ इंडरगढ महात्म्य. भेट. (१०८)

इंडरना इतिहास ना छ पांन छुटा—(जुओ—फार्बस गुजराती सभाना हस्त लिखित पुस्तकोनी यादि. अ. ४८-१-छ) इंडरना पटावतोनो इतिहास. ए. १ थी ७५ (जुओ—फार्बस गुजराती सभाना लिखित पुस्तकोनी याद. अ. ४८-१-च.) इंडर]

23

[इन्द्रि

इंडरना रावना कागळो (जुओ-फार्बस गुजराती सभाना इस्त लिखित पुस्तकोनी याद. अं. ४८-१)

इंडरना राजा पुंजानी वैसावली (जुओ-फा. गु. स. ह. पु. याद. अंक ४८-१)

इडरना राणानी इकीकत (उपर प्रमाणे)

इडरना रावनी वंसावली (उपर ममाणे)

इडरना ख्यात गढवी अमजी तथा बारोट रतनसंगजी पृ. १ थी १६ (उपर प्रमाणे)

,, ले. अमजी (उपर प्रमाणे)

,, सवाइरांम रतनसंघ पृ. १-२४ (उपर प्रमाणे)

इंडरनी पोळोनी ख्यात अने रायकवाटनी वात ले. गढवी धीरजी पू. १ थी १९ (उपर ममाणे)

इडरनो संक्षिप्त इतिहार. ले. जोगीदासकृत अमनगर-हि-म्मतनगर. (गोपाळदास जोगीदास)

२६३ इतिहास तिमिर नाशक भा. १-२-३ इ. १८०० रु. ०-४-६ (१२७, ७१)

२६४ इतिहासिक रास संग्रह भा. १-२ विजयधर्मसूरि (१४,७१) २६५ इतिहासिक सज्झायमाळा भा. २ विद्याविजय, विजयधर्म सूरि शिष्य. (४७, ७१)

२६६ इंद्रिय पराजय दिग्दर्शन. विजयधर्मसूरि.(१४,२२,४७,१२७)
,, ,, मराठी विजयधर्मसूरि. (१४, ४७)
इंद्रिय पराजय शतक. गुजराती भाषांतर साथे. विजयधर्मसूरि.
(१४, ४७, ७१)

,, ,, ,, बालवबोध सहित. (जुओ प. २. भा. ४ थो) २६७ इन्द्रियविकार निरोध कुलक (जुओ. क्षंमा कुलादि संग्रह)

इलाची]

ર૪

उत्तरा

२६८ इलाचीकुमारना षट् ढाळीयां २० सं. १७२७ (१२९, ६३)

२६९ इलामाकार चैत्य परिपाटी हेमविमलकृत.

२७० इरियावही कुलक (जुओ कुलकसंग्रह १७ वाळो)

२७१ इश्वरकर्ता अने आस्तिक नास्तिक निर्णय. रु. ०-२-० (७१, १३०)

२७२ इत्वर कर्ता खंडन. रु. ०-२-० (६)

२७३ इश्वरका कर्नृत्य (ट्रेकट नै. ३ जुओ, आर्य पत लीला हि.(५०)

२७४ इश्वरचंद्र विद्यासागरनुं जीवन चरित्र.

२७५ इसाइ मत परीक्षा. रु. ०-८-० (१३१)

२७६ इसाइ मत समिक्षा. विज्यानंदसूरि. रु. ०-८-० हि. (१३१)

२७७ इस्टोपदेश्वटीका (दि०) (५०)

उ.

२७८ उच जीवनके सात सोपान, रु. ०-२-० (८८)

२७९ उत्तमकुमार चिरत्रादि चार ग्रंथ. क. चारुचंद्र. (३२, १.) उत्तमकुमार चरित्र (पाना) चारित्रसागर. रु. ०-१२-० (१२, ३२.)

उत्तमकुमार चरित्र नमस्कार महात्म्य. कूर्मा पुत्र चरित्र. उत्तमकुमार नोवेल. रु. ०-१०-०

उत्तम चरित्र कुपारनो रासः जिनहर्षसूरि कृतः २. सं. १७४५ हे. ०-४-२

उत्तमचरित्रकुमारनो रास. (जिनहर्षसूरि कृत) (वस्न-२८० उत्तम बोध. (१३२) िदान फळ महात्म्यरूप (७, ५०) २८१ उत्तराध्ययन सूत्र मूळ यूरोपमां छपायेळ. पाटांतरो सहित. अंग्रेजी परतावना अने टियम युक्त बे भागमां (अंग्रेजी सम्रदायमां) रू. २२-०-० (६, ४७) उत्तरा]

२५

[उपदे

उत्तराध्ययनसूत्र. लक्ष्मीब्हभीया टीका. रु. ५-८-० (५०, १३४)

उत्तराध्ययनसूत्रनो तरजुमो. मूळ, अर्थ, भावार्थ. डो. इरम-न जेकोबीनुं सुधारेलुं. रु. ६-०-० (८२, १३५) उत्तराध्ययनसूत्र पानाना आकारमां रु. २-१२-० (८२, उत्तराध्ययनसूत्र, वीकानेर. (४७, १३६) [१३५) उत्तराध्ययनसूत्रसार विभाग १ छो. हि. रु. ०-२-० उत्तराध्ययनसूत्र शान्त्याचार्यनी टीका. रु. ४-१५-० (१६) उत्तराध्ययनसूत्र टीका. (पाना) जयकीर्तिसूरीया टीका. रु. १५-०-० (३२, ५०)

उत्तराध्ययनसूत्र तथा सूत्रकृतांगसूत्र. रु. ७-८-० उत्तराध्ययनसूत्र, मूळ, टीका अर्थयुक्त (की. नथी) शान्त्याचार्यकृतटीकायुक्त (६)

उत्तराध्ययनसूत्र भावविजयगणिविरचित.टीकोपेत.

विभाग १ लो अध्य. १ थी ८ } विभाग २ जो अध्य. ९ थी २० } (५०, १७) विभाग ३ जो अध्य. २१ थी ३६

उत्तराध्यय सूत्र भा. १ लो. कमलसंयमीटीकायुक्त. नि-णयसागर. रु. ३-८-० (१६, ७५०)

उत्तराध्ययनसूत्र कमलसंयमीटीका भाग २ जो. (छपाय उत्तराध्ययनसूत्रसार. मा. हि. (३९) [छे) (४७)

२८२ उदयसुंदरीकथा सोइलविरचित. रु. १-४-० सं. (१३८)

२८३ उद्यापनमहोत्सव. मा० म० शेठनो लग्न प्रसंग, (१०८)

३८४ उपकेशगच्छलघुपट्टावली. (६८)

२८५ उपदेशकरपदल्ली. रु. ७-८-० (३२)

,, भाषान्तर इन्द्रहंसगिणकृत. 'मन्द्रजिणाणे ध उपदे]

२६

उपदे

आणं ? सज्झाय उपर टीका. सं.१९७८ रु.२-०-०(६) २८६ उपदेशचिन्तामणिः सटीक कर्ता. जयशेखरसूरिः भाषान्तर सहित कुल प्र. २४०० (३२, १३९, १४०, १२)

भा. १ लो रु. ३-०-०

" २ जो रू. ३-o-o

,, ३ जो रु. १०-०-०

,, ४ थो रु. ४-०-०

रु. २०-४-० चार भागना.

उपदेशिचन्तामिणः भाषान्तर (प्रथमाधिकार) मूल विधिपश— जयशेखरसूरिकृत भा. क. शास्त्री हरिशंकर वढवाण. पाना १६३ टीका छापी नथी रु. ३-०-० (१, ३२, १४१)

२८७ उपदेशतरंगिणी मूळ रत्नमंदिरगणिनिर्मिता, सं. १९६७ रु. ३-०-० ३३०० श्लोक (१४, ४७) उपदेशतरंगिणी. पांच तरंगनुं भाषान्तर. सं. १९५७ (७) उपदेशतरंगिणी तथा हरिभद्रसूरिना अष्टक भाषान्तरस-

हित. रु. ०-३-०

२८८ उपदेशपद भाग १ लो रु. ३-०-० (६७)
उपदेशपद प्रथम विभागः (प्रतिः) (५०)
उपदेशपद भाषान्तर पूर्वार्ध (शेठ वसनजी त्रीकमजी जैः
पी. ग्रन्थमाला) सं. १९६५ रु. १-१२-० (१४३,१४२)
उपदेशपद महाग्रन्थ, हरिभद्रसूरिकृत मुनिचंद्रसूरिकृतटीका
सहित. (६७)

२८९ उपदेशवासादमूल. स्तंभ १ थी ६ विजयलक्ष्मीस्रिकत रू. १-८-० (६)

> ,, ,, भा २ जो स्तंभ ७ थी १२ रु. २-०-० (६) ,, ,, भा २ जो स्तंभ १३-१४ (६)

उपदे]

20

उपवे

जपदेशपासाद भा. १ छो. स्थेभ १ थी ४ तुं भाषान्तर रु. १-८-० (६)

उपदेशमासाद भा. २ जो. स्थंभ ५ थी ९ तुं ,, रू. २-०-० (६)

उपदेशपासाद तृतीयभाग विशयलक्ष्मीसृरि त्रयोदशाष्टां-दशस्तम्भपर्यन्त सं. १९७७ र. च. १८४३ सम्य-क्तव, देशविरति अने सर्व विरतिनुं स्वरूप अने तेनी उपर कथाओं छे. (६)

उपदेशमासाद भा. ३ जो भाषान्तर. रु. १-८-० (६)

,, ,, भा. ४ थो ,, रू. २-०-० (६)

,, ,, भा. ५ मो ,, इ. २-०-**०** (६)

उपदेशमाळा अर्थ सहित. जै. म. स. भावनगर रु. २-०-०(६) उपदेशमाळा टीका. धर्मदासगणि मूळकर्ता, रामविजयगणि कृत टीका रु. ९-०-० (३२)

उपदेशमाला टीका (सिद्धर्षिकृत) रु. ६-८-० (३२)

उपदेशमालापकरण धर्मदासगणिकत. तेनी सरळ व्याख्या करनार कर्पूरविजयजी. आमां अंतर्गतकथा गाथानुवाद छप्पय छंद पद्यवंष. भेट. (३३)

उपदेशमालामकरण. भाषान्तर. (गुरुतत्त्व मकाश रास) कर्पूरविजयजी (३३)

चपदेशमाळा भाषान्तर रू. १८००

,, ,, सं. १९६६ रु. २-८-० मा. गु. (६) ,, ,, नातुं. रु. ०-४-० (६)

उपदेशरत्नकोष रु. ०-४-० था. क. मोइनलाल दस्टीचंद देसाइ. वि. वाडीलाल मोतीलाल, स्रू. गा. २६ मा. स्रुती जींदगी गुजरावानो व्यवहारु उपदेश.

चपदे]

२८

ं एपदे

खपदेशरत्नाकर (१, १२)

खपदेशरत्नाकर सटीक. मुनिसुंदरस्रुरि स्वोपन्न. पंदरमो सैको. रु. १-४-० (१६)

उपदेशरत्नाकर भाषान्तर पूर्वार्ध. क्विसंदरस्ररिकृत रु. १-१२-० (१४३)

खपदेशरत्नाकर मणको पांचमो. ग्रुनिसुंदरसूरिविरचित. भाषान्तरसहित. रु. १-१२-० (५०, १४३)

उपदेशरहस्यमकरण (संस्कृत) यशोधिजयउपाध्यायजी कृतस्वोपक्षविवरणसहित संस्कृत छाया पण छे. रु. १-०-० प्रा० (११)

२९० उपदेशशतक विगेरे. (५०)

२९१ उपदेशसप्ततिका इतिहासिक कथाप्रन्थ सोमधर्मगणि. श्रोधन चतुरविजय. रु. १-०-० (१७)

उपदेशसप्तिका सटीक. क्षेपराजम्रुनि. पा. सं. (६)

उपदेशसप्ततिका भाषान्तर (अनेक जैन ऐतिहासिक बाब-तोथी भरपूर.) रु. ०-४-० (१७)

,, ,, क्षेमराजम्रुनिकृत. मूळ अने टीकानुं भाषान्तर. भेट. सं. १९७६ (६)

उपदेशसप्तिका मोटी सटीक (पत.) रु. २--०-०

उपदेशसप्तिका (नव्या) श्रीमत्क्षेमराजम्नुनिविरचिता स्वो-पज्ञटीकासहित. (कर्तानुं कुलहक्ष जुभो वि०) टी० निर्माण सं. १५४७ (६)

उपदेशसप्ततिका नानी संस्कृत (अलभ्य) रु. ०-१३-०(१७) उपदेशसप्ततिका गुजराती रु. १-०-० (१७)

२९२ उपदेश सहस्रावली अथवा सत्य पुरुषोनी बोधजनकवाणी प्र. नाथीबाइ-ग्रुंबइ. की. अमृत्य. अजैन०

चपवे]

२९

[खपास

२९३ उपदेशसार, रु, ४-८-०,

जपदेशसार, टीका, (३२)

२९४ उपधानविधिः तैयार करनार आणंदजी कुंवरजीः सं. १९७६ (६)

२९५ उपितिभवनपंच मूछ. अंक १ थी ४ सिद्धिषे रु. २-०-० (१६)

उपितिभवपपंचा कथा उत्तरार्ध (पाना) सं. १९७६ रु. २-०-० (१६)

उपितिभवप्रपंचा कथा सिद्धिष्टं, एडीटेड बाय पी. पीट-सैन (१ थी ३ भाग) अने एच जेकोबी (४ थी १४ भाग अने वे वधाराना त्रण विभाग-१ अने २) दरेक विभागना रु. ०-१२-० (१४४)

उपमितिभवपपंच ग्रन्थ भाषान्तर संक्षिप्त. रु. १-०-०

,, (जुओ पकरण रत्नाकर, भाग, १ लो.

उपितिभवप्रयंचा कथा भाषा अवतरण, सिद्धिविरचिता. विभाग १ छो. प्रस्ताव १ थी ३ रु. ३-०-० विभाग २ जो प्रस्ताव ४ थी ५ रु. ३-०-० सं.१९८० (६, ११९)

उपमितिभवप्रयंचना पीठबंधनुं भाषान्तरः नाथुराम प्रेमी (दि.) रु. ०-१२-० हि. (१०६)

२९६ उपवासचिकित्सा (दि.) हि. (१०६, ५०)

२९७ उपसर्गहरस्तोत्र छघुटत्तिः शार्दाविजयग्रन्थमाळा भावनगरः रु. ३-०-०

२९८ उपासकद्वांगसूत्र (मागधी, अंग्रेजी तरजुपा साथे) रू.

२९९ चपासकदशांगसूत्र मूळ टीका अर्थ युक्त. (कि. नथी) ,, ,, ,, बालावनोध. धनपतसिंहजी

उपास 1

30

ऋषम

भगवान् विजयकृतभाषा. (२४, ५०)

उपासकद्शांगसूत्र अभयदेवसूरिकृत विवरणदृत्तियुक्त रु. ०-१०-० (१६)

उपासकद्वांगसूत्र मूळ मात्र अभयदेवसूरिकृतविवरण (वे-न्गाल एशियाटिक सोसाइटी) (१४४, ५०)

उपासकदशांगसूत्र भाषान्तर. (५०)

उपासकदशांगसूत्र अंक १ थी ६ रु. ३-०-०

उपासकदेशांगसूत्र भाग १ लो रु. ३-०-०

उपासकदशांगसूत्र प्रथमो भाग. मूल तथा विवरण (जैन मतागमसंप्रहसप्तमांग) श्रीमद्भयदेवाचार्यसूरिकृत विवरण सहित. डो. ए. एफ. रुडोल्फ हार्नेल परिशोधित इस्वी. १८९० कलकत्ता. शब्दार्थ विगरे अंग्रेजी अने पा. (६३) उपासकदशांग सूत्र टीका. अभयदेवसूरिकृत टीका. सं.

१९३३ (२४ २८-१६)

२९९ उमेदअनुभव भेट. (६९९)

३०० उववाइसूत्र मूळ टीका अर्थ युक्त (कि. नथी) उववाइसूत्र (पत) रु. ०-१२-० उववाइसूत्र धनपतिसिंह (२४, १२)

३००-अ. उपासक दशांग. प्राकृत अने अभयदेवस्र्रिनी संस्कृतटीका सहित १ थी ६ विभागमां पूर्ण. इंग्रेजीमां भाषान्तर करीते छपावनार ए. एफ. रुडोल्फ होर्नळ Rudolf Hornle. पूर्ण रु. १०-०-० (२९)

驱.

रूपकुंवर रास. नयसुंदरकृत जुओ-आनंदकाव्य महोदिधि (मौ. ६ हुं)

३०१ ऋषभपंचाश्चिकाधनपालपणीत (जुओ-काव्यमाळा ग्रु. ७ मो. बीजी) ऋषभ] ३१ (एलाची

२०२ ऋषभवीरजिनस्तुति संस्कृत. (जुओ म. २. भा. ३ जो.)
,, ,, स्तवन (जुओ म. २. भा. ४)

दिगंबरी ऋषिंबंडलयंत्रपूजा भाषान्तर. भार कर मनोहरलाल शास्त्री. गुणनन्दीविरचित भाषाटीकासहितः (दिर) रू. ०-५-० सं. हि. (१, ७०१)

३०३ दि० ऋषिमंडलद्वति भाषान्तर पूर्वार्धे ग्रुभवर्धनसूरिविरचित १९ चरित्रो अने १४ कथाओ छे. सं. १९५८ रु. २-८-० (१४५)

्र ए.

- ३०४ एकविञ्चतिस्थानपकरणम् सिद्धसेनस्र्रिपणीतम्. (प्र०७०२, १६४)
- ३०५ एकवीसप्रकारी पूजा सं. १७४३ (जुओ देवचंद्र भा र वि. १) ३०६ एकसो आठ बोलका थोकडा. राजेन्द्र श्वेतांवरोकी सिद्धिः सं. १९८१ रु. १-०-० (३७)
- ३०७ एक।ग्रता और दिव्यशक्तिः भाः कः सन्तराम बीः एः (हिन्दी गौरव ग्रन्थमाछाका ७ मा पुष्प) अंग्रेजीनो अनुवाद (दि०) खास जोवा छायक पुस्तक छेः अजैन पुस्तक छेः रु. १-०-०(१)
- ३०८ दि॰ एकीभावस्तोत्र (दि.) वादिराजमणीत (जुओ काव्यमाला गु. भा. ७ मो.)
- ३०९ एलाचीकुमारनो रास. जेसलमेरमां जन्नसोमविबुध (मणि-सुंदर) ज्ञानसागरकृत. सं. १७१९ (१२९)
 - एलाचीकुपारनो रास तथा बारभावना अने अढारपाप-स्थाननी सञ्झाय विगेरे. रु. ०-४-०
 - एलाचीकुमारनुं चरित्र, मास्तर उजमसी तुलसीदास, वह-वाण शहेर, रु, ०-२-० (५०)

प्छाची]

32

[ऐतिहा

प्लाचीकुमार षट् ढाळीआ। तथा आर्द्रकुमारनो रास. (१२९) प्लाचीकुमारनां छ ढाळीआ। रु. ०-४-०

ऐ.

३१० ऐतिहासिकः राससंग्रह भागः १ लो. विजयधर्भसूरि रुः ०-८-० (१४, ४७)

- तेमां (१) कोचरव्यवहारीनो रास.
 - (२) रसरत्न रास.
 - (३) सुपतिसाधुसूरि विवाइस्रो.
 - (४) भीमचोपाइ.
 - (५) खेमाहडालीआनो रास.
 - (६) रायचंद्रसूरि गुरु वारमास.

ऐतिहासिक रास संग्रह भा. २ विजयधर्मसूरि रू

- (१) कविवर लावण्यसमय.
- (२) खिमरुषि रास.
- (३) बालभद्र रास.
- (४) यशोभद्रसूरि रास.

मूळ तथा संक्षिप्त सार रूप

ऐतिहासिक रास संग्रह भा. ३ जो. विजयधर्मसूरि. रू. २-०-० (१४, ४७) तेमां नीचे म्रजब.

- (१) विजयदेवसूरि रास.
- (२) विद्यासागरसूरि रास.
- (३) दृद्धिविजयगणि रास.
- (४) कापडहेडा रास.
- (५) दृद्धिसागर सुरि रास.
- (६) जिनोदयसूरिनुं विवाहलं |
- (७) कर्मचंद्रवंशावली पवन्ध.
- (८) आनंदविम्लस्रि रास.
- (९) पं. कमलविजय रास. 🎐

संक्षिप्त सार रूप

तथा मूळ रास

एम वे प्रकारे छे.

ऐतिहा]

३३

ं अंजना.

ऐतिहासिकराससंग्रह. भा. ४ थो. विद्याविजय. रु. २-८-० (१४, ४७) आमां विजयतिळकसूरि रास छे. ऐतिहासिक सञ्झायमाळा. भा. १ छो. ग्रुनि विद्याविजय. सं. १९७३ (१४)

ओ.

३११ ओघनिर्युक्ति. मू. क. सुवर्ष टीकाकार. भद्रवाहु. द्रोणाचार्य दृत्ति.भूषिता. आगमोदयसमिति. (पा. सं.) रु. ३-०-० ओघनिर्युक्ति सटीक (पाना) रु. ३-०-०

३१२ ओशीया तीर्थ छिस्ट. (६८)

२१२ औपपातिक सूत्र द्रोणाचार्यशोधितरृत्तियुक्तः टी. अभ-यदेव सूरि संदब्ध विवरण युतं. रु. ०-१२-० (२८) औपपातिकसूत्र बालावबोध.

,, ,, भाषान्तर.

अं.

३१४ अंगुल सित्तरी प्रकरण अर्थ युक्तः (आत्मकमल जैनलाय-ब्रेरी) मुनिचंद्र सूरि विरचिताः श्री महाबीर जैन सभा-ना सेक्रेटरीः शाः पुरुषोतमलाल जेटालालः खंभातः

३१५ अंजन शलाकानां ढाळीआं. रु. ०-१-०

३१६ अंजनासितका रास भेट. (४३) अंजनासतीनो रास. रु. ०-२-० (७) अंजनासतीनो रास. रु. ०-६-० (१२९)

३१७ अंजनासुंदरी. (बाइ समरथ स्मारक माळा मणको १ छो) (११९)

अंजना सुंदरी रु. ०-३-६ (१४८) अंजनासुंदरी रु. ०-२-०

۹

अंतकु]

38

[कन्या

३१८ अंतकृदशानुत्तरोपपातिक दशा अने विपाक सूत्र सटीक मंत-कृदशादि (त्रण) टी. अभयदेवसूरि, रू. १-०-० (२८)

,, ,, ,, एल. डी. बेरोनेट.

अंतगड दसाणम् टब्बा. भाष्यसहित. (२४, ५०)

,, दसा. हत्तिकम् (२४, ५०)

३१९ अंतरिक्ष पार्श्वनाथ स्तवन लावण्यसमय. (१)

३२० अंतसमयनी क्रियाविधि अने सद्गतिदर्शक रु. ०-०-६ (३३)

अंतसमयनी क्रियाविधि अने सद्गतिदैशेक. (३३, ५०, ७०४, ७०८)

३२१ अंतः अनुविपाक (५०)

३२२ अषडचरित्र. रु. १-८-०

क

३२३ ककाना चन्द्रवला कका बत्रीशीना चन्द्रावला तथा चोवीशी तीर्थकरादिकना चन्द्रावलानो संग्रह सं १९४१ क ०-२-० (सुंबह भी० मा०)

३२३ कका बत्तीसी साथे. (६८)

३२५ कथा रत्नाकर (पाना) हेमविजयगणि, रु, १२-०-० (३२)

३२६ कथा सरित्सागर (जैनेतर) संस्कृत.

३२७ कथा संग्रह. संस्कृत. पूर्वाचार्य मानसागर. ह. ०-२-० (५०,८१७)

३२८ कन्याविकय[े] बाललप्र निषेष बुद्धिसागरसूरिः (१५–५८थी ६२–१८४)

३२९ कन्याविक्रय दोष. रु. ०-४-० (६)

३३० कन्या सद्बोधमाळा. रु. ०-४-० (ले. प्र. ८१८, ४७) कन्या सद्बोधमाला. ले. महुवानिवासी फुलचंद हरीचंददोशी कपुर]

34

कत्वय

- ३३१ कपुरविजयजी मरहुम मुनिश्रीनो प्राचीन लेख संग्रह. (१४९)
- ३३२ कपोतारूयान अने आत्मानुभव पष्टिशतक रु. ०-४-० गुरे (१,१५०)
- ३३३ कमलप्रभा ग्रुद्ध रहस्य, विजयराजेन्द्रसूरिजी, दुंदक खंडन. रू. ८-२-० (१, १५१)
- ३३४ कपलविजयजीनुं संक्षिप्त जीवनचरित्र (५०, १५२) भेट.
- ३३५ कम्मपयडी (प्रत) रु. ०-१४-० (६) मळयगिरि कम्मपयडी सटीक यशोविजयजी कृत. रु. ३-८-० (६) कम्मपयडीतुं भाषान्तर. भा. क. ३९८.
- ३३६ कयवन्ना ओर-मायाका अपूर्व चमत्कार, छे. पं. सोहनवि-जयजी सं. १९७६ हि. (१५३, १५४)
- ३३७ कयवन्ना शाहनो रासः जिनहर्षे सूरिजीकृतः दान फळाणा-हात्म्य रुपः रु. ०-४-० (७, ५०)
 - कयवन्ना शेठनो रास. धर्म मंदिर. र. सं. १७२१ रु. ०-४-० (१२९, ६३)

कयवन्ना शेठ सचित्र रु. ०-८-० हि. (९३)

- ३३८ करकंड आदि चार प्रत्येक बुद्धनो रास. तदन्तर्गत मयणरेहा महासतीनो रास. समयसुंदरोपाध्याय. सं. १९४१ रु. ०-५-० (छपावनारनुं नाम नथी.) (६३)
- ३३९ करुणा बजायुद्धनाटक, बाळचंद्रसूरि विरचित. रु. ०-४-० (१७, ५०)

करुणा वजायुद्ध नाटक. रु. ०-८-० मा. सं. (१७) करुणा वजायुद्ध नाटक. रु. ०-४-० (१७)

- ३४० कर्तव्य कौम्रदी प्रथम ग्रन्थ मूळ भावार्थ साथे (स्थानकवासी) रू. ०-३-०
 - कर्तव्य कौमुदी हिन्दी. सानुवाद भा. २ जो. शतावधानी मुनि रत्नचंद्रजी (उपदेश) (४३).

कपूर]

38

किम

३४१ फर्पूरमकर टीका तथा भाषान्तर युक्त. रु. ०-८-०

,, ,, ,, ,, शास्त्री सं. १९५७ ह. ०-१२-० (२२,१५५)

कर्पूरमकर श्रीहरि विश्वित (जिनवर्धनसूरि शिष्य जिनसागर सूरि विरचित टीका.) उपदेश ग्रंथ. सं. १९७५, सं. रु. ३-०-० (६)

३४२ कर्पूरमंजरी, राजशेखर विद्यासागरनी टीका सहित. मा. (५०) कर्पूरमंजरी बाळभारत सटीक (नाटक) राजशेखर. सं. मा. रू. १-०-० (१०)

३४३ कर्मकुलकम् (जुओ कुलकसंग्रह १७ वाळो)

२४४ कर्ममंथ विभाग १ लो. श्री देवचंद्रसूरि विरचित, स्वोपज्ञ टीका. (कर्मग्रंथ १-२-३-४) सं. १९६६ पा. सं. (६)

कर्मग्रंथ. प्रथमभाग (१ थी ४) देवेन्द्रसूरि (६७, २२)

कमेग्रंथ दृत्ति प्रथम विभाग आहु. २ जी (६७)

कर्मग्रंथ सटीक (१ थी ४) प्राचीन (पाना) चतुरविजयकृत टीका. रु. २-०-० (१७)

कर्मग्रंथ टीका भा. २ जो (५-६) श्री देवेन्द्रस्रि विरचित. स्वीपज्ञ टीका भा. सं. (६)

क्मिय्रंथ माग १ छो. रु. १-४-०

,, ,, मूळ अने भाषान्तर. गु. (३३, ५०)

,, भाषान्तर हि० (३९, ५०)

,, ,, मूळ मात्रः (५०)

कर्मग्रंथ भाग २ जो. शब्दार्थ, गायार्थ, ग्रुनि जीवविजवजी कृत बालावबोध (विवेचन) यन्त्रो अने फुटनोट सहित. (३३. २०)

,, ,, हिन्दी भाषान्तर (३९,'५०)

कर्म]

श्र

क्म

,, सटीक (५०)

,, छ्टानुं भाषान्तर, (सप्ततिका)

कर्मगंथना बत्रीस पृष्ट टीका उपरथी करेला बालावबोध स-हित. (जुओ प्रकरण रत्नाकर भा. ४ थो)

कर्मग्रंथ भा. ३ जो. रु. ०-८-० हिन्दी.

कर्मग्रंथ मूळ देवेन्द्रसूरि विरचित (छ कर्मग्रंथ मूछ) प्र.
गांधी हर छगनछाल रु. ०-४-०

कर्मग्रंथ सार्थ प्रथम विभाग. रु. ०–६–० (३३)

,, ,, द्वितीय भाग. रु. ०-१२-० (३३)

कमिविपाक अथवा जंबूएच्छानो रास १५४५ अने गौतप-पृच्छानीचोपाइ वीरजी म्रुनिकृत, सं. १७२८ रु. ०-२-० (१२९, ६३)

कर्मविपाक नाम पहेलो कर्मग्रंथ. तेनुं हिन्दीमां भाषान्तर, भेट सं. १९७३ (१)

कर्पविषाक नामा प्रथम कर्पग्रन्थ जुओ प्रकरण रत्नाकर भा. ४ थो.

'कमीविपाक 'कर्मगंथ १ लो गर्गमहर्षि विरचित पूर्वाचार्य-कृत व्याख्या-परमानंदसूरि विरचित द्वति समेत. मू. मा. टो. सं. (मूळ पण जुदो साथे छे) (१७, १०) सं. १९७२.

३४५ कर्मचंद्र वंशाविल प्रवन्धः (संक्षिप्त साररूप तथा मूळ प्रवैध) (जुओ अतिहासिक रास संग्रह भाः ३ जो)

३४६ कर्मप्रवोध प्रभाकर वर्जिंग (विजयचंद्रजी) सदाजी जैन, मु. बागरा मारवाड सं. १९७८ गु. ६२ मार्गणानी १०१ द्वारनी फैळावट. रु. २-८-० (८१९) (९५,१५७,३७) ३४७ कर्म फीक्सोसोफी कर्ता वी. आर. गांधी अंग्रेजी (२८,१६,१) कर्भ

₹८

करप

३४८ कर्षयोग क० बुद्धिसागरेसूरि ए. १०१२ ग्रं. ५० सं. १९७४ रु. ३-०-० (१५,५८ थी ६२, १८४)

३४९ कमीविपाक रास. रु. ०-२-० (६)

३५० कर्म संबंधी जैन साहित्य. कुंवरजी आणंदजीए वांचेछं भा-षण. भावनगरनी सातमी गुजराती साहित्य परिषद् चखते. (६, १४६)

३५१ कर्म संवेध (जुओ देवचंद भा. २ वि. १)

३५२ कर्मस्तवाख्य-बीजो कर्मग्रंथ. प्राचीन कर्मग्रंथ. गोविंदगणि गुंफित टीका समझ्कृत (मूळ पण जुदो आपेछो छे) सं. १९७२ (१७, १०)

३५३ कर्म स्तव नामा बीजो कर्मग्रन्थ. (जुओ प्रकरण रत्नाकर भाग ४ थो)

३५४ कर्म स्तवप्रकाश मुनिनंदनविजय टीका सहित. (११)

३५५ कलकत्ता अने काशीना अंको छुटा. संस्कृत प्रटक (५०)

३५६ कल्पभाष्य वा कल्पसूत्र सफे १३२ छखनं ओर कानपुरके ग्रुंनशी नवलकिशोर सी. आइ.इ. मी. मेस.(१४६,८२२)

३५७ कलाव्यवहार निशीय सूत्राणि सं. १९७९ (१५८)

३५८ कल्पसूत्रम् श्रुतकेवली भद्रवाहु स्वामि प्रणीतम्, धर्मसागरगणि विरचित किरणावली दृत्ति युक्त सं. १९७८ (१७,१०)

३५९ ,, सकथा (५०)

३६० कल्पसूत्र माणेकम्रुनि पा. हिन्दी. (१५९) कल्पसूत्र उपर निबंध. रु. ०-२-० (६) कल्पसूत्र मुखबोधिका टीका. (पाना) कल्पस्

कल्पसूत्र सुखबोधिका टीका. (पाना) कल्पसूत्र दृत्ति. टींका-कार विनयविजय. (६-१६-१७-३१-२८१)

कल्पसूत्र छुलबोधिका टीकानुं भाषान्तर. विनयविजयजी भाषान्तर कर्ता. इ. २-८-० (७, ५०) कल्प]

39

कल्या

कल्पसूत्रम् कालिकाचार्य कथायुक्तम् रु. ०-८-० (१६) कल्पसूत्र वालावबोध. (५०)

,, ,, विजयराजेन्द्रसूरि बाळावबोघ गु. अलभ्य. सं. १९४४ (३७)

कल्पसूत्र बाळावबोध. (ज्ञानविमल्जीकृत ढाळो उपर) रु. १-४-० (६)

कल्पसूत्र बालावबोध (चित्र सहित) रु. २-८-० (७) कल्पसूत्र सुबोधिका भाषान्तर सचित्र. रु, २-८-० (३२) .. सुनिमाणेक हिन्दी, मागधी रु. १-८-०

कल्पसूत्र मूळ (बारसे) रु. १-०-० (६)

कल्पसूत्रम् श्री लक्ष्मीवल्लभोपाध्याय विरचित कल्पद्रुप क-लिकाख्य व्याख्यया विभूषितम् सं. १९७५ (१७,१६०) किंमत नथी.

कल्पसूत्र मूळ मात्र सचित्र (५०)
कल्पसूत्र मूळ कलिका (५०)
कल्पसूत्र मूळ ओर हिन्दी भाषान्तर (बुक) रु. १–८–०
कल्पसूत्र पाकृत मूळ सूत्रने संस्कृत शब्द अने गुजराती मापान्तर सहित भेट. (१६१)

३६१ कस्तूरि प्रकरण जयशेखरसूरि तथा हेमविजयगणि संस्कृत खपरथी गुजरातीमां (७, ५०)

३६२ कल्याणमंदिर (जुओ कान्यमाळा गुच्छक भा. ७ मो)
कल्याणमंदिर मूळ टीका भाषान्तरयुक्त रु. ०-५-०
कल्याणमंदिर स्तोत्रगीता सिद्धाचळ स्तवनो सं. १९७४
दरेक कान्यनुं दोहन करीने तेना पर गुजराती कान्य छे,
रु. ०-२-० (७३)

कविः

80

काळ

३६३ कविकल्पद्रम श्री हर्षकुलगणिकृत. रु. ०-४-० (१४)

३६४ कविवर लावण्यसमय. (जुओ अतिहासक राससंग्रह. भा. २ जो)

३६५ कवीन्द्राचार्य सुचिपत्रम् (२२, १३८)

३६६ किन्नयुगमां साचा देवनो चमत्कार पानसरमां सं. १९६६ रु. ०-०-३ (८२३)

३६७ कल्प-ज्यवहार-नीसीयसूत्र मूल. मा. रु. २-८-० (६)

३६८ कान्हड कठीआरानो रास ग्रुनिमानसागरकृत सं. १७४६ रु. ०-२-० (१२९)

कान्हड कठीयारानो रास तथा मयणरेहा सतीनो रास.

३६९ कान्हड कठीयारी अथवा साचा टेकनी गेबी फतेह.

३७० कापडहेडा रास (संक्षिप्त सारस्य तथा मूळ रास) (जुओ अतिहासिक राससंग्रह भाग ३ जो)

३७१ कापरडाजी तीर्थ प्र. (८२४)

३७२ कामघट कथा रु. ०-१२-०

३७३ कामघट कथा प्रबंध अथवा कामकुंभ (मंगळकळश्च) रु.
०-१-० (१६३)

३७४ कायस्थिति कुलमंडन स्रिकृत (जुओ प्रकरण पुष्पमाला. प्रथम पुष्प)

कायस्थिति प्रकरण अवचूरि सहित सं. १९६८ (निर्णय-सागर) मूल प्राकृत अव. सं. कुलमंडनसूरि (अलभ्य) (१७)

३७५ कार्तिकी पूर्णिपानुं रहस्य. रु. ०-१-० (१६४)

३७६ कान्हडदे प्रवंध पद्मनाभकवि रु. १-४-० (१६५)

३७७ काल सप्तिकाभिधान प्रकरणम् सं. १९६८ (प्राकृत) अव-सर्विणी उत्सर्विणीस्य कालचक्रमे विषे बनता मोटा मोटा

काञ्य

कवि]

88

पदार्थनुं दुंकाणमां स्वरुप समजान्युं छे. संस्कृत छाया

साथे छे धर्मघोषसूरिकृत (अलभ्य) (१७,१०,१२) ३७८ कवितीथे स्तवनादि संग्रह भेट. रु. ०-१-० (१४९,५२)

३७९ काव्य कल्लोल सं. १९७२, पृ. ३६०, रु. ०-१०-० (१०८)

३८० काव्य मनोहर तथा मंडन संग्रह भाग १ रु. ०-१२-०(२६)

३८१ काव्यमाला इंसविजयगणि सम्रुचिता. रु. १-०-० (७१)

३८२ काव्यमाळा गुच्छक भाग ५ मो. सोमप्रभाचार्य विरचिता शृंगार वैराग्य तरंगिणी (आ गुच्छको निर्णयसागरे बहार पाडचा छे) (६, ६३, १०)

३८३ काव्यमाळा गुच्छक भा. ७ मो रु. १-०-० (६,६३,१०)

- १ भक्तामरादि.
- २ कल्याणमंदिर.
- ३ वादीराज प्रणीत एकीभाव स्तोत्र दि.
- ४ धनंजय प्रणीत विषापहार स्तोत्र दि.
- ५ भ्रुपाल कवि प्रणीत जिन चतुर्विशतिका.
- ६ देवनंदि प्रणीत सिद्धिपियस्तोत्रम् दि.
- ७ सोमप्रभाचार्य विरचित. सुक्तिसुक्ताविह.
- ८ जंबुगुरु विरचित जिनशतक.
- ९ पद्मानंद कवि प्रणीत वैराग्यशतक.
- १० जिनमभ इत्यादि २३ (ग्रन्थ स्तोत्रनो) संग्रह छै.

३८४ काव्यपाळा गु. ७ मो (बीजी)

३८५ काव्यमाळा. (रायचंद्र प्रणीत) सं. १९६४ (३२५)

३८६ कान्यमाळा. स्तवनादिनो संग्रह छे. रू. ०-१२-० (८२५)

३८७ काव्यमीमांसा. राजशेखरकृत. रु. २-०-० (१२,१३८)

३८८ काव्य संहिता. सं. १९७० रु. १-०-० (७१, १६७)

काव्या]

४२

कीर्ति

- ३८९ काव्यानुशासन (हेमचंद्राचार्य कृत संस्कृत) स्वोपज्ञालंकार-चूडामणि संज्ञक दृत्ति समेतम् रु. २-४-० सं. १९५७ (६, १०)
- ३९० काव्यानुशासन. (वाग्भट्टकृत) सटीक सविस्तर गद्यमयसूत्र युक्त. रू. ०-७-० (१०)
- ३९१ काव्यानुशासन सटीक. (५०)

३९३ काळ सप्ततिका प्रकरण धर्मघोषसूरि. उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी हप काळनी अंदर थनारा नाना मोटा भावोनुं वर्णन छे. सं. १९६८ मृ. मा. टी. सं. रु. ०-१-६ (१७)

३९४ काळज्ञान. रु. ०-५-०

३९५ काळज्ञान, रु. ०-४-०

- ३९६ किन्नरी (शिक्षापद हिन्दी नाटक) रु. १-८-० (५०)
- ३९७ क्रियारत्न समुचय गुणरत्नसूरि रचित. सं. रु.२-०-०(१४)
- ३९८ कियारत्न सम्रचय, रु, १-१२-०
- ३९९ किरातार्ज्जनीय काव्यं. मिलनायसूरिकृतः घण्टापथारूयया व्याख्या सम्रक्लसितम् (निर्णयसागर) रु. १-८-० (१०, ५०)
- ४०० कीर्तिकमळा स्तवनावली कीर्तिचंद्रजीकृत. चैत्यवंदनादि. रु. १-०-० (८२६)
- ४०१ कीर्तिकौम्रदी (संस्कृत) प. वस्तुपाल चरित्र इंग्रजी नोट साथे रु. १-८-० (७१, १६८)

कीर्ति]

83

कुमा

४०२ कीर्तिकौम्रदी सोमश्वर संस्कृतनुं भाषान्तर. (१, ५०, ४९) (किखित. (१))

४०३ कुंभस्थापना (जुओ देवचंद्र भा. २ जो वि. १)

४०४ कुमारपाळ चरित्र (पाना) जयसिंह सूरिकृत. रु.८-४-०(३२) कुमारपाळ चरित्र हिन्दी लिलतिविजय. रु. ०-६-० (१७) कुमारपाळ चरित्र भाषान्तर. (हेमचंद्राचार्यकृत संस्कृत टीका युक्त. इ. स. १९०० रु. ८-८-० (१६८)

कुमारपाळ चरित्र भाषान्तर मूळ. सैस्कृत उपरथी मूळ. चा-रित्र सुंदरकृत. रु. ०-१२-० (२७)

कुमारपाळ चरित्र महाकाव्यम्. रत्नसिंहसूरि शिष्य चारित्र-सुंदरगणि विरत्तितं इ. ६१ सं. १९७३ (६,१७,१२) कुमारपाळ चरित्र हिन्दी वछभविजयजीना शिष्य ळिलतवि-जयजीकृत. सं. १९१६ कीं. छस्वी नथी. अळभ्य (१७) कमारपाळ चरित्र हिन्दि. इ. ०–६–०

४०५ कुमारपाळनो रास. रु. १-४-० कुमारपाळनो रास. पाटणमां लखायो जिनहपेकृत. सं.१७४२ रु. १-०-० (१२९)

४०६ जुमारपाळ प्रतिबोध. सोमप्रभाचार्यकृत. रु.७-८-० (१३८) ४०७ जुमारपाळ प्रबंध.

> कुमारपाळ प्रवन्ध. (पाना) रभ ३४ सोमसुंदरसूरि शिष्य. जिनमंडनगणि विरचित. सं १९७१ ह. ०-१४-० (१७, १०)

> कुमारपाळ प्रबंध, भाषान्तर. रु. १-१२-० भा. क. मगन-स्राल चुनीलाल वैद्य. (७१)

प्रवेश कुमारपाळ हिन्दी, पृ. २८७ रु. ०-६-०

कुमा]

გХ

क्लिक

- ४०९ कुमारविहार मूल. अवचृरि अने भाषान्तर साथे (शास्त्री) ₹, १−8−o (१७)
- ४१० कुमारविहार शतंक. स्थाभूषण गणि विरचित. जुओ कुलदृक्ष वि. (५०)
- ४११ कुमारविहार शतकम्. रामचंद्रगणि सं. गुजराती भाषान्तर. मूल, अवचूरी, भावार्थ अने विशेषार्थ सहित. (६, ५०)
- ४१२ कुमारिका धर्म. (कन्याओना उपयोगनी शिखामण संग्रह. (ले. म. ७९९, ४४) ह. ०-४-० सं. १९८०
- ४१३ (मुद्रित) कुमुदचंद्र प्रकरण संस्कृत, रु. ०-६-० (मुद्रित) कुमुदचंद्र पकरण श्री श्रावक यश्चंद्र कृतम्. रु. o-c-o (88)
- ४१४ कुम्मा पुत्त चरिअं पद्यबंध संस्कृत छायायुक्त. मू. मा. रू. o-8-o (५६)

४१५ कुर्मापुत्र चरित्र रु. ०-२-०

४१६ क़ुरीति निवारण ट्रे. नं. ५ (जुओ आर्यमतळीळा)

४१७ कुलकसंग्रह भावार्थ साथे ८ कुलक है. रु. ०-१-० (३३) कुळक संग्रह, रु. ०-७-० (१८१)

सतर क्रुळक छे.

१ गुणानुराग.

१० प्रण्यपाप.

२ गुरु भदक्षिणा.

११ गौतम.

३ संविज्ञसाध्योग्य नियम. १२ आत्मावबोध.

४ प्रण्यप्रभाव दर्शक. १३ जीवानुशास्ति.

५ दानक्रलक.

१४ उन्द्रियादि विकार निरोध.

६ शीलकलक.

१५ कर्म

७ तप.

१६ दश आवक.

कुछक]

પ્રધ

[कौसुदी

८ भाव.

१७ इरियावहिया.

९ अभन्य.

कुलकसंग्रहः योजक कर्पूरविजयजी (३३)

४१८ क्रुवलयमाला कथा संस्कृत. संशोयक म्रुनि चतुरविजय. रत्न-प्रभम्नुरि विरचित. रु. ०-८-० (१७, ७१)

> कुवलयमाला भाषांतर. रत्नप्रभसूरि विरचित, मूळ वगरतुं भाषान्तर. शो. चतुरविजयजी मोहना कटुक विपाकना ृहष्टान्त. (६, ७१)

> कुवलयमाला कथा. रत्नप्रभस्ति विरिचत. सं रु.. १-८-० (१७, १०)

४१९ कुशलचंद विरह. सं. १९७० (१०८)

४२० कुसुमवाणी विकास भास्कर. कुसुमविजयजी विरचित. (५०, १६९)

४२१ क्रुपारसकोष, महोपाध्याय ज्ञान्तिचन्द्र प्रणीत, संपादक जि-नविजय, सं. १९७३ (१७०, १७, ७२, १७२)

४२२ कृष्णगीता संस्कृत. (जुओ शुद्धोपयोग)

४२३ केवळज्ञान ज्योतिना उपासक. प्रकाशक लालन. की. नथी.

४२४ केसरीयाजी तीर्थमाला. सं. १९७८ पद्य. (१७१)

४२५ केसरीयाजी तीर्थनो वृत्तान्त, रु. ०-२-०

४२६ केसरीयाजीतुं इत्तान्त भेट. (६)

४२७ कोचरव्यवहारीनो रास. (जुओ औतिहासिक राससंब्रह भा. १ लो)

४२८ कौम्रदी मित्राणंद नाटकम्. रु. ०-८-० (१७)

४२९ कौग्रदी मित्राणंद नाटक. रामचंद्र रचित. संशोधक पुण्यवि-जय. रू. ०-६-० सं. १९७३ (१७)

कडा ी

યુદ્ધ

गण

४३० कंडाभरण स्तवन संग्रह अने ज्ञानावली, रु. ०-२-०

४३१ क्या, इश्वर जगत्कर्ता है? विना मृल्य (४८)

४३२ क्रियारत्नसम्रचय. गुणरत्न सूरि विरचित. सं. १९६४ (१४-९५)

४३३ क्रियारत्न सम्रचया वी. सं. २४३४ की. नयी (१४)

ख.

४३४ खरतरगच्छनी स्तवनाव**ळी. रु. ०**–१-०

४३५ खिमरुषि (संक्षिप्तसार) खिमरुषि रास मूळ रास. (जुओ अतिहासिक राससंग्रह भा. २ जो)

४३६ खिमऋषि रास मूळ रास (जुओ औतिहासिक रास संग्रह भाग २)

४३७ खंडखांचं यशोविजय गणिविरचित. महावीर स्तवन प्रकरण. (५०)

४३८ खेमा इलाडीयानो रास. (जुओ अतिहासिक राससंग्रह भा. १ लो)

ग.

४३९ गर्डछमत प्रबंध अने संघ प्रगति तथा जैन गीता. बुद्धिसागर सूरि. रु. १-०-० (१५, ५८ थी ६२)

४४० गच्छाचार प्रकीणेकम् वानर्षि विहित हत्ति युक्तम् रू.०-६-० (२८)

४४१ गजसुकुमालनी सज्झाय. (जुओ देवचंद्र भा. २ जो वि. १)

४४२ गणिकारिका. (२२)

४४३ मणधरवाद. (पाना) की. ०-४-०

४४४ गणधरवाद. की. नथी. (७३)

गण 🖥

ଧୃତ

[गहु

४४५ गणधर सार्धशतकान्तर्गत प्रकरण (पाना) चारित्रसिंहगणि विरचित. इ. ०-१२-० (७४१)

> ,, ,, ,, हत्ति. जिनदत्तसूरि.टीका सर्वराज-गणि. (३२)

४४६ गणरत्न महोद्घि. वर्धमानकवि विरचित. स्वीय द्वित सहितो. हे. सं. ११९७ रु. २-०-० (५०, ७१)

४४७ गणितसार संग्रह हिन्दी सानुवाद, महावीराचार्यक्रत. अनु-वादक भगवानदास जैन. (४३)

४४८ गणितसार संग्रह-दिगंबराचार्य महावीर लगभग नवमी स-दीना. संस्कृत अंग्रेजी गणितनो. (८२७)

४४९ गणिविक्जं पयन्ना. (जुओ देशपयन्ना)

४५० गद्यचिन्तामणि रु. २-०-० वादीभसिंहसूरिजी.

४५१ गद्यपद्य समुचय भा. १ लो. रु. ०-४-०

४५२ गद्यधर विलास. रु. ०-४-० (६८)

४५३ गयवरविछास. (६८)

४५४ गहुंळीसंग्रह. रु. ०-८-० (७)

४५५ गहंकीसंग्रह. (गु.) रु. ०-१-६

.. शास्त्री. की नथी (७)

,, पं. चारित्रविजयकृत. रु. ०-२-० (६)

,, की. पठन पाठन अने मनन. सं. १९७२ म. (८२७)

४५६ गहुंलीसंग्रह, रु. ०–२–०

,, की. नथी. (१४३)

,, भा. १ छो. पृ. ११२ बुद्धिसागरसूरि. रु.०-३-० (१५, ५८ थी ६२, १८४ु)

गाथा

86

गुज

,, भा. १ लो पृ. १३० बुद्धिसागरसूरि. रु.०-४-० (१५, ५८ थी ६२, १८४)

४५७ गाथा सप्तश्ति विगेरे. (५०)

४५८ गांगेय भंग प्रकरण. मेघपंडित क्र. श्री विजयगणिकृत अव-चूरि. रु. ०-२-६ प्रा. सं. (१७, ५०)

४५९ गायन स्तवन भाग १ लो. (३३, ८३८) गायन स्तवन भाग २ जो. (३३, ८३८)

४६० गायन स्तवनावली. भा. १ लो. (१७३)

,, ,, भा २ जो. (१७३)

४६१ गिरनार तीर्थोद्धार रास अने तीर्थमाळा. कवि नयसुंदरकृत. अतिहासिक. (१७४, १४६)

४६२ गिरनार पूजा स्तवनादि संग्रह कृपाचंद्र स्रिजी. (१७५)

४६३ गिरनार मंडन नेमिनाथजीकी पूजा. इंसविजयजीकृत. हिन्दी.

४६४ गिरनार गिरीश्वर कल्प. (सं. गु.) धनपाळ पंचाशिकाना भेगा आ छे. सं. १९६९ (६)

४६५ गिरनार कल्प. (५०)

हंसविजय फी लायबेरी लूणसावाडो, अमदावाद. आमां नीचे मुजबनी एक नवीन वस्तु छे. ओस्ट्रीयाके अन्तर्गत हंगरी प्रान्तके बुदापेस्त शहरमें एक अंग्रेजके बगीचेमें स्वोदते हुवे नीकली हुइ महावीरकी प्रतिपा.

४६६ गिरनार महात्म्य. इ. १९१० (हे. ८२४, ४४) रु.१-८-०

४६७ गिरनार स्तुति. (जुओ देवचंद्र भाग २ जो वि. १)

४६८ गीत रत्नावली. रु, ०-४-०

४६९ गीरनारजीनो नकशो कपडावाळो. रु. ०-६-०

४७० गुजरातनी गर्जना अथवा हेमचंद्राचार्यनुं जीवनसूत्र. रु. १-४-० (गु. प. ८७०)

गुज]

86

[गुण

- ४७१ गुजरातनी गर्जना अथवा हेमचंद्रनुं जीवनचरित्र, इ. १९१७ (७१, १७६)
- ४७२ गुजरातनी जुनी वार्ताओं जैनेतर. (३२३)
- ४७३ गुजरातनुं गौरव अथवा विपलपंत्रीनो विजय. ऐतिहासिक नवलकथा रु. १-८-० (४४, ७१)
- ४७४ गुजरातनुं गौरव याने विमल्रमंत्रीनो विजय. (६७)
- ४७५ गुजरातनो इतिहास फीरस्ताकृत. जैनेतर.
- ४७६ गुजराती जैनकाव्य साहित्य रासाओ आदिनुं लीस्ट. ले.

 के. पे. पोदी सनातन जैन-ओगस्ट-सप्टेम्बर ९-८

 गासीकमां १४७ रास-४९ चोपाइओनुं तेना कर्ता साथेनु लीस्ट. मात्र डेलाना भंडारना लीस्टमांथीज जुदु

 पाडीने छपावेल छे (६३, १७७)
- ४७७ गुजराती पुस्तकालयो वास्ते वर्गीकरण पद्धति. रु. ०-४-० (५३२) प्र. बहेराम महेरवानजी दादाचानजी बी. ए. वहोदरा. चीमनलाल डाह्याभाइ दलाल एम. ए. लाय-ब्रेश मीसेलेनी वहो इरा. (७१) जैनेतर.
- ४७८ गुजराती पुस्तकालयो वास्ते १००० पुस्तकोनी वर्गीकृतयादी कर्ता (८३१) बडोदरा राजनी लायब्ररीओ माटे तैयार करेलुं छे. अजैन. रु. ०-८-० (२२, २७)
- ४७९ गुजरातीमापानो कोष पु. ८ विमागमां छे (४९)
- ४८० गुजरातीभाषानो जन्म जैनीयोमांयी **होवानो संभव छे.** (निबंध) रु. ०-८-० (६०६<u>)</u>
- ४८१ गुजरातीसाहित्यना मार्गस्चक स्तंभो. गु. रु. १-०-० (८३२)
- ४८२ गुणठाणाद्वार यतीन्द्रविजय गु. ०-४-० सं. १९७०

गुण]

५०

[गुणा

- ४८३ गुणमाळा (पंचपरमेष्टिना १०८ गुणतुं वर्णन अनेक कथाओ सहित.) रु. १-८-० गु. (१७)
- ४८४ गुणपाळा मुनिपाणेक. (१७८)
- ४८५ गुणरत्नावली गायन प्रवेशिका. रु. ४-०-०
- ४८६ गुणवर्मा चरित्र भाषान्तर सहित मूळ सहित. सं. १९५८ रु. १-८-० (१७९)
- ४८७ गुणवर्मा रास. ज्ञानसागरगणि. गु. रु. १-०-०
- ४८८ गुणविलास वावीस समुदाय. रामऋदिसारगणि हिन्दी.
- ४८९ गुणस्थानक अधिकार. (जुओ देवचंद्र भा. २ वि. १)
- ४९० गुजस्थानक्रमारोह तिलक्षविजयजी अमदाबाद, ६,०-१२-०
- ४९१ गुणस्थानक्रमारोह दृत्ति रत्नशेखरकृत. (टीका कोनी करेली ते जणायुं नथी) रु. १-८-० (३२, ५०)
- ४९२ बुणस्थानक्रमारोह मूळकर्ता रत्नशेखरसूरि प्रणीत हिन्दी. सं. १९५४ गौतमीबीबी. (१८०)
- ४९३ गुणस्थानक्रमारोह, चौदगुणस्थाननुं वर्णन तथा चार प्रका-रना ध्याननुं स्वरूप पृष्ठ रु. ०-१२-०
- ४९४ ग्रुणस्थानक्रमारोहः (पाना) रत्नशेखरसूरि स्नृत्रित स्वोपन्न दृत्ति युक्तः रु. ०-२-० (१६)
- ४९५ गुणस्थानदर्पण हिन्दी अमूल्य. सं. १९७१ (८३३, ७१)
- ४९६ गुणस्थानदर्पण हिन्दी भेट कोटा. (८३४, १)
- ४९७ गुणानुरागकुळक. (जुओ कुलकसंग्रह १७ वाळो) गुणानुरागकुलक 'सुखसागर ग्रन्यमाला ' लोहावट भेट. (५६०, ६८)
- ४९८ गुणानुराग कुलक जिनहर्षगणि संस्कृत छाया बन्दार्थ भावार्थ हिन्दी विवेचन यतीन्द्रविजय. सं. १९७४ (८३५, ३७)
- ४९९ गुणानुराग कुरुक र. ०-०-६

शुंगा]

५१

्र शुरु

- ५०० गुणानुराग कुलक. ई. १९१४ अमृष्य. (१८१)
- ५०१ गुणानुराग कुलक बीजी आहोत रु. ०-१-० ए. २४
- ५०२ गुरु अष्टमकारी पूजा भ्रात्चंद्रसूरिकृत मेट. (१८३)
- ५०३ गुरुगीत गहुं लीसंप्रह बुद्धिसागरस्रि ए. १९० रु.०-१२-० (१५, ५८ थी ६२, १८४)
- ५०४ गुरु गुणमाञ्चा. रु. ०-२-० (५०)
- ५०५ गुरु गुणमाला याने गुरुगुण छत्रीसी कुलक तथा समयसार प्रकरण सरहस्य अनुवादक मुनिराज श्री कर्पूरविजयजी आत्मारामजीवाळा (१७)
- ५०६ गुरुगुणरत्नमाळा याने स्त्री उपयोगी संगीत सुमनमाळा भेट. सं. १९१४ (८३६)
- ५०७ गुरुगुणरत्नाकर लक्ष्मीसागरसूरि चरित्र इतिहासिक दृष्टिंप् वर्णव्युं छे. कर्ता सोमचारित्रगणि. रु. ०-८-० (१४)
- ५०८ गुरुगुणरत्नाकर काव्य सोमचारित्रगणि विरचित सं. १९६७ ह. ८-८-० (१७)
- ५०९ गुरुगुण पट्त्रिंशत पट्तिशिका कुछक रत्नशेखर सुरिकृत, मू॰ मा. टी॰ सं॰ स्वोपज्ञ विद्यति सहित मति रु॰ ०-९-० सं॰ १९७१ (१७)
- ५१० गुरुगुण पट्त्रिंशनो टबो (जुओ देवचंद्र भा. २ जो बि. १ को)
- ५२१ गुरुवंटालका व्याख्यान हिन्दी (मोक्षाकर) म्रांन विपक-विजय अजैन. (१७, ४६) रु. ०-०-६
- ५१२ गुरुतत्त्वनकाश रास करूरविजयजी (जुओ उपवेशमाळा मा-षान्तर कर्पूरविजयजी) (३३)
- ५१३ गुरुदर्शन. रु. ०-६-० जैनेतर.
- ५१४ गुरुदेवगुणमिषाला (कि. नथी) पृष्ठ ९६ सं. १९७० (तीर्थकरपद.)(१७१)

गुरु]

५२

गीतम

गुरुदेवगुणमिनमाळा. रु. ०-३-०

५१५ गुरुदेवपूजा. पं. मंगळवि नयजी (४७)

५१६ गुरुपीयूषलहरी विगेरे. (५०)

५१७ गुरुपदक्षिणा कुलक. (जुओ कुलन संग्रह १७ वाळो)

५१८ गुरुवोत्र, बुद्धिसागरसूनि, पू. १७४ रु. ०-४-० (१५, ५८ थी ६२, १८४)

५१९ गुर्वावली श्री म्रुनिसुन्दरसूरि विरचितः वि. सै. १९६१ संस्कृत सोमितलकसूरिकृत १६ काव्यो पण आना भेगां छे. रु. ०-८-० (१४)

५२० गुरुशिष्यमीमांसा जगरूपयतिकृत. सं. १९७६ ह. ०-४-० (१८५)

५२१ गुंहलीसंग्रह भाग १-२ बुद्धिसागर. रु. ०-२-० (१४३)

५२२ गृहज्ञान्ति स्तोत्र. रु. ०-१-० (६)

५२३ गृहस्थधर्म पं. केसरविजय. रु. ०-८-० (२५) गृहस्थना सामान्य धर्म गु. रु. ०-२-० (६)

५२४ गोमहसार. रु. ०-६-० (दि.) (कर्मकान्ड) (६)

५२५ गोमइसार मोटो पुरो छपायो छे. रु. ५१-०-० (दि०)(६)

५२६ गोमहसार जीवकान्ड नेमिचन्द्राचार्य. शास्त्रमाळा ग्रुंबइ. रु.

५२७ गोमद्दसार, कर्मकान्ड रु, २-०-० (६)

५२८ गौतमकुलक (जुओ कुलकसंग्रह १७ वाळो)

५२९ गौतपकुलक, रु. २-८-० (६)

५३० मौतम कुलकष्टत्ति (पाना) ज्ञानतिलकगणिकृत. रू.१-१२-० (३२)

५३१ गोतमपृच्छावृत्ति (पाना) रु. २-०-० (३२)

गौतम]

43

प्रह

- ५३२ गौतमपृच्छा यतीन्द्रविजयजी हिन्दी. (३७) गौतएपृच्छा बाळावबोध मागधी गुजराती. गौतमपृच्छा सोमसुंदरस्रिकृत.
- ५३३ गौतम स्तोत्रम् (जिनममसूरिकृत) जुओ काव्यमाळा गु. ७ बीजी)
- ५३४ गौतमीय महाकाव्य रूपचंद्र कवि. (८३७) रू. ०-८-०
- ५३५ गौतम स्वामीनो रास अर्थ सहित. रु. ०-१-०
- ५३६ गौतम स्वामीनो रास भेट. ले. सं० १४१२ उदयवंत प्रा० कुंवरजी आणंदजी (६)
- ५३७ गौतमपृच्छा हिन्दी पृ. १५२ रु. ०-१२-० संपादक अम-रचंदजी वैद्य हिन्दी. सं. १९७७ (४७)
- ५३८ गोतगपृच्छा हिन्दी रु. ०-१-० यतीन्द्रविजयजी. १९७१ (३७)
- ५३९ प्रहस्थगुण एक व्याख्यान धर्मस्र्रिनुं सं. १९४१ प्रेमचंद स्तनजी भावनगर (१४)
- ५४० ग्रहभान्ति स्तोत्र भद्रबाहु स्वामी विरचित. रु. ०-१-६ छा-होर पंजाब. (७१, २१०)
- ५४१ ग्रंथ परीक्षा भा. १ लो. रु. ०–६–० ग्रंथ परीक्षा. भा. २ जो. रु. ०–६–०
- ५४२ ग्रन्थकारोनी यादी रासा अने सज्झायोना कर्चा छगभग १५० छे. (६३)
- ५४३ गंभीरविजयजीकृत संग्रह. रु. ०-५-०
- ५४४ गृहवास्तुपूजा सु. रु. ०-१२-० (६)
- ५४५ अहरकोके गुण विश्वभविषयः देवट नं. १ भेटः सं. १९७८

घउद]

48

चित

₹.

५४६ चउद राजलोक पूजा. बल्लभविजयजी कृत. मास्तर माणेक-लाक नानजी भावनगरी. र. ०-१-०

५४७ चडमासीदेवबंदन पंडित श्री पश्चितज्ञयगणिरचित तथा देव-वंदन दिवाळीनुं कर्ता ज्ञानविमस्सूरिजी. (५०,६७)

५४८ चडसरण आदि चार पयका मूल. सं. १९६६ रु.०-४-० (६) चडसरण, आडरप≣साण, भक्तपरिका, संयारग.

५४९ च इसरण तथा आउर पचरुखाण पयत्रो भाषान्तरयुक्त वीर-भद्रमुनिकृत. सं. १९५७ रु. ०-१२-० (१८७)

५५० च उसरण पयन्ना. (जुओ दश्च पयन्ना)

५५१ चडसरण पयन्ना (प्रति) (५०)

५५२ चतुर्थ स्तुति निर्णय शंकोद्धार धनविजय सं. १९४६ त्रण थोयनी सिद्धिः सः ४-०-० (३७)

५५३ चतुर्थ स्तुति निर्णय भा. १ छो. रु. ०-१०-०

५५४ चतुर्थ स्तुति निर्णय हिन्दीः आत्मारामजीकृतः सं. १९४४ (७, ७१)

,, ,, ,, ,, भा. २ जो म्हेसाणाना संघना ज्ञानखाता तरफथी रु. ०-२-० (१८८,७१)

५५५ चतुर्थ स्तुति निर्णय शंकोद्धार धनविजयगणि विरचित मरु-धर, मालवक ने गुर्जर संघ सं. १९४६ रु. ४-०-० (७१)

५५६ चतुर्थ स्तुति निर्णय भा. २ जो. रु. ०-२-० (६)

५५७ चतुर्मास व्याख्यान आनंदसागर शिष्य मानसागरकृत रु. ०-४-० (५०,६)

प्रभट चतुर्विकति जिनदेशना संग्रह धमघोपसूरि. सं.१९७२(१८९)

चतुं] ५५ [चतुं

- ५५९ चतुर्विशतिजिनस्तवः जिनवभसूरि विरचितः (ज. काव्यः माका गु. ७ बीजी)
- ५६० चतुर्विवितिनिनस्तवन वालावबोध सहित तथा विहरमान वीशी विगेरे. देवचंद्रजीगणि गुजराती (१, ७) सं.१९६५
- ५६२ चतुर्विंशतिजिनस्तवन यमकमय (जुओ प्रकरणरत्नाकर भा ४ थो)
- ५६२ चतुर्विशतिजिनस्तवन अनुष्टुपष्टत्तबद्धम् (जुओ प्रकरण-रत्नकार भा. ४)
- ५६३ बतुर्विशतिजिनस्तवनाविक रु. ०-६-०
 - ,, अने परचुरण पद संग्रह. भणसाळी हीराचंद शेपकरण मास्तर (नवाणु यात्रानी लाणी) सं. १९६३
- ५६४ चतुर्विञ्चतिजिनस्तुति देशनासंग्रहः रु. ०-८-०
- ५६५ चतुर्विश्वतिजिनस्तुति धर्मघोषसूरिकृतः (जुओ स्तोत्ररत्ना-कर प्रथम भाग) सटीकः टे.
- ५६६ चतुर्विञ्चतिजिनस्तुति भाषान्तर. रु. १-०-०
- ५६७ चतुर्विश्वतिजिन्मतुति स्रष्टिपणी शोभनमुनिपणिता, (जुओ कान्यमाळा गु. ७ बीजी)
- ५६८ चतुर्विश्वतिजिनानंदस्तुतय मेरुविजयम्नुनिकृतः सत्तरमो सैको सं. १९७१ रु. ०-२-० (१६)
- ५६९ चतुर्विंशतिदेशनाः (१२,१८९)
- ५७० चतुर्विश्वतिदंडकद्वार यतीन्द्रविजय ठा. चमनाजी वागरा. (मारवाड) रु. ०-४-०
- ५७१ चतुर्विंशति पवंग राजशेखरविरचित. रु. ४-०-० (२२, २६,३२)
- ५७२ चतुर्विद्यति प्रवन्ध भाषान्तर, रु, १-०-०

चतु]

५६

चरि

- ५७३ चतुर्विश्वति स्तुतिसंग्रह, रु. ०-६-० (१७)
- ५७४ चतुः शरण आदि पयनाचार मूल बीरभद्रमृति ना. (६)
- ५७५ चतुर्शरायकी वित्र स्तर. जयतिककसूरिकृत (जुनो स्तोन रत्नाकर दिनीयभाग सटीक)
- ५७६ चमत्कारी सावचूरि स्तोत्रसंग्रह, वंकचूलियासूत्र सारांश, सं. १९७९ (९५, १८४)
- ५७७ चमत्कारीक दृष्टान्तमाला अजैन.
- ५७८ चम्पकशेठ हिन्दी साचत्र. र. ०-८-० (९)
- ५७९ चरितावळी भा. १ छो (पथपाष्ट्रति) रू. १-४-० चंपकश्रेष्ठि चरित्र (६)
 - ,, ,, (बीजीआदृति) ,, ,, (६)
 - ,, भाग २ जो. रु. १-४-० रतिसार चरित्र, (६)
 - ,, भाग ३ जो. रु. १-०-० वत्सराज चरित्र. (६)
 - ,, भाग ४ थो. नळदमयंती चरित्र. (६)
 - ,, भाग ५ मो स्थूळभद्र चरित्र. (६)
 - ,, भाग ६ डो सुरसंदरी चरित्र. (६, ५०)

५८० चरित्रमाळा मुनिमाणेक गुजराती. रु. ०-१-६ (१७८) ५८१ चरित्रसंग्रह. रु. १-०-० (८३९)

तेमां:---

- १ श्री श्रीपाळचरित्र गद्य.
- २ ब्रह्मद्त्तचक्रवर्तीनी कथा गद्य-
- ३ जंबूस्वामीतुं चरित्र.
- ४ रयणसिंहतुं
- ५ सुभूगचक्रवर्तीनुं ,,
- ६ वंकचूल राजानी कथा.
- ७ अध्यातम कल्पद्वम नामा ग्रंथ १६ अधिकार.

चर्चाका]

५७

चिंता

८ शृंगार वैराग्य तरंगिणी. ९ पांडवचारत्र.

५८२ चर्चाका पब्लिक नोटीस. (६८)

५८३ चर्चाषकाश याने महावीरस्वामीने विनति शिवजी देवसी. गुजराती.

५८४ चातुर्गासिक व्याख्यान तथा होळीकाख्यान क्षमाकस्याण-कजी रु. ०-८-० (३२)

५८५ चार कर्मग्रन्थ भाषान्तर रु. १-०-०

५८६ चार कमेग्रन्य सटीक रु. १-८-०

५८७ चार पत्येकबुद्धनो रास रु. ०-५-०

५८८ चारित्रपूजा अथवा श्री ब्रह्मचर्यत्रतपूजा. भेट. (१९०)

५८९ चारित्रमंदिर ले. मुनिश्री तिलकविजयजी पंजाबो.रु.०-२-० (८८)

५९० चारित्रसार. (५०) चामुण्डरायविरचित (दि. माणेकचंद ग्रन्थमाला) पु. ९ म्रं ७१

५२१ चारुपतुं आलोकन शा. मंगलदास लब्लुचंद सं. १९७५ पाटण (गुजरात) की. १-०-० मेट (१२)

५९२ चालु चर्चामां सत्यांश केटलो ? (देवद्रव्यनी चर्चा विषे नि-बंध. ले. मुनि कल्याण विजयजी. प्र. केसरविजयजी जैनलायब्रेरी जालोर (मारवाड.)

५९३ चिकागो प्रश्नोत्तर. आत्मारामजी कृत. जसवंतराय जैनी हिन्ही. लाहोर. रु. १-०-०

५९४ चिकामो प्रश्लोत्तर, रु. ०--१२-० गु.

५९५ चिकागो प्रश्नोत्तर. कन्नोमल बाबु अंग्रजी रु. ०-१२-०

५९६ चितामणि. बुद्धिसागर सुरि. सं.१९९२ रू.०-२-० (१९१)

चिता]

५८

[चैत्य

- ५९७ चिंतामणिपार्श्वनाथजिनस्तोत्र. (जुओ प्रकरण रत्नाकर भा. १ लो)
- ५९८ चित्रसेन पद्मावती चरित्र. राजसेन बहुभोपाध्याय. रू. २-०-० (३२)
- ५९९ चित्र संभूति ऋषि रास. ज्ञानसागर कृत. गुजराती.
- ६०० चित्रो ओफ पाछीताणा. रु. ०-८-० (१)
- ६०१ चिदानंद बत्रीशी. ३२ पद. हुकम मुनि (२१)
- ६०२ चेड्यवंदण महाभाष्य. संस्कृत छाया संकल्लिम सिरि संति सूरि. सं. १९७७ कि. नथी लखी. (९५)
- ६०३ चेटकबोध ग्रन्थ. ग्रं. ७६ बुद्धिसागर सृरि. (१५, ५८ थी ६२, १८४)
- ६०४ चेतो द्त. रु. ०-४-० (१७) चेतो द्तम्. प्रका. जैन आत्मानंद सभा. (७१) की. छ-खी नथी.
- ६०५ चैतन्य चंद्रोदय. (६)
- ६०६ चैतन्य चंद्रोदय विगेरे. (५०)
- ६०७ चैत्यवंदन चतुर्विंशतिका. (५०, ९५)
- ६०८ चैत्य वंदन चोबीशी. गुजराती. रु. ०-४-० (६)
- ६०९ चैत्य वंदन चोवीशी. अर्थ सहित. संस्कृत. गुजराती. क्षमा-कल्याणक. रु. ०-८-०
- ६१० चैत्यवंदन बालावबोध. (गु.) वंदनादि भाष्यत्रयम् (३३, ५०, ९५)
- ६११ चैत्यवंदन चोवीशी. (त्रैलोक्य प्रकाशाख्या. क्षमा कल्या णक. संस्कृत अने भाषांतर. भा. क. हीरालाल इंसरा ज. (७, ३२)
- ६१२ चैत्यवंदन चोवीशी. (गुजराती) इ. ०-३-० (६)

```
िचोबीसी
वैत्य 1
                        49
६१३ चैत्यवंदन चोवीशी. संस्कृत अर्थ युक्त. रु. ०-५-० (६)
६१४ चैत्यवंदन महाभाष्य. इ. १-१२-० (१७)
६१५ चैत्यवंदनस्तवनादि: भेट. (६८)
६१६ चैत्यवंदनस्तुतिस्तवनादि संग्रह. भा, १ छो, (६)
                            भा. २ जो. रु. ०-६-० (६)
                         भा. ३ जो. रु. ०-८-० (६)
६१७ चैत्यवंदनादिनो संग्रह. रु. १-०-० (६)
६१८ चैत्यवंदनादि भाष्यत्रयः देवेन्द्र सृशि कृत् भावार्थ सहितः
         रु. ०-६-० मा. गु. ( ६ )
                              गुजराती. की. नथी ( ३३ )
६१९ चोमासी तथा दीवाली देववंदन भेट. ( ६७ )
६२० चोपासी व्याख्यान. रु. ०-४-० (१६. १)
६२१ चोरासी आज्ञातना. (६८) गु.
६२२ चोरासी आज्ञातना हिन्दी भेट. (६८)
६२३ चोवीसजिनस्तवन. ( जुओ प्रकरण रत्नाकर भा. ४ थो )
६२४ चोवीस प्रभ्र रासी चक्र. (१९२)
                          ₹, 0-१-0 ( € )
६२५ चोबीसी तथा बीशी संग्रह. गु. ह. १-८-०
                               E. ?-0-0
६२६
६२७ चोवीसी तथा वीशी संग्रह. रु. २-८-० (६)
६२८ चोवीसी तथा वीशी संग्रह. ग्र. सं. १९३५. इ. ५-०-०
        (40, 893)
६२९ चोवीसी तथा वीशी संग्रह. शास्त्री मोटी. रु. ५-०-०
         ( १९४ ) तेमां ३७ चोवीसीओ, अने वीशीओ १० छे
         तथा छटक स्तवनो.
```

चोबीसी]

ξo

वंद्र

- ६३० चोवीसी यशो विजयजी विरचित. भावार्थ अने विवेचन साथे. (३३)
- ६३१ चोवीसी वीसी स्तवन संग्रह. सवाइभाइ रायचंद. सं. १९६२ ह, १-८-० (१२९)
- ६३२ चोसठ ठाणानी पूजा. तथा चोवीस तीर्थंकरना अठाणु बोछ प्र. शीहीर. संघ. केसरविजय. (जीवविजयजीना शिष्य,)
- ६३३ चोसट प्रकारी पूजा संग्रह. अर्थ सहित. रु. १-४-०
- ६३४ चोसट प्रकारी पूजा अर्थ सहित. पं. चारित्र विजय. रु. १-०-० (६)
- ६३५ चौद स्वमनुं रहस्य. रु. ०-२-०
- ६३६ चंदक्रवरनी वारता. कवि राम. मारवाडी (१)
- ६३७ चंदन मलियागिरिनी चोपाइ. मुनि खेमहर्ष कृतः (१२९)
- ६३८ चंदन मलयागिरिनो रास. क्षेपहर्षकृत. अने शालिभद्रनो रास. मतिसार. रु. ०-६-०
- ६३९ चंदराजानो रास. (मोटा चित्र साथे) रु. ४-०-० (६)
- ६४० चंदराजानो रास. तथा अर्थ रहस्य युक्त. पं. श्री मोहनवि-जयविरचित. सं. १९७४ रु. २-०-० (६, १७)
- ६४१ चंदराजानो रास. की. नथी. (१२९)
- ६४२ चंदराजानो रास (अर्थ सहित) रु. २-८-०
- ६४३ चंदराजानो रास एं. मोहनविजयजी कृत. म. बालाभाइ त्रीकमलाल. मगनलाल इटीसिंहना ज्ञानप्रकाश प्रेस. सं. १९६० (६)
- ६४४ चंदविज्ञ पयन्ना (जुओ दश पयन्ना.)
- ६४५ चंद्रकुमार याने आनंदमैदिर. रु. १-०-०
- ६४६ चंद्रकेवलीनो रास. ज्ञानविमलसूरि विरचित. अपरनाम आनं-

चंद्री

६१

[चंपक

दमंदिर रास. आयंबिल, वर्धमानतपाराधनादि फल मा-हात्म्यरूप विचित्रोपदेशमय. (७, ५०)

६४७ चंद्र गुणावळीनो कागळ. रु. ०-२-०

्६४८ चंद्र धवल भूष धर्मदत्त कथा माणिवय सुँदर सृरिजी सं-स्कृत. (१)

६४९ चंद्रप्रभा चरित्र बीरनंदी रचित काव्यमाला. ३० इ. स. १९१२ रु. ०-१२-० (१२, ६, १०)

६५० चंद्रपभ चरित्र (संस्कृत) श्री वीरनन्दि विरचितम् रू. ०-१२-० (१०)

६५१ चंद्र राजानो रास. (५०)

६५२ चंद्र लेखा नाटक गद्य पद्यात्मक त्रिलंडी कवि. महासुखराम नरभेराम कृत. रु. १-०-० (८४०, ५०, ७१)

६५३ चंद्रवीर शुभादि कथा चतुष्टयम् म्रुनि सुंदर सूरि.रु.१-८-०

६५४ चंद्र शेखरनो रास. रु. १-०-०

६५५ चंद्र संविन्न पयन्नो. (५१)

६५६ चंपकपाळा कथा भावविजयगणि विरचितः संशोः चतुर-विजयः सं. १९७० (विजापुरे सं. १७०८ नी सालना विजय दशमीए पुरो कर्यो) (अल्रभ्य) (१७, १०)

६५७ चंपकपाला कथा भाषान्तर. मणिविजयजी. गु. रु.०-८-०

६५८ चंपकमाळा चरित्र. अपूर्व सती चरित्र. रु. ०-८-० (१७)

६५९ चंपकपाळा चरित्र भाषान्तर, भावविजयवाचक प्रणीत. रु.

(09) 0-5-0

६६० चंपकश्रेष्ठी चरित्र (६)

,, ,, प्रीतिबल्लभगणि. प्र. पाटणना नागरचंद उजमचंद्रना वहीवट्दार प्रेमचंद रतनचंद अमद्ावाद.

,, ,, माणेकग्रुनिजी, रु. ०-२-० (१७८)

चंपक]

६२

जगदु

६६१ चंपक श्रेष्ठीनी कथा. (संस्कृत) भीतिविमळ कृत. संशो. ग्रुक्तिविमळ दयाविमल शिष्य. (प. १९७) रु. १–१०–०

६६२ चंपक श्रेष्ठीनी कथा. छीपझीग् (इ. स. १९११) (हर्षचंद्र भ्रुताभाइ बनारस. (१४, १७)

> ,, ,, बीजी. विमलगणि विरचित. संस्कृत. सं. १९७२ म्रुक्तिविमल, सौभाग्यविमलना शिष्य. (१९८)

६६३ चंपकश्रेष्ठी कथानक जे. हरटल. अंग्रेजी संस्कृत. रू.१-८-० ६६४ चंपकश्रेष्ठीनी कथा. (संस्कृत) रू. ०-८-०

छ.

६६५ छ अहाइस्तवन तथा महावीरस्वामीना सत्ताबीस भवतुं स्तवन. अने पारणुं. रु. ०-२-० (१९९)

६६६ छत्रीस बोल संग्रह. भा. १-२ भेट. (४३) छत्रीस बोल संग्रह. रु. १-०-०

६६७ छ भाइनो रास. (गु.) रु. ०-२-० (१२९)

६६८ छ भाइनो रास. (शास्त्री) रु. ०-२-०

६६९ छटक अध्ययनो. रु. ०-२-०

६७० छोटालाल पद बोधिनी. ज्ञा. व. (७१)

६७१ छंदानुशासन हेमचंद्रसूरिकृत रु. ०-८-० (२००)

ज.

६७२ जगडू चरित्र भाषान्तर सर्वानंदसूरि विरचित सूळ संस्कृत सहित भाषान्तर कर्ता. मगनलाल दलपतराम खख्खर. इ. १-०-० (२०१, २०२)

६७३ जगतुकतृत्व मीमांसा हिन्दी. रु. ०-८-० (२०३)

६७४ जगदु उत्पत्ति विचार हिन्दी बा. धूरज भारतुजी जैन वसीरू

जगदु]

६३

जिया

देवबंद लिखित ट्रेक्ट नं. १६ रु. ०-१-० (२०४)

- ६७५ जगद्गुरु महाकाव्य षट् दर्शन सम्रुच्यय पद्मसागरगणि विर-चित (हरगोविंददास तथा वेचरदास.) छ. रु. ०-४-० (१४)
- ६७६ जगमाल रावसिंह (अपरनाम जगन्नाथ राव इंडरनो) प्र. पंडित. करुणाज्ञंकर ज्ञामी स्नु. वांसवाडा Banswada.
- ६७७ जन्म परण सुतक निर्णय यतीन्द्रविजय सं. १९७४ रु. ०-१-० गु. (३७)
- ६७८ जयचिक चरित्रम् हेमचंद्राचार्य कृत. (त्रि. ध. सु. पु. च-रित्र १३ मा सर्गमां छपायुं छे) सं. १९६३ सं. (६,९०)
- ६७९ जयतिहुयण अभयदेवसूरि विरचित समयसुंदरनी टीका साथे कृपाचंद्र शिष्य सुखसागरे शोध्यो छे. (१२)
- ६८० जयतिहुयण स्तोत्र टीका वालावबोध (सं. १२४७ (२०५) जयतिहुयण भेट, कोटा; शेरसिंह

जयतिहुयण स्तोत्र रु. ०-४-०

- जयतिहुयण स्तोत्र समयसुंदरसूरिकृत विवरण साथे अभय-देवसूरि विरचित. कि. नथी. (२०६)
- जयतिहुयण स्तोत्र सटीक म. स्रोहावट (मारवाह) श्री हजारीमस्र स्तनस्रास अमृत्य. (३७, ६८, ७१)
- ६८१ जयन्तविजय अभयदेव विरचित (महाकाव्य) रु. १-०-० (६, १०)
- ६८२ जयानंदकेवली चरित्र संस्कृत (पाना) रु. १०-०-० मृनिसंदरसूरि कृतः सं. १९६८ (३२, ५०)
 ,, ,, की. रु. ६-०-० (२०२, ३, २०७, ६)

जया] ६४ [जिन

६८३ जयानंदकेवलीनो रास पंडित पद्मविजयजी विरचित. रू. २-८-० सं. १९४५ (२०८)

६८४ जयानंद केवलीनो रास (जुओ आनंदकाव्य महोद्धि मौ. ३ जुं)

६८५ जयंतविजय काव्य वि. (५०)

६८६ जयंति व्याख्यान. रु. ०-८-० (२०४)

६८७ जल यात्रादि विधि रत्नशेखरसूरि विरचित जैन चैत्यमां जिन बिबनो प्रवेश करवानो विधि अष्टोत्तरी स्नात्रनो विधि लघु स्नात्रनो विधि ख्यु स्नात्रनो विधि

६८८ जल्प कल्पलता. रत्नमंडन कृत. रु. ०-३-० ३४ दळक-मळ प्रवंध आमां छे. सं. (१६,१०)

६८९ जल्प मंजरी प्राच्य मुनि पुंगव विरचित शो. छिरितविजय. क. ०-२-० सं. (६)

६९० जवाब दावा (जैन समाचार ढूंढक पत्राधिपति की पुनारना जवाब) ले. मुनि वल्लभ विजयजी मु. पालणपुर.(२१०)

६९१ जस विलास विगेरे विविध पद संग्रह. रु. ०-९-०

६०२ जहांगीरनामा भा २ जो. ग्रुन्सी देवीप्रसाद हिन्दी रू. १-२०-० अजैन.

६९३ जळयात्राविधि रन्नशेखरसूरि विरचिता. रु. ०-६-० (जळयात्रानोजिनविब प्रवेश, अष्टोत्तरीस्नात्र विधि प्रह दिगपालनां पूजननो विधि. लघु स्नात्र विधि ध्वज तथा कळश चडाववानो विधि)(७)

६९४ जातकाभरणम् (५०)

६९५ जापमाला (५०, २.१)

६९६ जिनगुण गान लहर, यतीन्द्रविजय, रु. ०-६-० (३७)

जिन]

६५

जिन

- ६९७ जिनगुण गायन. रु. ० ३-०
- ६९८ जिनगुण पद्यावलि. (३३)
- ६९९ जिनगुण पुष्पमाळा अलभ्य. रु. ०-३-० (१०८)
- ७०० जिनगुण मंजरी. रु. ०-४-० (८८) जिनगुण मंजरी. रु. ०-२-०
- ७०१ जिनगुण मंजूषा. प्रथमभाग वि. राजेन्द्रसूरिनो शिष्य सम्र-दाय. सं. १९६५ रु. ०-१२-० (३७)
 - ,, , दुसराभाग स्तवनादि. सं. १९६६ रु. ०-७-० (३७)
 - ,, ,, भाग ३ जो. सं. १९७१ अलभ्य (३७)
 - ,, ,, भाग ४ यो. सं. १९७४ (३७)
 - ,, ,, भाग ४ थो. रु. १-४-० (३७)
- ७०२ जिनगुण रत्नमाला, रु. ०-२-० (१०८)
- ७०३ जिनगुण रत्नावली मा. २ जो.
- ७०४ जिन चतुर्विशतिका. (दि.) भूपाल कवि पणीतः (जुओ काव्यमाला गुच्छक भा. ७ मो)
- ७०५ जिनदत्तसूरि महाराजनुं चरित्र. रु. ०-?-०
- ७०६ जिनदत्त चरित्र माणेकचंद दिगंबर जैन ग्रन्थमाल सप्तमपुष्प श्रीमद् गुणभद्राचार्य विरचितम् कि. लखी नथी (७१)
- ७०७ जिनदर्शन पर्व गुणावली.
- ७०८ जिनदर्शन पूजन सामायिक विधि प्रकाश. रु. ०-६-० हिन्दी (२१२, २१३)
- ७०९ जिनदेव दर्शन, मोहनलाल दलीचंद देशाइ वकील. बी. ए. एल. एल. बी. सं. १९६६ रु. ०-३-० (२१४)
- ७१० जिनदेव मुनीश्वर विरचित अभिधान संग्रह भा २ जो)
- ७११ जिन पिंजर स्तोत्र विगेरे शास्त्री. सं. १९५४ (२०५)

जिन]

६६

िजिना

७१२ जिनपूजाअधिकारमीमांसा. ले. बाबु जुगलकीशोर सं. १९६९ रु. ०-४-० (१२)

जिनपूजाधिकारिममांसा. रु. ०-२-०

७१३ जिनपूजा महोद्धि. रु. ४-८-० (१)

७१४ जिनम्तिष्ठामहोत्सववर्णन. रु. ०-२-६

७१५ जिन बोछसंग्रह. (१९०)

७१६ जिनभक्तिआद्दी. ले. कुंत्ररजी आणंदजी (२१५)

७१७ जिनशतक जंबुगुरु विरचित (जुमो काव्यमाला भाग ७ मो)
जिनशतक भाषांतर गुजराती जंबुगुरु विरचित शब्दार्थ साथे
अनुवादक वाचस्पति, कवि दयाशंकर रविशंकर सं.
१९७० रु. ०-१२-० (२१६, ७१)

,, , , हिन्दी समन्तभद्राचार्य कृत टीका सहित. टी. कर्ता पन्नालाल बाकलीवाला रु. ०-१२ ० (दि. २१७, ७१)

७१८ जिनस्तवन चोवीशी. गुजराती पद्मविजयजी कृत. अपदावाद जैन ग्रंथ प्रकाशक सभाना कार्यवाहक वाडीलाल शाह रु. ०-२-० (५०, २१८)

७१९ जिनस्तुति. (६८)

७२० जिनहर्षना हस्ताक्षरो. (१)

७२१ जिनागम विस्तार अने आगम प्रकाशने अंगे केटलाक विचार ले. मनसुख रवजी महेता गुजराती (२०९, ५०, २१९)

७२२ जिनालयगपन. रु. ०-०-६

७२३ जिनाज्ञापदीप. सिद्धमूर्ति विवेकविलास भा. १ लो. द्सरा ज. रामरीद्धिगणि हिन्दी.

৩২৪ জিনাল্লাবিधি पंकाशः (डीबाचो फाटी गयो छे) (१२)

जिने]

80

ि जीवन

- ७२५ जिनेन्द्रदर्शनपूजा. रु. ०-८-०
- ७२६ जिनेन्द्रदर्शनपूजाविधि डेमी पोकेटसाइझ पा. २८८ संग्रा-इक. परी मणीलाल खुशालचं पालणपुर सं. १९७५ (२२०) रु. ०-४-०
- ७२७ जिनेन्द्र पूजासंग्रह. पंडित माणेकविजयजी प० शेठ वधुभाइ माणेकचंद सं. १९५६ रु. १-१२-० (७१)
- ७२८ जिनेन्द्र प्रक्रिया (उत्तरार्घ) गुणनंदि विरचिता. (सनातन जैन ग्रंथमाला) (२२२)

जिनेन्द्र मिक्रया. रु. १-८-०

- ७२९ जिनेन्द्रभक्ति सुधाकर पूर्वाचार्य सं. १९७२ रु. ०-८-० अलभ्य. (३७)
- ७३० जिनेन्द्रस्तवादि गुण मोहनमाला. रु. ०-६-० (२२३)
- ७३१ जिनेन्द्रस्तुति (१)
- ७३२ जिनेन्द्रस्तुति गर्भित विचित्ररागमाला. ले. गंभीरविजयजी क. ०-२-० (२२४, ५०)
- ७३३ जिनेन्द्रस्तुतिरत्नाकर रु. ०-४-०
- ७३४ जिनेश्वर चतुर्विश्वतिका. ले. बुद्धिसागरसूरि सं. १९६९ बे चोवीसीओ रु. ०-१-६ (१९१)
- ७३५ जिनोदयस्रुरि वीवाइछ (संक्षिप्त साररुप तथा मूळ वीवाइछ) (जुओ ऐतिहासिक रास संग्रह भा. ३ जो)
- ७३६ जिनोपदेश मंजरी कथापंचक. राजेन्द्रसूरि सं. १९७४ (३७)
- ७३७ जिनोपदेश मंजरी यतीन्द्र विजयजी मारवाडी. (३७)
- ७३८ जीवदया. (२२५)
- ७३९ जीवद्याना हिमायतीओने एक अपीछ. (५०, २१७)
- ७४० जीवनप्रभा (राजेन्द्रसूरित्तं जीवनचरित्र भेट) यतीन्द्रविजयजी सं. १९७२ (३७)

जीवन] ६८ [जीवानु

७४१ जीवन सुधारणाना सन्मार्ग ले. विदृलदास मूलचंद शाह. बी. ए. भावनगर (२२६)

७४२ जीवभेद निरुपण यतीन्द्रविजयजी भेट. सं. १९८० (३७)

७४३ जीवविचार (जुओ प्रकरण लघुसंग्रह)

७४४ जीवविचार. रु. ०-२-०

जीवविचार मूल और अर्थ शान्तिसूरिजीकृत हि. (१, ३९) जीवविचार प्रकरण. रु. ०-४-६

जीवविचार प्रकरण गुजराती (५०)

,, , , , हिन्दी (५०, २२८)

,, ,, मूळ मोटा टाइपनुं रु. ०-०-९

जीवविचार प्रकरण (ज्ञान्तिसूरिकृत) पाठक रत्नाकर रचित टीकया समेतम् (२२९)

,, ,, बालावबोध. रु. ०-४-६ गाथाओना छुटा शब्दोना अर्थ मूळ शब्दार्थ विस्तारार्थ विगेरे तथा तेना छटा बोल.

जीवविचार (प्रकरण) सटीक (पाना) रु. ०-४-० (३३) जीवविचार वालावबोध युक्त. रु. ०-४-० जीवविचार द्वति भाषान्तर मूळ साथे. (१७, ७१)

जीवविचार दृत्ति मूळ अने भाषान्तर साथे. रु.०-८-०(१७)

७४५ जीवहिंसा निषेध जीवनचरित्र. रु. ०-४-०

७४६ जीवाजीव राशि प्रकाश श्री ज्ञानवर्धक जैन मित्रमंडळ सैळाना मांडवा रु. ०-४-० (२३०, ७१)

७४७ जीवाजीवाभिगमसूत्र टीकाकार मलयगिरि सं. ग्रंथ नं₊ ५० (१६) रु. ३–४–०

७४८ जीवानुशास्ति कुलकम् (जुओ कुलकसंग्रह १७ वाळो)

जीवा ी

६९

िजैन

७४९ जीवाजीवाभिगमसूत्र सटीक संपूर्ण (पाना) मलयगिरि टीका युक्त रु. ३-४-० (१६)

जीवाजीवाभिगम मलयगिरि. (२४, ५०)

,, ,, सूत्र भाषान्तर. (५०)

,, ,, मळयगिरि (१६)

,, ,, उपांग विवरण साथे. मलयगिरि (१६)

७५० जीवंधरचंपुः (५०)

७५१ जुनागढना महाजननो दयाछ ठराव नानाशंकर कक्ष्मीदास. जुनागढ (५०)

७५२ जुनीगुजरातीभाषा अने जैनसाहित्य. (२३१)

७५३ जेसलमेरभांडागारीयग्रन्थानां सूची. (संपूर्ण प्राया) रू. २-८-० (१३८)

७५४ जैन आख्वप.

आदीश्वरनी मोटीडुंक पालीताणा, आबुनां मंदिर, ता-रंगा, भोयणी तथा दश म्रुनिओना जुदा जुदा फोटा छै. (वडोदरा कोन. वखतनो) रु. १-८-० (२३२)

७५५ जैन इतिहास अंक २ जो. रु. ०-०-६

७५६ जैन इतिहास भा. १ लो ले. सुरजमल जैन दि.रु.०-१२-० (५०, २३३)

,, भा. २ जो. रु. ०-१**२-०** (५०, २३३)

७५७ जैन इतिहास. रु. ०-१०-० सं. १९६४ (१४२,१४३)

७५८ जैन इतिहास गुजराती रु. ०-६-० (१)

७५९ जैन इतिहास साहित्य गु. को. हे. नो. अंक (साहित्यनो जुलाइ-सप्टेम्बर १९१५ (५०, २३५)

७६० जैन ऐतिहासिक रासमाळा. पू. ४०८ योजक बुद्धिसागरसूरि

जैन]

90

ि चैन

ह. १-०-० (१५, ५८ थी ६२ १८४) शोधक अने विवेचनकर्ता मोहनलाल दलीचंद देशाइ सं. १९६९ शेट शांतिदास तथा मुनिओना ऐतिहासिक रास तेनां विवरण अने आलोचना तथा शब्दार्थकोष सहित म. अध्यात्म ज्ञान म. मंडल चंपागली मुंबइ. मेघजी ही-रजीनी कुं. पायधुनी मुंबइ.

७६१ जैन औपदेशिक ग्रंथावछी गु. विभाग पृ. १६८ थी २४६ सुधीनो (२३५, ५०)

७६२ जैन और बोद्धका भेद. राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्दकृत. इ. ०-०-६ (१४६, २३६)

७६३ जैन कथा द्वाविंशतिका. सं. १९५३ (२३४, ७१)

७६४ जैनकथा रत्न कोष भा. १ लामां सिन्दूर प्रकरण कथा स-हित. रु. १-४-०

७६५ जैनकथा रत्नकोष भा २ जो नेमिनाथनो रास.सं.१९४६ इ. २-४-० (७)

- ,, ,, भा. ३ जो. सं. १९४६ (७)
 - १ मोइ विवेकनो रास.
- २ उपिनित भवपपंच आश्रयी श्री धर्मनाथनुं स्तवन.
 तेमां मोहादिकना परिवार तथा सम्यग्दर्शनना परिवारनुं वर्णन छे.
- ३ सम्यक्तव सप्तितिका वालावबोध तथा कथा सहित. ७६६ जैन कथा रत्नकोष भा. ४ थो. अर्थदीपिका बालावबोध. रु. ३-०-० (७)
 - ,, ,, भा. ५ मो. भ्रुवनभानु केवळीनो रास वि-मेरे रु. २-८-० (७)

जैन]

90

| जैन

,, ,, भा. ६ ठो. गौतमञ्जलक कथा सहित. रू. २-८-० (७)

,, ,, भा. ७ मो. पृथ्वीचंद्र अने ग्रुणसागर चरित्र रु. ३-४-० (७)

,, ,, भा. ८ मो. श्रान्तिनायनो रास ६,३–०–० (७)

७६७ जैन कथा संग्रह भा. १ लो. रु. १-०-०

,, ,, ,, १३ कथाओ रु. १-४-०

,, ,, भा. १ लो. रु. १–४--० (५**२**)

,, ,, भा. २ जो. र्रु. १–४–० (५२)

, ,, भा. २ जो. रु. १-०-०

७६८ जैन कर्तन्य. अमृत्य. (२३८, ५०)

७६९ जैन काव्य दोहन. भा. १ छो. रु. २-०-० (२३९)

७७० जैन काव्य प्रकाश, रु. १-४-०

७७१ जैन कान्य प्रकाश भा. १ लो. शिला पेसनो छापेल सॅ. १९३९. ६० चैत्यवंदन, ९३ थोयो, ३० छंद, १८ स्तवन, २० वीसविहरमाननां, २४ जसविजयचोवीसीनां २४ मानविजय चोवीसी, २४ पद्मविजय चो०, रामवि-जयकृत आदि ५४ जिनना, ३३ अजितनाथनां, ३३ नेमिनाथनां, ४ नेमनाथना बारमास, ६६ पार्श्वनाथनां स्तवनो, २२ महावीरनां, तथा १८० बीजां. सज्झाओ २९ होरी वसंत फागादि. (७)

७७२ जैन काव्य प्रवेश की. वांचन, मनन सं. १९६८ (२१४) ७७३ जैन काव्य प्रवेश, टी. मोहनलाल द. देशाइ इ. स. १९१२ जुदां जुदां जैन काव्यो लइ ते पर विवेचन (अलभ्य) इ. ०-६-०

ज़ैन]

૭ર

जैन

७७४ जैन काव्य सार संग्रह, रु. २-०-०

,, ,, ,, सं. १९३८ रामचरित्र विगेरे. चोवी-सीओ विगेरे. रु. ५-०-० (१, २४०)

७७५ जैन कुपार संभव काव्य अर्थ सहित जयशेखर मूळ तथा अर्थ शास्त्री. रु. १-१२-०

७७६ जैन कोमकी तरकीकाराजह ? उर्दु विना मृत्य (४८)

७७७ जैन स्त्रीस्ती संवाद बुद्धिसागरस्र्रि (१५,५८थी६२,१८४)

७७८ जैन गच्छ पत प्रबंध. ग्रं. ३९)
संघ प्रगति. ग्रं. ४०
जैन गीता. ग्रं. ४१

७७९ जैन गायनमाळा अंक १ थी ४ रु. ०-४-०

ु,, ,, अंक ४ थो. रु. ०-०-६

७८० जैन गायन रसिक संग्रह. (२४०, ५०)

७८१ जैन गीता सं. नं. ४१ (जुओ जैन गच्छ मत प्रबंध)

७८२ जैन गीता विवेचन युक्त गुजराती. (१५,५८थी ६२,१८४)

७८३ जैन गुण प्रबोध चितामणि. रु. ०-२-०

७८४ जैन गुण प्रबोध चिन्तामणि. भा. १ लो. बालाभाइ त्रिक्य-लाल अमदावाद. रू. ०-५-०

७८५ जैन ग्रंथ गाइड (श्री मार्ग दर्शक भोमीयो) रु. १-०-० (१७)

७८६ जैन ग्रंथ रत्नाकर अंक १ छो. (ब्रह्म विलास पूर्वार्ध) रु.

्रार्थ) रु. ०–९–०

,, ,, अंक. ३ जो. (दोलत विलास, आप्त परीक्षा, आप्त मीमांसा) रु. ०-९-० जैन]

93

िजैन

- ७८७ जैन ग्रंथावली, रु. ३-०-० (२३५)
- ७८८ जैन चित्रमाला रु. ०-८-०
- ७८९ जैनजन मांसभन्नणितिषेध. धनविजयजीविरिचतः मेटः सं.
 १९५६ (२४१, ५०)
- ७९० जैन ज्योतिष तीथि पत्रिका. १९७२ थी २००७ सुधीना २५ वर्षतुं पैवांग. रु. १-०-० (२४२, ५०)
- ७९१ जैन डीरेकटरी (शहेर भावनगरनीज फक्त छे (६, १७, ५०) ७९२ जैन तत्व दिग् र्श्वन. ०-४-०
- ,, ,, ,, विजय धर्म सूरि. (१४, ४७) ७९३ जैन तत्वनो वधारो श्री महावीर स्वामीना पिताना चरणे "जैन" भावनगर भेट. (७१, ४४)
- ७९४ जैन तत्व परीक्षा प्रथम सर्ग उदय विजय सूरि प्रणीत नेमि विजय सूरि शिष्य रु. ०-४-० (२१८)
- ७९५ जैन तत्व प्रकाश, रु. ०-०-६
- ७९६ जैनतस्त्र पदीप प्र. मंगल विजयः (४७)
- ७२७ जैन तस्व प्रदीप मुनि मंगल विजय अभेचंद भगवान हास भावनगरी सं. १९७४ (४७, १४)
- ७९८ जैनतस्य प्रवेशिका योजक कर्पूर विजयजी रु. ०-४-० (३३)
- ७९९ जैन तत्त्व प्रासाद.
 - ,, ,, ,, नो वधारो हिन्दी प्रम्तावना उपोद्घात, प्रम्थकर्तानुं जन्म चरित्र, वंश द्वक्ष म्रुनिराज, सहायकोका फोडु द्वत्तांन्त की नथी (५०)
- ८०० जैन तत्व मीमांसा हिन्दी छे. छाछा कन्नोपछ एम. ए. रु. ०-०-६ (४८)

जैन]

98

िन

- ८०१ जैन तत्व शोधक ग्रन्थ गुजराती. रु. १-०-० (२४३,५०)
- ८०२ जैन तत्व सार विवेचक. मृनिश्रा जिन विजयजी कि. र.
- ८०३ जैन तत्व सार गुजराती भाषानार. रु. ०-६-० (१७, ७१)

जैन तत्व सार, रु, ०-५-०

- ,, , , हिन्दी ताराचंद दोशी भेट. [सं. १९६६
- ,, गुजराती भाषान्तर, रु. ०-२-० (१७)
- ,, ,, मूळ तथा भाषान्तर, रु. ०-६-० (१७)
- ८०४ जैन तत्त्व संग्रह. रु. १-०-० सं. १९६० (२४४)
- ८०५ जैनतत्त्वज्ञान विजयधर्मसूरि भन्डारकरना रीसर्च इन्स्टी-
- ८०६ जैनतस्वादर्श (शास्त्री) रु. ४-०-० गु. भीमसिंह माणेक मुंबइ (७, १७)
 - ,, ,, (गुजराती) पूर्वार्थ. रु. २-०-०
 - ,, ,, भा. २ जो (गु.) रु, १-o-o
- ८०७ जैनतर्कपरिभाषा (जुओ यशो विजयजी जैन ग्रंथमाला (सभा))
 - ,, ,, ,, (यशो विजयजी ग्रंथमाळामां छपायो. सं. १९६५ प्रमागनुं लक्षण अने तेना भेदनुं वर्णन सं. (६)
- ८०८ जैनतर्कवार्तिक श्री शान्त्याचार्य टीका युक्त शोधक विटल शास्त्री. रु. २-०-० (१४)
- ८०९ जैनतीर्थगाइड (शान्तिविजयजी कृत) रु. ३-०-०
- ८१० जैनतीर्थयात्रा हिन्दी. (५०)

जै नः]	७५ [-जैन
688	जैनतीर्थयात्रा दीपक हिन्दी. फतेइचंद. रु. ०-४-०
	जैनतीर्थावली. रु. ०-२-०
८१३	जैनतीर्थावलीप्रवास. रु. १-०-०
588	जैनतीर्थावलीपवास लखमसी नेणसी गु. रु. १-८-०
८१५	जैनदर्शन न्यायविजय सं. १९१९ रु. ०-८-० (१४)
८१६	,, ,, पंडित बहेचरदास जीवराज. रु. २-०-०
८१७	जैनदर्शनना मूळतत्वो अंग्रेजी उपरथी कर्ता हीराचंद ली-
	लाधर झवेरी. रु. ०-४-० (६०, ७१)
८१८	जैनदीक्षा हिन्दी. (६८, २४५)
८१९	जैनदेवदर्शन. रु. ०-३-० (२१४)
८२०	जैनदेशनासंग्रह धर्मघोषसृरिनी देशना. रू.०-८-० (१८९)
८२१	जैनदृष्टिए इशावास्योपनिषद् भावार्थे विवेचनकार बुद्धिसागर
	स्रुरि. (१५, ५८ थी ६२, १८४)
८२२	जैनदृष्टिए योग ले. मोतीचंद गीरधरलाल कापडीआ प्रथम
	भाग. रु. ०-८-० (६)
८२३	जैनयर्म अने खीस्ती धर्मनो मुकाबलो ले. बुद्धिसागरसूरि.
	(१५, ५८ थी ६२, १८४)
८२४	जैनधर्म रु, ०-२-० (८८)
८२५	जैनधर्म मी. इर्बर्ट वारन के " जैनीझम् " नामके लेखका
	अनुवाद; अनुवादक चंद्रसेन जैन वैद्य. हि. एक पैसो.

(२०४) [५०) ८२६ जैनधर्म अने देशी वैद्य विद्या ले. वैद्य जटाशंकर. (२४६, ८२७ जैनधर्मका स्वरूप. ले. आत्मारामजी. रु. ०-२-० (२४७, ८२८ जैनधर्मका महत्व. रु. ०-१२-० [७१

नेन]

80

नेन

- ८२९ जैनधर्मके नियम आर्याजी श्री पार्वतीजी कृत. सं. १९६२ रु. ०-०-६ (२४८)
- ८३० जैनधर्मके विषयमे अजैन विद्वानोकी संमितिमे सुनसी के ओ.
- ८३१ जैनधर्म तरंग बीलीमोराना उपधानवाळाओ वलसाड. इ. १९११
- ८३२ जैनधर्मनी माहिती. प्र. क. हरजीवन रायचंद शाह. रु. ०-४-० (५१)
- ८३३ जैनधर्म विषयक प्रश्लोत्तर हिन्दी. रु. ०-६-० (२०५) जैनधर्म विषयक प्रश्लोत्तर रु. ०-४-० (श्लास्त्री अक्षरमां)
 (२५१)
- ८३४ जैनधर्म निषयम मि. हरबर्ट. (५०)
- ८३५ जैन्धर्मना मूळ तत्त्वो. रु. ०-४-०
- ८३६ जैनधर्मना व्याख्यानो. रु. ०-४-०
- ८३७ जैनधर्मनां व्याख्यानो उपाध्याय वीरविजयजीना शिष्य दानविजयजी. (सयाजीराव गायकवाडने संभळावेळां व्यांख्यानो) सं. १९६९. शा. त्रिकमळाळ गगनळाळ. वडोदरा.

जैन धर्मना व्याख्यान भा. १ हो. रु. ०-४-०

,, ,, भा, २ जो, रु, ०-२-०

- ८३८ जैनधर्म नियम. रु. ०-१-६
- ८३९ जैनधर्मनी पहेली चोपडी. रु. ०-६-०
- ८४० जैनधर्मनी प्राचीन ने अर्वाचीन स्थिति छे. बुद्धिसागर स्रुरि. सं. १९७० पृ. ९६ रु. ०-२-० (१५, ८५ थी ६२, १८४)

```
जैन ी
                                                िजैन
                         ७७
८४१ जैनधर्मेंनी बीजी चोपडी. रु. ०-८-०
८४२ जैनधर्मनी माहिती. रु. ०-४-०
८४३ जैनधर्मनी सत्यता. (जैन अने स्त्रीस्ती धर्मनी मुकाबस्त्री)
        ₹. ०-१-० ( २५०, ७१ )
८४४ जैनधर्मनो प्राचीन इतिहास. भा. १ लो. रू. १-०-०
        ( ३२. ६ )
       ,, ,, ,, भा. २ जो रु. १-०-० (३२,६)
८४५ जैनधर्मपर एक महाशयकी टीका, रु, ०-४-०
८४६ जैनधर्म प्रवेशपोथी भा. १ लो. रु. ०-१-० (१४३)
                      भा. २ जो. रु. ०-२-० (१४३)
                      भा. ३ जो. रु. ०-४-० (१४३)
                     भा. ४ थो. र. ०-५-० (१४३)
८४७ जैनधर्म पर्वेशपोथी. भ. १-२ ना अर्थ रु. ०-१-०(१४३)
                     भा. त्रीजाना अथे रु.०-१-६ (१४३)
                     भा. चोथाना अर्थ. रु.०-१-३(१४३)
              5,
८४८ जैनधर्म प्रसारक सभानी लायब्रेरीनुं लीस्ट (६) 🛭 🕻 (६)
                     सभानो रीपोर्ट, वरस १२ रु. ०-२-०
                     ्सीत्वर ज्युबीली अंक रु.१-४-० (६)
८४९ जैनधर्म विषयक प्रश्नोत्तर. ( जुदी जुदी हकीकतोनो संग्रह )
        ₹. 0-6-0 ( १७ )
                     ,, रु. ०-६-० आत्मारामजी कृत
        ते छर्लुभाइ हीराचंद छापीने प्रसिद्ध कर्या. सं. १९४५.
८५० जैनधर्मेशिक्षण. रु. ०-२-०
८५१ जैनधर्मसिंध. इ. ३-:-० यति मनसुखलालजी इ.
```

2-6-0

96

जिन

- ८५२ जैनधर्म ज्ञानदीपक. "जैनधर्मकथा सार" (मासिकपत्र)
 (५ स्तवन विगेरे)
- ८५३ जैनधातुप्रतिमालेख संग्रह. भा. १ ले. बुद्धिसागरस्रुरि. अ. ज्ञा. प्र. मं. पादरा. रु. १-०-० (१५, ५८ थी ६२, १८४)
- ८५४ जैनवातुप्रतिमालेख संग्रह. भा. २ जो. (१५, ५८ थी ६२, १८४) क. बुद्धिसागरस्रुरि.
- ८५५ जैनधार्मिक शंका समाधान. बुद्धिसागरस्रुरि (१५, ५८ थी ६२, १८४)
- ८५६ जैनना अंको. सने १९१० सने १९१८ नी फाइछ (४४)
- ८५७ जैनना केटलाक नामांकित पुरुषो. रु. ०-८-०
- ८५८ जैन नित्यपाठ संग्रह. (१०, २२)
- ८५९ जैन निबंध. ९ (५०)
- ८६० जैन निवंधरत्नाकर हिन्दी (२५५, ६०) इ. १९१२
- ८६१ जैन नियमावली. (६८)
- ८६२ जैन नित्यपाट संग्रह. काशेय पदंबद्ध. रु. ०-६-० (१०)
- ८६३ जैन नित्यस्मरण स्तोत्र संग्रह अने जैन वार्षिक उत्तम पर्वो. स्तोत्रो तथा स्तवनोनो संग्रह. (२५७)
- ८६४ जैन नीतिप्रवेश. मावजी दामजी घाट कोपर. रु. ०-४-०
- ८६५ जैननो अंक. सं. १९६७ रु. ०-८-०
- ८६६ जैनन्यायनो ऋषिक विकास. भावनगर सातमी ग्रुजराती साहित्य परिषदमां पं. सुखळाळजीए करेढुं भाषण.
- ८६७ जैन पाठपाला. रु. ०-६-० 💎 [(२५८, १४६)
- ८६८ जैन पाठावली. आष्ट्रति बीजी. रु. ०-६-० (८२, ७१)
- ८६९ जैनपोथी (२५९,७४)

90

जैन

- ८७० जैनमबोध. रु. २-०-० (६)
- ८७१ जैनमबोध भा. १ लो मथम कटको. जेमां विशिष स्तवनो, सज्झायो, छंदो, चोविशीओ, तपनी ओलोनी विधि वगेरे (७, ५०)
- ८७२ जैनमबोध पुस्तक भा. १ हो. (सं. १९४५) (७, ७१)
- ८७३ जैनप्रभाकर स्तवनावली. रु. ०-२-०
- ८७४ जैनमश्लोत्तर रत्नमाला. की. नथी ठेकाणुं पण नथी छाप्युं. धर्म संबंधी केटलाक तात्विक पश्लोत्तर छे.
- ८७५ जैन प्राचीन पूर्वाचार्यी विरचित स्तरन संग्रह. जुदां जुदां ४१ स्तरनोनो संग्रह प्रतिरुवे.
- ८७६ जैन पाचीन स्तवनादि संग्रह, रु. ०-६-०
 - ,, ,, गुजराती की. अमृत्य (२५७)
 - ,, ,, की. ०-१४-० सं. १९७९
 - ,, ,, হ. १--০ [(২५७)
- ८७७ जैन फीलोसोफी ट्रेक्ट नं. १ (२-३-४-५) दि.(२०४,५०) ,, कर्ता वी. आर. गांघी (अंग्रेजी) (२८,१६,१)
- ८७८ जैन बालोपदेश. रु. ०-२-० (४३)
- ८७९ जैन बाळगरबावली सं. १९६३ रु. ०-२-६ (१४३)
- ८८० जैनबोध संग्रह. रु. ०-२-०
- ८८१ जैन बोल विचार सँग्रह, रु. ०-८-० (२६०)
- ८८२ जैन बोल संग्रह भा. १ लो बालाभाइ ककलभाइ अपदाबाद मांडवीनी पोळ रु. ०-२-० (५०)
- ,, ,, भा २ जो उपर मुजब रु. ०-४-० ८८३ जैन भातु पथम भाग रु. ०-५-० (६)

८०

जिन

८८४ जैन भानु प्रथम भाग कर्ता ब्रह्म विजयजी रु. ०-५-० (२०१, ६, १७, २२८)

८८५ जैनमत नास्तिक मत नहि है. रु. ०-०-३ (४८)

८८६ जैनमतरुक्ष (मोदुं) रु. १-४-० (६)

८८७ जैनमतद्वक्षनी समज्जती लघु दक्ष सहित. रू. ०-८->

८८८ जैन मत दृक्ष (आत्मारामजी कृत) आत्मानंद सभा पंजाब.

८८९ जैनमत शिक्षा. (दि०) [सं. १९५६

८९० जैनमतसमीक्षा केस. (आर्यसमाज साथे फॅसलो) फो-जटारी दिल्ही. (६. ५०)

८९१ जैनमधुरगायन रस रु. ०-२-०

८९२ जैनमार्ग दीपिका, रु. ०-१२-०

८९३ जैनमार्गप्रवेशिका. रु. ०-२-०

८९४ जैनमार्गपारंभपोथी रु. ०-१-०

८९५ जैन मुक्तावली, सुरिस्तत्र शतकं, च, प्रणेता नेषिविजय शिष्य मुनि नन्दनविजय सं. १९७९ (११)

८९६ जैन मांसमञ्जण निषेत्र हिन्दी. धनविनयनी भेट. (२४१)

८९७ जैतरहस्य भेट. तीर्धविजय पं. सौधर्म बृहत्तपागच्छीय स-मस्त संघ (२८१)

८९८ जैन रापायण, कृष्णजाल वर्गा हिन्दी, रु. २-०-०

८९९ जैन रामायण विसनजी चतुर्भूज गुजराती रु. १-०-०
,, भाषान्तर याने रामचरित्र, सं. १९५२ (२८२, ५०) रु. २-०-०

,, ,, मूळ संस्कृत. हेमचंद्राचार्य विरचित रु. २-०-० (२४, ५०)

68

िन

९०० जैन रासपाला, जेमां ३६३ रासोनी नोंध छे. अने तेना संवत तथा कर्ताओनां नाम पण छे (५०)

९०१ जैन रासमाळा. (२३५, २२)

९०२ जैन (ऐतिहासिक) रासपाळा. भा. १ लो. रू. १-०-०

९०३ जैन रासमाळा, रु, ०-४-० (२३५) [(२१४)

९०४ जैन रासमाळा (पूरवणी) मोहनलाल दलीचंद देशाइ. कुल ६४१ रासाओ चोपाइओ वगेरे. (२१४, २३५)

९०५ जैनर्षि पटनिर्णय. यतीन्द्रविजय. रु. ०-४-० (३७)

९०६ जैनलप्रविधि. तैयार करनार वैद मगनलाल चुनीलाल वडोदरा रु. ०-१-० (१३१)

९०७ जैन लायब्रेरी. गुजराती (१)

९०८ जैन लावणीसंग्रह. (शास्त्री) भा. १ लो. रु. ०-८-० (७)

,, ,, (गुजराती) रु. ०–६–०

,, ,, भा. १ लो. गुजराती हिन्दी. रु. ०-८-०

९०९ जैन लेखपाला. रु. १–८-०

९१० जैन लेख संग्रह. पथम भाग. रु. ५-०-० (२८३,२८४)

९११ जैन हॉ. (दि.) (५०)

९१२ जैन वार्षिकपर्वो अने नित्यस्मरण स्तोत्र. अमृत्य (२५७,५०)

९१३ जैन विधवापुनर्रुप्त निषेध हिन्दी. धनविजयजी कृत. सं. १९५३ (२८५)

९१४ जैन विवाहनां गीत. रु. ०-०-३ (६)

९१५ जैन विवाहनां गीतो. म. सु. महेता. गुजराती.

९१६ जैन विवाह विधि. रु. ५-६-० (६)

33

जैन] ८२ [जैन

९१७ जैन विविध स्तर्वन संग्रह. भाग १-२-३-४ गोर्विदराम भणसाली (४३)

९१८ " जैन विवेक प्रकाश " पासिक. (२८६)

९१९ जैन विवेक हिन्दी. हरजसरायकृत, प्र. अमोललचंद जैन प्रभाकर प्रेस. सं. १९४७ रु. १-०-० (५०)

९२० जैन व्रतिक्रियाविधि संग्रह पाना. रु. ०-२-० (१७) सं. १९७५

९२१ जैन शशिकान्त भा. १ छो. रु. १-८-० (१४३)

९२२ जैन शासन पत्रनो दिवाळीनो अंक. रु. १-०-० (१२३)

९२३ जैन शासन अठवाडीक पत्र. दिवाळीनी खास अंक. (२८७)

९२४ जैन शासनसार, अने मूर्तिपूजा निबंध, रु. ०-८-० (६७)

९२५ जैन शासन सार अने मूर्तिपूजा निबंध. पृ. ६७ रु.०-४-० ले. कोटारी रीखनचंद उजमचंद गुर्जर (जीवदया अने कषाय निग्रह वगेरे.) (२२०)

९२६ जैन शास्त्र माला खंड १ लो. सुविचारमाला. मणका नं. १७ वाडीलाल मोतीलाल शाह. सात आगमोनी मतलब की.

९२७ जैन शाळोपयोमी अंक गणित भा. १ हो. रु. ०-१-६

,, ,, ,, भा.२ जो. (६)

,, ,, व्याकरण, रु. ०-२-६ (६)

,, ,, शिक्षणमाळा (३३) पहेली चोपडी रु. ०-२-० बाळपोथी रु. ०-१-६ बीजीचोपडी ०-३-० त्रीजी ,, ,, पाठमाळा. (६) [चोपडी. ०-४-०

९२८ जैन शिक्षा दिग्दर्शन. श्री विजयधर्मसूरि. (१४, ४७) ९२९ जैन खेतांबर कोन्फरन्सनो रीपोर्ट. १९६५-६६ नो.

```
ी जैन
जैन ।
                       23
                   ,, हेरल्ड मासीकनी फाइळ सने १९१४⊸
         . १९१५–१९१६ ( २३५, १ )
९३० जैन श्वेतांबर डीरेक्टरी. भा. १-२ रु. १-१४-० (२३५)
                   ,, सने १९१५ रु. ०-४-० (२८८)
            🉏 मंदिरावली. भा. १ लो रु. १-८-० (२३५)
९३१ जैन सज्झाय संग्रह. रु. ०-१०-० (१३१)
९३२ जैन सज्ज्ञाय संग्रह, भा. १ लो. रु. ०-१०-० (६)
९३३ जैन सज्झायमाळा. रु. १-१-०
               भा. १-२-३-४ बाह्याभाइ छगनलाल.
                   २, २,२, २.
९३४ जैन सज्झायमाला भा. १ लो. मगनलाल हठीसँग. (१७९)
              ,, भा. ३ जो. रु. १-०-० (८२)
९३५ जैन सती धर्मका स्वरुप. रु. ०-२-० (६)
९३६ जैन सती मंडळ. सं. १९६६ रु. १-४-० (१४२, २८९,
        22)
                    भा, २ जो. रु. १-०-०
्र, २०० जैन सती रत्न. ( प्रथम भाग ) ले. छालचंद लखमीचंद.
        शाह. सचित्र. रु. १-४-० (२९०)
९३८ जैन समाचार भा. १ छो २ जो. रु. ०-८-०
९३९ जैन समाचार भा, ३ जो, ४ थो, रु. ०-८-०
९४० जैन समाज मासिक धीरविजयजी महाराजनो फोटो खंडण
९४१ जैन साधओनं कर्तव्य. ( ५० )
                                 [ ग्रंथ. ( दि. )
९४२ जैन साहित्य अने श्रीमंती तुं कर्तच्य. छे. मोहनकाळ दकी-
        चंद. (२१४)
```

९४३ जैन साहित्यका इतिहास. (७१)

मैन]

68

| जैन

९४४ जैन साहित्य निवंध गुजराती. (२९२, ५०, २३५)

९४५ जैन साहित्यनी हितावह दिशा. सातमी गुजरात साहित्य परिषद्ना जैन विभागना अध्यक्ष. श्रीयुत पंडित फतेचंद क. लालनतुं भाषण. (१४६)

९४६ जैन साहित्य पकेी अल्प गुजराती रासो आदिना ग्रंथकारो-नी यादी. जै. न्व. को. ओ. ग्रुंबइ.

९४७ जैन साहित्यमां दिकार थवाथी थयेली हानि लेखक अने प्रकाशक. पं. वेचरदास जीवराज. रु. १-८-०

९४८ जैन साहित्य संमेलन. (भा. १-२) जोधपुर. रु. १-०-० (१४) ग्र. हि. अंग्रेजी.

९४९ जैन साहित्य संसोधक. त्रिमासिक रु. ५-०-० प्रति अंक. रु. १-८-० प्राचीन शोध खोळनो नम्रुनो (१५८)

९५० जैन सिद्धान्तग्रंथावली. रु. ३-०-० सं. १९६५ (२३५)

९५१ जैन सिद्धान्तदर्पण मथमखंड. (दि.) रु. १-०-०

९५२ जैन सिद्धान्तनियमाविलः प्र. करोडीचंद मंत्री (दि०) (२९४)

९५३ जैनसिद्धान्तप्रवेशिका. रु. ०-३-०

,, ,, गुजराती अनुवाद प्रका. मुलचंद करस-नदास कापडीया सुरत रु. ०-४-० (७१)

९५४ जैन किद्धान्त भवन आरा (दि.) की प्रथम वार्षिक रीपोर्ट ओर नियमावली. (२९४)

९५५ जैन सिद्धान्त समाचारी, रु, ०-८-०

९५६ जैन सिद्धान्त संग्रह नाना १०१ ग्रंथनो संग्रह. (दि.) रु. २-४-० (२९५)

९५७ जैन सुगुण स्तवनावंकि. रु. ०-३-०

९५८ जैन सुबोध प्रकाश. भा. १ छो. रु. ०-२-० (२९६)

जैन] ८५ विन

९५९ जैन सुबोध प्रकाश भा. १ लो कि. नथी. आदृत्ति त्रीजी. सं. १९५९ (२९७)

> ,, ,, ,, भा. र जो. रु. ०-१०-० सं. १९५१ (२९६)

९६० जैन सुबोध प्रथम भाग भेट. इ. १८८१ पर्वतिथ्यादि स्तव-नादि (२९८)

९६१ जैन सुबोध संग्रह. रु. ०-८-८

९६२ जैन सूत्रोमें मूर्तिपूजा. हिन्दी. (२०७)

९६३ जैन (जैन मार्तेड) सूर्य. सं. १९६३ रु. ०-३-० (१९९)

९६४ जैन संगीत कम्छोदय प्रथम भार पं. मोहनलाल ग्रुनि (ख१०)

९६५ जैन संपदाय शिक्षा. कर्ता श्रीपालचंद्रजी यति बीकानेरवासी रु. ३--८-० (१०, ७१)

९६६ जैन संस्कार दिधि. (श्रावकना १६ संस्कार) रु. ०-५-० रू., शान्तिविजय. रु. ०-८-० हि. (३०१)

९६७ जैन संस्कृत स्तोत्र रत्नसंग्रह. तथा गुजराती स्तवन तथा ग-हुंलीसंग्रह रचनार पन्यास सौभाग्यविपळ शिष्य मुनि मुक्तिविमळ. रु. ०-४-० (१९७)

९६८ जैन स्तवन विलास. भैरोदान लहेरचंद. (४३)

९६९ जैन स्तरन सङ्गाय संग्रह. भैरोदान उदेचंद. (४३)

९७० जैन स्तवनावली भा. १-२-३ रु. ०-४-०

,, , जिनदासकृत हिन्दी सं १९४८ (३०२)

९७१ जैन स्तुति रु. ०-१-० (६८, ३००)

९७२ जैन स्तुति. (३०३, ५०)

९७३ जैन स्तोत्रमाला. गुणविजय भेट. सं. १९७९ (१५)

९७४ जैन स्तोत्ररत्नाकर कौशेय पदबद्ध. इ. १९०१ रु. ०-४-०

૮६

| जैन

सं. (१०) नवस्मरण, जयतिहुपण, जिनिपंजर, ग्रहशांति, पार्श्वनाथनो मंत्राधिराज स्तोत्र अने यंत्रविधान छे.

९७५ जैन स्तोत्र रत्नावली. रु. ०-८-० (७३)

९७६ जैन स्तोत्र तथा स्तवन संग्रह. रु. ०-६-०

९७७ जैन स्तोत्रभांडाकार भा. १ लो. ले. सं. चंदनश्रीजी कृत. प्र. फुलचंद गोवेछक् भोंदी (३०४)

९७८ जैन स्तोत्र रत्न संग्रह (सं.) मुनि मुक्तिविमलकृत. तथा गु-जराती स्तवन तथा गहुंलीसंग्रह. रु.०-४-०(१९७.५०)

९७९ जैन स्तोत्र रत्नाकर (१०, २२)

२८० जैन स्तोत्र संग्रह भा. २ जो.

९८१ जैन स्तोत्र संग्रह. सं. १९६२ रु. ०-४-० भक्तामर, कस्याणमंदिर, एकीभाव, विषापहार, जिनचतुर्विश्वतिकाए पांच छे. (दि.) (१०)

९८२ जैन स्तोत्र संग्रह. भा. १ लो. रु. ०-६-० (६, १४)

९८३ जैन स्तोत्र संग्रह द्वितीयो भाग. रु. १-०-० (१४)

९८४ जैन स्तोत्र स्तवनावळी पत. रु. ०-४-०

९८५ जैन स्याद्वाद मुक्तावली. यशस्वत्सागरगणि कृत. संशोधक योगनिष्ठ श्री बुद्धिसागरसूरि. (अमृल्य) सं. १९६५ प्रकाशक शेठ भोगीलाल ताराचंद मु. अमदावाद.

९८६ जैन स्वेताम्बर डीरेक्टरी. रु. १-१४-०

९८७ जैन हितबोध. रु. ०-४-० (३३)

९८८ जैन हितबोध. हिन्दी. रु. ०-६-० (३३)

९८९ जैन हितबोप भा. १ छो २-३ हिन्दी. (३३, ५०)

९९० जैन हितेषी अथवा जैन समाछोचक. रू. ०-३-०

९९१ जैन ज्ञान थोकडा संब्रह, भेट, (४३)

जैनं 1

୯୬

िंजैनोनां

९९२ जैन ज्ञान दीपक गायन संग्रह ले. बुद्धिसागरसूरि. सं.१९६३ रु. ०-३-० (३०६)

९९३ जैन ज्ञान बीजी चोपडी. प्र. श्री. वंथली. जैन बाला. भेट.

९९४ जैन ज्ञानमहोद्धि विज्ञानपत्रिका. प. (३०८) [(३०७)

९२५ जैनार्णव. (दि.) रु. १–४–० (११६)

९९६ जैनास्तिकत्वमीमांसा अपरनाम. जैनीयोको नास्तिक कहना भूलहे ले. पंडित इंसराजशर्मा. रु. ०-०-६ (३०९)

९९७ जैनाहितकत्व विचार हिन्दी पं. भीमसेनशर्मा रचित. (दि.) रु. ०-०-६ (३१०)

९९८ जैनी आस्तिक है. (उर्दु) विना मूल्य. (४८)

९९९ जैनिझम बाय इरबेर्ट बोरन (Gainizm by Herbert Warron) तेनुं 'जैन धर्म बाय मो. हर्बर्ट बोरन छे- खक 'तेनुं गुजराती भाषन्तर कर्ता. मोहनछाल दली- चंद बी. ए. इ. स. १९१० (६०, २१४)

१००० जैनीयोंका तत्त्वज्ञान और चरित्र. हिन्दी. इटावा. (दि.) रु. ०-०-६ (११६, ५०)

१००१ जैनीयोके नास्तिकत्व पर विचार. ट्रे. नं. ६ (जुओ आर्य मत लीला)

,, ,, (दि.) रु. ०-६-३ (२०४, ३११,५०)

१००२ जैनेतर द्रष्टिए जैन. जैनेतर अनेक मध्यस्थ विद्वानोना जैन धर्म संबंधी अभिनाय अमरविजयजी आत्मारामजीना शिष्य. (३१२)

१००३ जैनेन्द्रमिकया श्री गुणनन्दीविरचिता. (७१) १००४ जैनोका तिथि मंतव्य. हिन्दी (५०) १००५ जैनोनां जाहेर खातां अने तेनी स्थिति. (३१३,५०) जैनो] ८८ [जंबु

१००६ जैनोपनिषद् बुद्धिसागरसूरि. पृ. ४० रु. ०-२-० (१५, ५८-६२, १८४)

१००७ जोतिष सार (प्राकृत) हिन्दी सानुवाद. अनुवाद. पं.
भगवानदास जैन. रु. ०-१२-० (४३, ३१४)

१००८ जंबुकुमार रास. नयविमलली. गुजराती.

१००९ जंबुगुण रत्नपाला. रु. ०-६-०

१०१० जंबुचरित्र परदेशीराजाकी चोपाइ इ. १९१९ रु. ०-६-० (१०४)

१०११ जंबुद्वीपनो नकश्चो (कपडावाळो) रु. ०-६-० (६)

१०१२ जंबुद्दीपपन्नतिसूत्र मूल. टीका अर्थ युक्त. (५०)

१०१३ जंबुद्वीपप्रज्ञप्ति नामक उपांगम् द्वितीय भाग. रु. २-०-० शांतिंचद्र गणि वाचक विरचिताया प्रमेयरत्न मंजुषा नामाया. इत्ति. (१६)

१०१४ जंबुद्दीप प्रज्ञप्ति नामक उपांगक प्रथम भाग त्रण दृक्ष. (१६)

,, ,, प्रथम भागे चोयो हक्ष. (१६)

,, भावान्तर. (२४, ५०)

१०१५ जंबुद्वीप प्रज्ञप्ति (टीका अने भाषांतर युक्त) मलयगिरि कृत टीका मागधी. संस्कृत, गुजराती.

१०१६ जंबुद्वीप प्रज्ञप्ति सुत्र पूर्वार्ध (पाना) रु. ४-०-०

,, ,, भाग १ छो. (५०)

,, ,, भाग २ जो. (५०)

१०१७ जंबुद्वीप समास. उमास्वाति वाचक विरचित. सं. १९७९ रु. ०-४-० (३१५)

१०१८ जंबुद्वीप संग्रहणी टीका (पाना) रु. ०-४-० हरिभद्रसूरि विरचित. (प्रभानंदसूरिकृत टीका सहित.) सं. १९७१ की. नथी. मुळ पाकृत; टीका संस्कृत (६) र्जबु]

68.

[ठाणांग

१०१९ जंबु नाटक. रु. ०-४-० (२०१)

१०२० जंबुस्वामीचरित्र, रत्नशेखरकृत. रु. ०-८-० (१७)

१०२१ जंबुचरित्र गुजराती (५०)

,, ,, रु. ०-८-० मूळ संस्कृत तेनुं भाषान्तर गुजर सं. १९५० (२९६)

१०२२ जंबुरवामींचरित्र गुजराती. रु. ०-६-० (१७)

१०२३ जंबुस्वामीचरित्र (शास्त्री) रू. ०-९-०

१०२४ जंबुस्वामीचरित्र. अपूर्व चरित्र. सं. १९६८-१९७० जय-शेखरकृत. सं. (१७)

१०२५ जंबुस्वामीनो रास. ज्ञानविमस्स्रिरीश्वररचित वारव्रतनी टीपनो रास. मोदी केशवलास्त्र प्रेमचंद तेना शोधक. रू. ०-४-०

१०२६ जैंबुस्वामीनो रास तथा बारव्रतनी टीपनो रास. ज्ञानविम-स्मृरि रचित. २. सं. १७२९ रु.०-४-० (७३,५०)

१०२७ ज्योतिष्यसार हिन्दी सचित्र. अनु, पंडित भगवानदास जैन, (५, १६, १) रु. ०-१२-०

१०२८ ज्योतिष्यसारसंग्रह हिन्दी. भाषान्तर कर्ता भगवानदास पंडित संस्कृत हिन्दी सं. १९८० रु. ०-१२-०

₹.

१०२९ टोड राजस्थाननो इतिहास. भा. १ लो. गौरीशंकर हीरा-चंद ओझाकृत. इ. १९१३ रु. २–४–० (३१७)

ਰ.

१०३० ठाणांगसूत्र. (२४)

१०३१ टाणांगसूत्र पूर्वार्ध. भा. १ लो. (२८)

,, उत्तरार्घ भा. २ जो. (२८)

१०३२ टाणांगसूत्र मूळ टीका. अर्थयुक्त.

११

दभोइनां]

९ ०

दुंदक

₹.

१०३३ डभोइनां पुरातन कामो गुजराती. (७१)

,, ,, ,, अंग्रेजी. (७१)

,, ,, ,, उर्दूमां (७१)

Antiquities of Dabhoi in Gujarat By Burges, L. L. C. I. E.

Director general of the Archeolotgical Servey of India.

गायकवाडना आर्डरे छपाइने प्रसिद्ध थइ. (१८८८) कालीकाना मंदीरना अने तळावना अंदरना जुना मंदि-रना देखावोना नकशा आपेला हे. अत्यारे काली-मंदिर हे. पण कोतरकाम जोतांज ते जैनोतुंज लागे हे.

१०३४ डीक्षनरी स्रोफ जैन वायोग्राफी उपरावसिंह टांक. सेन्ट्रल पब्लीसींग हाउआरा. दि. रु. १-०-० (१)

१०३५ डंके पर चोट, (६८)

१०३६ डंडक तथा लघु संघयणी बालावबोध युक्त.रु.०-६-० ७) ढ

१०३६ अ. ढालसागर, रीषभसागर, गुजराती. (१)

१०३७ दुंढक नंदराम मतखंडन हिन्दी. राजगढ संघ तरफसे छ-पानेवाला. एल. वि. (५०)

१०३८ ढुंढक नंदराम मतखंडन परशुपत्रिका रु. ०-३-०

१०३९ दुंढक पत्रकारने पत्युत्तर की. नथी. अलभ्य. दुंढकने प्रतिमा संबधी जवाब. (३१८)

१०४० ढुंढक मत खंडन नाटक. प्रश्नोत्तर रूप धर्म विषयक प्रकरण प्र. नाम नथी. ' पोते ' एम स्रखेस हे, रु. १-०-० (५०)

हैंढक] 99 .ितस्व १०४१ ढुंढक मत् पराजय. ृसं. १९६६ (३१९) १०४२ इंडक मत समीक्षा, रु. ०-८-० हिन्दी. (& 40) १०४३ इंटक हितिशिक्षा (गप दीपिका समीर) रु. ०-८-० १०४४ इंडक हृदय नेत्रांजन. रु. १-८-० सं. १९६५ (३२०) १०४५ इंडीयाकी पोछम पोछ. बा. फतेचंद. मुख्य दो पैसा. छे-खक, चेलाराम जैनी देहली. (३२१) १०४६ ढंढण ऋषिनी सज्झाय. (जुओ देवचंद भा. २ वि. १) त. १०४७ तत्त्व चिन्तापणि याने शम अने मोहनो संवाद, रु. ०-१२-० (६) १०४८ तन्त्र चिन्तामणौ उपमान खंड श्रीमद् गंगेशोपाध्याय विर-चित. १८७२ कीं. लखी नथी. (७१) जैनेतर १०४९ तत्त्वनिर्णय पासाद आत्मारामजी क्रत्र. रू. ४-०-०(८२) १०५० तस्व निर्णय प्रासादनो वधारो. रू. १-०-० १०५१ तन्त्व प्रकाश पाष्ट्रपाला भा. १ लो. यति मनसुखलास्त्रजी नेमचैद कृत. रू. ०-२-० ि ५८ थी ६२. १८४) १०५२ तत्त्वविन्द्र, बुद्धिसागरस्रुरि, प्र. २३० रु, ०-४-० (१५. १०५३ तत्त्व बोघक कल्याण शतक कल्याण विजयजी. भेट. सं. १०५४ तत्त्व भूमिमां प्रवास. रु. १-२-० [१९७२ (९५) १०५५ तन्त्र वार्ता छक्ष्मी सरस्वती संवाद, पं. गंभीर विजय गणि विरचित. तथा धना चरित्रमांथी उद्धरित लक्ष्मी सरस्व-ती संवाद सं. १९६९ रु. ०-४-० (६)

१०५६ तन्त्व विचार. बुद्धिसागरसूरि. (१५, ५८ थी ६२, १८४) १ ५७ तन्त्व विचार. रु. ०-४-०

तस्य 1

62

तिस्वा

१०५८ तम विवेक विजय राजेन्द्र सुरिजी विरचित. प. क. छल्छ बल्यम धोलेरा वाळा. रु. ०-६-० (७१)

१०५९ तत्वविवेक पुस्तक पहेलुं. गुजराती. (५०)

१०६० तत्त्रज्ञान (रायचंद्र कृत) पश्च मुक्ष, अमदाबाद, (५०)

१०६१ तस्त्रज्ञान दीपिका. बुद्धिसागरसूरि क्रत.पृ.१२४ रु.०-६-० (१५, ५८ थी ६२. १८४)

१०६२ तस्त्रज्ञान प्रकाश. भा. १ (३२४)

१०६३ तत्त्वाख्यान पूर्वार्ध. (चार दर्शननी मीमांसा) छे. मंगळ विजयजी (१७, ४७, २६६, ३२४)

> ,, ,, उत्तरार्ध बाकीना वे दर्शनोनी मीमां-सा. (नवीन दबना आ वे ग्रंथो छे) ले. मंगळ विज-यजी. (१७, ४७, २६६, ३२४)

१०६४ तत्त्वानुबोध. (जुओ प्रकरण रत्नाकर, मा. १ छो)

१०६५ तत्वाजुशासनादि संग्रह. छोटा छोटा १४ ग्रंथनो संग्रह छे. रु. ०-१४-० (दि.)(८१)

१०६६ तत्त्वार्थ हिन्दी भाषान्तर. (रायचंद्र जैनशास्त्रमाला.) सभाष्य तत्त्वार्थाधिगम सूत्र. (३२५, ९५, ३२३)

१०६७ तत्वार्थ टिप्पणकम् अमूल्य. सं. १९८० (११)

१०६८ तत्वार्थ टीका. प्रथमाध्ययन विवरण, यशोविजय. किंमत नथी (११)

१०६९ तत्त्वार्थे सूत्र. रु. ०-१-० (२०१)

१०७० तत्वार्थ परिशिष्ट मूळ अने भाषांतर. रु. ०-६-०

१०७१ (न्यायावतार) तत्वार्थ सूत्र श्री मदानन्दसागरस्र्रि वरैर्दब्धं परिशिष्टं च. भेट. (२५७)

१०७२ तत्वार्थ परिश्चिष्टम् (११, ३२३)

तस्वार्थ]

63

तत्त्वार्था

१०७३ तत्त्वार्थ भाष्य सहित. अंक त्रणमां संपूर्ण. रु. १-९-० १०७४ तत्त्वार्थ राज वार्तिक. अकलंकदेव विरचित. प्रभालाल जैन (दि.) (५०)

१०७५ तत्त्वार्थ राज वार्तिकालंकार प्रथम खंड. भारतीय जैनसि-द्धान्त प्रकाशिनी संस्था. ९ विश्वकोष लेन. बाघवाजार कलकत्ता. पं. गजाधरलालजी न्यायतीर्थद्वारा अनुवा-दित. और. पं. मल्खनलालजी न्यायालंकार वादीभ-केसरी द्वारा संशोधित और परिवर्धित. अकलंक देव विरचित. भाषा टीका सहित. (दि.)

१०७६ तत्त्वार्थ विवरणम् (११)

१०७७ तत्त्वार्थ सूत्र. (५०)

१०७८ तत्त्वार्थ सूत्र. (पंचाध्यायीमयं मथमो विभाग.) (११)

१०७९ तत्त्वार्थ सूत्र. (५०)

१०८० तत्त्रार्थाधिगम. उमास्वाति वाचकवर्षे संदृब्धः 'स्वोपज्ञ भाष्य 'देवगुप्तनी दृत्ति सिद्धसेननी टीका. पंवाध्याय प्रथमो भाग. (११) [(३२५)

१०८१ तत्त्वार्थाधिगम. (रायचंद्र जैनशास्त्रमाला.) रु. २-०-० ., सरृत्ति. (५०)

१०८२ तस्त्रार्थाधिगम. सर्वार्थ सिद्धि वचनीका. (५०)

" परिशिष्ट मूळ अने भाषान्तर हिन्दी.

,, सूत्र (भाषा सार्थ.) एडीटेड बाय. एम. के प्रेमचंद १ थी ३ भाग पूर्ण रु. ०-१२-० दरेक विभागना. (२९)

१०८३ तस्वार्थाधिगम सूत्र. अंक १ लो. रु. ०-७-०

,, ,, रहस्यार्थ साथे. रु. ०-३-० भेट. (३३)

,, ,, ,, सं. १९७२ (३३, ९५, ३२३)

तस्वामृत]

९ ४

ितिलक

१०८४ तत्त्वामृत ग्रंथनुं भाषांतर. रु. ०-२-०

१०८५ तस्वामृत ग्रंथ, ज्योतिर्विजय कृत. सभाषान्तर. सं. १९७६ इ. ०-८-० (३२६, ५२)

१०८६ तन्दलवैयाली पयना (जुओ दश पयन्ना)

१०८७ तन्दुल वैचारिक. (चतुः सरणी) टीकाकार विजयकपल सरि. सं. ग्रंथ नं. ५९. रु. १-८-० (१६)

१०८८ तपकुलकम् (जुओ कुलकसंग्रह १७ वाळो)

१०८९ तपागच्छीय पंचप्रतिक्रमण सूत्र अर्थ साथे. रु. ०-६-० (६)

१०९० तपावली. भा. १ लो तथा २ जो (गु.) भेट.(३२७,३२८)

१०९१ तपावली. रु. ०-६-० (२०७, ५०)

१०९२ तपोरत्न महोदधि.

जेमां तपावली विभाग १-२ अनेक यंथोमांथी तमाम प्रकारना तपना करेलो संग्रह. भक्तिविजयजीकृत. (६)

१०९३ तरंगवती. पादलिप्त. नेमिचंद गणि मु. भा. क. तथा म.

१०९४ तर्क कौम्रदी काशीनाथ पाइंग्ग परव. निर्णय सागर. मुंबइ रु. ०-२-० (७१) जैनेतर

१०९५ तिथि तप माणिक्यमाला. सं. १९७९ त्रीजी आ. स्तवनो अने स्तुतिओनो सम्रुदाय छे. रु. ०-१-० प्र० (५२)

१०९६ तिन चतुर्गासोका दिग्दर्शन. (६८)

१०९७ तिलक मंजरी बुक धनपाल कवि. गद्य काव्य.रु.२-८-०

१०९८ तिलक विलास. मुनि तिलक विजय. सं. १९७२ (३३०)

१०९९ तिलक मंजरी कथा. (पाना) रु. ०-८-० (५०)

,, गुजराती₊ (५०)

,, कथा सार लक्ष्मीधर रचित. रु. ०-८-० (२६, ३३१) तिलक]

९५

तिथे

११०० तिलक मैजरी धनपाल कृत जैन आख्यायिका कादंबरीना जैवो अपूर्व गंथ. गद्य काव्ययुक्त. रु. २-८-० (१०)

११०१ तीन निर्नामा लेखोनो उत्तर. (६८)

११०२ तीर्थ करूप जिन प्रभस्ति बाय. डी. आर. भंडारकर अने केदारनाथ साहित्य भूषण, भा. १ छो (छपाय छे)

११०३ तीर्थ गाइड. शान्ति विजय. रु. ३-०-० [(२९)
,, भा. १ छो. समेत शिखरजीनो प्रवास. रु.
०-४-० (३३२,३३३)

११०४ तीर्थमाला संग्रह.

११०५ तीर्थ यात्रा. हिन्दी. ज्ञान सुंदर. (५०)

११०६ तीर्थंकर चरित्र भूमिका हिंदी. रु. ०-२-० (६)

११०७ तीर्थंकर चरित्र सचित्र चोवीस तीर्थंकरनां. सं. १९७६ रु. २-८-० (८२)

११०८ तीर्थंकर चरित्र. रु. १-०-०

११०९ तीर्थंकर वर्धमाननो समय. (खंड २ जो अंक बीजो) (८३,८८)

१११० तीर्थ तप माणिक्य माला भेट. (५२, ३२६)

११११ तीर्थ माला मुनिचंद्र पाकृत.

,, अम्रुलख रत्न हिन्दी. (२६८, ७१) ह. ०-२-०

१११२ तीर्थयात्रानुं विमान. बुद्धिसागर स्रुरि. आदृति बीजी पृ. ६४ रु. ०-२-० (१५, ५८ थी ६२, १८४)

१११३ तीर्थ यात्रा प्रवास. (समेत्रियवर आदि) (२७०)

१९१४ तीर्थ स्तवनावली. रु, ०-८-० (६)

ित्रिका

तीर्थ] ९६

१११५ तीर्थ क्षेत्र कुलपाक. ले. बालचंद्राचार्य. रु. ०-४-०

१११६ तीर्थ क्षेत्र कुल्पाकनो रीपार्ठ. रु. ०-२-० [(३३४,२०३)

१११७ तीर्थेश्वर महिमा हिन्दी. (५०)

१११८ तेजसार राजानो रास. रु. १-८-० (३३५, ५०)

,, ,, रामचंद्र कृत. रु. १-८-०

१११९ तेतीस बोलका थोकडा मोतीलाल श्रीमाल. रु. ०-१-०

११२० तेरह द्वीप पूजन विधान. (४८१५)(दि.) (३३६) [(४३)

११२१ तेरापंथी विद्याविजय. इ. १९१५ (२७१,१२) रु.०-८-०

११२२ तेरापंथी कृत. देव गुरु धर्मनी ओळखाण. गु. मारवाडी.

११२३ तेरापंथी चर्चापत्र. (५०) [रु. १-०-०

११२४ तेरापंथी नाटक. (७१)

११२५ तेरापंथी मत समीक्षा. ले. मुनि विद्याविजय. म. अभय-चंद भगवानदास. इ. १९१५ उदयपुरमां लखी. रु. ०-४-० (४७)

११२६ तेरापंथी सामायक प्रतिक्रमण अर्थसहित. मागधी,गुजराती.

११२७ तेरापंथी हितशिक्षा. रु. ०-८-०

,, ,, हिन्दी.

११२८ त्रण कागल लखेल ५ मो (नं. ४९, ५०, ५१) (जुओ देवचंद मा. २ वि. १ लो)

११२९ त्रण भाष्य अर्थयुक्त. रु. ०-६-०

११३० त्रण थुइ विरुद्ध सुरतना संघनो ठराव. ठा. संघ सुरत की. नथी. सं. १९५९ (५०)

११३१ त्रण निर्नाम छेखनो उत्तर, छे. म्रुनि ज्ञानसुंदरजी, प. धा. मेघराज चुणोद. (६८)

११३२ त्रिकान्डरोष. पुरुषोत्तम देव मणीत जुओ अभिषान संग्रह. भा. १ को. त्रीभ्र]

९७

ब्रिलोक्य

११३३ त्रिश्चवनदीपक पवंच जयशेखर सूरि. जुनी गुरु. ०-८-० (३३७, १४६, २७१)

११३४ त्रिवैद्य गोष्ठि संस्कृत. रु. १-८-० (१२)

,, ,, (प्रत) रु. ०-८-०

११३५ त्रिपष्टि शलाका पुरुष चरित्र संस्कृत मूळ पर्व पहेलुं. रू. १-८-० (६)

> ,, ,, ,, पूर्व बीजं. रु. ०-१२-० (६) ,, ,, ,, मूळ पर्व ३-४-५-६ रु. २-०-० श्री संभव नाथजी थी मुनि सुत्रत स्वामी सुधीना च-रित्रो. (६)

११३६ त्रि. श. पु. च. पर्व ३-४-५-६ रु. २-४-० (६)

११३७ त्रि. श. पु. च. पर्व ७ मुं मूळ. रु. १-०-० सं. १९६३ जैन रामायण तथा श्री नेमिनाथ चरित्र वगेरे. (६)

११३८ त्रि. श. पु. च. पर्व ८-९ रु. १-१२-० (६)

११३९ त्रि. श. पु. च. पर्व १० रु. १-८-० (६)

११४० त्रि. श. प्र. च. पर्व १ थी ८ (६)

११४१ त्रिस्तुति परामर्श हिन्दी शान्ति विजय.रु. ०-८-० (२७२)

११४२ त्रीजी कोन्फरन्सनो रीपोर्ट, रु. १-०-० (२३५)

११४३ त्रेलोक्य दीपिका श्री संग्रहणी सूत्रार्थ. रु. ०-६-०

११४४ त्रेलोक्य दीपिका समाचारी याने बृहत्संग्रहणी मूळ भाष्य-कार श्रीमिक्जन भद्र गणि क्षमा श्रमण कृत. ५०० गा-थायुक्त. रु. ०-४-० शा. मानचंद वेलचंद गोपीपुरा सुरत. सं. १९७२

११४५ त्रैस्रोक्य दीपिका मूळ अने भाषांतर माणेकग्रुनिजी मागधी हिन्दी. रु. ०-८-०

```
त्रेलोक्य ]
```

96

[दयानेंद

११४६ त्रैलोक्य प्रकाश नाम्नि चैत्यवंदन चोवीशी क्षमाकल्याण विरचित. (इ. १५०) (७, १२)

११४७ त्रकोक्य दीपिका संग्रहणी. रु. ०-४-० (१६, १)

११४८ त्रैलोक्यसार (दि.) नेमिचंद्र सिद्धान्त चक्रवर्ति विरचित. रु. २-४-० (५०)

११४९ त्रैवैद्य गोष्ठी, म्रुनिसुंदरसूरि कृत. सं. १९६६ (२००,

थ.

११५० थुइ सज्झाय संग्रह अथवा पुर्यषणी चैत्यवंदन संग्रह. जिन कृपाचंद्र सूरि कृत. (५०)

११५२ दयाग्रंथ (जुओ छुद्धोपयोग) बुद्धिसागरसूरिकृत. सं० ११५३ दया देवीनो प्रसाद. रु. ०-१-० (१०८) ११५४ दयाधर्म. सं. १९७८ (२०९)

११५५ दयानंद कुतके तिमिर तरणी. छव्धि विजय. रु. ०-६-० ११५६ दयानंद मिथ्यार्थ प्रकाश दिन्दी. (५०) [(२०१)

द्यानंद]

66

िव्य

११५७ दयानंद मुख चपेटीका हिन्दी. इ. १८८२ रू. ०-५-० (२७३, ७१)

११५८ दयानंद अने मूल सिद्धान्त की द्दानि. (२७४)

११५९ दर्पणशतक ले. मुनि माणेक. (१७८, ७१)

११६० दर्शन चोवीशी. (सादी) रु. ०-२-६

११६१ दर्शनशुद्धि टीका (पाना) चंद्रप्रभसूरि कृत, देवप्रभसूरि कृत टीका. (९१८३) रु. ६-०-० (३२)

११६२ दर्शनसार. रु. ०-४-० (दि.)

११६३ त्रापयन्ता. (प्रकीर्णक दशक) बाबुवाला.

ग्रं. नं.

२४ तंदुल बयाली.

२५ देविन्दु स्तव.

२६ गणि विज्ञा.

२७ चउसरण.

२८ संथार.

२९ आउर पचरुखाण.

३० भत्त परिज्ञान.

३१ चंदविज्ञ.

३२ महा पचल्लाण.

३३ मरण विभत्ति संज्ञका.

सं. १९४२ ना पोस मासे. (२४, ५०)

११६४ दश्चवैकालिक सूत्र मूळ कर्ता सय्यंभवसूरि, टीका हरिभद्र-सूरि सं. ग्रन्थ, नं. ४७ रु. २-८-० (१६)

११६५ दश्र श्रावक कुलकम् (जुओ कुलक संग्रह १७ वाळो)

११६६ द्रापनी कथा आद्यंता (५०)

११६७ दश वैकालिक सूत्र अ. ४ प्रकाशक प्रमान हर्षविजयना शिष्य. रु. ०-५-० (२७५)

वशवे]

800

ढशबै

```
११६८ दश वैकालिक मूल कर्ता सय्यंभवसूरि समय सुंदरनी टी-
         का. ( प्रत ) रु. ६-०-० ( ३२ )
```

सूत्र सटीक (बाझ धन, वाळ मोटुं. (२४, 40)

., टीका भाषान्तर भा. १ म्रनिमाणेक. 55

भा. २ ., (१२.६०)

साथे.

,, दीपिका सहित. रु. ४-०-०

देश वकाल्कि सत्र प्र. क. भीमसिंह माणेक निर्णयसागर (98)

दश वैकालिक सत्र बाबु, शय्यंभवोदगार रूपम, गुर्जर भाषा सहितं. अवचरि संवलितं. समय संदरोपाध्याय कृत, दीपिका सनायं, श्री हरिभद्र छुरि कृत, बृहदूत्ति विरा-जितम सं. १९५७ (३४०, ७, ९५) [(२७६) दब वैकालिक समय सुंदरनी टीका, दीपिका नाम्नि,

समयसुंदरी टीका युक्त पाना. (२-०-०)

द्ञ वैकालिक[्] सुत्र भाषान्तर गुजराती, भा. क. पं. केस-रविजयजी रु. ०-८-० (२५)

दश वैकालिक सत्र अर्थ सहित. रु. २-४-० दश वैकालिक सुत्र मुळ हरिसागर जैन. (६८)

,, सय्यंभवसुरि प्रणीतम्.

दश वैकालिक सूत्र अर्थ सहित. (न्हानुं) रु. १-८-७ दन्न वैकालिक मूळ, अर्थ, भावार्थ सहित. रू. २-४-०

(१३५. ३४२)

दश]

१०१

[दान

दश वैकालिक सूत्र टीकानुं भाषान्तर. भा. १-२-३-४ निर्युक्ति, टीका अने भाष्यना आधारे संपूर्ण सरळ भाषान्तर मुनि माणेक. सं. १९७८ भा. २ जो. रु. १-४-० (१२) भा. ३ जो. रु. ०-१२-० (१२) का वैकालिक सूत्र मूळ शब्दार्थ नामा हिन्दी भाषान्तर

दश वैकालिक सूत्र मूळ शब्दार्थ नामा हिन्दी भाषान्तर साथे (छपाय छे) (४७)

(सिरि) दश्च वेआछिअ—सुत्तं. (श्री दश्च वैकाछिक सूत्र मूळ) श्री शय्यंभव सूरि विनिर्मित सं. १९८० (४३)

दश वैकाछिक सूत्र. (हारिभद्री टीकासहित) रु.१०-०-० श्रूट्यंभव सूरि. हत्ति. हरिभद्रसूरिकृत बृहत्. हत्ति. भद्रवाहु विरचित. निर्युक्ति युक्तम्.

११६९ दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाका, १४ अधिवैश्वन (दि.)
सभापतिका व्याख्यान,

११७० दादासाबकी पूजा. रु. ०-१-० (६८)

११७१ दादासाहेब रत्नप्रभस्ति पूजा. (६८)

११७२ दानकल्पद्रुप. (धनाचरित्र) सोमसुंदरसूरि क्षिष्य. जिन-कीर्तिसरि विरचित. सं. १९६८ (१६)

११७३ दान कुलक. (जुओ कुलक संग्रह. १७ वाळो)

११७४ दान छत्तिसा. रु. ०-०-६ (६८)

११७५ दान छत्रीश. रु. ०-४-०

११७६ दान प्रकाश. कनककुशलगणि रु. १-६-० (३२)

११७७ दान प्रदीप. (पाना) चारित्र रत्नगणि उपाध्याय. रचन सं. १४९९ सं. १९७४ पृष्ट २०० शो. चतुरविजय (१७)

११७८ दानवीर मानीकचंद (माणेकचंद) रु. १-८-० (८१)

११७१ दानवीर रत्नपाल. सं. १९६४ रु. ०-८-० (१४३)

दीवा

दान) १०२

११८० दानादि कुलकृत्ति, गद्य पद्य, रू. ६-८-० (३२)

११८२ दानादि कुलकानि. (९०,८४) दानादि कुलकष्टति. लाभकुशलगणि कृत. रु. ६-०-० (३२)

११८२ दिगंबर जैन अने जैन पत्रना आल्बम् (चित्रपाळा)

११८३ दिगंबर जैन ग्रंथकर्ता ओर उनके ग्रन्थ हिन्दी. रु.०-३-० (२७७)

११८४ दिगंबर जैनोनुं प्राचीन साहित्य. (२३३)

११८५ दिग्पट चोरासी बोल. जुओ प्रकरण रत्नाकर, भा. १ लो.

११८६ दिनशुद्धि रत्नशेखरकृत (जुओ आरंभसिद्धि उदयमभदेव सृरि विरचित)

११८७ दिनशुद्धिनी टीका. विश्वप्रभा. कर्ता रत्नशेखर टीका. द-र्शनविजय. सं. १९८० पा. गु. ज्योतिष.

११८८ (दिवाछी भेट) जैन पत्र. (महावीर निर्वाण) आठमा वर्षनी भेट (जैन) (२७८, ४४)

११८९ दिव्य प्योर्तिदर्शन. जैन ध्यानयोगविधि. योजक लास्नन. (गुजराती) (१०९)

११९० दीक्षाकुमारी प्रवास. रु. १-०-० (१४३)

११९१ दीप उत्सवादि संग्रह. रु. ०-२-०

११९२ दीपमालिका व्याख्यान गिर्भत वीर स्तोत्र जिनवल्लभ स्रुरिकृत समयसुंदरोपाध्यायकृत वृत्ति सहित पा सं. रू. ०-८-०

११९३ दीवाळीकरूप संस्कृत (पाना) रू. ०-१२-०

११९४ दीपालिका कल्प, सं. (५०)

११९५ दीवाळीनी पत्रिका. पृष्ट १४ सं. १९७८

११९६ दीवाळीतुं स्तवन लघु (जुओ देवचंद्र भा. २ वि. १)

दीवाळी]

१०३

[देवचंद्र

११९७ दीवाळी स्तवन मूळ तथा भाषान्तर सहित. पद्मविजयकृत (भेट) गुजराती रु. ०-०-६ (६३)

११९८ दीक्षाकुपारी, रु. १-०-०

,, प्रवास भा. १ लो. गुजराती रु. २-०-० ,, भा. २ जो.

११९९ दीक्षाविधि व्रतविधि. (पाना) रु. ०-४-० (१२)

१२०० दुकाळ छपनानां गायन. (२७९)

१२०१ दुनियानो सौथी पाचीन धर्म, भा. १ छो रु. १-४-० सं. १९५९ (३४३)

१२०२ देलवाडा मेवाड, हिन्दी. रु. ०-०-६ (२६१)

१२०३ देवकीजीना षट् प्रुत्रनो रास. तथा मूर्ख मनुष्यना अपल-क्षणनो संग्रह. सं. १९५७ रु. ०-२-० (७)

१२०४ देवकुल पाटक. ले. विजयधर्मसूरि. इ. १९१६ (६७)

१२०५ देवगुरु वंदनमाला, रु. ८-१-० (६८)

१२०६ देवगुरु वंदनादि विधि संग्रह, भेट, (६७)

१२०७ (श्रीमद्) देवचंदजी अने तेमनुं जीवनचरित्र. बुद्धिसागर स्ति. (१५, ५८ थी ६२, १८४)

१२८८ (श्रीमद्) देवचंदजी निर्वाणरास. (जीवनचरित्र) छे. पादराकर. (१५, ५८ थी ६२, १८४)

१२०९ देवचंद्र भा. १ लो. पृ. १०२८ रु. २-०-०

१२१० देवचंद्र भा. २ जो. विभाग १ लो तथा विभाग २ जो. ग्रं. ५३ बुद्धिसागरसूरि ग्रन्थमाला. पृ. १२०० रु. ३-८-० (१५, ५८ थी ६२, १८४)

१२११ देवचंद्रजीकृत चोवीशी. अर्थ सहित. रु. ०-६-०

देवचंद्र]

१०४

दिवभ

१२१२ देवचंद्रजीकृत चोबीशी. कि. अमूर्य. बालावबोध. वीशी-गत चोबीशी तथा ध्यानदीपिका सहित. छपाबी म. कर्ता. (१०३) इ. १९१५

१२१३ देवचंद्रजीकृत स्नात्रपूजा. रु. ०-१-०

१२१४ देवचंद्रजीनी चोवीसी, बालावबोध युक्त. रु. १-८-०

१२१५ देवचंद्रजी कृत कर्मग्रंथ. १-२ विवरण हि० (३९)

१२१६ देवचंद लालभाइ जैन. पु. फंडना रीपोर्ट. सं. १९६४ थी ६८-६९-७०-७१ थी ७७ सुधी. (१)

१२१७ देवद्रव्य. भेट (६)

१२१८ देवद्रव्य निर्णय देवद्रव्यका ज्ञास्त्रार्थ संबंधी पत्रव्यवहार और संक्षपमें देवद्रव्यका साररूप निर्णय ग्रुनि मणि-सागर ग्रुरुय नथी. इन्दोर. (५०)

१२१९ देवद्रव्य संबंधी मारा विचारो पत्रिका न. १-२-३-४ ले. विजयधर्मसूरि. इ. १९२० (४७)

१२२० देवद्रन्यादि सिद्धि, छे. लब्धिविजय हिन्दी. (३४४,९५)

,, ,, भा. २ जो ,, हिन्दी (७०५३)

,, ,, भा. ३ जो ,, ,,

,, भा. ४ यो ,, ., (৩০५४)

१२२१ देवधर्म परीक्षा देवनुं स्वरुप, प्रतिमा पूज्य छे, ते धर्मनुं स्वरुप मूळ सूत्रोथी समर्थन कर्यु छे. संस्कृत यशोवि-जयजी कृत ग्रंथमाळामां बीजे नंबरे छपायो छे. (६)

१२२२ देवपरीक्षा. प्रथम विभाग. रु. ०-०-६ (४८)
१२२३ देवभक्तिमाला देवविजयजो (भेट) सं. १९७६ (२५,१७)
१२२४ देवभक्तिमाला प्रकरण. गुजराती. आचार्य विजयकमल
स्नुरिनुं जीवनवृत्तान्त छे. की. लखी नथी. रु.१-०-०
पंडित देवविजयजीकृत. (केसरविजयवाळा) (१७)

देववं] १०५ [देविन्दु

१२२५ देववंदन चोवीशी भेट देवचंद्रगणि. (सुखसागर) (३४५)

१२२६ देववंदन निर्णय पताका, धनविजयजी कृत (मरुधर साय-लाना संघे प्रसिद्ध कर्यो. अपरनाम जाळस्तवे द्रव्यस्तव कर्तक जैन शास्त्रविरुद्ध पीतांवर नवीनपंथी श्री स्नुरत सं. " अगत्य टराव खंडन '' सं. १९६० (७१)

१२२७ देववंदनपाला. रु. ०-१२-० (६७)

१२२८ देववंदनपाला, (गुजराती) रु.१–४–० शास्त्री. रु.१–०–०

१२२९ देववंदनमाला भेट. ले. राजेन्द्रसूरि ज्ञानपंचम्यादि सं. १९७६ अलभ्य. (३७)

१२३० देववंदनविधि गुजराती दीवाचो फाटी गयो छे. (५०)

१२३१ देववंदन स्तुति स्तवन संग्रह. पृ. ४७० बुद्धिसागरसूरि रु. ०-६-० (१५, ५८ थी ६२, १८४)

१२३२ देववंदनादि भाष्यत्रयम् देवेन्द्रसूरि विरचित, सोमसुंदरसूरि विरचित अवचूरि सहित सं. १९६९ रु. ०-८-०

१२३३ देववंदनादि विधि संग्रह भेट. (६७) [(१७, ५०)

१२३४ देवविनोद पदो तथा ध्यानादि. पं. देवविजय पृ. १५० रु. १-०-० (२५)

१२३५ देवभक्तिमाळा प्रकरण (विजयकमळ सूरिनुं जीवनचरित्र) (आत्मारामजीवाळा निह) की. नथी (३४६)

१२३६ देवसीराइ प्रतिक्रमण रु. ०-३-० गु० (१६) देवसीराइ प्रतिक्रमण सूत्र, पा. हिन्दी, देवसीराइ प्रतिक्रमण सूत्रार्थ रु, ०-४-०

१२३७ देवानंदाभ्युद्य महाकान्यम् महोपाध्याय. मेघविजयगणि विरचित. माघकान्यनी पादपूर्ति छे. सं. १९६९ (१४)

१२३८ देविन्दु स्तवपयन्ना. (जुओ दर्श्नुपयन्ना)

देवेन्द्र]

१०६

[दंडक

१२३९ देवेन्द्र नरेन्द्र प्रकरण, रु. ०-१२-० (१७)

१२४० देशना शतक अर्थ सहित. रु. ०-२-०

१२४१ देशना संग्रह. (५०)

१२४२ देशी नामवाळा. (हेमचंद्राचार्यकृत) િ (१४**३**)

१२४३ देशोन्नतिनो सरल मार्ग. जैनेतर. ०-३-० सं. १९६३

१२४४ देहली शास्त्रार्थ. हिन्दी इश्वरकर्तव्य. तीर्थकर. सर्वेज्ञस्त्र खं-डण विषयक रु. ०-४-० (३४७, ५०)

१२४५ देहस्थिति स्तव (पाना) रु. ०-१-० धर्मघोषसूरि प्रणीत श्री आत्मानंद ग्रंथमाळा. आत्म संवत १६ सं. १९६८ जीवाभिगम सत्रमांथी उद्दृत सर्व जीवोतं जघन्योत्कृष्ट देह प्रमाणनं वर्णन कर्यु छे. प्रवर्तक श्री कान्तिविजय शिष्य चतुरविजय मनिए सुरतमां रहीने शुद्ध कर्यो. प्रा. (अलभ्य) (३४६, १७)

१२४६ दोवकष्टत्ति सं. सह पा. (साधु साध्वीने भेट) रु. ०-६-० (३४८, ३४९, ५०)

१२४७ दोल्रतविलास. (जुओ जैन ग्रन्थरत्नाकर अंग त्रीजो)

१२४८ दंडक (जुओ पकरण छघु संग्रह)

१२४९ दंडक (हिन्दी अर्थ साथे)(३९)

१२५० दंडक प्रकरण गजसार म्रुनिकृत. रुपचंदम्रुनि टीका. सं. १९७२ रु. ०-२-० (२२९)

१२५१ दंडक विचार वृत्ति. (भाषान्तर साथे) (१७)

१२५२ दंडक प्रकरण सटीक पाना गजसार म्रुनिकृत. रु. ०-२-० ., गुजराती को. नथी. (१७, ५०) [(३२)

१२५३ दंडक बालावबोध. (अमदावादनं) रु. ०-६-०

१२५४ दंडक तथा लघु संघयणी, बालावबोध, की, नथी, सं. १९५२ (७. १०)

दंडक]

१०७

द्रव्या

१२५५ दंडकविचार दृत्ति. मूळ तथा अवचृरि, रु.०-८-० (१७)

१२५६ दंडकादिद्वार संग्रह. गु. प्रा. रु. ०-५-०

१२५७ दंडकादिद्वार संग्रह विगेरे. गजसारम्रुनि वगेरे. ४१ द्वार छे रु. ०-५-० (२५७, ९५)

१२५८ दृष्टान्त रत्नावली. गद्य पद्य. रु. १-४-० (३२)

१२५९ दृष्टान्त शतक भाषान्तर कथायुक्त. गुर्जर-भाषान्तर कर्ता छोटालाल नरभेराम भट. रु.०-१०-० (३५०,३५१)

१२६० द्रव्यगुणपर्यायनो रास. (जुओ प्रकरण रत्नाकर भा. १ छो)
द्रव्यगुणपर्यायनो रास. यशोविजयजी उपाध्यायकृत. भावार्थ अने विवेचन समेत. पृ. ३५० रु. ०-८-०
(७४, ३५२)

१२६१ द्रव्य गुणवर्यायनो रास. रु. १-८-०

१२६२ द्रव्यवकाश, र. सं. १७६७ पोस वद १३ बीकानेर चो-मासु सं. १७६६ तुं कर्याबाद (जुओ देवचंद भा. २ वि. १)

१२६३ द्रव्यपदीप प्रवर्तक मंगलविजयजी. सं. १९७७ (१७,४७)

१२६४ द्रव्यलोक (लोक प्रकाशमांथी) पाना रु. ७-८-०

१२६५ द्रव्य सप्ततिका मूळ अने छाया साथे. (५०)

,, ,, अर्थ युक्त लावण्यविजयजी विरचीत. सं. १९५८ मूल टीका तथा वंनेनां भाषान्तर युक्त. कीं. नथी. (६)

१२६६ द्रव्य सित्तरी टीका अर्थ युक्त. रु. ०-६-० १२६७ द्रव्यानुभव रत्नाकर हिन्दी. रु. २-८-० (७७) ,, ,, सचित्र. रु. २-८-० (९)

द्रच्या]

206

[हाश्रय

१२६८ द्रव्यानुयोग तर्कणा चिदानंदकृत भोजकवि विरचित व्या-करणाचार्य पंडित टाकुरमसाद शर्भमणीत हिन्दी भाषा-नुवाद सहित. सं. १९६२ रु. २-०-० (३२५)

१२६९ द्रव्यानुयोग प्रवेशिका द्वितीय ज्ञान सुंदर हिन्दी. रु.

१२७० द्रव्यानुयोग प्रथम प्रवेशिका ज्ञानसुंदरजी हिन्दी. (६८)

१२७१ द्रव्यानुशासन विगेरे. (५०)

१२७२ द्रीपदी स्वयंवरम् शो. म्रुनि जिनविजय प्र. कांतिविजय जैन इतिहास माळा पंचमपुष्प, रु. ०-२-० (१७, ७०)

१२७३ द्रौपदी स्वयंवर नाटक, रु. ०-४-० (१७०)

१२७४ द्वात्रिशक् द्वात्रिशिकान्तर्गत एक विश्वतिका. (जुओ सिद्धः सेन दिवाकर प्रनथमाला)

१२७५ द्वात्रिंशद् द्वात्रिंशिका सटीक (पाना) रु. १-८-० यशो-विजय. सं० (६)

१२७६ द्वात्रिशत् पुत्तिका. (५०)

१२७७ द्वात्रिश्च द्वात्रिशिका. (५०)

१२७८ द्वादशपर्वी कथा प्रति भेट. (३५५)

१२७९ द्वादशपर्वी व्याख्यान क्षमाकल्याण कृत. (५०)

१२८० द्वादशपर्व च्याख्यान रतलाम निवासी शेरसिंह. ह.

१२८१ द्वादशवत पूजा अर्थ युक्त. रु. ०-२-० [०-८-०

१२८२ द्वादशत्रत पूजा संग्रह अर्थ अने दृष्टान्त युक्त. रु. ०-८-०

१२८३ द्वादशानुषेक्षा (पत) रु. ०-८-० [(१६३)

१२८४ द्वाश्रय महाकाव्य संस्कृत पूर्वार्ध. हेमचंद्राचार्य कृत अभय-तिलक गणि विरचितया टीका समेतम् मूळ १ यी १०

दिवप]

१०९

[धनजय

स्रगे. इ. १९१५ रु. ९-०-० (१६८, ३५७, ६२९)
,, ,, भा. २ जो. रु. ९-०-० (१६८, ३५७, ६२९)

,, ,, भाषान्तर मूळ संस्कृत उपरथी. भा. क. मणिळाल नभुभाइ. सं. १९४९ गु. रु. १-८-० (२७)

१२८५ द्विरुप कोश पुरुषोतम देव प्रणीत (जुओ अभिधान संग्रह भा. १ ळो)

१२८६ द्विसंघान महाकान्यम् श्री धनंजय विरचितं बदरीनाय वि-रचितं टीका सहित. रु. १-८-०

ध,

१२८७ धनचंद्र स्र्रिका जीवनचरित्र यतीन्द्र विजय हिन्दी. सं. १२८८ धनदचरित्र गद्य. रु. ०-१२-० (३२) [१९७९ (३७) १२८९ धनपाळ अने देवी कल्याणीनो आत्मोत्सर्ग. बौद्धना समयनी अतिहासिक नवलकथा भाषा हाह्याभाइ हींमतलाल. रावत वहोदरा, (प्र. र. मुं जैनेतर.) (३५८.३५९)

१२९० धनपाल चरित्र. हिन्दी. रु. ०-१-६

१२९१ धनपाळ पंचाशिका (टीका अर्थ युक्त.) अवचृिर तथा अर्थ युक्त मूळ माकृत तेनी गुजराती अनुवाद पण छै. संस्कृत छाया अने टीका. गुजराती अनुवाद पण छै. रु. ०-३-० (६)

१२९२ घनसार अघटकुमार चोपाइ धनविजय उपाध्याय. रु. ०-३-० (३७)

१२९३ घना शालिभद्रनो रास पंडित जिनविजय विरचित सुपात्र-दान विषय. सं. १९६३ रु. १-४-० (७)

१२९४ धनंजय कोष अनुवाद साहत. रु. ०-६-० दि.

```
धिम्मिछ
धन्ना ]
                         330
१२९५ धन्ना चरित्र श्री जिनकीर्ति सूरि विरचित. की. नथी. रु.
                     मतिशेखर कृत. (१) ि०-३-० (६)
       धन्य कथानकम् गद्यबंध. (पाना ) रु. १०-०-० ज्ञान-
         सागर गणि संस्कृत प्रति. २९६ पान.
                        दया वर्धनजी रु. ०-२-० (१)
                 "
१२९६ धन्य चरित्र पूर्वार्घ कर्ता ज्ञानसागरगणि. रु. ४-०-०
          ( १६. १ )
                        उत्तरार्ध
                                           ₹. 8-0-0
         ,, ,,
(१६,१)
१२९७ धन्यक्रपार चरित्र भाषान्तर अंतर्गत बालिभद्र चरित्र भा-
         षान्तर कर्ता रतिलाल गीरधरलाल बी. ए. ज्ञानसागर
         गणि विरचित. रु. २-८-० सं. १९७८ (६, ९५)
१२९८ धर्म रत्नाकरम् सटीक भा. १ लो. वर्धमान सृरि (३२)
                     ु, भा.२ जो₌
१२९९ धम्मिल कथा पाना. ( रतन ४१ ) इह लोकार्य तप प्रभावे
          आ कथा ले. सं. १९७१ ह. ०-२-० (६, १७,६०)
१३०० धम्मिलकुमार चरित्र भा. १ लो. अंचळ गच्छाचार्य जय-
         शेखर सूरि विरचित लालचंद नागजीभाइ शाह. रु.
          0-20-0 ( 306 )
१३०१ धम्मिल कुमारनो रास पंडित श्री वीर विजयजी विरचित.
         ड. १८९६ र. ०-१२-०
१३०२ धम्मिलचरित्र संस्कृत ( पाना ) रु. ३-०-० ( ३२ )
                 भाषान्तर द्वितीयो भाग. ( ३२, १७८ )
          ,,
                        त्रीजो भाग. ( ३२, १७८ )
          *
                        चोयो भाग ( ३२, १७८ )
```

धर्म]

888

िधर्मेप

१३०३ धर्म आहुलाद. रु. ०-४-०

१३०४ धर्म कल्द्वुम (प्रत) मू. कर्ता. उदयधर्मगणि विरचित. दान, शील, तप, भाव उदाइरण सहित (गुं. नं. ४०) सं. १९७३ रु. १-०-० (१, १६)

१३०५ धर्म गीतांजली धर्म नीति ग्रंथावली. (३) रचियता मुनि श्री न्याय विजयजी. अमूल्य. (३६०)

१३०६ धर्म चर्चा संग्रह हिन्दी दिगंबरी. रु. ०-८-०

१३०७ धर्म जीज्ञासु अकबर अने आचार्य हीरविजयसूरिजी. रु. २-८-० (३६१)

१३०८ धर्म तत्व भास्कर याने जैन धर्म संबंधी कायदो अपरनाम धर्म आल्हाद '(दि.)(३६२, ७१)

१३०९ धर्म देशना (धर्मविजयसूरि) सं. १९७४ (१७)

१३१० धर्मना दरवाजाने जोवानी दिशा अथवा तत्वातत्व विचार. श्री आत्मारापजी महाराजकृत. सं. १९६४ रु.०-५-० (३६३)

१३११ धर्मनो दरवाजो जोवानी दिशा रु. ०-८-०

१३१२ धर्म परीक्षा. रु. ०-१२-० (१७) प्रति.

१३१३ धर्म परीक्षा कथा. मूळ कर्ता पद्मसागरगणि. र. सं. १६४५ संस्कृत. (१६) श्वे.

,, ,, पाटण हेमचंद्राचार्य सभा. सं. १९७८ (२६)

,, ,, भा. १ छो भा. २ जो. हिन्दी. अमितगति आचार्य कृत. (दि.) (५०)

१३१४ धर्म परीक्षानो रास अर्थ सहित. रु. २-२-० सं. १९३४ (३६४)

१३१५ धर्म परीक्षा प्रकरण. जिनमंडन गणि उपाध्यायकृत. सं. १९७४ (१७) धर्मम]

११२

धर्मर

- १३१६ धर्म पदीप स्तवनादि मंगलविजयजी (४७, १४)
- १३१७ धर्म बिन्दु प्रकरण मू. क. हरिभद्रसूरि. टी. मुनि चंद्रसूरि. रु. ०-१२-० (२८, १६, १)
- १३१८ धर्म बिन्दु इरिभद्र भा १ लो. अध्याय १-२ चालु. रु. o-१२-० (२९)
- १३१९ धर्म बिन्दु इरिभद्रसूरि विरचित. मुल, टीका अने भाषा-न्तर सहित. सं. १९५१
- १३२० धर्म बिन्दु ग्रन्थ, मूल, टीका अने भाषान्तर साथे. इरि-भद्रसरि विरचित. अलभ्य रु. २–८–० (१७,६३)
- १३२१ धर्मबिन्दु भाषान्तर. रु. २-८-०
 - ा, प. न. दोश्ची. संस्कृत रु. **२**-०-०
- १३२२ धर्म बिंदु प्रकरण. मुनिचंद्राचार्य. कृत दृत्ति युक्त. रु. ०-१२-० (२८)
- १३२३ धर्म बुद्धि (मंत्रि) पापबुद्धि (राजा) नो रास. पंडित उदयरत्नकृत. रु. ०-३-० (१२९, ६३)
- १३२४ धर्म महोदयम्, रत्नविजय विरचित. रु. ०-२-० (१४)
- १३२५ धर्म रत्न प्रकरण सार माणेकम्रुनिजी. हिन्दी कर्ता. (१२,
- १३२६ धर्म रत्न प्रकरण भा. ? लो. रु. २-०-० (१४३) देवे-न्द्रसूरि विरचित.

 - ,, भा ३ जो. रु. १-०-० (१४३) ,, आ त्रणे भाग मूळ अने गुजराती छे.
- १३२७ धर्म रत्न करंटिका. भा १ लो (पाना) रु. ७-८-०

धमें

११३

धर्म

- १३२८ धर्म रत्न प्रकरण, शान्तिसूरि संग्रिक्त, स्वोपइन्न समेत. सं. १९७० (अल्लभ्य) (प्रति) रु. १-०-० (१७)
- १३२९ धर्म रत्न मंजुषा भा. १ छो. (पाना) देवविजयगणि. रु. ४-८-० (३२)
 - धर्म रत्न मंजुषा भा. २ जो (पाना) रु. ६-१२-० देव-विजयगणि. (३२)
 - ,, ,, भा. ३ जो. (पाना) रु.६-१२-० ,, (३२)
- १३३० धर्म लावणी. चम्पारामकृत. सं. १९६१ रु. ०-६-० हि. (३६६, २८३, १८४)
- १३३१ धर्म विलास. संस्कृत कथाओ. मतिनंदजी वाचनाचार्य. रु. १-०-० (३२)
- १३३२ धर्मविजयजी जीवनदृत्तांत. हे. मृनि विद्याविजय. (३६७, ४७, ५०)
- १३३३ (श्रीमान) धर्मवि नयजीना विचारोनी समीक्षा. ले. राम-विनय. (३६८)
- १३३४ धर्मविलास श्री मितनं जी रु. १-०-० (३२.५०)
- १३३५ धर्मवीर कुमारपाळ सं. १९७९ रु. १-४-० (३६९)
- १३३६ धर्मशर्माभ्युदय. काव्य सस्कृत. महाकवि श्री हरिचन्द्र विरचितम् रु. १-०-० (१०)
- १३३७ धर्मशिक्षा. न्यायविजयजी हिन्दी. रु. १-०-० (४७) सं. १९७१
- १३३८ धर्मसंग्रह पूर्वाघे मूळकर्ता मानविजय उपाध्याय रु.१-०-० सं. (१६)
 - ,, उत्तरभाग ,, ,, ,, रु. १०४-० र, सं. १७३१ (सं. ग्रं. नं. ४५) (१६) १५

धर्म] ११४ [धर्म

१३३९ धर्मसंग्रह श्रावकाचार (भाषातुवाद) रु. २-८-० भा. खदयलाल काशलीवाल केटारा (७१)

१३४० धर्म संग्रहणी भा. १ लो. मूलकर्ता हरिभद्रसूरि. टी. मल-यगिरि आचार्य (सं. ग्रं. नं. २९) रु. १-८-० (१६) ,, ,, भा. २ जो. मूलकर्ता. हरिभद्रसूरि. टी. मलय-गिरि आचार्थ. (नं. ४२) रु. १-४-० (१६)

१३४१ धर्मसभानुं धर्तिग.

१३४२ धर्म सर्वस्वाधिकार अने वस्त्री प्रकरण अर्थ सहित. र-त्नशेखरसूरिजी अने हेमिविजयर्गाण रु. ०-८-० रु.

१३४३ धर्मिस्डिजी अने धर्मदासजी ले. हर्षचंद्रजी दरियापुरी संप्र-दाय. (दुढीयांजु) अमृत्य. (प्र. ३७०)

१३४४ धर्मसंग्रह. भा. १ लो. मानविजयमणि विरचित. सं. १९६१ (१४२, १४३, ५०)

१३४५ धर्मसंग्रह. उत्तरभाग यशोविजयजी महोपाध्याय. (१०,२२)

६ धर्म संग्रहणीं. भा. १ लो (५०)

,, भा. २ जो (५०)

१३४७ धर्म संग्रह भा. ? छो भाषान्तर सहित. रु. १-०-०

१३४८ धर्म संग्रहणी. पूर्वि रु. १-८-० हरिभद्रकृत, मलयिः रिनी टीका (१६)

,, उत्तरार्ध रु. १-४-० ,, ,, (१६)

धर्मा]

११५

| झ्पद

१३४९ धर्माभ्युदय नाटक. मेघप्रभाचार्य विरचित. सं. १९७४ र. ०-४-० (१७)

१३५० धर्मामृत रसायन. ट्रे. नं. ७

१३५१ धातुप्रतिमा लेखसंग्रह. भा. १ छो. इदिसागरसूरि. रु. १-०-० (१५, ५८ थी ६२, १८४)

,, ,, भा. २ जो. ,,

१३५२ धातु रुपावली. (१०, ५०)

१३५३ घातु संग्रह विवेचन. गुजराती. (५०)

१३५४ धार्मिक गद्य संग्रह तथा सदुपदेश. भा. १ लो बुद्धिसागर सृरि. पृ. ९७६ रु.३-०-० (१५,५८ थी ६२,१८४)

१३५५ धूर्ताख्यान. रु. ०-३-०

१३५६ धूर्ताख्यान. गुजराती भाषामां शुद्ध करी **ग्रंबइ मध्ये ग्रंय-**सागर पेसमां छाप्यो. किंमत छखेळी नथी (७१)

१३५७ ध्यान छत्रीसी. (जुओ, क्षमाकुलकादि संग्रह)

१३५८ ध्यान दीपिका. पं. केसरविजय. (ध्यान स्वरुप) रु. १-४-० (२५)

१३५९ ,, ,, चतुष्पदी. र. सं. १७६६ वैशाखवद १३ ग्रुलतान पंजाब (जुओ देवचंद्र भा. २ वि. १)

१३६० ध्यानविचार. (ध्याननुं स्वरुप.) भेट. (१७)

१३६१ ध्यानविलास. (हुकमग्रुनि)

१३६१ अ. ध्यान स्वरुप अध्यात्मगीता सं. आत्मसमावि वतक. सं. बुद्धिसागरसूरि. (१५, ५८ थी ६२, १८४)

१३६२ ध्यानानंद कुतर्क तिमिर तरणी. र. •-६-०

१३६३ ध्रुपद स्तवन जुओ. (देवचंद्र भा. २ वि. १)

नंदी]

११६

[नयचंक्र

न.

?३६४ नंदी सूत्र मूल पाठ देवऋदिगणि क्षमाश्रमण प्रणीत. (६८) १३६५ नंदी सूत्र, तदुपरि मलयगिरि कृत. टीका-तदुपरि भाषा बालाववोय, समेत सं. ५९३६ वाबू धन, (२४)

१३६६ नमस्कार महात्म्य सिन्दसेनस्ररि. (३२, २२)

१३६७ नमस्कार महात्म्यम् अने योगपदीप सिद्धसेनसृरिः(३२,५०)

१३६८ निमनाथ चरित्र. (त्रि. ष. पु. चरित्रना छेल्ला भागमां छाप्युं छे. अगीआरमा सर्गमां) संस्कृत हेमचंद्राचार्थ प्रणीत (६, १०)

१३६९ नमोकारने करेमिभंते. सं. १९७९ (२६, ६३, ३७२)

१३७० नयकणिका. मूल संस्कृत कर्ता विनयित्रजयजी भाषान्तर विवेचन कर्ता फतेचंद क. लालन अने मोहनलाल द. देशाइ. मूळ कर्ता विक्रम अहारमी सदीनो पूर्वार्ध सं. गु. (नय-एटले दृष्टिबिन्दुनुं सामान्य ज्ञान) मेघजी हीरजी तथा भारत जैन विद्यालय. फग्युसन रोड पुना. (१०९. १०४) रु. ६-६-०

१३७१ नयकणिका. Naya Karnika मूलनुं अंग्रेजीमां भाषान्तर तथा विवेचन कर्ता. मोहनलाल द. देशाइ इ. १९१५-१६ सं. अंग्रेजी धी सेन्ट्रल पब्लीसींगहाउस. आरा. जैन गेझेट ओफीस मदास.

१३७२ नयचक (जुओ देवचंद्र भा. २ वि. १ छो) १३७३ नयचक सार. देवचंद्रजी कृत (जुओ प्रकरण रत्नाकर भा. १ छो)

नयप्र]

११७

निर्मदा

- १३७४ नयप्रकाशस्तव हत्ति (पाना) पद्मसागरगणिकृत. रु. ०-३-० (३७, ६३, २६, ५०)
- १३७५ नयप्रकाञ्चकस्तव द्यति. पद्मसागरगणिकृत. रु. ०-६-० (३७२,६३,२६)
- १३७६ नयप्रदीप. सप्तभंगी समर्थन करी स्याद्वाद श्री वस्तु छे. ते अने द्रव्यार्थिकना दश मुद्दा जणाव्या छे. सं. १६६५ (१४, ६, १०)
 - ,, (जुओ यशोविजयजी ग्रन्थमाळा. (सभा))
- १३७७ नयमार्ग दर्शक. (सात नयतुं स्वरूप) भेट. (१७)
- १३७८ नयरहस्य. नयोनुं अन्योन्य विरोधपणुं नथी ए बात बहु दृष्टान्तो अने हेतु युक्तिथी सारी रीते समजाबी छे. सं. १९६५ (१४, ६, १०)
- १३७९ नयरहस्य. (यशोविजयजी ग्रन्थमाला. (सभा)
- १३८० नयोपदेश सावचूरि. सं. १९६५ संस्कृत, द्रव्यार्थिक अने पर्यायार्थिक नयनुं स्वरुप बतावी सर्व नयनो सिद्धान्त बताव्यो छे. स्वोपज्ञ टीकायुतम् (१४, ६, १०, ३७३, ३७४) नं. (६)
- १३८१ नयोपदेश. सावचूरि (जुओ यशोविजयजी ग्रन्थमाळा सभा)
- १३८२ नरनारायणानंद महाकाव्यम् श्री वस्तुपाल विरचित(१३८)
- १३८३ नरभव द्रष्टान्तोपनयमाला. नयविमलगणि (ज्ञानविमलसूरि) कृत रु. १-०-० (७३. ५०, ३७५)
- १३८४ नरचंद्र जैनज्योतिष. भा. १-२ प्र. (३७६) रु. १-४-०
- १३८५ नरमेघयज्ञमीमांसा समालोचना हिन्दी.
- १३८६ नरवर्मा चरित्र. (पाना) रु. १-०-० (३२, ५०)
- १३८७ नर्मदासुंदरी शीलमहात्म्योपरि (वसुदेव हिंडीमांथी उध्युत) (५२)

नळद्]

288

नवतत्वं

- ,, कथा. (पाना) रु. ०-४-० गु. (५०)
- ,, सती शिरोमणी. गु. रु. ०-२-० (३७७, ३७८, ५०)
- ,, नो रास. पंडित मोहनविजय विरचित. रु. ०-१२-० (७, ५०)
- १३८८ नळदमयंती नाटक. डीबाचो फाटी गयो छे. (७१)
- १३८९ नळद्मयंती उपाख्यान. विनयचंद्रसूरि विरचित. अपरनाम महासत्या दवदन्त्याश्वरितम् (३८०, ३७९, ५०)
- १३९० नवओळीनी विधि. तथा सिद्धाचलनो रास. विगेरे. रु. ०-४-० (३८१,३८२,७१)
- १३९१ नवकार महातम्य ध्यान. प्रदीप. (पाना) रु. ०-१२-०
- १३९२ नवकार मंत्र संग्रह. रु. ०-२-०
- १३९३ नवकार मंत्रनी चमत्कारिक कथा विगेरे (३८३)
- १३९४ नवग्रह ज्ञान्तिनुं हिन्दी भाषान्तर. रु. ०-१-६ (२०१)
- १३९५ नवतस्व (जुओ प्रकरण लघु संग्रह)
- १३९६ नवतस्व प्रकरणः देव गुप्ताचार्य प्रणीतः मूः पा, टीः सं. अभयदेवसूरिनी अलभ्यः रु. ०-१२-० सं. १९७० (१७. १२)
- १३९७ नवतत्व गायाओना छुटा भन्दोना अर्थ सहित. तथा छुटा बोछ सहित. रु. ०-८-० (१८१)
- १३९८ नवतत्त्वना प्रश्लोत्तर रु, २-०-०
- १३९९ नवतस्वनो सुंदर बोध. अत्रचूरि सहित. भाषांतर साथे. रु. १-०-० (१७)
- १४०० नवतत्त्व बाळावबोध. रु. ०-१२-०
- १४०१ नवतत्व भाष्य. (१७)

नवतत्व]

११९

निवस्म

- १४०२ नवतत्त्व सविस्तरार्थ. (विजयनेपिसूरि) यन्य परिशिष्ट. टिप्पण्यादि विभूषितः रु. ४-०-० (३८५, ३८६, ११, ९५)
- १४०३ नवतत्त्व साहित्यसँग्रहः भाः १-२-३-४ उदयविजयसूरि नेमिसूरि शिष्यः पांच जातनां नवतत्त्व छे. सं. प्रा. गुर्जर भाषारुप सानुवादः (११,३८५,२८६)

१४०४ नवतस्य स्वरुप, रु. ०-४-०

१४०५ नवतत्त्व सभाष्यवृत्ति. (५०)

१४०६ नवतत्त्व संक्षिप्तसार. गु. रु. ०-२-० (१७, ३२६, ५०)

१४०७ नवतत्त्व हिन्दी भाषान्तर साथे. (२२८. ७१)

१४०८ नवपद पूजादि संग्रह. हिन्दी. (प्र.) डा. गांधी कोदरलाल छगनलाल ग्रु.वेजलपुर, जिल्ला पंचमहाल. स्टे.खरसालीआ.

१४०९ नवपद ओळीनी विधि, रु. ०-१-०

१४१० नवपद ओळीनी विधि. बालावबोध. सं. १९६२ रु. ०-४-० (५०, ३८८)

१४११ नवपद पूजा जलाळा (जुओ देवचंद भा. २ वि. १)

१४१२ नवपद पूनादि संग्रह, रु. ०-१२-० (५०)

,, ,, संपादक मनसुखलाल हरीलास्त (पंचम-हाल) सं. १९६४ बाळबोध टाइप (कींमत नथी) (३९०)

१४१३ नवपद महात्म्य. वीसस्थानक आदि तपगुण वर्णन. यो-जक मुनि कर्पूरविजयजी गु. रु. ०-३-० (१६३)

१४१४ नवस्मरण अने गौतमरास. हिन्दी भाषान्तर. सं. १९७९ रु. ०-३-० (१६,१)

१४१५ नवस्मरण अने तत्त्वार्थसूत्र. रु. ०-४-६ (१६,१)

नवस्म]

920

नाभाक

१४१६ नवस्परण. बालबोध ळीपीमां छापेला. सं. १९७९ (३९१) ,, गुजराती. (५०) शिला पेसमां. सं. १९४१ ग्रंबइमां छाप्यं छे. जगदीश्वर ग्रुदालयमां

१४१७ नवस्परण मूल, रु. ०-४-०

,, ,, (गुजराती) रु. ०-२-० ., (हीराचंदवाछं) रु. ०-२-६ (१८९)

१४१८ नवस्मरण गौतम रास. रु. ०-३-० (१६,१)

१४१९ नवाणु प्रकारी तथा नवपदजीनी पूजा. रु. ०-२-०

१४२० नवाणु प्रकारी पूजा साथे. रु. ०-८-० झवेरभाइ भाइचं-दनी जीवनरेखा सहित. (१७)

१४२१ नवाणु यात्रानो अनुभव, योजक कुंवरजी आणंदर्जा अमूरय (६)

१४२२ (नवानगर) आदि जिन स्तवन (जुओ देवचंद भा २ वि १)

१४२३ नवीन जैन गरबावली. रु. ०-४-०

१४२४ नवीन पंथ दिगृइर्शन उपदेश पद. रु. ०-०-३ (१७१)

१४२५ नळदमयंती आख्यान. सं. (१६)

१४२६ नळः मयंती चरित्र. रु. ०-३-० (६)

१४२७ नळदमयंती रास (जुओ आनंद काव्य महोदिध मी. ३र्जु)

,, ,, नयसुंदर कृत (जुओ आनंद कान्य म-होद्धि मी. ६ छं)

१४२८ नाकोडा पार्श्वनाथ भेट यतीन्द्रविजय सं. १९७१ अलभ्य. (३७)

१४२९ न गपुरीय तपागच्छनी पद्दावली. (१८३, ३९२)

१४३० नाभाक राजचिरित्र मेस्तुंग सुरि. भाषान्तर, रु. ०-५-० (३२)

```
िनित्य
                       १२१
नामपाछा 🕽
                 " (पाना) रु. ०-६-० (६)
१४३१ नाममाला कोष. (१. १६)
१४३२ नामिक्वंगानुशासनम् अमरसिंह कृत ( जुओ अभिघान सं-
          ग्रह. ) भा. ?
१४३३ नामाविल हिन्दी दिगंबरोना पुस्तकोतुं कीस्ट साकवार
          भाषा ग्रंथोतं छे. रु. ०-१-० ( ३९३ ) सं. १९०१
१४३४ नारकीना चित्रो ( मोटी ) रु. ०-१२-० ( ६, ५० )
                 .. (न्हानी) रु. ०-८-० (६)
                 ,, (न्हानी) रु, ०-५-० (६)
१४३५ नारचंद्र जैन ज्योतिष मा. १-२ रु. १-४-०
१४३६ निगोद छत्रिशि. ( २८, १६ )
                 ,, बालावबोध सहित. (जुओ प्रकरण र-
         त्नाकर भा. ३ जो )
                 ,, ( जुओ पकरण पुष्पमाळा पुष्प बीजुं )
१४३७ निगोद पट्त्रिशिका रत्नसिंहसूरि विरचित द्वति सहित.
         ( १७, १० )
                ,, (र्कि. नथी) (२२९)
१४३८ निगोद बंध षट्त्रिशिका. ( ५० )
१४३९ निघंट शेष ( जुओ अभिधान संग्रह भा. २ )
१४४० नित्य नियमनी पोथी रु. ०-२-०
१४४१ नित्य भावना भाववातुं पुस्तक. रु. ०-१-०
१४४२ नित्य स्मरण पाठमाला ( द्वितियादृत्ति ) अमृत्य. ( ७७ )
१४४३ नित्य स्मरण पाठमाला ( की. नथी ) ( ३९५, ३९६ )
       १ नवकार मंत्रम
                            ७ उवसमाहर स्मरणम्
      २ बृहद् जिन्ञांति स्मरणम् ८ भक्तामर
         १६
```

नित्य 1

१२२

निरा

३ निषऊण स्मरणम् ९ बृहद्श ित ४ गणधर देवस्तुति स्मरणम् १० जिन पिजर स्तोत्रम् ५ गुरुवारतन्त्रयस्मरणम् १२ श्रीगोडीवार्श्व जिनबृहद् स्तवनम् ६ सिम्घमबहरउ स्मरणम् १२ श्री गौतम स्वामीजी रास

१४४४ नित्य स्मरण स्तोत्र संग्रह. भेट. (१८१, ५०)

१४४५ निन्यानवे प्रकारी पूजा. रु. ०-४-० (२०१)

१४४६ निन्यानवे (९९) प्रकारी प्रजा. रु. ०-३-०

१४४७ निवंध संग्रह. रु. ०-६-०

१४४८ निरयावलिका सूत्रम् चंद्रसूरि शिरवित दृत्ति युक्त. (२८)

१४४९ निरयावल्धि भाषान्तर. (बाबु) (२४, ५०)

,, ,, १० पयना वाबुवाळ, (२४, ५०)

१४५० निर्यावलिका सूत्रम् (९४, २८, १६, १)

१४५१ निरस्त तमोनिधि हिन्दी. रु. ०-४-० सं. १९३१ सेता-बचंद (३६६,१०४)

१४५२ निर्भय भीम व्यायोग. रु. ०-४-० (१४)

१४५३ निराकरण निर्णय हिन्दी. ले. यति बालचंदजी (आमां दिगंबर श्रावक तात्या नेनिनाथ पांगल के असत्य आ-क्षेपो के उत्तर) रु. ०-२-० (२०३, ३९७)

१४५४ निर्भय भीम व्यायोग. रु. ०-२-६

,, ,, (संस्कृत) श्री राषचंद्रसूरि विरचित. रु. ०-४-० (१४)

१४५५ निराकरण निर्णयम् ले. यति बालचंदजी दिगंबरोने जवाब रु. ०-२-० (३९९, ४००)

१४५६ निराकरण निर्णय. श्वेतांवरोनुं प्राचीतत्व सप्रपाण सिद्ध कर्युं छे. हिन्दी रु. ०-२-० (२०३)

निर्या िनेपना 323 १४५७ निर्यावली सूत्र. सटीक टीकाकार श्रीचंद्रसूरि सं. १९७८ **रु. ०-१२-० (२८)** १४५८ नीतिदर्पण. रु. ०-४-० (५२) १४५९ (स्त्री.) नीतिपाठ अ. सौ. मणि. मीसीस वर्धमान स्वरु-पचंद गु. (४०२, ३२३, ५०) १४६० (स्त्री) नीति विचार माला गु. (५०) १४६१ नीतिइपेण, रु, २-०-० (४०३) १४६२ नीतिमय जीवन छे. पं. केसरविजयजी ह. ०-८-० ., अने गृहस्थ धर्म रु. ०-६-० (२५) १४६३ नीतिवाक्य वचनामृत. पं. केसरविजय. रु. ०-६-० १४६४ नीति वाक्यामृत. सं. रु. १-०-० (24) १४६५ नीति वाक्यामृत. भाषान्तर. रु. ०-६-० १४६६ नीति ,, सटीक सोमदेवसूरि माणेकचंद २२ (दि.) १४६७ नीति शिक्षण. ि(८१) १४६८ नीति सार. ग्र. (५०) १४६९ नीति विचार रत्नमाला. (४०४, ४०५) १४७० नृतन स्तोत्र संग्रह. पाकृत, संस्कृत. (४०६, ५०) १४७१ नेमिनाथ चरित्र. रु २-०-० १४७२ नेमनाथजीना चंद्रावळा. रु. ०-२-० १४७३ नेमनाथजीनो विवाहस्रो, रु. ०-२-० १४७४ नेपनाथना श्लोको. (जुओ श्लोकासंग्रह शास्त्री) १४७५ नेमिनाथनी रसवेल . नं. ३३२७ विजापुर ज्ञानभंडार, उ-त्तपविजय खुशालविजय यतिकृत. प्र. अमृतविजय रतन

विजय यति (अलभ्य) (४०७) १४७६ नेमिनाथ महाकान्य. कीर्तिराजोपाध्याय. (१४, २२) १४७७ नेमनाथर्जुं चरित्र. इ. ०-२-६

नेमनाय

828

नंदी

- १४७८ नेमनाथ राजेमति चरित्र. ह. १-०-०
- १४७९ नेमिनाय चरित्र गद्यवंत्र. (पाना रु. ६-०-०
- १४८० नेमि निर्वाण वंगेरे वाग्यह. र १०)
- १४८१ नेमि निर्वाण काव्य संस्कृत महाकृति श्री वाग्भट विरचित संस्कृत महाकृत्व्य. रु. १-०-० (६, १०)
- १४८२ नेमिनाथ महाकाव्यम् श्री कीर्ति राजोपाध्याय विरचित. विद्या विजय भी. मे. भावनगर सं. १९७० रु. ०-१२-० (१४)
- १४८ ₹ नेमिसागरजीनुं जीवनचरित्र. (जुओ सुखसागर गुरु गीता)
- १४८४ नेपीश्वर भगवानना बसो पंचाणु चंद्रावला ग्रुनि लब्धि वि-जय विरचित. (४०८)
- १४८५ नैषघीय चरित्र चर्चा हिन्दी लेखक महाबीर प्रसाद द्विवेदी. रु. ०-८-० (४०९)
- १४८६ नैषधीय चरितं श्री हर्ष रचितम् श्रीमन्नारायण रचिता. नैषधीया प्रकाशाख्यया. जैनेतर. व्याख्या युक्त. रु. ५-०-० (१०,५०)
- १४८७ नंदिसत्र मूळ टीका; अर्थ युक्त. भाषान्तर देववाचकगणि.
- १४८८ नंदिसूत्र बालावबोध. (५०)
 - ,, ,, बाबुवाळुं. (२४)
- १४८९ नंदीसूत्र मूल. देववाचक गणि. टीकाकार. मलयगिरि. (२८, १६)
- १४९० नैदीसूत्रम् मलयगिरि कृतं विवरणः रु. २-८-० (१६, २८)
- १४९१ नंदीसूत्र मुखपाटः (६८)

न्याय] १२५ [न्याय

१४९२ न्यायक्कस्रमांजलिः कर्ता न्यायविजयः महावीर पूजाः अपरनामः सं. १९७० रु. ०-४-० (१४, १०)

१४९३ न्याय खंड खाद्य. (पाना) रु. १०-०-०

,, ,, महावीर स्तवन प्रकरणम् (११)

१४९४ न्यायतीर्थ प्रकरण, (संस्कृत) न्यायविजय, (धर्म विजय,) न्यायग्रंथ, सं. १९६९ रु. ०-४-० (४१०, १०)

१४९५ न्यायदीपिका. संस्कृत. (न्यायग्रंथ) धर्म भूगणयति विर-चित. (दि.) रु. ०-१२-० (४११)

,, ,, भाषा टीका हिन्दी ४२०९ (दि.) (४१२, ५०)

,, ,, विगेरे. दि. (५०)

१४९६ न्यायालोक. (११)

१४९७ न्यायरत्नजीकी वे इन्साफी हिन्दी. (४१३, ५०)

१४९८ न्यायरत्नदर्पण ग्रुफत. शान्तित्रिजय. (टाणा)

१४९९ न्यायशिक्षा. न्यायविजयजी न्यायतीर्थ. रु. ०-४-० (१४,७१)

१५०० न्यायसार. सर्वेज्ञ प्रणीत. जयसिंहसूरि विरचित. न्याय तात्पर्ये दीपिका नामनी टीका सहित. महोपाध्याय. सतीशचंद्र विद्याभूषणेन परिशोधितः (२९, ५०)

१५०१ न्यायसिधु पकरण. विजयनेषिसूरीश्वर प्रणीत. अमृत्य. (११)

१५०२ न्यायसंग्रहः सटीकम् हेमहंसगणि संग्रहीतः रु. ३-०-०

१५०३ न्यायसंग्रह. (न्यायार्थ मंजूषा) रु. ३-०-० प्र. हर्षचंद श्रुराभाइ (मर्हुम) श्री हेमहंस गणि संग्रहीत. (७१)

१५०४ स्याय संदर्भित. आत्महित श्रिक्षा याने बोग्यता दर्शक रू.

म्यायार्थ]

१२६

EP

१-०-० रचनार तथा योजक कर्पूर विजयजी सं. १९६१ (४१४)

१५०५ न्यायार्थ मंजूषा. स्वोपन्न लघुन्यास हिता. रु. ३-०-० (६,१४)

१५०६ न्यायाल्लोक. यशोविजयगणि विरचितः कीः नथीः (११) १५०७ न्यायाल्लोकः रु. ८-०-० (३८५,३८६,५०,११) १५०८ न्यायाल्लोक संस्कृत (पानाः) रु. २-०-० यशोविजयगणिः १५०९ न्यायावतारः (पाना) वादि सिद्धसेनदिवाकर प्रणीतः राजशेखरस्रुरिविरचित टिप्पन सहितः टीका अने टिप्पन

सहित. पाटण (२६)

,, (६)

१५१० न्यायावतार मूल. (जुओ सिद्धसेनदिवाकर ग्रन्थमाला) १५११ न्यायावतार तत्त्वार्थ सूत्रम् परिशिष्ट. (२५७, ५०)

ч.

१५१२ पडम चरियम् मागधी (पाना) राहुस्र्रि प्रशिष्य विमल-स्र्रि विरचितं पद्य (राम) चरितम्, रु. २-८-० जर्मनी देशीय. बोन, पुरवासी मो, हमन जेकोबीत्यनेन संशोधितम्, (६, ५०)

१५१३ पक्वाम व्यंजन संग्रह. गु. (५०) [०-६-०
१५१४ पब्स्वीसूत्र टीका. (पाना) यशोदेवसूरिकृत टीका. रु.
१५१५ पचीस वोलका थोकडा. भेट. हिन्दी मारवाडी. (४३)
१५१६ पचीस वोलनो थोकडो. रु. ०-०-६ (६)
१५१७ पंचेन्द्रिय विषय त्याग पद (जुओ देवचंद्र भा. २ वि. १)
१५१८ पत्र परीक्षा वगेरे संस्कृत. आप्त परीक्षा. (दि.) रु.
१-०-० (४१५, ५०)

पंत्र ी

१२७

परमात्म

१५१९ पत्र सदुपदेश. भा. २ जो. बुद्धिपागर स्रुरि. (१५, ५८

१५२० पदसंग्रह. रु. ०-८-० [थी ६२, १८४) रु. १-८-०

१५२२ पदसंग्रह. हुकम म्रुनि. (२१)

१५२२ पदार्थी के गुण. व. स्वभाव. (५०)

१५२३ पद्म चरित्र. शुभवर्धनगणि. (३२, २२)

१५२४ पद्म पुराण समीक्षा. (दि.) (५०)

१५२५ पन्नवणा सूत्र पूर्वार्ध. सटीक. (प्रत) रु. १-८-०

१५२६ पन्नवणा सूत्र मूळ टीका अर्थ युक्त.

१५२७ पयन्ना संग्रह. भा. १ लो. ह. ०-३-० (१२)

१५२८ पयन्ना. (६)

१५२९ पयन्ना संग्रह. गुजराती भाषान्तर साथे. (७१)

१५३० परदेशी रजानो रास. रु. ०-४-० (६)

१५३१ लघु हेमभभा व्याकरण. भेट. (११) [पुल्प)

१५३२ परमाणु खंड छत्रिक्षि. (जुओ प्रकरण पुष्पमाला. बीजुं १५३३ परमाणु छत्रिक्षि. (२८, १६)

१५२५ परमाणु छ।त्रासः (५८, १५) १७२० वसामा संद वर विकास स

१५३४ परमाणु खंड षट् त्रिशिका. पुद्गल षट्भिशिका. अने निगोद षट्त्रिशिका सटीक. रत्नसिंहमूरिविरचित. दृति सहित. मू. मा. रु. ०-३-० (१७, १०)

१५३५ परमज्योति पंचविश्वति. अध्यात्म उपनिषद् रुपे. यशोवि-जयउपाध्याय विरचिते अनुवादक. माणेकलाल घेला-भाइ. रु. ०-८-० (६०)

१५३६ परमाण पुद्गळ निगोद षट् त्रिशिका. रु. ०-३-० (१७)

१५३७ परमात्मज्योति, परमात्म पंच विश्वतिका. सं. तथा गु. मां. बुद्धिसागर सूरि, रु. ०-१२-० (१५, ५८ थी ६२, १८४) परमात्म]

१२८

परिश्विष्ट

१५२८ परमात्मदर्शन. ज्ञान अने क्रिया बंने जोडबंध सबंध बडें परमात्म दश्चेनतुं स्वरूप. बुद्धिसागर सुरि. सं. १९६६ रु. ०-१२-० (१५, ५८ थी ६२, १८४)

१५३९ परमात्म प्रकाश योगीन्द्र देव. रु. ३--०-० शा. ग्रुंबइ.

१५४० परमानंद पत्तीसी. भेट. (४१६)

१५४१ परमार्थसारकाव्य सविवरणं सं. (५०)

१५४२ परलोक मकाश. रु. ०-६-० (६)

१५४३ परलोक प्रकाशः गुजरातीः मूळ लेखिकाः स्वः ब्हेनः न-वल्रवादः पोपटलाल केवलचंदः, विस्तारयी लखनारः पोपटलाल केवलचंदः (५०)

१५४४ परागशन्दाष्टोत्तर शतार्थ निवद्धं साधारण जिन स्तवन वि-विषद्य बद्धम् (जुओ प्रकरण रन्नाकर् भा. ४)

१५४५ परिणाम माळा. (उपमिति भव प्रयंचा कथात् उद्धृता) (प्रभावना माटे) (४१९)

१५४६ परिमाण मंजरी. अथवा काष्ट माप संग्रह. रु. १-४-० १५४७ परिशिष्ट पर्वे. रु. २-०-०

> ,, ,, भा. १ लो. हिन्दी. तिलक विजयजी सं. १९७३ (४२)

,, ,, મા.રજો. ,, ,,(૪૨)

१५४८ परिशिष्ट पर्व इंग्लीश अथवा स्थविरावली. त्रि. श्र. पु. च-रित्रनी एपन्डेक्षीस साथे हेमचंद्राचार्य. प्र. हर्मन जेको-बी. सं. १८९१ (४२१)

१५४९ परिज्ञिष्ठ पर्व (अर्थात् इतिहासिक पुस्तक भा. १ लो. रू. १-०-० तेर सर्गतुं भाषान्तर छे. (६) १५५० परिश्विष्ठ पर्व भाषान्तर भा. २ जो. रू. १-०-० (६) परिशिष्ट] १२९ [पर्युषण

१५५१ परिशिष्ट पर्व मूळ. (पाना) हेमचैद्राचार्य कृत. रू. १-०-० (६)

१५५२ परिशिष्ट पर्वे मूळ. (संस्कृत) रु. २-०-० (६)

१५५३ परिशिष्ट पर्व भा. १-२ जो कर्ता हेमचंद्राचार्य वस्कल-चीरा, मसन्तचंद्र राजिष विगेरे महान पुरुषोना जीवन चरित्र.) हिन्दी. रु. १-४-० (८८, २६१)

१५५४ परिश्विष्ट पर्व. ,, ,, हर्मन जेकोबी (४९)

१५५५ परिचिष्ट पर्वे समानुं रू १-०-० (१७, ६)

१५५६ परिहार पत्र. हिन्दी. पीतांबर संवेगी. आत्मारामजी शिष्य कमलविजयादिक तथा झवेरसागरजी शिष्य आनंदसा-गर चतुर्थ स्तुतिक परिहार पत्र. (५०,७१, ४२२, ४२५) की. नथी.

१५५७ परिहार प्रश्नोत्तर खंडन हिन् ी. संघ समस्त साचोर. कमलिनगादि तिरस्कार आनं सागर (वदन) मुख चपेटा. अपर नाम कमल विजयादि. आनंदसागर परिहारोत्तर पत्र खंडन. की. नथी. (४२३, ५०)

१५५८ परिहार मीमांसा. मी. जेकोबी. मेक्समुलरान. प्रति मे-पिता. स्तंभतीर्थे सं. १९५५ (४२४, ७१)

१५५९ परीक्षा मुख, सैस्कृत. प्रमेय रत्नमाला नाम्नि न्याख्या स-हितमु. (दि.) रु. ०-८-० (५०)

१५६० परोपकार, गु. (५०)

१५६१ परंज्योति पंचित्राति. गु. (५०)

१५६२ परंज्याति (५०)

१५६३ पर्धुषणा अठाइ व्याख्यान. संस्कृत व्याख्यान. रू.०-५-०

पर्युषण] पर्व 230 १५६४ पश्चेषण आष्टान्हिका व्याख्यान (पाना) रु. ०-८-०(१४) १५६५ पर्युषणना पवित्र दिवसो अने जैनोतं कर्तव्य. रु. ०-१-० १५६६ पर्युवणनी कथा. रु. ०-४-० (१७९) १५६७ पर्युवणादिक पर्वोनी कथाओ प्रारंभ, बार कथाओ छे. की. नथी. कोणे छपाच्यो ते पण नथी. १५६८ पर्युषण पर्व महात्म. हिन्दी. सचित्र. रु. ०-८-० (९) १५६९ पर्युषण पर्वाष्टान्हिका व्याख्यान, विजयलक्ष्मीसूरि विर-चित. सं. १९७१ रु. ०-४-० (१७, १०) १५७० पर्युषण महापर्वे महातम्य, संग्राहक मनि कर्पुरविजयजी ह. िखी. (७३) 0-6-0 (33) १५७१ पर्युषणा कल्प महातम्यम् म्रुक्तिविमल कृत. की. नथी रा-संस्कृत व्याख्यान. रु. १-०-० (७३, ६ં३, ५०) (0, 40) १५७२ पर्युषणादि पूर्वानी कया. बार कथाओ. गु. सं. १९५३ १५७३ पर्युवणाष्ट्रपन्हिका व्याख्यान भाषान्तर. रु. ०-४-० १५५४ पर्येषणा पर्व निगय हिन्दी. शांतिविजयजी. मफत. सं. १९७४ (४२६. ५०) १५७५ पर्युवणा पर्व याने पवित्र जीवननो परिचय. (४२७.५०) १५७६ पर्युषणा पर्व विचार. हिन्दी. ले. मुनि विद्या विजयजी. (४२८. ५०) १५७७ पर्युषणाष्टान्हिक व्याख्यानम् लक्ष्मीविजयगणि, सं. १९५४ नी साल रच्यो (आ ग्रंथ कपडवंजमां लखायो छे) १५७८ ५वे कथा पंचमी वगेरे क्षमा. (५०) (४२९,५०)

१५७: पर्व कथा संग्रह. भा. १ छो. अमाकल्याणकीपाध्याय कुन. तथा साधु श्रानक आरायना. रु. ०-४-० (प्रति) (१४, ४३०) पर्व] पांदव 135 १५८० पर्वतिथि वगेरेना चैत्यवंदन संग्रह. जैन ध. प. स. भावन-१५८१ पर्वोनी कथा. रु. १-८-० [गर. (६. ५०) १५८२ पशुवध निषेधक. भा. १-२-३ भेगा. रु. १-८-० १५८३ पहेली कोन्फरन्सनो रीपोर्ट. रु. ०-१०-० (२३५) १५८४ पाइअलच्छी (पायलच्छि) नाममाला. माकृत कोष. ध-नपाल कवि कृत. रु. १-१२-० (३४८, ९५) १५८५ पाइअ सह महण्णवो भा. १ लो (७६, ६३) ,, भा. २ जो. (७६, ६३) १५८६ पांच कर्म प्रथनो टबो. (जुओ देवचंद्र भा. २ वि. १) १५८७ पांच प्रतिक्रमण सूत्र विधिपक्षगच्छीय अवक्रमां अर्थ तथा वीजी केटळीक जरुरी बाबतो साथे. सं. १९६१ (७) १५८८ पांच भावना देवचंद्रजी कृत. (जुओ आत्मिहतोपदेश) १५८९ पांजरापोळनी व्यवस्था. (५०) [०-१-० (३३५) १५९० पाटणा कोन्फरन्सना प्रमुखनुं भाषण (इंग्रेजी) रु. ,, (गुजराती) रु. ०-१-० (३३५) १५९१ पाटणना जैन भंडारना १३ पुस्तकोनो सार संग्रह. रू. 8-0-0 १५९२ पाटणना जैन भंडारो अने खास करी तेमां रहेलुं अपश्चंत्र तथा पाचीन गुजराती साहित्य. (पांचपी गुजराती साहित्य परिषद् माटे तैयार करेळो निबंध.) (४३१, (80

१५९३ पाटणना केन मंिरोनी मंदिरावली. रु. ०-०-६ श्री पाटण जैन श्वेताम्बर संघाल्जनी सरभरा करनारी कमीटी
तरफयी.
[२२)
१५९४ पाण्डव चरित्र श्री देवविजयगणि. सं. १९७०, (४३४,

शंहव]

१३२

[पार्शनाय

१५९५ पांडव चरित्र (जुओ चरित्र संग्रह)

१५९५ पांत्रीस द्वारादि संग्रह. रु. ०-५-० (४:५)

१५९७ पांत्रीस बोल. सरळ अर्थ साथे. रु. ०-१-०

१५९८ पांत्रीस बोलनो थोकडो. रु. ०-१-०

१५९९ पांत्रीस बोल. (गु.) (६, ७, ३३)

,, ,, हिन्दी. ७००८ रु. ०-४-० विवेचन सहित लेखक. कृष्णलाल वर्षा (४३६, **४३७,** ४३८, ५०)

१६०० पांत्रीस बोलनो थोकडो. रु. ०-१-० [o-१-६ ,, ,, (शिखामणना बोल सहित.) रु.

१६०१ पांडव चरित्र गद्यबंध मूळ. देवविजय गणि ि चित. रु. ४-०-० (४३०, ६)

१६०२ पांडव चरितम् महाकाव्यमः मलघ री देवप्रभसूरि विर-चितः रु. ४-४-० (७, ४४०, ५०)

१६०३ पांडव चरित्र भाषान्तर, रु, ५-०-०

१६०४ पांडव चरित्र महाकाव्यम्. पंडित शुभवर्धनगणि विरचित. (३१५, ४३९, ३२)

१६०५ पांडव प्रबोध. रु. १-८-०

१६०६ पार्श्वचंद्र सुरीश्वरनुं संक्षिप्त जीवन चरित्र. रु. ०-१-० पृ.
२४७ (४४१)

१६०७ पार्श्वजिन स्तवन. (जुओ प्रकरण रत्नाकर भा. ४ यो)

१६०८ पार्श्वनाथ अष्टकः मल्लकचंद्र कृतः (जुओ प्रकरण रत्नाकर भाः १ छो)

१६०९ पार्श्वनाथ चरित्रः अंग्रेजी. अमेरिकाना एक विद्वाने अनुवाद करेलो अने त्यांनी एक कंपनीए छपावेलो. रु. १२-०-० (६३)

```
पार्श्वनाय ]
                         १३३
                                            पाछीताणा
१६१० पार्श्वनाथ चरित्र, सं रु ०-८-०
१६११ पार्श्वनाथ चरित्र संस्कृत. ( बुक्क ) रु. १-०-०
१६१२ पार्श्वनाथ चरित्र. ( संस्कृत ) पद्मबंब. रु. ३-०-०
                     बनारस पुस्तकाकारे. रु. ४-०-० (१४)
                  ,, (पद्यबंध.) हेमविमलगिण विरचितंम
           सं. १९७२ रु. १-८-० (४४२, ८९, ५०, ४४३,
           ९५ )
                                    ( ७६, ९५, १४ )
                          भावदेव. सं. १९६८ रु. ३-०-०
                          भाषान्तर. रु. १-८-०
१६१३ पार्श्वनाथ चरितं (सरळ गद्यबद्ध ) श्री उध्यवीरगणि
          विरचितम् सं. १९७० आमां ३० कथाओनो समास
          है. मृ. ५५०० श्लो. २ सं. १६५४ (स्वोपन्न प्र-
          शस्तिमां आ साल छे ) (६)
१६१४ पार्श्वनाथना चंद्रावला, रु. ०-२-०
                                              ( 30)
१६१५ पार्श्वनाथ छंद संग्रह, भेट, सं. १९७१ पद्य ( अल्रभ्य )
१६१६ पार्श्वनायजीनो िवाहलो. रु. ०-१-० (६, ५०, ४४४)
१६१७ पार्श्वनाथ स्तव. जिन प्रमसुरिकृत. ( जुओ काव्यमाळा.
                                ित्नाकर भा, ४ थो )
          ग्र. ७ बीजी )
१६१८ पार्श्वनाथ स्तवन. अनुष्टुप दृत्त बद्धम् ( जुओ प्रकरण र-
१६१९ पार्श्व स्तव. ( जुओ काव्यमाला गु. ७ वीजी )
१६२० पार्श्वाभ्युदय काव्य संस्कृत, रु. ०-१२-०
```

,, ,, सटाक.
पालि पाठावली. प्रथम भाग मूल. जिनविजय. ह.
०-१४-० (३६,४४५) [ह. ०-१-०
१६२१ पाळीताणानी जैन मंडळीओमां गवातां गायनोनो संग्रह.

पाशिक]

१३४

पुण्य

१६२२ पालिक पर्व सार विचार. रु. ०-४-० [विरचित. (७३) १६२३ पालिक पर्व सार विचार. की. नथी. ज्ञान विपन्न सूरि १६२४ पालिक सूत्र अवचृरि (पाना) सं. १९६४ रु. ०-८-०

,, ,, सष्टत्तिकम् (५०)

,, ,, (विवरण सहित) विवरण कर्ता यशो-देवसूरि. (विवरण (११८०) रु. ०-६-०

१६२५ पाक्षिकसूत्र. श्रमणसूत्रादि संग्रह. (संस्कृत अनुवाद स-हित गुजराती भाषांतर) सं. १९७९ छा. (आचार ग्रंथ)(१) पाक्षिक सूत्र (२) खामणा (३) पा-क्षिक खामणा (४) आहारना ४७० दोष (५) श्री श्रमणसूत्र आ पांच बावतो भेगी हो. संस्कृत. (६)

१६२६ पिंड नियुक्ति सटीक (पत) भद्रवाहुस्वामि कृत. पछ-यगिरि कृत टीकायुक्त ले. सं. १५०२ सं. यं. नै. ४८

,, ,, सावचूरि. (५०) [मू. ३ (१६)

१६२७ पिस्तालीस आगम पूजा. पंडित रुपविजयजी कृत. म. सं पत विजयजी शिष्य. मुनि धर्म विजयजी. (४४६)

१६२८ पीत्त पद्मग्रह मीमासा ओर निश्लेप निश्लंघ. यतीन्द्र विजय. पीत ब्ह्लोका खंडन. रु. ०-५-० (३७)

१६२९ पुंडरीक चरित्र. भाषांतर सचित्र. रत्नप्रभ सूरि शिष्य क-मलप्रभ विरचित. प्र. संघवी.

१६३० पुंडरीकस्वामीचरित्र प्रति. रु. १०-०-० [(४४७)

१६३१ पुण्य पाप कुलकम् (जुओ कुलक संग्रह १७ वाळो)

१६३२ पुण्य प्रभाव दर्शक. (जुओ कुलक संग्रह. १७ वाळो)

१६३३ पुष्य रंग चोपाइ. भेट. मुनि छालचंदजी महाराज सं. १९७१ पद्य अन्नाप्य (३७) पुद्गल]

१३५

[बेंट्व

१६३४ इद्गल गीता. (जुओ क्षमा कुलकादि संग्रह.)

१६३५ पुद्गल छत्रीशी. (२८, १६)

,, ,, (जुओ पकरण पुष्पमाळा बीजु पुष्प) १६३६ पुद्गल पट्रिंगिशका. रत्निंससूरि कृत. दृत्ति सहित. मू. प्रा० दृत्ति सं. सं. १९६४ (१७, १०)

,, ,, प्रभृति (५०)

१६३७ पुण्य प्रकाश स्तवन. गु. (६, ५०)

१६३८ पुण्य धन तृप कथा (पाना) मुनिसुंदर सूरि शिष्य शु-भन्नील गणि कृत. रु. ०-४-० (९२, ४४८, १२)

१६३९ पुण्य घन कथा. (५०)

१६४० पुण्य प्रभाव याने समरादित्य.

१६४१ पुण्यादय चरित्र. रु. ०-३-०

१६४२ पुनर्जन्म गुजराती.

१६४३ पुण्य प्रकाशनुं स्तवन. रु. ०-०-६ [नथी. (३६)

१६४४ पुरातत्त्व सन्नोयननो पूर्व इतिहास. ग्रुनि जिनविजय. की.

१६४५ पुरुषार्थ दिग्दर्शन. विजयवर्मसरि. (१४, ४७)

१६४६ पुरुषार्थ सिद्धि, कर्ता. शा. शिवजी देवशी. रु. ०-५-० (१४३, ४४९)

> ,, ,, गद्यपद्यात्मक. रु. २-०-० ३६० पान. सं. १९७६ गुजर. (१०८) [(४५०, ५०)

१६४७ पुरुषार्थ सिद्धयुवाय अने स्यादाद मनरी हिन्दी. (दि.)

१६४८ पुरुषार्थ सिद्ध्युपायः रायचंद्रजी शास्त्रपाळाः अमृतचंद्रा-चार्य टीका भाषा सहितः सं. १९६२ रु. १-०-० (४५१)

१६४९ पुष्पपाला प्रकरण मूल. अभयदेव सूरि शिष्य रत्न मल्ल-धारी हेमचंद्रसूरि विरचितम्. रु. ०-८-० (३३) युष्प] १३६ [पूजा

१६५० पुष्पमाला प्रकरण. (भाषान्तर) रु. ०-४-० (३३, ५०)

१६५१ पुष्पवती विचार. रु. ०-१-६

,, ,, तथा सुतक विचार रु. ०-२-० १६५२ पुष्पवती विचार गुजराती तथा सूतक विचार सुनि विवेक-विजय (४५२)

१६५३ पूजा महोदधि. प्रथम भागः राजेन्द्रसूरि अक्रभ्यः सं. १९६८ ह. ०-४-० (३७)

,, ,, द्वितीय भाग. धनविजयजी. रु. ०-२-० अलभ्य. (३७)

१६५४ पूजाविल. संग्रह कर्ता सेतावचंद नादर. प्रसिद्ध पूजाओ. सं. १९६९ (३६६) [(४५३)

१६५५ पूजासंग्रह. ले. लब्धि विजयजी सं. १९८० (१२)

१६५६ पूजासंग्रह भा. २ जो. बुद्धिसागरस्र्रि. (१५, ५८ यी ६२, १८४)

१६५७ पूजासंग्रह तथा स्तवन संग्रह. (वल्लभ विजयजी कृत) रु. १-०-०

१६५८ पूजासग्रह. पद्म विजय तथा रुप विजय, तथा वीर विजय तथा सकलचंदजी कृत. सं. १९२२ नी शिलाछाप दुसुंवावाडा पासे गु. ना डेलामां. (४५४)

१६५९ पूजा वीसस्थानक तपनी कथा. रु. १-०-० (४५५)

१६६० पूजासंग्रह. बुद्धिसागर कृत. अष्ट प्रकारी. वास्तुक. तथा चीर विजयजी कृत. स्नात्र. रु. ०-२-० (१३१)

१६६१ पूजासग्रह. भा. १ छो. आदृति बीजी पृ. ४१६ रु. १-०-० बुद्धिसागर.

., મા.ર જો.

पूजा]

१३७

[प्रभंज

१६६२ पूजासंग्रह ने स्तवनो रु. १-०-० (६) पूजासंग्रह लघु बुद्धिसागरसृरि (१५, ५८ थी ६२, १८४) ,, मोटो ,, ,, (,, ,, ,, ,,

१६६३ पूजा गिरनारजी २०८ प्रकारी. कर्ता इंसविजयजी. रु. ०-४-० (५२)

१६६४ पूजा पंच कल्याणक श्री महावीर प्रभ्रना. हिन्दी. रु. ०-१-० (५०)

,, ,, आदिनाथ प्रभ्रनी गुजराती लेखक. मुनिश्री वहुभविजयजी की. सदुपयोग, (४५७, ४५६)

१६६५ पूजासंग्रह भा. २ जो. (शिलानो) रु. १–८-०

१६६६ पूर्ण प्रज्ञ दर्शन. (माध्यभाष्य. विगेरे.) जैनेतर.

१६६७ पूर्व देश तीर्थ स्तवनावलि. रु. ०-५-० (६)

१६६८ पूर्व देश स्तवनावली हिन्दी. ४४ स्तवनो छै. (६, ५०)

१६६९ पूर्व सुरि कृत. प्रशावली. (जुओ स्तोत्र रत्नाकर प्रथम-भाग सटीक)

१६७० पोळोना रावजीनो इतिहास. ले. कवि. दलपतराम हा. इ. १८६६ (जुओ फार्बस गुजराती सभानी हस्त लिखित पुस्तकोनी यादी.) पृ. १ थी ५४ अं.४८क)जैनेतर.

१६७१ पंच सूत्र. चिरंतन आचार्य कृत. हरिभद्र सूरि कृत टीकाना आधारे करेली सरल व्याख्या. (६)

१६७२ पंन्यास कमल विजय रास. (संक्षिप्त साररूप तथा) मूळ रास. (जुओ अतिहासिक रास संग्रह भा. ३ जो)

१६७३ मकरण समुचय. (४९) रु. १-४-० (१६, १)

१६७४ प्रतिमा पुष्प पूजा सिद्धि. (जुओ देवचंद भा. र वि. १)

१६७५ प्रभंजनानी सज्झाय (लीम्बडीमां) (जुओ देवचंद्र भा. २ वि. १)

16

मसुस्तुति]

१३८

। पेथड

- १६७६ प्रभुस्तुति. (जुओ देवचंद भा. २ वि. १)
- १६७७ पवचन सारोद्धार, नेमिचंद्र सूरि कृत. (जुओ प्रकरण र-त्नाकर भा. ३ जो)
- १६७८ प्रवचन सारोद्धार मुल कर्ता. नेमिचंद्र सूरि. टीकाकार सिद्धसेन सूरि सं. ग्रन्थ नं. ५८ रु. ३-०-० (१६)
- १६७९ प्रश्न व्याकरण, मूळ कर्ता गणधर. टी. अभयदेव सूरि. रु. १-१२-० (२८, १६)
- १६८० मध्नोत्तर (जुओ देवचंद्र भा. २ जो वि. १ छो)
- १६८१ प्रश्नोत्तरना दुहा. (जुओ क्षमा कुलकादि संग्रह)
- १६८२ मश्रोत्तर माला. (दि.) (जुओ सुक्त सुक्तावली भाषा-न्तर. पं. केसर विजय.)
- १६८३ पश्चोत्तर रत्नमाला. विगळ पणीता. (जुओ काव्यपाला. गु. ७ मो बीजी)
- १६८४ प्रश्नोत्तर शतक जिनवल्लभ सूरि कृत. (जुओ स्तोत्र रत्ना-कर द्वितीय भाग. सटीक.)
- १६८५ मज्ञापना सूत्र. (पूर्वार्ध) मृ. कर्ता. झ्यामाचार्ये. टीकाकार मलयगिरि रु. ३-१४-० (२८, १६)
 - ,, (उत्तरार्ध) रु. १–१२–० (२८, १६)
- १६८६ प्राचीन लेखानली. (संपतिवजय संप्रहीत्.) [भगुभाइ.
- १६८७ प्रचीन स्तवनादि रत्न संग्रह. रू. २-०-० जमनाभाइ
- १६८८ पृथ्वी स्थिर प्रकाश याने भूगोळ फरवानुं खंडन. रु. १-८-०
- १६८९ पृथ्वीचंद्र चरित्र संस्कृत. (पाना) रु. १-१०-०
- १६९० पेथड कुमारका परिचय. रु. ०-४-० (३२६. ९५)
- १६९१ पेथड कुमार. (४५८)

```
( प्रंच
पैतीस ]
                        १३९
१६९२ पैतीस बोल. हिन्दी. ह. ०-२-० ( ६८ )
१६९३ पोसह विधि. बीजी. रु. ०-३-०
                     भेट. ( ६७ )
          ,,
                       ह. ०-१-० ( ५० )
                      (६)
                        ( ग्रुंबइनी ) रु. ०-४-०
 १६९४ पोष दश्रमी महात्यय कथा. की. नथी. ( ७३, १९७ )
१६९५ पौषघोपवास व्रत. रु. ०-४-०
 १६९६ पंच कल्याणक पूजा पंच ज्ञाननी पूजा. रु. ०-१-० (६,
                       ,, तथा अष्ट प्रकारी पूजा. रू. ०-४-०
१६९७ पंच तीर्थ पूजा. रु. ०-२-०
१६९८ पंच निमंथी प्रकरण प्रज्ञापना तृतीय पद संग्रहणी (पाना)
          अभयदेवसूरि. विरचित. सावचृरि. सं. १९७४ (१७,
          80)
१६९९ पंच परमेष्ठी गुणमाळा. रु. १-८-० ( १७ )
१७०० पंच परमेष्टी गुण रत्नमाला. ( १७. ९५ )
१७०१ पंच परमेष्टी ध्यानमाला.
१७०२ पंच प्रतिक्रमण विधि. महोपाध्याय विनयविजयगणि, यश्रो
          विजयगणि, पंन्यास, विद्या विजयगणि इत्यादि पूर्व
          पंडितोए संशोधित. संग्रह कर्ता. मक्तिविमल-सौभाग्य
          विमल शिष्य. (१९७)
१७०३ पंच प्रतिक्रपण शास्त्री ( सभानी ) रु. ०-६->
१७०४ पंच प्रतिक्रमण सुत्र. शिला छापनुं. सं. १९१८ विद्याव-
          र्धक भा. ५ मो. ( ४५४, ४५९ )
१७०५ पंच प्रविक्रमण. ( ग्रजरावी ) रु. ०-८-•
```

```
4च:]
```

380

विव

```
१७०६ पंच प्रतिक्रमण सत्र. रु. ०-४-० ( १६ )
 १७०७ पंच प्रतिक्रमण विधि साथे मूळ. रु. ०-१२-०
                       सूत्र अर्थवाळी. रु. १-०-०
                                    ,, ₹, 0-?0-0
                                    ,, ₹, 0-8-0
            "
                    ,,
                          प्रकरणो तथा दंडक सहित. गुजराती.
                                       ि रु. ३-८-० (६)
            ( ३८८ )
                         अर्थ सहित. त्रण भाष्यवाळी ( मोटी )
 १७०८ पंच प्रतिक्रमण सुत्र. (वधारावाळी ) मूल. र. १-४-०
                          ्रः ',
अर्थ सहित. ( हीराचंद ककलवाळी )
            ₹. २-८-0 (१७९)
                    ,, , विद्याश्वाळानी. रु. १-१०-०
,, सूत्रार्थ सावचूरि. रु. ०-१२-० ( ३३ )
 १७०९ पंच प्रतिक्रमण सृत्र पूर्वार्ध रु. ०-६-० (१४३)
 १७१० पंचमी दुहा. धनपाल कृत ( अपभ्रंश भाषायाम् ) (१३८)
 १७११ पंचमी महात्म्य. प्रथम भाग. अतु. पं. लालचंद भगवान-
           दास गांधी. (२७१, १४६, ४६०)
 १७१२ पंचर्लिगी प्रकरणम्. ९३६८ वसतिमार्ग प्रकाशक श्री जिने-
           श्वर सरि विरचित. स्वोपज्ञ टीका सहित. प्रन्थांक.
           २० ( ४६१, ४६२, १० )
१७१३ पंच स्त्र. (चिरन्तनाचार्य कृत ) हरिभद्र सुरि विरचित
           व्याख्या सहित. मू. मा. टी. सं. ग्रं. नं. २० सं.
           १९७० रु. ०- २-० ( १७, १० )
१७१४ पंच सुत्रम् सटीकम् ( चिरन्तनाचार्यकृत ) हरिभद्ग सुरि
```

कृत ठीका. रू. १-८-० (३२, ५०)

वंच 1

385

| शकरण

१७१५ पैच संग्रह. ग्रं. नं. ५० रु. ३-८-० (१७)
१७१६ पंच संग्रह भाः १ छो.

,, भाः २ जोः
,, भाः ३ जोः
,, भाः ४ थोः

१७१७ पंचाख्यान वार्तिक. जिनविजयगिण. सं. १७३० प्राचीन गुजराती भाषानी ४८ कथाओनो संग्रह छे. रु. ३-१२-०

१७१८ पंचाख्यान वार्तिकम्. भा. १ लो. वाय. Johannas Hertel. Leipjg. Universitatsotrasse. 15. अने हरखचंद भुराभाइ बनारस. जर्मनीतुं सरनामुं. (४६३, ४६४)

१७१९ पंचाशक ग्रंथ. सटीक. रु. २-८-० (प्रति) (६, १०) हिरभद्रसूरि विरचित. (अभयदेव सूरि विरचित. टीका सहित) सं. १९६८ श्रावक धर्म, दीक्षा, चैत्यवंदन, पूजा, प्रत्याख्यान, स्तवन, जिनभवन प्रतिष्ठा, यात्रा, श्रावक प्रतिमा, साधु धर्म सामाचारी, पिंडविधि, शी- लांङ्गनी, आलोचना, प्रायश्चित्त, कल्पन्यवस्था, साधु प्रतिमा, तपोविधि, एटली वावतोनुं वर्णन छै. मूळ पाकृत. न्याख्या संस्कृत. [२-०-० (४५१)

१७२० पंचास्तिकाय. कुंदकुंदाचार्य. भाषा टीका सह. रू. १७२१ पंचेंद्रिय संग्रह वाद. रु. ०-१-०

१७२२ प्रकरण पुष्पमाला प्रथम पुष्य ग्र. नं. २४ रु. ०-६-० होत. आणंदजी पुरुषोत्तम ग्रंथमाला नंग. १ (६) कुलमंडन सुरि कृत. कायस्थिति [एमां. महेन्द्रसुरि कृत विचार सित्तरी

ं १४२ प्रकरण मकरण] आनंद विमल सूरि शिष्य विचार पंचाशिका. (वानरम्रनि कृत) आ त्रणे मूळ तथा टीका अने न्याख्या समेत. १७२३ प्रकरण पुष्पमाला बीजुं पुष्प. रु. ०-८-० (६) एमां. परमाणु खंड छत्रीशी. पुदुगल छत्रिशी, अने निगोद छत्रिश्री मुळ टीका अने न्याख्या सहित. १७२४ प्रकरण पुष्पमाला भाषान्तर (भेट) गुजराती. पंन्यास देवविजयजी कृत. (२५) (१७) **5**2 १७२५ प्रकरण माळा मूळ. रु. ०-८-० [रु. १-०-० (४५४) (विद्याशाळानी) छ कर्म ग्रंथावळी. " (भोगीलाल ताराचंद) रु. १-८-० १७२६ प्रकरण रत्न. जीव विचार, नवतत्त्व, ढूंडक, कर्म ग्रंथ. विगेरे. रू. ०-१-० (२४०) १७२७ प्रकरण रत्नाकर भा. १ लो. (बीजी आदृति) रु. 4-6-0 (9) (१) सीमंधर स्वामीनी विनति रूप. साडात्रणसो (२) देवचंद्रजी कृत. आगम सार. गाथानुं स्तवन. (3) नव चक्रसार. (४) आनंद्रधनजी कत चोवीशी. (५) द्रव्य गुण पर्यायनी रास. (६) यागद्रष्टिनो स्वाध्यायः बाळावबोध सहितः

(७) उपिति भव प्रपंच.

(८) अध्यात्मसार.

प्रकरण] १४३ प्रकरण (९) तत्त्वान बोध. (१०) समाधि शतक. (११) समता शतक. (१२) दिगुपट चोराशी बोछ. (१३) श्रीं चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिन स्तोत्र कोइ महापंडित विरचित्र (१४) श्री पार्श्वनाथ अष्टकं मळ्कचंद कृत. (७) १७२८ प्रकरण रत्नाकर भा. १ लानो ककडो १ लो (साडात्र-णसो गाथानुं स्तवन) रु. २-०-० (७) १७२९ प्रकरण रत्नाकर भा. २ जो (आखो) रु. ६-४-० (७) १७३० प्रकरण रत्नाकर भा. ३ जो. रु. ६-४-० (७) (१) प्रवचन सारोद्धार-नेमिचंद्र सूरि कृत. (२) महावीर जिन स्तुति (२७६ विषयो छे) रुप दोढसो गाथानुं हुंडीनुं स्तवन. यशो विजयजीनुं. (३) यशो विजयजीनो कागळ तेमां दिगंबर अने दुंढीयाने शीखाण उपदेश. (४) निगोद छत्रीसी (बाळाव बोध सहित) (५) रत्नाकर पच्चीसी. (६) सवासो गाथानुं स्तवन. यशोविजयजीनुं. (७) शोभन म्रनि कृत चोवीस स्त्रतिओ बाला बबोध (८) भव वैराग्य शतक. टळा सहित. (९) रुषभ वीरजिन स्तुति संस्कृत.

(११) मार्गानुसारीना १० काव्य-योग शास्त्रमांथी, १७३१ पकरण रत्नाकर मा. ४ थानो ककडो १ छो. मोटी संघ-

(१०) हृद्य प्रदीप षट् त्रिशिका. संस्कृत.

प्रकरण]

888

[प्रकरण

यणी. क्षेत्र समास. पाना १ थी ३०४ रु. २-०-०

,, ,, ककडो बीजो. कर्म ग्रंथ १ थी ४ पाना. ३०५ थी ६०४ रु. २-०-० (७)

,, ,, भा. ४ थामांथी (छ कर्म गंथ. भाषान्तर) रु. ५-०-० (७)

१७३२ प्रकरण रत्नाकर भा. ४ थो. (बीजी आदृति) रू. ५-०-० (७)

१ इंद्रिय पराजय शतक बाळावबोध सहित.

२ अहेदादि स्तवन. विविध पद्य रचनात्मक.

३ पार्श्वनाथ स्तवन. अनुष्टुप् दृत्त बद्धम्.

४ चतुर्विश्वति जिन स्तत्रनः नाना पद्य निबद्धम्

५ युगादि जिन स्तवन.

६ पार्श्व जिन स्तवन.

७ जिनप्रभ स्रुरि.

८ पराग शब्दाष्ट्रोत्तरशतार्थ निवदं साधारण जिन स्तवन. विविध दृत्त बद्धम्.

९ महावीर जिन स्तवन.

१० पाश्वनाथ जिन स्तवन.

११ रुषभादि जिन स्तवन. [बोध सहित.

१२ संघयणी रत्न. त्रैलोक्य दीपिकाख्य ग्रंथ. बालाव

१३ रत्नशेखर कृत. क्षेत्र समास. मूळ तथा बाळावबोध.

१४ सिद्धान्त स्तवन.

१५ चोवीश जिन स्तवन.

१६ यमकमय चतुर्विश्वति जिन स्तुति.

मकरण]

१४५

[प्रकरण

१७ टीका उपरथी करेला बालावबोध सहित. कर्म ग्रंथना बत्रिश पृष्ट.

१८ कर्म विपाक नामा प्रथम कर्म गंथ.

१९ कर्म स्तव नामा बीजो कर्म ग्रंथ.

२० बंध स्वापित्व नामा तृतीय कर्म ग्रंथ.

२१ पडशीति नामा चतुर्थ कर्म ग्रांथ.

२२ शतक नामा. पंचम कर्म गंथ.

२३ सप्ततिका नामा पष्ट कर्प ग्रंथ.

१७३३ प्रकरण रत्नाकर भा. ४ नो ककडो पाना ५३३ थी. ६३३ इ. ३-८-० (७)

१७३४ प्रकरण सम्रचयम्. (४९) रु. १-४-० सं. १९८०(१६) १७३५ प्रकरण सुखसिन्धु प्रथम भाग. छे. पं. अजितसागरजी गणि. छ शतय (४६४)

,, ,, द्वितीय भाग. आठ शतक (४६७,४६८) १७३६ प्रकरण लघु संग्रह. (७, ५०)१ जीवविचार,२ नवतस्व, ३ दंडक,४ लघुसंघयणी,५ बृहत्संघयणी त्रैलोक्य-दीपिका,६ लघुक्षेत्रसमास,७ षट्कर्मग्रंथ,८श्रीरत्ना-करपंचविश्वतिका,९ आचारोपदेश ग्रंथ. षड्वर्गरूप.

१७३७ प्रकरण संग्रह भा. १ लो. रु. ०-५-० (१७) (१) सिन्दूर प्रकर मूल मात्र. (२) तत्त्वार्थाधिगम सूत्र.

१७३८ प्रकरण संग्रह भा. २ जो. रु. १-०-० (४३) सं. ग्रुनि उत्तपचंदजी स्वामी (गुजराती)

१७३९ प्रकरण संग्रह मूळ. (सिंदूर प्रकर. तत्त्वार्थ सूत्र, गुणस्या-नक्रमारोह.) रु. ०-४-० (१७)

,, ं मोइं) रू. १-०-० (७)

प्रकरणः]

१४६

मितिमा

१७४० प्रकरणमादि विचार गर्भित स्तवन संग्रह. रु. ०-६-०

१७४१ मकीर्ण चतुष्कम्. (५०)

१७४२ प्रकीर्ण दशकम्. (५०)

१७४३ प्रकृति प्रकाश. हे. हुकप्रमुनि. (२१)

१७४४ मगटमभावी पार्श्वनाथ. सं. मणिलाल न्यालचंद शाह. सं. १९७९ रु. ०-८-० (४५८, ४६९, ९५, ३२३)

१७४५ प्रच्छा प्रतिवयः हिन्दी खंडनादि प्रः चुन्नीलाळजी खजांची. ग्रंबइ विगेरेथी आवेला पश्चोनो उत्तरः सं. १९६१ (४७०, ७१)

१७४६ मजासमाज कर्तव्य संस्कृत ग्रं. ७४ बुद्धिसागरसूरि. (१५,५८)

१७४७ मतिक्रमणविधि अमूल्य. सं. १९६१ बीजी आवृत्ति हि. सं. पा. (३६६)

१७४८ मितिक्रमण विधि मकाशः (प्रतः) म्रुनिचंद्रसूरि रु. ०-१२-० (४७१)

१७४९ मतिक्रमणसूत्र गुजराती अर्थवाळी. रु. १-४-०

१७५० प्रतिक्रमणसूत्र विधि प्रकाशः (५०)

१७५१ प्रतिक्रमण हेतु भाषान्तर, रु. ०-८-०

१७५२ प्रतिक्रमणना हेतु. (६

१७५३ प्रतिपाखंडनमंडन स्तवन संग्रह. अनेक महापुरुषकृत. प्र. चुनीलाल (४७२, ७१)

१७५४ मतिमा छत्रिशी ज्ञानसंदरजी विरचित. उपकेशगच्छीय. रु. ०-०-६ (६८)

१७५५ मतिमाश्चत्क (पाना) ग्रं. नं. ४२ रू. ०-८-० (१७,५०)

मतिमा]

880

मध

- १७५६ प्रतिमाञ्चतक सटीक. यशोविजयउपाध्यायकृत. भावकृत सूरिकृत छघु टीका समेत. मूळ अने टीका बंने संस्कृत तमां छे. सं १९७१ सं. १७७३ नी सालमां दृत्ति करी रू. २-०-०
- १७५७ प्रतिपाश्चतक. यशोविजयकृत. स्वोपज्ञ टीका सहित. सं. १९७६ (६७, ४७३)

,, ,, गुजराती भाषान्तरः यश्चोविजयजी विर-चित. लघुटित्तनुं भाः कः वकील ग्रुलचंद नथुभाईः रुः ०-१२-० सं. १९५९ प्र. (७, ७१)

१७५८ प्रतिपाञ्चतक. मोटी टीक'. संस्कृत. रु. २-०-०

१७५९ प्रतिपास्थापक. प्रवंध. रु. ०-६-० (४७५)

१७६० प्रतिमास्थापन न्याय.

१७६१ प्रतिष्टाकल्प. भाषान्तर सहित. (पाना) रु. ०-८-० ,, ,, संस्कृत-छपावनार विगेरे कंइ पण छखेळ नयी. (५०)

१८६२ प्रतिज्ञापालन₊ बुद्धिसागरसूरि पृ.११० नं. ३८ रु. ०–५–० (१५, ५९ थी ६२, १८४)

१७६३ प्रत्येक बुद्ध चरित्र (पाना) रु. १-०-०

,, ,, (३२,२२)

१७६४ मदीपमकाश मैगलविजय. (४७, १४)

१७६५ मदेशीचरित्र. (प्रत) रु. ३-८-० (३२)

१७६६ प्रद्युग्नकुमार. ले. पुरोहित पुरणचंद्र प्र. सवाइभाइ रायचंद (१२९, ६३)

१७६७ प्रद्युम्नचरितम् महासेनाचार्य (दि.) (४७७, २२)

१७६८ प्रद्युम्नचरित्र (पाना) श्रीशान्तिचंद्रोपाध्याय शिष्यरत्न चंद्रगणि रू. २-०-० (३४८, ५०) मधुस्म]

288

प्रभावक

१७६९ मशुम्नचरित्र, भाषान्तर कर्ता, पं. चारित्रविजय,

१७७० प्रद्युम्नचरित्र भा. १ छो. रु. १-०-०

भा. २ जी. रु. १-०-०

भाषान्तर, रु. १-८-०

१७७१ मबुद्धरोहिणेय नाटकम्. रामभद्रमुनि निर्मितम्. नं. ६० इ. 0-2-0 (10 40)

१७७२ प्रबंधचिन्तामणि. १ थी त्रण भाग (पूर्ण) मेरुतुंगाचार्य. रु, ३-१२-० (२९)

> ,, मेरुतुंगाचार्य. इ. स. १८८८ जैनविद्या-शाळा ग्रंबइ रु. २-०-० (४७९, १२)

१७७३ प्रबोधचिन्तामणि. जयशेखरस्रुरिकृत, मोहविवेकन्तुं स्वरूप अने तेमनुं युद्ध, मोहनो पराजय, विवेकनुं साम्राज्य इत्यादि संस्कृत. सं. १९६५ (६. १७)

१७७४ प्रवंधचिन्ताणणि भाषान्तर. रु. २-०-०) वंने भेगाना रू. रु. ३-०-० ,, संस्कृत. रु. २-०-०) (४८०,४८१)

१७७५ प्रबोध चिन्तामणि भाषान्तर गुजराती. रु. ०-८-० पं. केसरविजय. (२५)

., जयशेखरसूरि विरचित. (६) १७७६ प्रबंध चिन्तामणि भाषान्तर. इंग्रेजी. रु. ३-१२-७ १७७७ प्रबोध चन्द्रोदय नाटक. कृष्णमित्रयति प्रणितम् सटीक. ₹. 0-18-0 (१0, 40)

१७७८ प्रभावक पुरुष चरित्र (संस्कृत) (प्रभावक चरितम) चंद्रप्रमसूरि प्रणितम् बाबीस प्रभाविक पूर्वाचार्यानां चरित्र छे. इतिहास पुरो पाडे छे. संस्कृत अने इंग्रेजीनो एक प्रसिद्ध विद्वान-संपादक छे. (१०)

```
त्रमायक र
```

886

त्रमाण

१७७९ प्रभावक चरित्रम्, चंद्रप्रभसूरि प्रणितम्, महाकवि गुणदोष विषेचनात्मकम् रु. १-८-० (५०)

१७८० मभावती. (७१)

१७८१ प्रभुका चरित्र. रु. ०-२-०

१७८२ मभु पूजा. रु. ०-०-६ (६८)

१७८३ प्रमाणनय तन्व लोकालंकार मुळ. ६ देवाचार्य निर्मित. ११३४ जन्म, ११५२ दिक्षा, ११७४ सूरिपद, १२२६ स्वर्ग. श्रावण बद्र. ७ गुरुवादि देवसूरि. रु. ८-०-० (९५)

१७८४ प्रमाणनय तत्त्वा छोकालंकार. (प्रत) रु. ४-०-०

संस्कृत. जैन न्याय प्रवेश ग्रंथ. रु.

०-८-० (१४) बि परिच्छेद. रु. १-८-०

संस्कृत. वादि देव सूरि विरचित.

स्वोपक्ष स्याद्वाद रत्नाकराख्यया बिवृत्या विभूषित. सं. १९७० (११)

स्याद्वाद रत्नाकरावतारिका टीका बे ,, परिच्छेट. रु. १-०-०

(संस्कृत) रु. ३-०-० ,,

मूल, वादि देव सुरि विरचित. य-को विजय जैन. गं. नं. १ रु. ०-६-० (१४)

रत्नाकरावतारिका युक्त. रत्न प्रभा-चार्य निर्मित टीका. यशोविजय जैन ग्रंथमाळा. (१४)

१७८५ प्रमाण परिभाषा. श्री विजय धर्म सूरि. (१४, २२)

न्यायाछंकार नाम टीका विभूषिता. न्यायविजय कृत न्यायतीर्थ न्याय विशारदः हरखद्यंद भुराभाइ, काञ्ची, रु. ०-१२-० (१४, ४७)

प्रमाण ी

१५०

श्रम

१७८६ प्रपाण मीमांसा. हेमचंद्राचार्य. रु. २-०-०

,, ,, सटीका. (११)

,, ,, बीजा ध्ययनतुं मथम आन्दिक, है-मचंद्राचार्य प्रणित.

१७८७ प्रमाण लक्षणम्. (५०)

१७८८ प्रमा लक्षा लक्षणं, सटीकम्. (११)

१७८९ प्रमेय रत्न मार्तेड. (५०)

१७९० प्रभु पूजा. (६८)

१७९१ प्रमेय कमल मार्तेड. (पाना) रु. ४-०-०

१७९२ प्रमेय रत्न कोश्च. चंदप्रभ विरचित. (संस्कृत) रु. ०-४-० Luigi Suali (६,१०)

१७९३ मवचनसार. (रा. गं. मा) कुन्दकुन्दाचार्य भणीतम् (दि.) रु. ३-०-० (३२५)

१७९४ प्रवचनसार. टीका. प्रथम खंड हिन्दी अनुवाद.

१७९५ मवचनसार मूळ हिन्दी श्रीमत्कुन्दकुन्दाचार्य विरचित. तत्त्वःीपिका. तात्पर्य दृत्ति बालबोधिनी भाषेति टीका त्रयोपेतम्. (दि.) (३२५, ५०)

१७९६ मवचनसारोद्धार. (पूर्व भाग) नेमिचंद्र निर्मित. सिद्ध-सेनसूरिशेखर रचित. दृत्तियुक्त मं. नं. ५८ रु. ३-०-७ (१६)

१७९७ प्रष्टिति निरुति. चारित्र विजय. रु. ०-८-० (१७)

१७९८ प्रश्नमरतिपकरणम्, श्रीजमा स्वाति वाचक विरचितम्, सटीकमवचृरि सहितम् सं, १९६६ टीकाकारह्यं नाम जहयुं नथी, मूळ अने अवचृरि वंने संस्कृत, (१०) प्रति.

```
भ्रञ्जम ]
```

१५१

प्रश्लोत्तर-

१७९९ प्रशम र्ति प्रकरण मूछ. रु. ०-६-०

१८०० प्रश्नमरति. रु. ०-४-० (३३)

१८०१ प्रभागरित प्रकरम् श्री उमा स्वामिकृत. केशवळाळ प्रेमचंद संशोधितम्, रु. ०-३-०

> ,, ,, त्रीज़ं. तेमां चार तीर्थ कल्प छे कीं-मत नथी सं. १९६० (३३)

१८०२ प्रश्नमरति भाषान्तर, सं. १९६६ रु. ०-६-० (३३,

१८०३ प्रशापरति सटीक. रु. ०-१२-०

१८०४ प्रश्न चिन्तामणि. (पाना) रु. ३-८-०

१८०५ प्रश्न द्वात्रिंशिका स्तोत्र. नयविमलगणिकृत ग्रं. नं. ४ रु. ०-४-० (७३, ४८२)

१८०६ पश्च पद्धति अभयदेव सूरि शिष्य हरिचंद्र गणि विरचित. नं. ७० सं. १९७८ रु. ०-२-० (१७)

१८०७ प्रश्नमाला स्तवन. रु. ०-१-० (६८) (४८३)

१८०८ प्रश्नमाला. प्रश्न. १०० रु. ०-१-० (६८)

१८०९ प्रश्न रत्नाकर शेन प्रश्न. (५०)

१८१० प्रश्न व्याकरण. सुधर्मस्वामिकृत टीका. अभयदेव सूरि. बाबुनुं नं. १० (२४, ५०) [१९७५ (२८) ,, ,, टीका. ,, रु. १-१२-० सं.

१८११ प्रश्नामृत. प्रश्नोत्तर तरंग. रु. १-०-० बार प्रश्नोना उत्तर धन विजयजी (अलभ्य) सं. १९५१ (३७)

> ,, ,, ल्ख वल्यम शाह. रु. १-०-० (४८४)

१८१२ मश्लोत्तर तत्त्व बोध, रु, ०-८-०

मश्रोत्तर]

१५२

[प्रश्लोत्तर

- १८१३ मश्रोत्तर पत्रिका. प. आनंदसागर मेस. दरबारघार. इ. १९०४ (४८६, ७१)
- १८१४ प्रश्नोत्तर पुष्पमाला. इंसविजयजी विरचित. २०५ प्रश्नोना उत्तर छे. नं. १९ (शास्त्री) रु. ०-१२-० (१७,६)
- १८१५ प्रश्नोत्तर पुष्प वाटिका. भेट. राजेन्द्रसूरि सं. १९७१ मार-वाडी. (३७)
- १८१६ प्रश्नोत्तर प्रदीप गंथा लक्ष्मीविजय विरचिता पा शा रव-चंदभाइ गीरघरलाला सं. १९७३ (४८७, १०) ,, ,, तेमां त्रण गंथा प्रश्नोत्तर पदीपा पर्युषणा छान्दिकाख्याना पंच जिन स्तुति पं. संघवी भोगीलाल कालीदासा (४८८)
- १८१७ प्रश्नोत्तर प्रदीप, रू. ०-१२-०

,, ,, गुजराती.

१८१८ प्रश्लोत्तर मालिका हिन्दी.

१८१९ प्रश्नोत्तर मंजरी, गंथस्य ितीय भाग, बुद्धि धुनि, पंन्य, केसरप्रुनि शिष्य, गणिनामक मकसुदाबाद, (५०) चोकस ठेकाणुं लखेलुं जणातुं नथी,

,, ,, भा•१ छो. (५०)

,, ₹, ←8-°

१८२० प्रश्नोत्तर रत्न चिन्तामणि, रु. ०-७-०

,, ,, गुजराती. अनोपचंद मलुक्सचंद. रु. o-८-० (२५१, २३१)

१८२१ प्रश्नोत्तर रत्नमाला. गुजराती. रु. ०-४-० (३३,५०) १८२२ प्रश्नोत्तर रत्नमाला टीका. (पाना) रु. १३-०-०

मश्रीतर ो

१५३

प्रजापना

१८२३ प्रश्नोत्तर रत्नाकर. रु. १-०-०

की. नथी. (७३)

१८२४ मश्रोत्तर विचार. रत्नसार. रु. ०-४-० (४८९) ,, हिन्दी. प. बुद्धि मुनि. केसर मुनि-

जी गणिना शिष्य (५०)

१८२५ प्रश्नोत्तर समीक्षा. रू. ०-२-०

१८२६ प्रश्नोत्तर सार्थ शतक सटीक. सबीजं कल्याणविजयगणि कृत. (४९०, ५०)

१८२७ प्रश्लोत्तर संग्रह. रु. ०-४-०

.. कि. मनन. आत्मारामजीए. ए. सो. कलकत्ताना सेकेटरी. डो. हॉर्नलना पश्नोना आपेला उत्तरो सं. १९७२ (३७३, ४९१)

१८२८ प्रश्नोत्तरी बोधमाला. प्र. श्रीमती सौ. श्राविका इरकोर. शा. मोहनलाल गोविंदजीना धर्मपत्नी पाळीताणा प्र. ७ मं. सं. १९७९ (४९२)

१८२९ प्रस्ताव दृष्टान्त, प्रस्ताव शतक टीका. दृष्टान्त. रंत्नावल्या-ख्या. कर्ता केसर विमल. (५०)

१८२० प्रस्तावशतक टीका. (सैस्कृत) पाना. रु. १२-०-०

१८३१ प्रस्तावरत्नावली, गणितान योग, ले, रत्नचंद्रजी सनि. सतावधानी. (४३)

१८३२ प्रज्ञापना सूत्र, अनुवाद युक्त, बाबुवालु, (२४, ५०) भाषान्तर्, तेनो विभाग, (५०)

१८३३ प्रज्ञापना सूत्र भा. १ भा. २ क्यामाचार्य संहब्धं पूर्वार्थ. श्री मलयगिरि आचार्य विहित विवरणयुर्त, र. ३-१४-० (40)

30

महापनी]

१५४

| प्राचीन

- १८३४ मज्ञापनोपाङ्ग रृ. तृतीय पद संग्रहणी. अवचृरि भूषिता. (१४, ४७)
- १८३५ प्राकृत कथा संग्रह. सं. १९७८ प्रथम भाग मुळ पाठ. रु. ०-१२-० (३६)
- १८३६ प्राकृत पिंगल. सूत्र संस्कृत टीका सहित. श्रीमद् वाग्भट्ट विरचितानि. लब्धिनाथभट्टकृत. टीका सहितानि. (६,१०)
- १८३७ प्राकृत मार्गोपदेशिका, कर्ता. पं. वेचरदास, रु. ०-१२-० (४९३)
- १८३८ प्राकृत रूपावतार, प्राकृत (ग्रामर) व्याकरण, अंग्रेजी पस्तावना साथे. (२९)
- १८३९ प्राकृत लक्षण इंग्लीश नोट. सहित भा. १ लो. अगत्यनी प्रस्तावना साथे. इ. १८८० रु. १८८० (२९)
- १८४० प्राकृत व्याकरण सिववेचन. गुजराती. (४९४, ५०) रु. १-०-०
- १८४१ पाकृत शब्द रुपावलि. मोटी. रु. ०-१२-० प्रताप विजय ग्रुनि प्रणीत. सं. १९६८ (११)

,, रु, ०**–२**–०

- १८४२ पाकृत सक्त रत्नमाला. मूल. संस्कृत. छाया अंग्रेजी भा-षान्तर भा. क. पूरणचंद नहार. इ. १९१९ प्राचीन सुभाषित संग्रह. रु. ८-८-० (२८३)
- १८४३ माचीन गुर्जर काव्य संग्रह. पथमी भाग. रु. २-४-० (१३८)
- १८४४ प्राचीन जैन लेख संग्रह. म्रुनि जिनविजय. खारवेलना लेखो छे, रु, ०-८-० (६, १०, ३६)

श्रीचीन]

१५५

माकृत

१८४५ प्राचीन तीर्थमाला संग्रह. भा. १ लो. ह. २-८-० (१४) १८४६ (द्नियानो सौथी) प्राचीन धर्म भा. १ लो. गुजराती. रचनार सांकलचंद माणेकचंद घडीयाली. ह. १-४-० (३४३)

१८४७ प्राचीन पूर्वाचार्य विरचित. स्तत्रन संग्रह. भेट. (४९५) १८४८ प्राचीन भरतखंडनो महिमा. इतर इतिहासिक वडोदरा रा-

ज्यना दिवान दत्तनो लखेलो छे. (५०, १२) जैनेतरः

१८४९ प्राचीन भारत. गुजराती. (५०) जैनेतर.

१८५० प्राचीन भारत वर्षकी सभ्यताका इतिहास भा.१-२-३-४ श्री रमेशचंद दत्त. इतर. (४९६) अजैन.

१८५१ प्राचीन (मृर्तिओना) लेख. अजैन.

१८५२ प्राचीन लिपिपाला. गौरीशंकर हीराचंद ओझा. रायवहा-दुर. रु. २५-०-० इ. १९१८ (४९७,४९८) अजैन.

१८५३ प्राचीन लेखमाला भा. ३ जो निर्णयसागरना (त्रण भाग छ) ले. (६, १०) अजैन.

१८५४ प्राचीन लेख संप्रह. भा. १ लो. रु. १-०-० (१७, ४९९)

,, ,, भा. २ जो. रु ३-८-० (१७, ४९९)

१८५५ प्राचीन लेख संग्रह. महुम ग्रुनि श्री. कर्पूर विजयजीनो प्राचीन लेख संग्रह. (इन्दोरना) १४९, ५००)

,, ,, मा-१ हो. **६. ०**-८-०

१८५६ प्राकृत लेख विभाग. प्रवर्तक. कान्ति विजय जैन इतिहास-माला पुष्प. ४ थुं. संपादक. ग्रुनि जिनविजय. (१७,

```
शाबीन ] १५६ [ मेमगी
१८५७ प्राचीन खेतांबर अर्वाचीन दिगंबर. रु. ०-४-० (३२३)
१८५८ प्राचीन स्तवन संग्रह भा. १ लो. (ज्ञानविमलसूरि कृत)
रु. २-०-० (१९७, ५०)
```

१८५९ प्राचीन स्तवनो. यशोविजय. १२५-१५०-३५० गाथा-ओनां रु. १-०-० सं. १९७५ (९२, ५०, ५०२)

१८६० प्राचीन स्तवन संग्रह. रु. ०-६-० (५०३, ५०४)

१८६१ प्राणी पोकार, रु. ०-२-०

,, ,, भेट. गद्यपद्य. (१०८) १८६२ माणी हिंसा अने पाणी खोराक निषेधक. रु. ०-७-० (६)

१८६३ माणी हिंसा निषेधक. रु. ०-७-०

१८६४ मातर्पेगल पाठ. रु. ०-१-० (२०१)

१८६५ मात:स्मरणार्थ बुक. रु. ०-८-०

ण८६६ पायिश्वत संग्रह. माणेकचंद ग्रं. १८ (दि.) (८१)

१८६७ शियंकर चरित्र भाषान्तर. रु. ०-४-० (६)

१८६८ प्रियंकर नृप चरित्र (पाना) जिनसूरि कृत उपसर्गहर स्तोत्र महिमा गर्भित. रु. १-१२-० (६, ५०) प्रियंकर नृप चरित्र. जिनसूरि कृत. उपसर्ग स्तोत्र महिमा गर्भित. सं. १९७२ भेट.

> ,, ,, हिरालाल इंसराज जामनगर. ह. १-१२-० (३२)

१८६९ पृथ्वीचंद्र चरित्रम्. लब्धिसागर सुरि. (३२) इ. १९१२

१८७० पृथ्वीचंद्र चरित्रम्. रुपविजय गणि. इ. १९१८ (६, २२)

१८७१ ,, ,, सत्यराज गणि. (१४)

१८७२ पेमथी मुक्ति. चारित्र विजय. ह. ०-८-० (६०)

ममय]

249

विक

१८७३ प्रमेय रत्न कोष. श्री चंद्रमभ सूरि विरचित. पी. एच. डी. इत्युपाधि धारिण एल स्वाली संज्ञे युरोपखंडवासिना संज्ञोधित. (६)

१८७४ मेसिडन्ट. महावीर. (गार्फील्ड लखनार.) म. नरसिंहभाइ इश्वरभाइ पटेल. (गु. ५०६, ५०५)

१८७५ मो. ल्युमन अने आवश्यक सूत्र. विस्तारपूर्वक पत्रक युक्त. थोढोकज भाग छे. गु. (६३)

फ_

१८७६ फार्बस गुजराती सभाना इस्त पुस्तकोनी यादी. सं. १९७९ (५०७, ५०८, ५०९)

१८७७ फाहियान ओर हुसेनसंगकी भारत यात्रा. रु. १-४-० बौद्ध भारतना समयमां परित्राजक फाहियान तथा हु- सेनसंगका भ्रमण हत्तान्त पांचमी शताब्दिना हिंदनी धार्मिक अने सामाजिक स्थिति. (५०) अजैन.

१८७८ फेज्ञनका फीतुर फुलर्चंद अग्रवाल. (५१०, ५११) १८७९ फोटा. जिनवहुभजीना शाचीन पुस्तको विगेरेना. (५०)

ब.

१८८० वही साधु वंदना (जुओ देवचंद भा. २ वि. १)

१८८१ बत्रीस सूत्र दर्पण ज्ञानसंदर. सं. १९७४ ओसीआ तीर्थ मारवाड. रु. ०-३-० (६८, १२)

१८८२ बत्रीश बत्रीशी सटीक. रू. १-८-० (६)

१८८३ बंध स्वामित्व नामनो त्रीजो कर्म ग्रन्थ. इरिभद्र सूरि विर-चित व्याख्या सहित. पाचीन कर्म ग्रंथ. मू. पा. टी. सं. मूळपण जुदो आपेल छे. सं. १९७२ (१७) व्यान]

१५८

बिक

१८८४ ब्यान पारसनाथ. पहाड. शान्तिविजय कृत.

१८८५ बिल्मिद्र (संक्षिप्त सार) तथा बिल्मिद्र मूलरास. (जुओ अतिहासिक रास. संग्रह भा. २ जो.)

१८८६ वर्नियरकी भारत यात्रा. भा. १-२-३-४ इतर. सन १६५६-६८ ग्रुगल राज्यमेकी हुइ एक फ्रेन्च विद्वानकी भारत यात्राका वृत्तान्त. अंग्रेजीपरथी अनुवादक (५१२,५०)

१८८७ बलभद्र चरित्र. (प्रत) रु. ०-८-०

१८८८ बार व्रतनी टीप शास्त्री. रु. १-४-० (६)

,, ह. ०–२–० (६)

१८८९ बार व्रतनी टीपनो रास ज्ञानिवमलसूरि कृत. जंबुस्वामी-ना रासना भेगो छपायेल छे. जुओ. पं. दयाविमलजी जैन ग्रंथमाला नं. ११ मो. (३१६, ७३)

१८९० बारह भावना. हिन्दी. (५०)

१८९१ बार भावनानी सज्झाय. सकलचंदजी आध्याय कृत.
(जुओ श्लोका संग्रह. शास्त्री)

१८९२ बारेपासा सं. १९६३ बीजी आष्टति. हिन्दी. रु. ०-४-० (३६६)

१८९३ बाल रामायण नाटक मूल मात्रम्. राजशेखर प्रणीतम् प्र. गोविंददेव शास्त्री (५१३, ५०)

> ,, ,, भाषान्तर गुजराती भा क भद्रशं-कर. जयशंकर शास्त्री गुजराती पद्यवंघ मूळ नथी है. १-८-० सं. १९७२ (५१४, ५०)

१८९४ बाबीसपंथी ओर तेरापंथीयोसे पश्चावली, गु. (५०) १८९५ बालपोथी. (जैन शिक्षणमाळा.) आदृति बीजी. रू. •-१-६ (३३)

बाळबोध ो

१५९

बिद्धि

१८९६ बाळबोध चोवीशी. (शास्त्री) रु. ०-२-०

,, ,, गुजराती भेट. सं. १९६३ काव्य ,, ,, शास्त्री. रु. ०-१-० [(५१५)

१८९७ बाळबोध जैनधर्म, भा, १ लो. रु. ०-२-०

., भा. २ जो. रु. ०-२-० (६)

१८९८ बाळ भारत संस्कृत, रु, ३-४-० (६)

१८९९ बासिटिया. ९७ बोल, विचार यंत्र. रु. ०-१-० (३७)

१९०० बाहु जिन स्तवन. अने टबो (जुओ देवचंद्र भा. २ वि.१)

१९०१ बीजी जैन श्वेतांबर कोन्फरन्सनो रीपोर्ट. रू. ०-१२-० (२३५)

१९०२ बुद्ध चरित्र, रु, ०-८-० (६)

१९०२ बुद्ध महावीर अवतार लेला लेखमाळा. लेख नं. ३-४ रू. ०-८-० ले. किशोरलाल घनश्यामलाल मश्रहलाल (५१६, ५१७, ९५)

१९०४ बुद्धिपकाश, गायन संग्रह. ले. बुद्धिसागर सूरि सं. १९६० रु. ०-३-० प्र. मणिलाल वाहीलाल. (१९१-५१९)

१९०५ बुद्धिप्रकाश, गायन संग्रह. भा. १ छो. अछभ्य. रू. ०-२-० (१९१)

१९०६ ,, ,, भा. २ जो. रु. ०-२-० संभव-जिन मंडली. (५२०)

१९०७ बुद्धिसागर सगराम सोनी कृत. (२२)

१९०८ बुद्धिसागर सूरिना भाषणतुं अंग्रेजी भाषान्तर. वडोदरा. (५२१)

१९०९ बुद्धिसागर सूरि अने तेपतुं जीवन अने गुर्जर साहित्य

वे]

१६०

वंप

सं. १९८० ले. मणिलाल मोहनलाल, पादराकर, (५२२)

१९१० वे अष्टक प्रकरण } हिरिभद्रादि कृत. रु. ०-५-० १९११ वे षट्दरीन समुच्यय ∫ (२८, १६)

१९१२ वे प्रतिक्रमणना छुटा अर्थ, रु. ०-२-० (६)

१९१३ वे प्रतिक्रमण सूत्र अर्थ सहित. रु. ०-५-० (६)

१९१४ वे प्रतिक्रमण सूत्र (गुजराती) रु. ०-४-० (६)

,, ,, ,, रु. ०–२–६ (६)

,, ,, (शास्त्री) रु. ०-४-६ (६)

,, ,, रु, ०—२-० (६)

१९१५ बोध दिनकर. हुकमम्रुनि. (२१)

१९१६ बंब उर्य हेतु त्रिभंगी प्रकरण (पाना) नै. ६६ पं. इर्षक् लविरचित. (लक्ष्मीसागर शिष्य) विमलविजयगणिनी टीका साथे. टीका सं. १६०२ सं. १९७४ (१७, १०)

१९१७ बंध छत्रिशी. (२८, १६)

१९१८ बंध षट्त्रिंशिका सटीक. वानर्षिगणि कृत. अवचूरि स-हित. रत्न. १२ सं. १९६९ रत्न. १२ निर्णयसागर. (१७) रु. ०-३-०

बंध षट्त्रिशिका सटीक की. नथी. (३३, ५०)

१९१९ वंब स्वामित्व नामा प्रथम कर्मग्रन्थ. (जुओ प्रकरण रत्ना-कर भा. ४ थो.)

१९२० बंध हेतु प्रकरणः जघःयोत्कृष्ट पद एक कालं गुणस्थानकेषु
'' बंध हेतु प्रकरण '' मू. पा. टी. सं. (नं. ६६ ना
भेगु छपायुं छे) सं. १९७४ (१७, १०)

वंध }

१६१

[बृहत्से

१९२१ बंधहेतृदय त्रिभंगी सावचूरि

१९२२ बंधोदयसत्ता प्रकरण. विमलविजयगणि. रतन. ६६ ना भेगुं छे. सं. १९७४ (१७, १०) [कृत. (५२३)

१९२३ ब्रह्मचर्य इतर भेट सं. १९७२ भोगीलाल पनसुखराम

१९२४ ब्रह्मचर्य दिग्दर्शन विजयधर्मसूरि. (१४,४७)

१९२५ ब्रह्म व्यक्तवर्तिनी कथा गद्य. (जुओ चरित्र संग्रह)

१९२६ बृहद् द्रव्यसंग्रह नेमिचंद्राचार्य रु. २-४-० (४५१) दि.

१९२७ बृहत्सूत्र कल्पभाषा वेदकल्प छेद सूत्र शुद्ध मूळ, शब्दार्थ भावार्थसिहत रु. १-४-० (१३५,१२)

१९२८ बृहत्संघयणी त्रेलोक्य दीपिका. (जुओ प्रकरण छघु सङ्कर)

१९२९ बृहत्संग्रहणी भाषान्तर प्रा. सं. (१२)

१९३० बृहदहेमप्रभाव्याकरणम् (११)

१९३१ ब्रह्मचर्यव्रत सं. १९६५ पृ० २१६ रु. ०-३-० (३३)

१९३२ बृहत्कथा मंत्ररी क्षेमेन्द्र विरचिता रु. ३-४-० (५०,१०)

१९३३ बृहदालोयण (लालाजी कृत) रु. ०-४-०

१९३४ ,, रणजीतसिंहजी कृत. र. २-६-० (८२)

१९३५ बृहत्पर्युषणा निर्णय पूर्वाध प्रथम दूसराखंड कर्ता मणिसागर महाराज भेट (५२६,५२७,५२८)

१९३६ बृहत्संघयणी मलयगिरि विरचित द्वतियुता जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण संयन्था सं. १९७३ रु. २-८-० रत्न ४७ (१७,१०)

१९३७ बृहत्संघयणी सटीक (पाना) रु. १-१२-०

,, (५০)

१९३८ बृहत्क्षेत्रसमास जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण निर्मित (मलय गि-रिनी टीका सहित) सं. १९७७ अही द्वीपनो अधिकार २१ भक्तः]

१६२

[भक्ति

अने तेमां आवेला सूर्य चंद्र अने अंतर्द्वापनो अधिकार छे. गाया प्रमाण ६३७ छे. अति उत्कट भूगोळनो विषय छे. (संस्कृत) (६)

भ.

१९३९ भक्त परिज्ञा (पयना) मूळ. (जुओ चडसरण आदिचार पयना)

१९४० भक्तामर (दि.) (जुओ काव्यमाळा. गुच्छक ७मो भाग) भक्तामर टीका रु. ०-८-० (६)

> भक्तामर संस्कृत टीका भाषान्तर हिन्दी पंडितावतंस श्री सिद्धचंद्र प्रणीत (दि.) टीका सहित तथा कवि हेमराज विरचिता हिन्दुस्थानी भाषामां दोहो चोपाइ बालावबोध युक्त (७)

> भक्तामर स्तोत्र श्रीवीर, नेमि अने सरस्वती एम त्रण स्तुति गर्भित सम्पादक धर्मसिंह कृत (जुओ स्तोत्र रत्नाकर प्रथमभाग सटीक)

भक्तामर स्मरण रु. ०-२-६ (६)

भक्तामर स्तोत्र रु. ०-२-० (६)

भक्तामर स्तोत्र टीका अर्थ सहित रु. ०-८-० (६)

भक्तामर स्तोत्र सटीक (प्रत) रु. ३-०-०

,, ,, सयंत्र विवेचन युक्त गुजराती (५०)

,, ,, ,, मूळ सह गुजराती (५०) (गद्यपद्यमां भाषान्तर छे श्वे० आश्नायनुं ४८ काव्यनुं) (५७०)

१९४१ भक्तिभावना प्रकाश (५३१, ५०) [(५३२). १९४२ भक्तिमार्ग प्रकाश गु० गंभीरविजयजीगणि विरचित.

```
मकि ]
```

१६३

प्रशंभ

१९४३. भक्तिमाला गु. (५३३, ५३४, ५०)

१९४४ भगवतीसूत्र (भा. १ लो) मूळ. सुधर्मास्वामी टीका अभय-देवसूरि रु. ३-४-० (२८.१६)

,, भा. २ जो. रु. ३-८-० (२८, १६) ,, भा. ३ जो. रु. ३-४-० (२८, १६)

१९४५ भजेन पंडली द्वे. नं. ४ (जुओ आर्यमतलीला)

१९४६ भगवती सूत्रम् (न्यारूया प्रज्ञप्ति) सुधर्मा स्वामी प्रणीत अभयदेवसूरि विरचित विवरण सहित पंचमांगे प्रथमखंड समस्तनी किंमत रु. ४५-०-० (५३५, २०९)

> वृतियादि (५०) "

भाषान्तर गुजराती (५०)

सवृति बाबु० (२४, ५०)

भा. १-२-३ (५०)

भगवती सूत्र मूळ टीका अर्थ युक्त. (पाना)

भगवती सूत्र भा. १ लो मूल कर्ता सुधर्मा. रु. ३-४-० सं. १९७४ (२८)

भा. २ जो. .. रु. ३-८-० सं. १९७६

,, भा. ३ जो. ,, रु. ३-४-० सं. १९७७ (२८)

" भा. २ जो. पंडित बहेचरदास. (५२४)

१९४७ भजन पचासा. रु. ०–२–०

१९४८ भजन इकीसा हिन्दी पुस्तक सं. ६ छे. जवाहरळाळ जेन. (५३७, २२८)

१९४९ भजन पचिसी (५०)

१९५० भजन संग्रह, रु. ०-८-० पु. २०० (१५)

१९५१ भजन संग्रह. भा. १ छो. ह. ०-४-० (१५)

मरटेक भवन] १६४ .. भा. २ जो. रु. ०-८-० प्र. ३३६ (१५) .. भा. ३ जो. रु. ०-८-० प्र. २१५ (१५) ., भा. ४ थो. रु. ०-८-० प्र. ३०४ (१५) .. भा. ५ मो. तथा ज्ञान दीपिका. रु. ०-६-० 33 पु. १९० (१५) ,, भा. ६ डो. रु. ०-१२-० पु. २०८ (१५) .. भा. ७ मो. रु. ०-८- प. १५६ (१५) " १९५२ भजन संग्रह भा. ८ मो. पृ. ९७६ रु. ३-०-० (१५) भा. ९ मो. प. ५८० रु. १-८-• (१५) भा. १० मो. प. २०० रु. १-०-० (१५) भा. ११ मो प. १८० रु. १-०-० (१५) १९५३ भजन मंजुषा. रु. ०-१-० १९५४ भट्टारक मिमांसा. रु. ०-२-० १९५५ भक्ति परिज्ञान (जुओ दशपयत्राः) १९५६ भद्रकाळीनो भोग. रु. ०-२-० सं. १९७६ (१०८) १९५७ भद्रबाहु चरित चर्चा. ले. बालचंद्राचार्य. प. यतिजी श्री माणेकचंदजी. हिन्दी. (२०३) १९५८ भद्रबाह संहिता. भाषान्तर त्रिकाळदर्शी श्री भद्रबाहु स्वा-मि प्रणिता. ह. १-०-० सं. १९५९ (७) संस्कृत. (पाना) रु. २-१२-० (६) १९५९ भरटक द्वात्रिंशिका. रु. ३-०-० (१४, ४७) किंमत नथी. खुलासा अने नोट साथे पाठान्तर साथे बाय.

Leipzig. Seeburgstr. 53.

In commission bee Market & Petters

Johannes-Hertel

```
भरती
                        १६५
                                             भावना
१९६० भरत बाहुबलनो स्रोको ( जुओ स्रोका संग्रह. )
१९६१ भरत बाहुबिल चरित्र. रु. १-६-० ( ५३९, १ )
१९६२ भरत बाहुबलि चरित्र. रु. ०-१-६ ( ६ )
                   रास. ( जुओ आनंद काव्य महोद्धि. मौ.
१९६३
          ३ ज़ं. )
१९६४ भरतेश्वर बाहुबिक दृत्ति भाषान्तर मुळ संस्कृत गद्यात्म
          उपरथी. रू. २-८-० ( आ. बी. १७९ )
       भरतेश्वर बाहुबली दृत्तिनुं गुर्जर भाषान्तर. (३१, १७)
१९६५ भर्म विद्वरत्न जितमलली स्वामिकृत. ( तेरापंथी ) (५४०,
                                        िभा. ३ जो )
          98 )
१९६६ भव वैराग्य शतक टवा सहित ( जुओ प्रकरण रत्नाकर
१९६७ भविसयत्त कहा. धनपाल विरचित. इ. १९२३ की. रु.
१९६८ भारत राज्य मंडळ. जैनेतर [६-०-० (१३८)
१९६९ भाव कुलकम् ( जुओ कुलक संग्रह १७ वाळो )
१९७० भावना बोध रायचंद. रु. १-०-० ( ३२५ )
१९७१ भावी चोवीसी पैकी पद्म नाभनं स्तवन ( जुओ देवचंद्र
          भा. २ वि. १)
१९७२ भाषा चंद्रिका डीवाचो फाटी गयो छे. ( ५० )
१९७३ भाट्ट भाषा प्रकाश. ( ५० ) अजैन
१९७४ भातृचंदजी विरह. ए. ६४ ( भेट ) सं. १९७२ ( १०८ )
१९७५ भारत सहकार शिक्षण पद्य काव्य बुद्धिसागरसूरि. रू.
          ०-१०-० सं. १९७५
१९७६ भाव आवश्यक गुजराती. रु. ०-४-०
१९७७ भावनगर आत्मानंद सभानो रीपोर्ट. रु. ०-२-० (१७)
१९७८ भावना बोध राज्यचंद्रपणीत बार भावनानुं स्वरूप सं.
          १९६३ रु. ०-४-० ( ४५१ ) [ १९७८ ( ५४१ )
```

भावना] १६६ [भीमज्ञान

१९७९ भावना भूषण मुनि विनय विजयजी की नथी. सं. १९८० भावना शतक. गुजराती मुळ भावार्थ अने विवेचन साथे शतावधानी पंडित मुनिराज श्री रत्नचंद्रजी (५४२)

१९८१ भावना संग्रह सोळ भावनानुं स्वरूप तथा दश्चविध यतिध-र्मनुं स्वरूप, रु. ०-८-० की. नथी. (२०९)

१९८२ भावना स्वरूप. रु. ०-४-०

,, ,, ह. ०-१-० यतीन्द्रविजय अलभ्य. १९८३ भाव परिज्ञान विगेरे (५०) [सं. १९६४ (३०) १९८४ भाव प्रकरणम् विमल गणि (विजय) विरचितम् (ज्ञानबिंदु नं. २) मृल्य मनन (५४३)

१९८५ भाव प्रकरण सटीक (पाना) विमल्लगणि विरचित रत्न नवम्रं. स्वोपन्न अवचूरि सहित सं. १९६८ सं. १६२३ ना पोस वदी ५ ना रोज अवचूर्णि आनंदवि-मलसूरि शिष्य विजयविमलेकरी मूळ पाकृत अवचूरि संस्कृतमां छे. उपन्नमादि भावोना मूळ तथा उत्तरभेदनुं निरुपण कर्यु छे अलभ्य (१७,१०) [(दि.)(८१)

१९८६ भाव संग्रहादि (माणेकचंद नं. २०) संशोधक पन्नालाल १९८७ भाषा चंद्रोदय हिन्दी भाषाका व्याकरण इ. सन १८६७ (५४४)

१९८८ भाषा रहस्य संस्कृत यशोविजयजी कृत रु. २-० (११) १९८९ भाष्यत्रय सार्थ शास्त्री रु. ०-६-० (३३)

,, ,, गुजराती रु. ०-४-० (३३)

१९९० भीम चोपाइ (जुओ ऐतिहासिकराससंग्रह भा. १ छो) १९९१ भीम ज्ञान द्वात्रिशिका रु. ०-६-०

,, इन्दी रु. ०-०-६ (५४५,५०) १९९२ भीमज्ञान त्रिंशिका रु. ०-६-० सं. १९६६ (५४५) स्वन]

१६७

िमयण

१९९३ भ्रुवन प्रदीपक भाषान्तर संस्कृत हिन्दी पद्मप्रभस्रि इ. ०-६-० (५४६)

१९९४ भ्रुवनभानु केवलीनुं चरित्र (पाना) रु. २-१२-०

. १९९५ ,, ,, ,, भाषान्तर रु. ०-६-०

१९९६ भ्रुवनभानु केवलीनो रास उदयरत्न कृत २ सं. १७६९ रु. १-०-० रु. १९२७ (प्र. ५४७)

१९९७ भूगोळ फरवानुं खंडन (याने) पृथ्वी स्थिर प्रकाश भा. १ लो. शा. गंभीर शामजी विरचित. (३८८, ६३, ५४८)

१९९८ भोज प्रबंध. रत्नमंदिरगणिविरचित पं. भगवानदास. सं. १९७८ (५५०)

१९९९ भोज व्याकरणम् विनयसागरउपाध्याय कृत. भेट. (५५१)

म.

२००० म्रुनिपति राजर्षि चरितम् श्री जंबूकवि विरचितम् सं. १९७८ (३७२,६३)

२००१ मणिमाला मणि विजयजी कृत. रु. ०-२-६ (५५२)

२००२ मत मीमांसा. संग्राहक कमल विजय सूरि संयोजक लिख विजय. (५५३)

२००३ मनहर माधुर्य. रु. ८-१-६

२००४ मनहर माला मुनि माणेक. (१७८)

,, तथा कुसुममाला, रु. ०-४-० (६)

२००५ मनुष्य कर्तन्य रु. ०-१-० (६) जैनेतर

२००६ मनुष्याहार, रु, ०-२-० (६) अजैन [(२१)

२००७ मनोर्थ भावना श्रावकनामनोरथनुं वर्णन हुकम मुनि.

२००८ मयणरेहा चउपाइ भेट. (४३)

```
मयण ]
                        १६८
                                               [ महा
 २००९ मयणरेहा महासतीनो रास. ( जुओ करकंडु आदिचार
          पत्येक बुद्धनो रास )
                                तथा कान्हद कठीयारानो
          रास मानसागरगणिविरचित. (७, ५०)
 २०१० मयासागरजीनुं जीवनचरित्र (जुओ सुखसागर गुरुगीता)
२०११ मरण विभक्ति.
 २०१२ पलयसुन्दरी चरित्र मूळ कर्ता जयतिलकसूरि (पंदरमो
          सैको ) सं० ग्रं. नं. ३४ रु. ०-७-० (१६)
                   संस्कृत (पाना) रु. ४-०-०
                 पत (१६)
२०१३ मलयमुन्दरी रु. ०-१०-० (१६)
              चरित्र जयतिलकसूरि विरचित पाना रु. ०-७-०
                    भाषान्तर रु. ०-१०-०
              भाषान्तर पं. केसरविजय शीयल प्रस्तावे
                       ह. १-४-० (२५)
                     पृथमावृति केसरविजय रु. ०-१०-०
२०१४ मिल्लनाथ चरित्र महाकान्य सं. विनयचंद्र सं. १९६८
               रु. ३-०-० ग्रं. नं. २९ (१४, ४७)
               ,, भाषान्तर रु. १-८-० गु. (५०, १२)
२०१५ मस्तरामजी बोधवचनमाला रु. ०-१-० (६)
२०१६ महाजनवंश मुक्ताविस रु. १-८-० सं. १९६७ (५५४.
२०१७ महापचरुखाण (जुओ दशपयन्ना)
२०१८ महाबल मलयसुंदरीनो रास पंडित कान्तिबिजयजीकृत
         सं. १९७५ रु. १-०-० (५५६)
२०१९ महावाक्य रत्नावली विगेरे (५०)
```

महा]

१६९

[महाबीर

२०२० महाविद्या विदंबनम् भट्टवादीन्द्र कृत भुवनसुन्द्रसूरि टीकायुक्त रु. २-८-० (१३८)

२०२१ महाबीर चरित्र (मागर्था) रु. ०-८-० (६)

२०२२ महाबीर चरित्र गुजराती रु. ०-८-० (६)

२०२३ महावीर चरित्रम् नाटक (भवभूतिकृत) वीरराघवकृत टीका सहित. (दि.) ५०

,, ,, (दि.) अञ्चग कवि कृत. (५०)

२०८४ महावीर चरियं ने िमंद्र सूरि. ग्रं. रत्न ५८ सं. १९७३ (१७)

२०२५ महावीर जिन स्तवन. (जुओ प्रकरण रत्नाकर भा. ४ थो)

२०२६ महावीर जिन स्तुति २७६ विषयो रूप दोढसो गाथातुं हुंडीतुं स्तवन यशो विजयजीतुं (जुओ प्रकरण रत्ना-कर भा. ३ जो.)

२०२७ महावीर जीवन विस्तार प्रयोजक. भीमजी हरजीवन कर्ता, रा. सुशील रु. १-८-० सं. १९७७ इ. २-०-० (४९९, ६., ६५८)

२०२८ महाबीर जीवन विचार. (५०)

२०२९ महावीरना दश श्रावको रु. १-४-० (५५९)

२०३० महावीरनां वचनो रु. ०-६-० (६)

२०३१ महावीर पूजा (अपरनाम न्याय कुसुमांजली) रु. ०-४-०

२०३२ महावीर पश्च पंच कल्याणक पूजा रु. ०-२-० (६)

२०३३ महावीर पंच कल्याणक पूजादि संग्रह पद्मविजय, नेपि-विजय शिष्य, भेट, (११)

२०३४ महाबीर भक्त मणिभद्र रु. १-८-० (६)

२०३५ महावीर शासन रु. ०-६-० सं. १९७८ हिन्दी छलित विजयजी (८८) महा] १७०

[महा

- २०३६ महावीर समय निर्णय (साहित्य संशोधक खंड २ अंक २ मां छे) (८८)
- २०३७ पहाबीर स्तव संस्कृत (पाना) रु. ०-६-०
- २०३८ महाबीर स्तव. संयम श्रेणि गर्भित. उत्तमविजयगणिविरचित इ. १९२२ रु. ०-४-० (४३९)
- २०३९ महावीर स्तव, तथा वर्षमान स्तोत्ररूथ पार्श्वजिन स्तोत्र,
 नेमि स्तवन, विहरमान स्तव, एकाक्षर विचित्र काव्य,
 षट्स्रोकी, चतुःश्लोकी स्तुति पार्श्वचंद्रकविकृत (जुओ
 स्तोत्र रत्नाकर भाग द्वितीय सटीक)
- २०४० महाबीर स्तुति विगेरे (प्र. २९६)
- २०४१ महावीरस्वामीना दश श्रावको सं. १९७९ (आनंदादि दश श्रावकोनो अधिकार रु. १-४-० (५५९)
- २०४२ महावीरस्वामीना पांच वधावा (७)
- २०४३ महावीर स्वामीना २७ भवनुं रतवन विगेरे रु. ०-४-० (६)
- २०४४ महावीरस्त्रामी स्तोत्रम् जिनवञ्चभसूरि कृत (जुओ कान्य-माला गु. ७ वीजी) ूँ माला गु. ७ वीजी)
 - ,, , (हेपचंद्राचार्य कृत) (जुओ काव्य-,, द्वितीयम् हेपचंद्राचार्य कृत
- २०४५ महावीरस्वामीना पंचकल्याणकर्तु अने सत्तावीश्वभवतुं स्तवन तथा चोढाळीयुं त्रण ढाळो विगेरे. सं. १९७७ रु. ०-३-० (५६२)
- २०४६ महाबीरस्वामीनुं चरित्र तथा तपागच्छनी पट्टावछी प्र. श्वा. मगनलाल हठीसंग रु. ०-८-० सं. १९५९ (१७९)
- २०४७ महासती चंदनबाला आष्ट्रति बीजी नं, ३ सं, १९७९ रू, ०-३-० (५५९)

महा]

१७१

[माणेक

२०४८ महासती शीछसुन्दरीका रास. धनचंद्र सूरि सं. १९३२ अलभ्य (३७)

२०४९ महासती सुरसुंदरी रु. ०-३-० (५६०) ,, ,, रु. ०-३-० (१८२)

२०५० महिला महोदय जैनपत्रना १६ मा वर्षनी मेट (४४,५६१)

२०५१ महीकांठा डीरेक्टरी सादरा. (३२३)

२०५२ महीकांठा मेन्युअल सादरा (३२३)

२०५३ महीकांठा सिलेक्षन वोरा. सांकलचंद रतनचंद वकील अमदावाद. अजैन

२०५४ महीपाळ चरित्र संस्कृत (पाना) चारित्रसुंदरगणि विरचित रु. १-४-० (३२, ५०)

२०५५ महीपाळ चरित्र (६) मेट.

िसं. १९६८

२०५६ महेन्द्र स्वर्गारोह. न्यायविजयविरचित (४६४, १४)

,, ,, न्याय विजय (न्याय तीर्थ रु. ०-४-• (१४)

२०५७ मागधी व्याकरण दुंढीका टीका तथा अर्थ सहित पूर्वार्ध रु. ३-८-० (३७)

२०५८ मांगलिक संग्रह सं. १९७२ (पद्य स्तवनादि) रु. ०-३-० २०५९ मांडवगढ मंत्री अथवा पेथड कुमारका परिचय रु. ०-४-०

(५६३,५०,१४९)

२०६० माणसनुं कर्तव्य (३२३, ५६४) अजैन.

२०६१ माणिभद्र तीर्थनुं वर्णन रु. ०-१-० प्रसिद्ध कर्ता. जा. हरीलाळ गलाबचंद आगलोड उत्तर गुजरात (७१)

२०६२ माणिभद्र विगेरे छंदोनो संग्रह रू. ०-४-०

२०६३ माणेकमाला अपरनाम हितचितिका शिरपुरनो संघ येट सं. १९६३ (५६५)

माम]

१७२

्र मिपति

२०६४ मानतुंग मानवतींनो रास मानतुंग राजा अने मानवती राणीनो रास रु. ०-८-० (१२९,६३)

२०६५ मानवधर्म संहिता शान्तिविजय रु. २-०-•

२०६६ पारी यात्रा, रु, ०-८-०

२०६७ मार्गपरि शुद्धि यशोविजय प्रणीत (१८)

२०६८ मार्गानुसारीना १० काव्य (जुओ प्रकरण रत्नाकर भा. ३जो)

२०६९ पित्र परीक्षा, हुकम मुनि उपदेश (२१)

२०७० मित्रमैत्री (मित्रधर्म) बुद्धिसागर सूरि सं. १९७३ ग्रं. नं. ४३ रु. ०-८-० (१५,५८ थी ६२, १८४)

२०७१ मिथ्यात्व विध्वंस. हुकम म्रुनि (२१)

२०७२ मीमांसा श्लोक वार्तिकम् कुमारिलभट्टकृत काश्ची. सं. १९५५ (५६६) अजैन

२०७३ मुक्ति कुमुद्वंद्र नाटक श्री पद्मचंद्रसूरितु यश्चव्द कुत ग्रंथ नं. ८ (१४,५०)

२०७४ मुक्तिमार्ग दर्शन याने धर्ममाप्तिना हेतुओ भेट (६७)
,, ,, याने भक्तिमाळा पूर्वाचार्यानां बनावेकां स्तवनादिनो संग्रह रु. ०-८-० (३०)

२०७५ मुक्ति सुंदरीनो स्वयंवर सं. १९६४ रु. ०-३- (१४३)

२०७६ मुडेटीना चहुवाणो ले. गंढवी घीरजी पृ. १ थी ३९ (जुओ फार्बस गुजराती सभाना हस्त लिखित पुस्तकोनी यादी अक नं. ४८-१. ३) जैनेतर

२०७७ म्रनिनाम माला. की. नथी. (५६७)

२०७८ मुनिपति चरित्र संस्कृत. (पाना) रु. २-८-०

" を、0-2-E

२०७९ मुनिपति चरित्र भाषान्तर. रु. ०-६-० (१७९)

1

१७३

िमेध

,, नो शस ग्रुनि धर्मविजयजीना शिष्य रत्नविज-यजीकृत. रु. ०-१०-० (५६८)

२०८० मुनिराज श्री अमरविजयजीनां चोढाळीयां. रु. ०-१-०

२०८१ द्विन संमेछन हिन्दी छे. अमृतसर निवासी पंडित हीराछाड़ भर्मा म. अजमेर निवासी शेट हीराचंद सचेती तथा छाछा चुन्नीछाड दुग्गड अमरतसर निवासी. (३१९, ५६९, ५७०)

२०८२ मुलतान शास्त्रार्थ गु. अंबालाल जेटालाल. (५७१, ५०) २०८३ मुरलो. रु. ०-६-० (५७२)

२०८४ मूर्ल शतकम्. मूरखना सो दुर्गणतुं वर्णन छे. (५०) २०८५ मूर्ति पंडन. रु. ०-४-०

,, प्रश्नोत्तर, रु, ०-१२-०

२०८६ मूलराज सोलंकी. रु. २-०-० अजैन

२०८७ मेघ महोदय वर्ष प्रबोध हिन्दी भाषानुवाद पंडित मेघ वि-जय गणि अनुवादक पं. भगवानदास जैन (विशेष नोंधमां जुओ (४३)

२०८८ मेघद्त समझ्या लेख. रु. ०-२-० नं, २४ (१७)

२०८९ मेंघदूत काव्यं समश्लोकी भाषान्तर ग्र. कालिदास कृत. भाषा क. किलाभाइ घनश्याम. रु. १-४-० (५०)

> ,, सटीक ४२७५ मङ्डीनायकृतटीका (संजी-विनी) नाम्नि. इ. ०-६-० (१०. ५०)

> ,, इंग्लीश नोट सहित. ४२७६ डेकन कोलेज रु. १-४-० (५७४) जैनेतर

२०९० मेघद्त समझ्या पूर्ति काव्यं. २०९१ मेघद्त संजीवनि टीका सहित.

```
िमोक्ष
मेघ ]
                       १७४
२०९२ मेघमाळा अर्थ सहित. (पाना ) विजयमभ सूरि कृत. मूल
         तथा भाषान्तर, रु. ०-५-० ( ७ )
२०९३ मेर त्रयोदशी कथा (पाना ) रु. ०-१-० (५०)
                        ₹, o-8-o ( १७ )
                 "
          55
                        म्रक्तिविमछकृत. नं. १६ (७३,
                 "
          १९७)
२०९४ मेरे विचार नं. २ पंन्यास सोहनविजय. रु. ०-१-०
                                           [(<<)
२०९५ मेजर नामो. ( ६८ )
२०९६ मोटी अध्यात्म गीता विनय विजयजी कृत. ( जुओ आत्म-
                               ि ५८ थी ६२, १८४)
          हितो पर्देश )
२०९७ मोटं गुजरात विजापुर वृत्तान्त. बुद्धिसागर सुरि. (१५,
२०९८ मोतीशानां ढांळीयां. रु. ०-१-०
२०९९ मोहनलालजीनां भैंडारनुं सूचिपत्र. रु. ०-४-० सैं.
          १९७५ (१२)
२१०० मोहनचरित्र मूल अने भाषान्तर. गु. रु. २- -० (५७५,
          200)
२१०१ मोह पराजय नाटक यशपालकृत. रु. २-०-० (१३८,
२१०२ मोहराज पराजय नाटक, संस्कृत, रु. २-०-०
२१०३ मोहराय पराजयम् यज्ञपालमंत्री विरचित. (१३८)
२१०४ मोक्ष पद सोपान. रु. ०-१२-० चौद ग्रुणस्थाननुं स्वरूप.
२१०५ मोक्ष मार्ग प्रकाश भाषान्तर सहित, रु. २-८-० [(१७)
२१०६ मोक्ष माला. रायचंद्र कृत. रु. ०-१२-० (३२५, ४५१)
२१०७ मोक्षमाला भा. १ छो. रायचंद्र कृत. रु. ०-८-०
          ( ०-१२-० ) ( ५७६, ४५१ )
                भा. २ जो. कींमत नथी. ( ४५१, ५० )
२१०८ ,,
```

मीन]

१७५

मृग

२१०९ मीन एकादशी कथा संस्कृत. (पाना) रु. ०-२-० (५०)

२११० मौन एकादशीना देव वंदनो तथा सम्रायो. रु. ०-२-६ २१११ मौन एकादशीनं गणणं. रु. ०-१-० (१८१, ५०)

> ,, ,, दोढसो कल्याणकनुं गणणुं, रु. ०-१-० आद्य जैन धर्म पर्वर्तक सभा. (१८१, ३८४) ,, ,, गणणुं अने स्तवनो विगेरे. रु. ०-१-० (१८१, ५०)

२११२ मंगळ कलकानो रास पुण्यफळ महात्म्य मय. रु ०-८-० (७, ५०)

२११३ मंडन ग्रंथ संग्रह ग्रं. नं. १७ मण्डन ग्रन्थाङ्क. नं. ५ रू.
०-१२-० काव्य मंडनं. २ सं. १२५० छे. सं.१५०४
गृङ्गार मंडनं छेखन सं. १५०४ छेखक पंडित विनायकदास पंडित. (५७७, २६) जैनेतर

२११४ मंडल प्रकरण संपादक मुनिसंपतिवजय ग्रं. नं. ७३ सं. १९७८ रु. ०-४-० (१७)

२११५ मंत्रराज कल्प महोदधि अर्थात् श्री पंच परमेष्टि स्तोत्र नम-स्कार व्याख्या. ले. जयदयालुशर्मा जिन कीर्ति स्रिर महाराज कृत. रु. ३-८-० (५७९,९५)

२११६ मंत्रराज गुणकल्प महोदिश भाषान्तर सह हिन्दी. (५०)

२११७ मंदसोर उत्पत्ति. भेट. (३२६) ऐतिहासिक

२११८ मृगांक चरित्र आत्मवीर ग्रंथांक नं. ५ ऋदिचन्द्र पणीत. (३७३, ६०, ५८०)

२११९ ग्रुगावती चरित्र संस्कृत (पाना) रु. २-१२-० २१२० ग्रुगसुंदरी कथा पद्म विजयजी शोधित. सं. १९७५ (५८१) ,, ,, संस्कृत. (५८१, ५०) स्या]

३७६

यशो

२१२१ मृगावती चरित्र मलघारी श्री देवपभसूरि. रु. २-१२-० २१२२ मृगांकलेखा हिंी. रु. ०-६-० [(३२, ५०) २१२३ मृत्यु महोत्सव (जुओ आत्महित बोध) २१२४ म्हारी यात्रा. (लेखक, प. ५८२)

य.

२१२५ यति लक्षण समुचय (यशो विजयजी कृत ग्रंथमाळामां छपायो छे. पांचमे नंबरे) सं. १९६५ साधुओना सात लक्षणोतुं विवेचन छे (संस्कृत) (६,१०)

२१२६ यति समालोचना गु. अर्थात् यति सुधारा संबंधी विचार पुस्तक पहेलुं. (५८३, ५०)

२१२७ यन्त्रराजाडेयं श्री महेन्द्रसूरिविरचित श्री मलयेन्दु सूरि कृत टीका सहित. इ. १८८३ रु. १–५–० (५८४)

२१२८ यश विलासादि पद संग्रह श्री यशोविनय, विनयविजय, ज्ञानसारजी विरचित्र सं. १९५८ (७, ९५)

२१२९ यशस्तिलक चपू. श्री सोमदेवसूरिविरचितं. श्रुतसागर सूरिकृत. व्याख्या समेत पूर्वखंड रु. ३-१२-० (६,१०)

२१३० यग्नस्तिलक उत्तरार्थ पूर्ण श्री सोमदेवसूरि विरचित सागर-सूरिकृत टीका युक्त रु. २-१२-० (६,१०)

२१३१ यशोधर चरित्र भाषान्तर (दि.) रु. ०-६-० (भा० क० ५८५, प० २३३)

,, ,, संस्कृत (पाना) रु. २–०–० ,, ,, ,, वादि राजसूरि मं. नं. ५ रु. ०–८-० इ. स. १९१२ (५८६,५८७) यशा ।

र ७७

२१३२ यशो ब्रह्म नाटक धनविजय रु. ०-६-० (५८८)

२१३३ यशोभद्रसुरि (संक्षिप्त सार) तथा यशोभद्रसुरि (मुळ रास) (जुओ ऐतिहासिक रास संग्रह भा. २ जो).

२१३४ यशोभः सूरि चरित्र. हे. हिलतित्रवनी रु. ०-२-० (66. 468)

२१३५ (श्रीपट्) यज्ञोविजयजी रु. ०-४-० कर्ता. मोहनलाल दलीचंद देसाइ इ. १९१० (अंग्रेजी) यशोविजयजीनी कतियो निगरे मेघजी हीरजी कं. पायधुनी सुंबई

२१३६ यशोविजयजी ग्रंथमाला. (सभा.) रु. १-०-० प्रति (६)

तेमां

१ अध्यात्मसार

६ नय रहस्य

२ देवधर्म परीक्षा

७ नय प्रदीप

३ अध्यात्मोपनिषद

८ नयोपदेश सावचृरि

४ अध्यात्मिक मत खंडन ९ जैन तर्क परिभाषा

५ यति लक्षण सम्रचय

१० ज्ञाननिबंध

२१३७ यश्लोविजयजीनुं जीवन अने तेनुं गुजराती साहित्य. ले. बद्धिसागर गुजराती चोथी साहित्य परिषद्भां रज् थ-येल निवंध. रू. ०-३-० (१५, ५८ यी ६२, १८४. 40)

२१३८ यशोविजयजीनो कागल तेमां दिगंबर अने हुंढीआओने शिखामणने उपदेश छे. (जुत्रो पकरण रत्नाकर भा.

३ जो.) हि. ०−४−०

२१३९ यशोविजयजी दिरचित, चोवीशी, भावार्थ विवेचन साथे.

इकि]

१७८

योग

यभोविजयजी विरचित चोवीसी. भावार्थ विवेचन साये. रु. ०-३-०

,, ,, प्राचीन स्तवनो १२५, १५०, ३५० गाथाओना स्तवनो रु. १-०-०

२१४० युक्ति मकाशः स्याद्वाद कलिका, अष्टक संस्कृतः टीका स-हितः (कर्ता पद्मसागर गणि) रु. ०-८-० त्रण ग्रंथः (२२)

२१४१ युक्तानुशासनम्, समन्तभद्राचार्य कृत, ग्रं. नं. १५ (दि०)(८१)

२१४२ युगादि जिन स्तवन. (जुओ प्रकरण रत्नाकर भा. ४ औ.)

२१४३ युगादि देशना भाषान्तर, सोममंडनगणि कृत. पांच उल्ला-समां आवेली अनेक कथाओ तेमज अमुल्य उपदेश. रू. ०-८-० सं. १९७२ (६)

२१४४ ,, ,, संस्कृत. (पाना) रु. १-८-० (५०)

२१४५ योगतत्त्व अथवा श्री हेमचंद्राचार्य कृत. योग शास्त्रनुं दोहन. रु. ०-४-० (१४३)

२१४६ योग दर्शन. सटीकम् ग्रं. नं. ७२ पं. सुखलात. रू. १-८-२ (१७, ५०, २५८)

२१४७ योग दर्शन तथा योगविशिका.

२१४८ योगदीपक, बुद्धिसागर सूरि गं. नं. २३ ५-३-८ (१५, ५८ थी ६२, १८४)

२१४९ योगप्रदीप हिन्दी अनु० जीतम्रुनिजी (प. ५९०, ५९१)

२१५० योगदृष्टि सम्रुच्ययः हरिभद्र स्रुरि विरचितः स्वोपन्न हिन-युक्तः संशोधकः भोः एलः सुएलीः डी. पी. एच. स. १९६९ रु. ०-३-० (१६, ५०)

योगः]

908

वोग

२१५१ योगदृष्टिनो स्वाध्याय. बालावबोध. (जुओ प्रकरण रत्ना-कर भा. १ छो.)

२१५२ योग फीलोसॉफी. वीरचंद राघवजीनां भाषणो. अँग्रेजी. रु. ०-५-० इ. १९१२. (२८, १६, १, ९५)

२१५३ योगबिन्दु सटीक. रु. ०-११-० (६)

्र, प्रकरण सटीकूर् इरिभद्रसूरि स्वीपन्न. (६)

२१५४ योगविशिका तथा योगदर्शन. हरिभद्रसूरि बिरचित. यशो॰ विजयजी उपाध्यायनी व्याख्या सहित. पाताझल यो-गदर्शन साथे. रु. १-८-० (१७, ५०)

२१५५ योगशास्त्र मूळ. हेमचेंद्राचार्य कृत. सं. १९७१ संस्कृत. (बार प्रकाश पुरा) तथा धर्मदास गणि विरिचता उपदेशमाला (मृड) (६)

२१५६ योगशास्त्र, हेमचंद्र स्वोपश्च विवरण, एडीटेड बाय भ्रुनि महाराज श्री धर्म विजय उर्फे श्री विजयधर्म सूरि १ थी
६ विभाग, चार प्रकाश (अपूर्ण) चालु, की, ७-८-०
दरेक विभागना, ०-१२-० सींगलना डबल, रू.
१-८-० (२९)

२१५७ योगशास सञ्चदार्थ. रु. ०-२-० (५८३)

रिश्यंट योगशास्त्र भाषान्तर, रु. ३-८-०

,, गुजराती. ४२७२

,, शब्दार्थ**, ०–२-० (४९४**)

२१५९ योगशास्त्र मुळ मात्रः (५०)

ने, विगेरे. (५०)

२१६० योगशास भाषान्तर. पं. केसरविजय. इ. २००० (२५) ,, ,, पं. ,, सं. १९६६ मं. नं. ३ इ. ००८०० (५९५)

बीगंसार]

860

रत्नपाळ

,, ,, कथा साथै. रु. ०-८-० ,, मूळ तथा उपदेशमाला मूल. रु. ०-८-० (६)

२१६१ योगसार संपादक इरगोविन्ददास त्रीकमचंद शेठ. सै. १९७६ (५६)

२१६२ योनि स्तव (अवचृति) (पाना) रु. ०-१-० धर्मघोष सूरि विरचित (श्रीमन्महावीर जिन विश्वप्ति गर्भितं इदं प्रकरणं निर्मितं) सुर मनुष्यादि तथा अचित्तादि योनि निर्णय. नं ४ सं. १९६८ (अलुभ्य) (१७)

२१६३ यन्त्र पूर्वक कर्मादि विचार. (छ कर्म गंथना रहस्यभूत.)
सं. १९७३ (६)

₹.

२१६४ रतलाममें श्वास्तार्थकी पूर्णता. लक्ष्मीविजयजी. हिन्दी साग-रानंद पवायनभेट. (३७)

२१६५ रतिसार कुमार हिन्दी सचित्र. रु. ०-१२-० (म. ९) २१६६ रतिसार चरित्र. (जैन धर्म म. ग्राहकोने भेट.) रु. ०-३-० (६)

२१६७ रत्नकर्णिका अथवा आदर्शभूत नीतिना सिद्धान्तो. (५०)

२१६८ रत्नगंघ माछिका. रु. ०-८-०

२१६९ रत्नचूड कथा (प्रत) रु. ०-८-०

३१७० रत्नचूडनो रास. रु. ०-४-०

२१७१ रत्नचृह व्यवहारीनो रास. सनक निधानजी कृत. २० सं. १७२४ (१२९, ६३)

२१७२ रत्नपाळ तृप कथानकम् (वाचनाचार्य साममंडनविरचित) (पाना) रु. ०-५-० सं. १९६९ (१७, १०)

रत्मपील]

\$28

रत्नसार

- २१७३ रत्नपाळ व्यवहारीनो रास. पं. मोइनविजय विरचित. रु. ०-१०-० (१२९,६३)
- २१७४ रत्नप्रभसृरिनी पूजा. आदि अन्य गुरुवरोनी बृहत् पूजा और लघु पूजा. रु. ०-२-० (प्र० ५९६)
- २१७५ रत्नशेखर चरित्र (पाना) रु. १-२-०
- २१७६ रत्नशेखर राजिष कथा. गु. रत्नशेखर तथा रत्नवतीनी कथा मूल संस्कृत पाकृत गद्यवंध. चंपुतुं भाषाश्तर. ग्रा. भेट. (६)
- २१७७ रत्नशेखर रत्नवती कथा. ग्रा. भेट. रु. ०-४-० (६) २१७८ रत्नसग्रुच्यय तथा रत्न विद्यास. कर्ता. रामहाहजी. कीं. नथी सं. १९६ (५९७)
- २१७९ रत्नसागर भा. १ लो. वा मोहन गुणमाळा. प्रथम भाग. खर. लक्ष्मीप्रधानगणिना शिष्य म्रुक्तिकमल संग्रह कुत्य शुद्धि कृतम् सं. १९३६ (५९९, ६००)
- २१८० रत्नसागर भा. २ जो. आचाररत्नाकर सं. १९४९ (५९९,६००)
- २१८१ रत्नसार चरित्र. सं. १९५७ रु. ८-४-० (१७९, ५०)
 ,, अंचलगच्छना भट्टारक रत्नसागरना श्रावक.
 हीरजी इंसराज की. नथी. (नवकार स्तवनी विगेरे)
 (६०१)
 - ,, भा. १ ह्यो. रु. ५-०-०
 - », भा. २ जो. रु. २-८-»
- २१८२ रत्नसार मा. ३ जो. रु. १-८-०
 ,, शास्त्री टाइप गुर्जर, सं. १९५६ मभोत्तर
 (६०२)
 - .. वा मोहन गुणमाळा. रु. २--०-०

रत्नसेन 1

162

रसिक

२१८३ रत्नसेन रत्न मंजरीनो रास. रु. ०-४-० २१८४ रत्नाकर अवतारिका, श्री रत्न मभाचार्य कृत. रु. २-०-० (४३०)

> ,, ,, टिप्पण. पंजिका सहित. रत्नमभाचार्थ विरचित. रु. १-०-० (४३०)

२१८५ रत्नाकर पचिसी. (जुओ प्रकरण रत्नाकर भा. ३ जो.)

२१८६ श्री. रत्नाकर पश्चविंशति. (जुओ पकरण लघु संग्रह.)

२१८७ रत्नाकर पचिशी. दरेक कान्यना गुजरातीमां हरिगीत छंद बनावी तेतुं गुजराती भाषान्तर. भेट. (६)

२१८८ रत्नावलि नाटिका विगेरे. (५०)

२१८९ रत्नेन्दु या पुनर्जीवन. रु. ०-४-० (८८)

२१९० रयण सहेरीय कहा, मागधी (पाना) जिनहर्षमणि इतः ह. ०-८-० (१७, ५०)

२१९१ रयणसेहरकहा. जिनहर्षगणि. संस्कृत छायायुक्त. रु.

२१९२ रयणसिंहतुं चरित्र. (जुओ चरित्र संग्रह.)

२१९३ रविसागरनुं चरित्र अने शोक विनाशक ग्रंथ. रु. ०-२-० बुद्धिसागर सूरि (१५, ५८ थी ६२, १८४, ५०)

२१९४ रिवसागरजीतं जीवन चरित्र. (जुओ सुखसागर गुरु गीता.)

२१९५ रस गंगाधर सटीक. विगेरे. (५०) अजैन

२१९६ रस रत्न रास. (जुओ अतिहासिक रास संग्रह भा. १ छो.)

२१९७ रस रत्न सम्रुच्यय. (५०)

२१९८ रसिक स्तवनावली. भा. १-२ रु. ०-१-६

२१९९ रसिक सत्तर भेदी पूजा. ५. ३२ की. नथी. पद्य. (३१८)

१२०० रसिक सुबोध रतन. की. नथी. पृ. ५० (अलभ्य) सं. १९६२ गुर्जर पद्म, प्रभु गुण. (३१८)

रसिक

१८३

राजेन्द्र

२२०१ रसिक स्तवनाविक. भा. १-२-३ रु. ०-२-६ ,, ,, सं. १९८० (६०३)

२२०२ रागमाला. ४७ पद अने नयचक विगेरे हुकम मुनि. (२१) २२०३ राघव नैवधीय काव्यं विगेरे. श्री हरदत्तसूरि विरचित स्वोपज्ञ टीका. (५०)

२२०४ राजकुमारी सुदर्शना, रु. ०-८-०

भाषान्तर २ पं. केसर विजय. रु. २-८-० (२५)

२२०५ राजगुण कल्प महोदधि. रु. ३-८-०

२२०६ (श्रीमद) राजचंद्र, रु. ८-०-०

२२०७ राज्यचंद्र जैन काव्यमाला. गु. १ लो. सनातन जैन का-र्यालय मुंबड. रु. ०-१२-०

रु. ०-१२-० (**९९**)

,, ,, इ. ०-१२-० (९९) २२०८ राजचंद्र विचार किरणो. भेट. प्र. एक जिज्ञासु. (६०५, 40)

२२०९ राजनगर रत्न विरह. उर्फे लालभाइ दलपतभाइ विरह. की. नथी पु. १६ सं. १९६८ गुर्जर. (३१८)

२२१० राज्यपद, रायचंद्र कृत पदनो संग्रह, रु. ०-१२-० (९९)

२:११ राजपश्च. रु. १-०-० (२०९)

२२ (२ राजबोध. की. नथी. बीजी आष्टति. (६०६, ६०७.)

२२१३ राजरंग. (५०)

२२१४ राज ब्रह्मभ अथवा शिल्प शास्त्र. रु. ३-०-०

२२१५ राजपति ले. भभूतमल डी. सी. इ. रु. ०-४-० (६०८, ६०९)

२२१६ राजेन्द्र सूरि गुणाष्ट्रक संप्रह सार्थ. राजेन्द्रकी गुरु स्तृति. रु. ०-६-० सं. १९८१ (३७)

राजेन्द्र]

828

माचीन

२२१७ राजेन्द्र सूर्योदय. (६१०)

२२१८ (श्रीमष्) राजचंद्र मुंबई. (छपाय छे नवी) बीशी आ-इत्ति. रु. ३-०-०

२२१९ रात्रिभोजन निषेधक. रु. ०-६-० (प. ६११)

२२२० रात्रि भोजननो रास. जिनहर्षसूरि कृत. र. सं. १७५९

रु. ०−३-० (७)

,, ,, र. सं. १७५९ (१२९, ६३)

,, परिहार रास. (५०)

,, ,, श्री निनहषेस्ररि कृत. ६. ०-३-० रामकोष संस्कृत अने हिन्दी.

२२२१ रामचरित्र संस्कृत. (पाना) रु. ८-०-०

२२२२ राम रास. रु. १-८-०

,, হ. ৩-८-০

२२२३ रामचंद्र जैन काव्यमाळा गुच्छक १ लो. रु. ०-१२-० २२२४ रामायण चार अधिकार. (जुओ आनंद काव्य महोदिष यो. २ जुं.)

२२२५ रायचंदस्ररि गुरु बार मास. (जुओ अतिहासिक रास संग्रह भा. १ लो.)

२२२६ रायपसेणी सूत्र मूळ टीका. अर्थयुक्त. बाबु. ह. ८-१**२-०** (२४, ५०)

२२२७ रासमाळा. आहति. १ भा. २ जो. ग. सें. मेस. शुंबई.

,, ,, २ भा. १ लो. ग. सें. पेस. ,, २२२८ रसाले मजहब. इंडिये. शान्तिविजयजी (अलभ्य)

२२२८ रसाल मगहन. डाव्या शान्तावजयजा (अलम्य) २२२९ रुदिमयोग. पचलित वाक्योना अर्थनो कोश छे. हे. भोन

नीलाल भीखाभाइ गांधी. (६१२, ६१३)

```
रुपसेन ो
```

?64

विषु

```
२२३० रुपसेनचरित्र संस्कृत पानां, रु, १-८-०
```

२२३१ रुपमाला भा. १-२-३-४-५-६-७-८

२२३२ रुषिमंडल यंत्रपूजा, रु. ०-६-०

२२३३ रेखादर्शन देवविजयगणि. (प्र. ६१४)

पंन्यास देवित्रजय. (इस्तरेखा) (२५)

२२३४ रोहिणी अशोकचंद्रकथा. कनककुशल संकल्पिता. (पाना) ग्र. नं. ३६ रु. ०-५-० सं. १९७१ (१७)

२२३५ रोहिणी अश्चोकचंद्रकथा. कनककुश्वलकृत. (पाना) प्र. नं. ३६ रु. ०-२-० (१७)

२२३६ रोहिणीपर्वकथा. म्रुक्तिविपन्छ. ग्रं. नं. १७ मेट. (७३, १९७, ६१५) मेट.

२२३७ रौहिणेयकथा पत. देवचंद्र शिष्य देवसूर्ति विरचित. ग्रं. नं. ४५ रु. ०-२-० (१७, ५०)

२२३८ रोहिणेयचरित्र संस्कृ. (पाना) रु. ०-८-०

२२३९ रंभामंजरी नाटक. रु. ०-८-० (६, ४८०)

ਲ.

२२४० लग्न (मणको पहेलो) रु. ०-०-६ गु. (५०)

२२४१ लग्न मंदिर. (५०)

२२४२ लग्नशुद्धि इरिभद्रसूरिविरचित. (जुओ आरंभसिद्धि उदय प्रभदेवसूरिविरचित.) [(६)

२२४२ ,, अने दिनग्रुद्धि अर्थ सहित. रु. १-४-०

२२४४ लघु अने बृहत्पाकृत व्याकरण. रु. १-०-० (६)

२२४५ लघु चैत्यवंदन चतुर्विशति म्रुक्तिविमस्कृत. (प्रत) रू.

०–२-० (६१५)

,, भ चोवित्री सुक्तिविषकविर्श्विते सौ

```
क्य
                                              िकिगान
                         १८६
          भाग्य विमल शिष्य. ( सं. ) ग्रं. नं. १८ सं. १९७६
                              ₹. ०-३-० 「(७३)
२२४६ छघ दंदक थोकहा. भेट. ( ४३ )
२२४७ लघु प्रकरण संग्रह, आचारोपदेश सहित. रु. १-४-०
२२४८ लघु शान्ति सर्वति. (५०)
                                              [(9)
२२४९ लघु शान्ति स्तव, (पाना ) रु. ०-१-०
२२५० लघु संघयणी. ( जुओ मकरण लघु संग्रह ) ((११, ९५)
२२५१ लघु हेमप्रभा नेमिस्नुरिप्रणीतम् व्याकरणः सं. १९७८
२२५२ लघुक्षेत्रसमास. ( जुओ नकरण लघु संग्रह )
                .. पकरण सटीक (पाना) रु. ०-१२-०
२२५३ छव्वल्प बहुत्वं अने चार दिशामां रहेछा जीवोतुं अल्प
          बहुत्व वाचक मात्र बेज गाथाओनी स्फुट व्याख्या
          करी छे. ( आत्मानंद सभा ) निर्णयसागर छपायो.
          सं. १९१८ (ग्रं. नं. ६ ना भेगो.)
२२५४ लब्धिसार नेमिचंद्राचार्य. ( शास्त्री ) ग्रंबाइ. रु. १-८-०
२२५५ ललित विस्तारा. अंग्रेजी नोट सहित. बौद्ध ग्रन्थ. (५०)
                  चैत्यवंदन वृत्ति ( पाना ) इरिभद्र सूरि, पं-
          जिका मनिचंद्र सरि. रु. ०-८-० (१६)
२२५६ लाला लाजपतराय अने जैन धर्म. बुद्धिसागर सुरि. रु.
          ०-४-० (१५, ५८ यी ६२, १८४)
२२५७ हिंग निर्णय. रु. ०-१-० ( ६८ )
                         बहोंतरी. ज्ञानसुंदरजी विरचित. रु.
           o-१-o ( ६१७, ६८ )
,, ,, (पर)
२२५८ क्रिगानुशासन कोशः (जुओ अभिधान संग्रह मा. २जो.)
```

कीकावती]

१८७

होंक

- २२५९ छीछावतीनो रास. रु. ०-२-० (१२९, ६३)
- २२६० छीळावती महीयारीनो रास पंडित श्री उदय रत्नजी महा-राज कृत छीळावती राणी अने सुमित विळासनो रास १७१६ नी सालनो) (७, ५०)
- २२६१ छीलावती संस्कृत. गणित विषय भास्कराचार्य विरचित.
 (५०)
- २२६२ लीलावती भाषान्तर हिन्दी. खेमराज कृष्णदास. (५०)
- २२६३ छीछावतीनो रास. रु. ०-१-० (६)
- २२६४ स्रेख संग्रह भा. १ लो. रू. ०-१२-०
- २२६५ लेखमाला. मणको १ लो. ले. कुंवरजी आणंदजी (ब्हेन. मोंघी गीरधर पुत्री स्मारक.)(६)
- २२६६ छेलमाला. भा. १ लो. रु. १-०-०) चारित्र विजयना , भा. २ जो. रु. १-०-० र लेखोनो संग्रह छे.
- २२६७ लेखसंग्रह. लाडुआ श्रीमाली वाणिया. ज्ञातनी पार्चीनता बनावनार लेख संग्रह. (६१८)
- २२६८ छोकतत्व निर्णय भाषान्तर सहित. मूळ संस्कृत. गुजरा-तीमां भाषान्तर छे. हरिभद्र सूरि विरचित. सं. १९५८ छाप्यो. (१४५ काव्यो) अनेक मतवादीओ दं सं-इन छे.
 - ,, ,, बीजो उपर धुजबनो सं. १९७८ आदृति बीजी रु. ०-८-० (५२)
 - ,, ,, भाषा. (५०)
- २२६९ छोकनाछिका द्वार्त्रिकिका तथा छध्वरूप बहुत्व. (पाना) इ. ०-२-० धर्मघोषस्तरि सं. १९६८ छोकस्वरुप्तं

केद र

366

वचना

वर्णन आ ग्रंथनी प्रस्तावनामां धर्मघोष सुरिनो समय अने दुंक जीवन चरित्र छे. वि. सं. १३२७ नी साछ-मां आ प्रकरण लखाएलुं मनाय छे. (१६, २७)

,, ,, सावचृरि. (५०, ६, १७)

,, बत्रीसी. सटीक (पाना) रु. ०-२-० अ-स्रभ्य. (१७)

२२७० ह्रोक प्रकाश (आखो) पाना. रु. ३०-०-०

,, भा.१ १ थी ११ प्रकाश.

,, भा. २ १२ यी २७ प्रकाश.

,, भा. ३

" भा. ४

क्षेत्रक्षोकप्रकाश विनयविजयउपाध्याय. (५०)

२२७१ कोकमकास भा. १ लो. (द्रव्य कोक) अर्थयुक्त. रू. ६----

> ,, भाषान्त भा. २ जी (क्षेत्र छोक) परिष्छेद १ छो रु. १०-०-०

,, ,, ,, परिच्छेद बीजो. रू. ९-०-० २२७२ छोकप्रिय जैन लेखमाला. मणको त्रीजो. कि. नयी. ले. जीवराज मणशी. मणका एकथी १२ सुधीना छे. सं.

१९६७ (६२०, ६१९)

२२७३ छोकागच्छीय श्रावक स्पष्टार्थ. पंच प्रतिक्रमण सुत्र. (१२)

२२७४ वचनामृत. रु. ०-३-०

,, आचार्य बुद्धिसागरजी स्तरि. प. क. मोहनछाछ. सी. पादरा. सं. १९६२ पृ. ८३० रू. ०-१४-० बच्छ

169

वसदे

(१५,५८ यी ६२,१८४)

२२७५ वच्छराज देवराजनो रास. (जुओ आनंद काव्य महोद्धि. भो. ३ जुं.)

२२७६ वडोदराना प्रसिद्ध जैन मंदीरस्थ इस्त लिखित ग्रंन्थानां ऋग पद्येक पत्र ले मणीलाल नभ्रभाइ. मुद्रित, सं. १९५३ (१३८, ७१)

२२७७ वडोदरामां ग्रुनि संमेळन. रु. ०-२-०

२२७८ वत्सराज चरित्र. रु. ०-३-० (६)

२२७९ वनस्पत्याहारका महत्व. प्र. छल्छभाइ गुळावचंद झवेरी.

२२८० वर्णमाळा. (६८) [(६२१,६२२)

२२८१ वर्तमान चोवीसी. (जुओ देवचंद्र भा. २ वि. १)

२२८२ वर्धमान देशना भाषान्तर. मा. सं. गु. रू. २-०-० सं. १९६० (१७९, ८२)

,, ,, शास्त्री. रु. २–८–० (६)

,, ,, संस्कृत. पाना. रु. ५-०-० (६)

२२८२ वर्धमान द्वात्रिंशिका मूळ टीका अर्थ युक्त. सिद्धसेन दिवा-कर विरचित. उदयसागर कृत टीका. अने गुजराती भाषान्तर सहीत. सं. १९५९ रु. ०-३-० (६)

२२८३ वर्धमान पद्मसिंह चरित्र काव्यबद्ध भाषान्तर सहित. रु. १-०-० (३२) [जी (६२४, ६२५)

२२८४ वर्षमबोध हिन्दी. (मेघ महोदय) अतु. ज्वाळा प्रसाद-२२८५ वसन्तिविलास महाकाव्यम् बालचंद्रसूरिविरचितम् रु.

१-८-० (१३८)

२२८६ बसुदेविह्दसार (पत) रु. ०-२-० (२६)

वस्तु]

१९०

विचार

- २२८७ वस्तुपाळ परित्र भाषान्तर जिनहर्ष गणिकृत. सं. १९७४ रु. १-८-० (६)
 - ,, ,, संस्कृत. रु. ७–८–० (५०)
- २२८८ वस्तुपाळ तेजपाळनो रास. पंडित मेरुविजयविरचित. तथा पंचानुष्टान चोविशी. रु. ०-६-० (७)
- २२८९ वाक्यमकर्ष. उद्यम्धनिपणीत. (जुओ स्तोत्र रत्नाकर प्रथम भाग सटीक)
- २२९० वागभट्टालंकार संस्कृत श्री वाग्भट्टमणीत, देवसिंहगणि विरचित टीका समेत. (अलंकार मंथ.) (७)
- २२९१ वाराहिय संहिता. मूळ अने भाषान्तर हिन्दी. सुरादाबाद निवासी. पंढित बल्लदेव प्रसाद मित्रद्वारा अनुवादित और संपादित. सं. १९७५ (५०)
- २२९२ वासुपूज्य चरित्र. वर्धमान सूरि विरचित. (संस्कृत) रु.
- २२९३ वास्तुकपूजा. हुकपप्रनि. (२१) [२-८-० (६, ५०)
- २२९४ वास्तुपूजासंग्रह. बुद्धिसागरसूरि. रु. ०-३-० (६)
- २२९५ विक्रमचरित्र संस्कृत, रु. ३-०-० (६)
 - ,, भाषन्तर रु. २-४-० (६)
 - ,, , , विगेरे मराठी. (जैन ग्रंथो ज्यरची तैयार करी छपावनार) (५०, ७)
- २२९६ विकान्त कौरवम् नाटकमः इस्तिपछ कृतः (सं.) माणे-कचंद नं. ३ (दि.) (८१)
- २२९७ विचार पंचाशिका. विमळगिण विरचित. स्वोप्झवणुरि सहित. (औदारिकादि शरीरादि नबद्वारनुं वर्णन)सं. १९६९ (अळभ्य) (१७.७) ह. ०-२-०

विचार]

१९१

विजय

- २२९८ विचार पंचाशिका. आनंदविमलसूरिशिष्य वानरस्रुनि कृत (जुओ प्रकरण पुष्प माला प्रथम पुष्प)
- २२९९ विचार रत्नसार. (प्रश्नोत्तर रूप) (जुओ देवचंद्र भा. २ जो वि. १ हो.)
- २३०० विचार सप्तितका. महेन्द्रसूरि कृत. विनयकुशळ विरचित हत्ति सहित. सं. १९६९ रु. ०-२-६ अंचलगच्छ, (विधि पक्ष) ना महेन्द्र शाश्वत प्रतिमा संख्यादि बार द्वारवडे ग्रंथ पूरो कर्यों छे. मू. पा. टी. सं. (१७७)
- २३०१ विचार सार. र. सं. १९७६ का. सुद. १ नवानगर (जा-मनगर) (जुओ देवचंद्र भा. २ वि. १ ळो)
- २३०२ ,, प्रकरण (छाया सह) मूळकर्ता प्रद्युन्न सूरि छाया माणिक्य सागर चौद्यो सैको. रु. ०-८-० (२८, १६, १, ९५)
- २३०३ विचार सित्तरि. महेन्द्र सूरि कृतः (जुओ प्रकरण पुष्पमा-ला प्रथम पुष्प)
- २३०४ विजयकळा. रु. २-०-० (३४३)
- २३०५ विजयचंद केवळी चरित्र. (कर्ता श्री चंद्रपम महत्तराचार्य) भाषान्तर रु. ०-८-० २ सं. ११२७ (६)
- २३०६ विजयचंद केवली चरित्र मूळ. रु. ०-८-० ,, ,, भाषान्तर गु. (५०)
- २३०७ विजयतिस्रकसूरि रास (जुओ ऐतिहासिक राससंग्रह भा. ४ थो.)
- २३०८ विजयदेवसूरि माहात्म्य. ज्ञानविमलना शिष्य बल्लभोपा-ध्याय कृत अवचूरि ले. सं. १७०९ चैत्र वद ११ बुध.

विजय]

१९२

[बीजापुर

ठे. मुनिश्री कान्तिविजयजी शास्त्र संग्रह. छाणी. नै. ८१९ (लिखित)

- २३०९ विजयधर्म सूरि चरित्र. रु. ०-३-० (४३)
 - ,, जीवनचरित्र. (ईंग्रेजी) रु. ०–६–० (४७)
 - ,, जीवनप्रभा. रु. ०-२-० (४७)
 - ,, तेनुं जीवन अने तेमना ग्रन्थो. ए. जी. सुना वाला बी. ए. एल. एल. बी. इ. १९२२ ईंग्छंडमां छपायुं छे.
- २३१० विजय धर्म सूरि. मूळ लेखक. डो. एल. पी. टेसीटोरी. अनुवाद. (६२९) (१४) (४७) इ. १९१९ ,, हिझ लाइफ एन्ड वर्क. लखनार बाय. ए. जे. सुनावला. बी. ए. एल. एल. बी. रु. ४-८-० (१४, ४७)
- २३११ विजयमशस्ति महाकाव्यः हीरविजयस्र्रि, विजयसेनस्र्रि, विजयदेवस्र्रि ए त्रणनां चरित्र श्री हेमविजयगणिकृतः इ. ५-०-० (१४)
- २३१२ विजयमशस्ति सार. रु. ०-६-०
- २३१३ विजयानंद द्वात्रिशिका. रु. ०-२-०
- २३१४ विजयानंदसूरिका संक्षिप्त जीवन (सरस्वतीसे खद्घृती भेट. (३३०)
- २३१५ विजयानंदाभ्युदय काव्य भाषान्तर सहित रु. २-८-०
- २३१६ ,, महाकाच्यम्. (५०)
- २३१७ विजापुर हत्तान्त. बुद्धिसागरसूरि. पृ. ९० रु. ०-४-० (१५, ५८ थी ६२, १८४)

विद्ग्ध]

१९३

िविमळ

२३१८ विदम्ध मुल्पंडन कान्य. श्री धर्मदाससूरि प्रणीतम् स्वो-पज्ञ न्याख्या समलंज्ञतम् रु. ०-४-० (७, ५०)

२३१९ विद्यावर्धक भा. १ लो. रु. ०-२-०

२३२० विद्यासागर रास. (संक्षिप्त साररुप) तथा विद्यासागर रास मूल. (जुओ ऐतिहासिक रास संग्रह भा. ३ जो)

२३२१ विधिपक्ष प्रतिक्रमण प्रेमाबाइ सं. १९३७ (प. ६३०,१२७)

२३२२ (श्री) विश्विपक्ष गच्छीय सार्थ. पंचमतिक्रमणसूत्र (पूर्वार्ष) सं. १९६३ (१४३)

२३२३ विधिपक्ष पंचमितक्रमण सार्थ. (उत्तरार्ध) (१४३)

२३२४ विनति शतक (६८)

२३२५ विनयदेवसूरि रास. (संक्षिप्त सार) तथा विनयदेवसूरि रास मूळ (जुओ ऐतिहासिक रास संग्रह भा. ३ जो)

२३२६ विनयवतीना जीवननुं अवलोकन रु. ०-१-०

२३२७ विनोदकथा संग्रह, संस्कृत (पाना) रु, १-०-०

२३२८ विनोदात्मक कथा संग्रह, मलधारी राजशेखर सूरि विर-चित भाषान्तर. ०-१२-० (३७-३८ वर्षनी भेट) सं. १९७८ (६)

२३२९ विपाकसूत्र टीका तथा मूछनी संस्कृत छाया साथे रु. ०-१२-० (६७)

२३३० , मूळ. तेनी अभयदेवनी टीका अने भगवान विजय कृत भाषा संज्ञोधीत-बाल्लवालु (२४, ५०)

२३३१ विपाकसूत्र मूळ-टीका अर्थ युक्तः

روه) ,

,, सष्टतिक. (५०)

२३३२ विमळनाथ चरित्र संस्कृत (पाना) रु. ९-०-० (५०)

```
िविविध
विषळ ी
                        188
२३३३ विमळ प्रबंध. पं. लावण्यसमयकृत. रु.१-४-० (प्र-२३१)
          ,, गु. सं. १५६८ छावण्य समयकृत. छक्ष्मीसागरना
२३३४ विमळपंत्रीनो रास. रु. ०-१०-०
                                         िशिष्यः (५०)
२३३५ विमळ म्हेतानो श्लोको. ( जुओ श्लोकासंग्रह शास्त्री )
२३३६ विमळ विनोट. स्वामी दयानंद सरस्वतीका उपदेश.
          मोक्षाकर (३९)
२३३७ विवाइचूलिकाकी समालोचना और वंगचूलिकासूत्र. सं.
          १९८० ह. ०-२-० (६८)
२३३८ विविध जिनगुण स्तवन. रु. ०-६-० (६३२)
२३३९ विविध ढाल संग्रह. मेट. (४३)
२३४० विविध पदसंग्रह. गुणचंद्र विरचित्त. रु.०-४-०(६३३.५०)
२३४१ विविध पयस अवचृहि रु. १-८-० [ २-०-० (१७)
२३४२ विविध पूजासंग्रह. (तहन नवीन पूजाओनो संग्रह ) रु.
                  ,, ( आत्मारामजी कृत ) रु. ०-८-० आ-
          55
             त्मारापजी कृत तथा बल्लभविजयजी कृत १४ पूजा-
             ओनो संग्रह. सं. १९७१ (१७)
                  ,, कींपत लखी नथी. ( १२९, ६३ )
          57
                     आवृति त्रीजी रु. ८-८-० (१७)
          "
                     र्कीपत नथी (१२९)
                     प्रथम भाग रु. १-८-०
                     भाग १ लो. (गुजराती) इ. १-८-०
           ,,
                              (शासी) रु. १-८-०
                     भाग २ जो. रु. १-०-०
           39
                               (शास्त्री) रु. ०-१२-०
                  ,,
           "
                  ., भाग ३ जो. रु. १-२-०
```

22

(७) की. छखी नथी.

विविध]

794

[विवेष

,, ,, भा. २ जो (७) की. छखी नयी.

,, भा. १-२-३ रु. १**-८-**०

,, भा. १-२-३-४ **रु.** १**-८-**०

२३४३ विविध बोध. शोधक पंडित उत्तमचंद्रजी. सं. १९६१ रु. ह. ०-६-० (६३४)

२३४४ विविध बोल रत्नाकर भा. १ लो रु. १-०-०

,, ,, ,, भा. १ छो रू. ०-८-० [(प्र. ६३**५**)

,, ,, ,, ,, ज्ञान्तिसागरवाळो. सं. १९४६

,, ,, ,, भा. २ जो. **इ.** २-८-०

२३४५ विविध सज्झाय संग्रह रु. ०-४-० (६३६)

२३४६ विविध स्तवन संग्रह. रु. ०-२-० (६३६ थी ६३९)

२३४७ विविध ज्ञान विस्तार मराठी. (५०)

२३४८ विवेकदर्शक लेखमाला. अंक पहेलो रु. ०-०-६

२३४९ विवेकमंजरी आसाडकविकृत अने बाळचंद्रसूरिकृत. टीका भा. १ छो. पृ. १४८ उपदेश मा. सं. १९७५ विविष साहित्यशास्त्रमां छपायुं छे. (५६) कळकत्ता (१)

,, भा. २ जो. सटीक रु. १-०-० (५६)

,, टीका. रु. ५-८-०

,, सटीक. प्रयम भाग (अस्रभ्य) (५६)

२३५० विवेकविलास. जिनदत्तसूरिकृत संस्कृत अने हिन्दी (आ-चार विचार) सरस्वती ग्रंथमाळा तरफयी छपायुं डे. इ. २-८-० (४७)

२३५१ विवेक विलास अर्थ सहित. रू. २-०-०

२३५२ विवेकविकास श्री जिनद्त्त सूरि विरचित. भाषाकृतर कर्ता पंडित दामोद्दर गोविंदाचार्य डायपंडच्युविकिन्द्री वेस

विवेद ी

१९६

विश्व

अमहाबाद रु. २-०-० उदयसिंहराजा सं. १२३१ मां परलोकवासी थयो ते वखते आ ग्रन्थकार इयात इता.

२३५३ विवेकविलासनी श्लोको. (जुओ श्लोकासंग्रह. शास्त्री) २३५४ विश्वति स्थानक चरित. रु. १-०-० मूळ कर्ता जिनहर्ष-

गणी सं. ग्रंथ नं. ६० (१६)

२३५५ विंशति स्थानक विचारामृत संग्रह (पाना) रु. ४-८-०

२३५६ विशस्थानक पदपूजा कथासह गु. (४५३, ५०)

२३५७ विश्वतिक स्थानानि अथवा विचारसंग्रह. (५०)

२३५८ विञ्चति स्थानक चरितं हर्षगणि विनिर्मित (विचारामृतसंग्रह) ₹. १-o-o (१, १६)

२३५९ विशेष निर्णयपत्र हिन्दी. सं.१९६५ रु.०-४-०(६३,५०)

२३६० विशेषशतक समयसंदरगणिकृत. (प्रत) संस्कृत रु.०-१२-० (६४४, ४७, ५०)

२३६१ विशेषावश्यक गाथानानामाकारादिक्रम ₹. (२८, १६, १)

२३६२ विशेषावश्यक भाष्य पृष्ट ४०० भा. १--२

,, ,, ४०१ थी ८३४ मा. ३-४ िट ,, ,,८३५ थी १३६० मा.५-६-७ हि ,, मूळ पृष्ट थी २६२ भा. ८

२३६३ विशेषावश्यक भाषान्तर भा. १ लो. जिनभद्रगणी भाषा० कर्ता चुनीलाल इकमचंद गु. रू.२-०- (२८,१ ,१)

,, भा. १ हो. श्लोक १ थी १५४८ सुधी रु. २-०-० (२८)

२३६४ विश्वरचना प्रबंध. दर्शनविजय. ग्रु. द्रव्यविचार तथा ख-गोळ. सं. १९७९ (मेसमां)

२३६५ विश्वकीला प्रथमाला. रू. ०-१-०

विश्वा]

१९७

वीर

- २३६६ विश्वानुभव अने दर्षण शतक. रु. ०-१-६ (१७८)
- २३६७ विषयतावाद. (५०)
- २३६८ विषापहार स्तोत्र. धनंजय प्रणीत. (जुओ काव्यमाला. गुच्छक. भा. ७ मो.)
- २३६९ विहार गाइड. चारित्रविजयकृत. सं. १९७४ भ्रुगोल.
- २३७० विज्ञप्ति त्रिवेणी. (संस्कृत) रु. १-०-० (श्री कान्ति-विजय ग्रन्थमाला) (१७, ४९९)
- २३७१ विश्वप्ति विनोदः म्रुनि जिनविजयः एक विस्तृत संस्कृत ऐतिहासिकः पत्रः गंः नंः प्रथम पुष्पः रुः ०-१४-० (६४५,१७)
- २३७२ वीतराग महादेव स्तोत्रम् भाषान्तर अनुवादः जिणेन्द्र स्तुति अने रत्नाकर पश्चिमीना अनुवादो सहित. (प्र. १०८)
- २३७३ वीतराग. महादेव स्तोत्र. हेमचंद्राचार्य विवरण कर्ता. प्रभा-नंद अवचूरि कर्ता. विश्वळराज. सं. १५१२ रु. ०-८-० (१६)
- २३७४ वीतराग स्तोत्र तत्वार्थ भाषान्तर हेमचंद्र सूरि. सं. गु. रु.
- २३७५ वीतराग स्तोत्र भाषान्तर युक्त, रु. ०-२-०
- २३७६ वीतराग स्तोत्रम् भाषान्तर सहित. भेट. (३३)
- २३७७ वीर निर्वाण कल्याणक स्तव. (जुओ काव्यमाळा गु. ७ मो बीजी)
- २३७८ वीर निर्वाणना स्तवननी ढाळो. भावनगरमां. (जुओ देव-चंद्र भा. २ वि. १)
- २३७९ वीर पश्चने अपील. लेखक. शिवजी देवजी. भेट. (४४९) २३८० वीरविजयजी महाराजनं जीवनचरित्र. बाबुजी सुमेरपळजी

पंडित]

396

विदानत

सूरानाः वीकानेर वाळी. सं. १९७७ अमृत्य. कळक-त्ताः डे. मनोहरदास का कटरा बडावजार. कळकताः

२३८१ (पंडितश्री) वीरविजयजी महाराजनो ढुंको प्रबंध सं. १९७६ की. फी. (२०५)

२३८२ वीर स्तव. जिनप्रभाचार्थविरचित. (जु. काव्यमाला गु. ७ बीजी.)

२३८२ वीरस्तुतिरुप हुंढीनुं स्तवन. यशोविजयजीजपाध्याय कृतः तथा तेमनो शाः इरराज देवराज उपर लेखेलो कागळ. (६४८, ५०)

२३८४ वीर स्तोत्रम्. धनपाछीय विरुद्ध वचन. मूळ अने भाषान्तर.

,, ,, हिन्दी. (५०)

,, ,, सृहत्ति₊ (५०)

,, ,, गुजराती (३३, ५०)

२३८५ वीसविहरमान वीसी. (पाछीताणा) (जुओ देवचंद्र भा. २ वि. १)

२३८६ वीस स्थानक तपविधि. मेट. सं. १९६९ (६४९, ६५०, ९५)

२३८७ वीस स्थानकनी पूजा. रु. ०-१-०

२३८८ वीस स्थानकनो रास. ह. २-०-०

२३८९ वीस स्थानक पद पूजा संग्रह. रु. ०-४-०

,, स्तुति (जुओ देवचंद्र भा. २ जो. वि. १ छो.)

२३९० वेद प्रमाण्य चंद्रिका. ५०४१ (इतर.)

२३९१ वेद मीमांसा. हिन्दी.

२३९२ वेढांक्कश. पत. इ. ०-६-० (२६)

२३९३ वेदान्त परिभाषा. ५०३६ (इतर)

२३९४ वेदान्त सार भाषान्तर. (इतर) हिन्दी.

वेराग्य]

१९९

ृ हिद्धि

- २३९५ वेराग्य कल्पलता पूर्वार्घ यशोविजय उपाध्याय. मूळ सहित भाषान्तर इ. ३-०-० (७, ५०)
- २३९६ वैराग्य तरंगभक्तिमाळा. ह. ०-६-० पृ. २१६ सं. १९६५ (१०८)
- २३९७ वैराग्यरत्नाकर (वैराग्य शतक विस्तारार्थ युक्त) रु. १००
- २३९८ वैराग्यशतकम् पद्मानंद किव मणीत. (जुओ कान्यमाळा गुच्छ भा. ७ मो)
- २३९९ वैराग्यशतक मागधी अर्थयुक्त मूळ अने भाषान्तर सहित. सं. १९५२ रु. ०-२-० (२९६)
- २४०० वैराग्यशतकम् सटीकम् बालावबोधः (५०)
- २४०१ वैराग्यशतक संस्कृत अर्थयुक्त. रु. ०-४-०
- २४०२ वैराग्योपदेश विविध पद संग्रह. गु. यशोविजय, विनय-विजय, तथा ज्ञानसारजी विरचित. (७, ५०)
- १४०३ वैराग्योपदेश पोथी. भा. १ छो रु. ०-२-६
- २४०४ वंकचुळ राजानी कथा (जुओ चरित्र संग्रह)
- २४०५ वंदारुहत्ति (पाना) वन्दारुहत्ति अपरनाम्नि श्राद्ध प्रतिक-मणसूत्र, हत्तिकार. देवेन्द्रसूरिनिर्मित्त ग्रं, ८ रु.०-८-० (१६, १, ५०)
- २४०६ व्याकरण (धर्मदीपिका. कर्ता हेमचंद्रसृरि) श्लो. ७०० वृत्ति मंगलविजयजी कृत. छे पा. ७५ (४७)
- २४०७ इत्तरत्नाकर (वांचवा लायक काव्य विनोद) (५०)
- २४०८ दृद्धिचंद्रजी महाराजनुं चरित्र. रु. ०-४-० (६, ५०)
- २४०९ दृद्धिनिजयगणि रास. (संक्षिप्त सारस्य तथा मूळ) (जुओ ऐतिहासिक रास संग्रह्मा. ३ जो)

```
रृद्धि ]
```

२००

मिन

२४१० दृद्धिसागरसूरि रास. (संक्षिप्त सारहर तथा मूल रास.) (जुओ ऐतिहासिक राससंग्रह मा. ३ जो)

२४११ व्याख्यान लब्बिविजय, (६५१)

२४१२ व्याख्यान देहली ले. लब्धिविजयजी, हिन्दी (प्र.६५२)

२४१३ व्याख्यान परिषद् विचार. रु. ०-८-० (२०३)

२४१४ व्याख्यान इप्ति. (२८) [इ. ०-१-० (४८)

२४१५ व्याख्यान मौक्तिक. बहुभविजयजीना वे व्याख्यान रु.

२४१६ व्याख्या विलास रत्नविजयजी. रु. ०-२-० (६८)

२४१७ व्याख्याविद्यास. (६८)

,, भा. २ जो. (६८)

,, भा, ३ जो. (६८)

,, भा. ४ थो. (६८)

,, गुजराती. (५०)

२४१८ व्याख्यान साहित्य संब्रह. भा, १ लो, रु. २-८-०

२४१९ व्याख्यान साहित्य संग्रह. भा. २ जो. सं. १९७५ (६५२,६५४,९५)

२४२० व्याख्यान ,, ,, भा. ३ जो. सं. १९७५ २४२१ व्याख्यान संग्रह. रू. १-०-० [(६५३,६५४,९५)

,, ,, की. नथी. चारित्रविजय. " जैन

प्रयावली " नं. १५ भगु फतेचंद, सं. १९६६

,, ,, चारित्र विजय. रु. १-४-० (६)

२४२२ व्यापारीनो रास. श्रावक जिनदास कृत. तथा श्रावक ही-राचंद कृत उपदेश रास. २ सं. १७१९ रु. ०-१-६

२४२३ व्युत्पत्ति वादटीका. वि. मंगलविजय (४७) [(७) २४२४ (ग्रनि) दृद्धिचंद्रजी चरित्र. ग्रा. भे. (६)

शकिवाद]

२०१

चित्रंजय

श.

२४२५ इक्तिवाद टीप्पन् (न्याय) पंगछविजय. (४७) २४२६ श्रक्ति वादादश्चे. (५०)

२४२७ शतकनामा पांचमो कर्मग्रन्थ. (जुओ प्रकरण रत्नाकर मा. ४ थो.)

२४२८ शतक प्रकरणम् शिवश्चमेसुरिकृतः सचुर्णिः हः १-८-० (९४, ६५६)

२४२९ शतपदी भाषान्तर. अचळगच्छवाळातं. मेहतुंग सूरि वि-रचित छघु शतपदीनी उपयोगी बीना तथा पदावसी साथे. सं. १९५१ (८४)

२४३० शत: मंगल पाट. रु. ०-१-० (२०१)

२४३१ शतार्थी, सोम मभाचार्य कृत, एक स्टोकना सो अर्थ, सं.

बीजी. उदय बल्लभ कृत. ते धर्मदास गणि २४३२ कृत उपदेशमालानी एक गाथानी.

२४३३ शतार्थी त्रीजी योगशास्त्रना श्लोकनी मानसागरजपाध्यायकत.

२४३४ शतुंजय उद्धारादि प्रवंशमाला. लघु जैन धर्म प्रवर्तक समा तरफर्यी सेक्रेटरी बाढीळाल मनसखराम गुसापारेखनी

पोळ अपदावाद. रु. ०-४-० (६५७, ६५८)

२४३५ अर्द्रजय तीर्थरास उद्धार विगेरे. स. १९५० रु. ०-५-० (9. 20) ि १९६९ (३१२)

२४३६ शृतंजय उद्धार. ग्रुनि नयसुंदरकृत भेट. आष्ट्रति ३ सं. २४३७ ब्रांजय तीर्थ स्तवनावस्त्री गुजराती रु. ०-५-० (१७)

२४३८ शर्तुंजय तीर्योद्धार प्रबंध. ग्रंथ पुष्प ३ उपे दुधात ओर ऐतिहासिक सारभाग सहित. संशो. मुनि जिनविजय

> (१७०, १७) ŁS

```
श्रमता
शत्रं नय ]
                        २०२
२४३९ शत्रुंजय तीर्थोद्धार प्रबंध हिन्दी. जिनविजयकृत. ( ५० )
२४४० शत्रुंजयनो नक्शो. (कपडावाळो) रु. १-०-० (६)
२४४१ शत्रुंजय पाहात्म्य (नानुं) रु. ०-८-०
                  ,, जिनहर्षे प्रणीत. ( जुओ आनं इकाव्य म-
             होदधि मौ. ४ धं )
                  ,, गुजराती भाषान्तर, रु. २-८-०
          "
                  ,, भाषान्तर. धनेश्वरसूरिकृत. संस्कृत प-
ર૪૪૨
                द्यात्मक महा ग्रन्थनुं (जेइनुं) रु. २-०-० (६)
                  .. खंड १ लो. भाषान्तर रु. २–४–०
                  .. संस्कृत, (पाना) रु. १२-०-०
ર૪૪३
                  महातीर्थ महारम्य सार रु. ०-१२-०
રક્ષક્ષક્ષ્
                  ,, यात्राविधि कर्ता कर्पूरविजयनी (३३,६५९)
2884
२४४६ (श्री) शत्रुंजव महातीर्थादि यात्रा विचार सं. १९७०(३३)
२४४७ बत्रुंनय लघु कल्प. अर्थ सहिन. सं. १९७८ (६)
२४४८ श्रश्नं नयादि यात्रा विचार. रु. ०-०-६ (३३)
२४४९ ,, स्तवन संग्रह. रु. ०-१-६
२४५० ब्रब्रंजयोद्धार प्रवंग रु. १-०-० ( ४९९, १७ )
२४५१ शतुंजय तीर्थोद्धार प्रबंध उपोद्धात तथा इतिहास भाग
          सहित. जिनविजय. रु. ०-१०-० (१), ६६०)
२४५२ श्रृतंजयोद्धार रास. नयसंदरकृत ( जुओ आनंदकाव्य महो-
           दधि मौ. ६ द्वं )
२४५३ शनीश्वरनी चोपाइ विगेरे. रु. ०-३-०
२४५४ भव्दकोष चिन्तायणि. रु. १२-०-० संस्कृत गु. कोश
          (म. ६६१)
२४५५ शमताशतक. ( जुओ प्रकरण रतनाकर भा. १ छो )
```

ब्रस्]

.203

सान्ति

२४५६ शब्द रत्नाकर कोष. ग्रं. नं. ३६ (१४, ७१)

२४५७ ,, ,, संस्कृत साधुसुन्दरगणि विरचित. ग्रं. नं. ३१ इ. ०-१२-० (१७, ६) अने जै. ध. प्र. सभावती.

२४५८ शब्द सप्ततिका प्रकाश. (५०)

२४५९ शब्द स्तोम महानिधि. (६६२)

२४६० भ्रमामृतम्. (छायानाटकम्) नेमिनाथ स्तवन अने रंगसा-गरनेमि हाडा संशोधक मुनि धर्मविजय सं. १९७९ (६६७)

२४६१ भाणी सुलसा. ले. सु. विद्याविजयजी सं. १९६९ रू. ०-४-० (६६८, १२३, ४७, १४)

२४६२ ज्ञान्त सुधारस विनयविजय उपाध्यायकृत (गंभीरविजय गणिकृत. टीका समेत) अनित्यादि १२ अने मैञ्यादि चार मळी सोळ भावनातुं यथास्थित स्वकृष बनावनार आ अपूर्व ग्रंथ छे. मूळ संस्कृत अने टीका सं. १९६९ (मित) (६, १०)

,, ,, गुजराती तथा चिदानंदजी विरचित मेट. पश्नी त्तर रत्नमाला मृल अने सरल व्याख्या. (३३,५०)

,, ,, भावना. रु. ०-८-० (५०)

,, ,, सटीक. रू. १-०-०

२४६३ झान्तिनार्थं कार्च्यः म्रुनिभद्रसूरि विरचितः सं. १९६७ (१४,९५)

२४६४ शान्तिनाथ चरित्र. (श्री अजितसूरि विरचितः) सं. १९७३ (अजीतप्रभसूरि) संस्कृत (२९, ६)

> ,, ,, भा. १ थी ४ छद्वा प्रस्ताव सुधी. अजीत प्रभाचार्यकृत. चालु. रु. ३--०--० (२९)

वान्ति]

२०४

[श्राकिभद्र

- ,, ,, म्रुनिभद्रसूरि विरचित. पद्यात्मक (१४,४७)
- ,, ,, हिन्दी सचित्र. रु. ४-०-०
- ,, ,, (भावचंद्रसूरि विरचित) गद्यात्मक (प्रति) (६६९)
- ,, ,, उपरनातुं भाषान्तर. ह. २-०-० सै. १**९**७८ (६)
- ,, चरित्रम् पंग्यास मेघविजय. नैषघ महाकाव्यनी पादपूर्तिरुप लखायुं छे. अने शान्तिनाय भगवानतुं चरित्र वर्णन कर्युं छे. रु. १-०-० (७७)
- २४६५ ज्ञान्तिनाथ चरित्रम् पंन्यास मेघविजयगणि. रु. १-०-० (५६, ४७)
- २४६६ श्रान्तिनाय चरित्र (पद्यबन्ध) पत. रु. १-४-०
 - ,, ,, (प्रत) रु. १-२-० (३२)
 - ,, , (मुनिभद्रसूरिकृत) रु. ३-०-० (६७,७६)
 - ,, ,, संस्कृत. गद्य भावचंद्रकृत. (६)
 - ,, T. 0-8-0
- २४६७ श्वान्तिनाय पुराण (दि०) मूल सकलकीर्ति रु. ७-८-० अनु. (६७१, ५०) [(२५)
- २४६८ ज्ञान्तिनो मार्ग. पं. केसरविजय. सं. १९८० रु.०-४-०
- २४६९ ज्ञान्तिप्रकाशः (जुओ आत्म हितवीध)
- २४७० शालिभद्र चरित्र. (संस्कृत) पं. धर्मकृमार विरचित. अपूर्व कया प्रथ. टिप्पण सहित. (पति) रु. १-४-० (१४, ५०, ४३०)

चाछिभद्र]

204

विवयोध

२४७१ शालिभद्र चरित्रनो अंग्रेजी अनुवाद. त्रिवेचन सहित अमे-रिकन ओरीयन्टल सोसाइटी बोल्युम ४३ मां छपायोछे.

२४७२ बालिभद्रनो श्लोको. (जुओ म्लोकासंग्रह बाह्मी)

२४७३ शास्त्रवार्ता समुच्यय. (संस्कृत पाना) हरिभद्रसूरि निर्मित. यशोविजयकृत. स्याद्वाद कल्पलताना ४ ना टीका
सहित. प्रथम विभाग. क २-०-० (१६,१,५०)
,, सस्तवक. हरिभद्रसूरिकृत (जुओ हरिभद्र
प्रन्थमाला)

", पति (६७४,६)

२४७४ ज्ञास्त्रार्थे दिग्दर्शन. विद्याविजय. सं हिन्दी. सं. १९८० (३७)

२४७५ बाछोपयोगी जैन प्रश्लोत्तर. रु. ०–६–०

२४७६ शिखरजीनुं ब्यान हिन्दी. ब्यान प्रारसनाथ पहाड. तवा-रिख तीर्थ समेत शिखर ग्रुट्फ बंगाल. जीला हजारी बाग. सं. १९६४ (६७५)

२४७७ शिल्प दीपक (गंगाधर मणीत.) रु. १-८-० जैनेतर.

२४७८ शिस्प सार संग्रह. रु. ०-८-० इतर.

२४७२ शिव प्रवोध. भा. १ लो. गु. रु. ०-८-० झं. मणको ७ मो. (४४९, ६७६)

२४८० शिवबोध मा १ लो. रु. ०-१२-० (६०, ५०) ,, भा. २ जो. (६०, ५०)

२४८१ शिवविनोतः गु. (४४९, ६७६, ५०)

२४८२ शिव विलास. गु. रु. ०-१२-० मं. मणको ६ (४४९, ६७६, ५०)

२४८३ शिवबोध भा. १ छो. इ. ०-१२-० (६०, ५०)

विविनोद]

२०६

वील

,, মা. २ जो (६०,५०)

- २४८४ शिवविनोद् गु. (४४९, ६७६, ५०)
- २४८५ शिव विलास. गु. रु. ०-१२-० गं. मणको ६ (४४९, ६७६, ५०)
- २४८६ शिवक्तिोदः आः ३ जोः रः ०-१२-० (४४९, ६७६, ५०)
- २४८७ शिशु क्षिक्षा. 'समोरंजन ' नामना हिन्दी लेखारथी अ-नुवादक ग्रुनि श्री तरुणविजयजी कोट. ग्रुंबइ. सं. १९८० (२६१)
- २४८८ शिष्योपनिषद् बुद्धिमभानी येट बुद्धिसागर सूरीश्वर, गं. नं. ४४ पृ. ४८ सं. १९७३ रु. ०-८-० (१५५८ थी ६२,१८४)
- २४८९ शिक्षाका आदर्श (सत्यदेव) आर्थिक, पानसिक अने आध्यत्मिक स्वतंत्रता विगेरे विषयो बढी सुंदर विवेच-ना की है. (८८, २६१)
- २४९० जीघ्रबोध अथवा थोकडा प्रबंध. भा. १ थी २५ (तैमां केटलाकनी किंपत वे आना छे अने केटलाक भेट त-रीके छे.) (६८)
- २४९१ शीघ्र मोक्षमाला गंभीर विजयजी महाराज गु. मेट. (५०, ६७७)
- २४९२ शीयलोपदेश. (शियळोपदेश) (१२९)
- २४९३ त्रीयल बावनी. गु. ले. झवेर डाग्राभार. रु. ०-२-• (६७८,६७९,५०)
- २४९४ शील इलकम् (जुन्नो इलक संग्रह १७ वाळो)

```
शील ]
```

209

[शुकनशास

२४९५ शीच तरंगिणि. (प्रति.) शीलोपरेशपाला हित्र पूळ कर्ता जयकार्तिमूरि टी हाकार सो विजकस्ि रु. ९-०-० (३२, ५०)

२४९६ ज्ञीलदूत. चारित्रसुन्दर गणि तिनिर्वितं काव्य. (४३०, २४९७ ज्ञील प्रकाश. संस्कृत (पाना) रु. ०-१२-० (५०) .. पश्चसागर गणि. रु. ०-१२-०

२४९९ शील रक्षा. भा. २ जो. अथवा सुरक्षन चरित्र. रु.

२५०० त्रीलवती सती कथा. रु. ०-६-० (५०)

२५०१ जीलवती कथा. गं. मा. नं. १० सं. १९७६ (५२)

२५०२ श्रीछवतीनो रास. कवि. नेमविजय कुत. गं. नं. ३५ रु.

१-२-०, रु. १-०-० सं. १९५१ (६८०, ६८१, ५०)

२५०३ शील सुन्डरी रास. रु. ०-२-० २५०४ शिलस्त्र विगेरे. २५९४ (इतर)ः

२५०५ शीलांगादि रथ संग्रहः चित्र तथा समज्जती सहित. सं. १९६८ रु. ०-१२-० (१८१)

२५०६ बीकोपदेश माला (जयकीतिसूरि विरंचितः) भाषान्तर. रु. २-८-० (१५५)

२५०७ भीक्षा शतक. रु. ०-१-० (तेरापंथी)

२५०८ शक्तिशास. भाषाभ्तर. रु. ०-६-०

,, जिनेन्द्रस्रिविरचिन, तेर्तुं भाषान्तरं, सं. १९५५ रु. ०-८-० (३२)

,, हिन्दी (५०)

,, गुजराती (५०)

श्चकन ी

२०८

। शेट. बीरचंद

२५०९ शुक्रन सारोद्धार. (अत्) संस्क्रन. रु. १-०-० २५१० शुक्रराज कथा. पाणिस्यतुन्द्रासूरिविरचित्र. सं. १९८० (५२)

२५११ शुक्रराज कुपार. रु. े-ः-० हिःदी. सचित्र. (९)

२५१२ श्वतराज चरित्र. रु. ०-२-७ ग्रा. भेट. (६)

२५१३ शुद्धदेव अनुभव विवार. हिन्दी अवृत्य. (७७)

२५१४ शुद्ध सामाचारी प्रकाश भाषान्तर हिन्ही. अनु.पं.प्र. श्री. बृहत्कोटीक खरतरगच्छे श्री रायचंद्दनीम्रुनि. सं. १९२९ (प्र. ६८२, ५०)

२५१५ शुद्ध देव गुरु धर्मनी सेवा उपासना विधि. ह. ०-१-० २५१६ शुद्धोपयोग. तेमां.

१ शुद्धोषयोग. ग्रां. ६९ २ द्याग्रंथ. ग्रां. ७० ३ श्रेणिकसुबोध ग्रां.७१ ४ कुष्णगीता. ग्रां. ७२ (१५,५८ थी ६२,१८४)

२५१७ शुद्धोपयोग अथवा सहज समाधि गु. ले. फतेचंद कर्पूर-चंद लालन (२८८, १०९, ५०)

> ,, ,, छ म. कर्ता जन एसो सीएसन ओफ इन्हीं आ. (७१)

> ,, पवेशिका. (जुओ सुमितिविलास. ग्रन्थ. म-नसुखलाछ.)

२५१८ छुं पश्चमेघ सञ्चास छे. १ (५०) [(१०८,११) २५१९ शेट मनसुलभाइनो जीवन विरद्द. (भेट) पद्यात्मक. २५२० शेट. मोती वंद अमीचंदनु जीवनचिरत्र. ३९५ (वि.) २५२१ शेट. लालभाइ विरद्द. (भेट) (१०८,६८३) २५२२ शेट. बीरचंद विरद्द. (भेट) (१०८) शोक] २०९ [श्राद्युण

२५२३ शोक विनाशक. ग्रं. ७५ बुद्धिसागरसूरि. (१५,५८ थी ६२,१८४)

२५२४ शोभन स्तवनावली. दशवैकालिकसूत्रनां अध्ययनो स्तवनो विगेरे. रु. ०-५-० (६८४, ६८५, ५०)

२५२५ स्याद्वाद कलिका. (राजशेखर सृरि) श्री युक्तिप्रकाशना भेगो आ ग्रंथ छे.) रु ०-८-० (भेगानी) (३२)

२५२६ साम्य शतक. विजयसिंहसूरि कृत. सविवेचन. भाषान्तर सहित. (१४३)

२५२७ श्रद्धाञ्चद्धि उपाय. कर्पूरविजयकृत. रु ०-२-० (भेट) (३३,५०)

२५२८ श्रमणनारदः इंग्रेजी उपर अनुवादकः पंडित लालनः फः कः परोपकारनो अवतारः भेटः (१०९, ५०)

२५२९ श्रमण प्रतिक्रमण सहत्तिकम्. (५०)

२५३० श्रमण प्रतिक्रमण सूत्र. सं. १९६७ रु. ०-१-६ (१६,

२५३१ श्रमणसूत्र. (५०) [१) (प्रति)

२५३२ श्रमणसूत्रवालावबोध. नयविमलगणि कृत. रु. ०-४-०

२५३३ श्रमणसूत्रवृत्ति (पाना) रु. ०-१-६ [(७३)

२५३४ श्राद्ध कल्पतरु. योजक कर्पूरविजयजो. (३३, ५०)

२५३५ श्राद्धगुण विवरणम् जिनमंडनगणि गुंफितम् अणहिलपुरप-इन नगरे. सं. १४९४ वर्षे निर्मितं अलभ्य. झं. रतनः २९ सं. १९७० रु. १-०-० (१७, १०)

२५३६ श्राद्धगुणवित्ररण भा. १ छो. आत्मानंद जैनेट्कट सो-साइटी. अंत्राला शहेर.

> ,, ,, भाषान्तरः मैं, नं, ३० रू. १-८-० (प्रति) (६८६, १७) २७

भाद्रदिन]

280

श्रावक

,, ,, संस्कृत. (पाना) रु. १-०-० २५३७ भाददिन कृत्यः अर्थ सहितः रु. ०-८-०

,, ,, भाषान्तर हिन्दी नानकचंद जती. की. नथी. (६८७, ५०)

२५३८ श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्र. अपरनाम (अर्थदीपिका) हित्त (पाना) रत्नशेखरसूरिकृत. विवरण युक्त. मं. नं. ४९ रु. २-०-० (१६)

> ,, ,, ,, टीकाकार रत्नशेखरसूरि. टी. २ सं. १४९६ टी. ले. सं. १६०३ सं. ग्रन्थ नं. ४८ इ. २–९–० (१६)

२५३९ श्राद्धविश्रियं संस्कृत. पाना रत्नशेखरसूरिकृत. स्वीपइ इचि युक्त सं. १९७४ रु. २-८-० (६८८)

२ १४० श्राद्धविधि भाषानार. (गुजराती) पंडित. रत्नशेखरसूरिविरचित. तथा तेमनी रचेली विधिकौग्रदी नामनी टीकांचुं भाषान्तर. रु. ३-८-० (१५५, ५०)
,, ,, (गुजराती) ''जैनचुं '' पंडित रत्नशेखर
सूरिए करेला मूल. तथा तेमनी टीका (कौग्रदी) चुं
भाषान्तर. गुजर. रु. २-०-० (४४, ६८९)

,, ,, शस्त्री, रु, ३-०-०

२५४१ श्रामण्य रहस्य. प्र. विवेकचंद ज्ञानमल. (६९०,६९१) २५४२ श्राचक आचार. अग्मितगति आचार्य विरचित. (दि.) ग्रं. नं. २ रु. १-१०-०

२५४३ श्रावक कल्पतरु. श्रावकना बार व्रतनुं स्वरूपः ग्रा. भेट. योजक ग्रुनि कर्पूरविजयः ग्रं. नं. २१ सं. १९६८ (१७)

```
भावक ]
```

288

भाविका

,, į, की. नथी. (३३)

२५४४ श्रावकगुण दर्पण. रु. ०-१-६

२५४५ आवक्तधर्म दर्पण. रु. ०-३-६

२५४६ श्रावक धर्म संहिता. (धर्मिबिन्दुमांथी धर्मिबिन्दु सार प्रथम भाग) ग्र. नं. ३ इ. ०-१२-० (५९५)

२५४७ श्रावक धर्म स्वरुप.भा.१को.रु.०-१-०) आ. बीजी.पृ.४० ,, ,, भा. २ जो. इ.०-१-०) ए. ४०

२५४८ श्रावकनी आलोयणा. (स्थानक वासीनी) रु. ०-४-०

२५४९ श्रावक प्रकृति भाषान्तर. रु. ०-२-०

,, ,, सूत्र. मूळ. सं. टीकानुं भाषान्तर.

गु. भा. क. के. पे. मोदी. रु. ०-१०-० (६३,५०

२५५० श्रावक व्रतमंग. पकरण. अवचूरि सहित. ग्रै. रतन. १४ मृ. मा. सं. १९६९ रु. ०-२-० (१७, १०)

२५५१ श्रावक श्राविका धर्मे, ग्रं. नं. १५ रु. ०-२-० सं. १९७८ (५३९, ६९३)

,, ,, ,, रू, ०**–१**–६

२५५२ श्रावक सामायिक विधि. ह. ०-६-०

२५५३ श्रावक संसार. रु. ०-१२-०

२५५४ श्रावक स्तवन संग्रह, भा, १-२-३ भेट. ४३

२५५५ श्राविका धर्म. रु. ०-१-० (६९४) [६०

२५५६ श्राविका भूषण. प्रथमालंकार. रु. ०-१२-० (१४३,

,, द्वितीयाछंकार. रु. १-०-० (१४३, ६०)

,, तृतीयालंकार. रु. १-०-० (१४३, ६०)

,, तुर्याकंकार. रु. १-४-० (१४३, ६०)

```
२११
                                               भीपाल
२५५७ श्राविका शिक्षण रहस्य. रु. ०–२–० ( १४३ )
२५५८ श्राविका सुबोध दर्पण. ह. ०-१२-० ( ५० )
२५५९ श्रीचंद केवलीनो रास. गुजराती. रु. १-८-०
२५६० श्रीचंद केवलीनो रास. रु. १-८-०
२५६१ श्रीचंद चरित्र. संस्कृत (पाना ) रु. ५-०-०
२५६२ श्रीपाळ गोपाल कथा. सोपसंदरसूरिना शिष्य जिनकी-
          र्तिसरिविरचित. गं. मौक्तिक. सं. १९७६ (६९५)
२५६३ श्रीपाल चरित्र. मूल कर्ता. ज्ञानविगल सूरि. ले. सं. १७४५
          संस्कृत. ग्रं. नं. ५६ रु. ०-१४-० ( १६ )
                          ₹. 0-22-0
          25
                  ,,
                          जिनहर्षे. गुजराती. ( २४, ५० )
                         ंगद्य. ( जुओ चरित्र संग्रह )
                          मागधी. (पाना) रु. २-८-०
                         नयविमळ. उर्फे ज्ञानविमळ संस्कृत
          59
                  "
                         काव्यम्. रु. ०-१४-० ( १६ )
                          पाकृत सावचूरि. ( ५० )
          "
                  "
                         संस्कृत. ( ५० )
                                (पाना) रु. १-१२-०
२५६४ श्रीपाळ राजानो रास. न्याय सांगरजी कृत. अर्थ सहित.
```

रन्द्र अर्थाक राजामा रास. न्याय सागरजा कृत. अय साहत.
ह. २-०-० (३२) [२-४-०
,, ,, (अर्थ सहित) शास्त्री. ह.
,, ,, ले. कुवरजी आणंदजी (६,५०)
,, ,, ,, श्री विनय विजयजी तथा
यशोविजयजी उपाध्याय विरचित. (७)

२५६५ श्रीपाळ राजानो रास गुजराती. रु. २-८-०

िरीपोर्ट.

भीमदं] **अहोकासंग्रह** २१३ ,, ,, (रहस्य युक्त) रु. ०-१०-० ,, ,, मृछ (शास्त्री) रु. ०-८-० २५६६ श्रीमद् विजयानंद द्वात्रिश्चिका मुनिश्री लब्धिविजय माणिक्य म्रनीभ्यां विनिर्मिता. कीं. छखी नथी. (७१) २५६७ श्रीमंथर स्वामीनां स्तवन् त्रण भेट. (६५०) २५६८ श्रीमंघर स्वामीने विनित्तरुप साडात्रणसो गाथानुं स्तवन (जुओ प्रकरण रत्नाकर भा. १ छो.) २५६९ श्री पंचमी महातम्य. इ. ०-२-० २५७० शृंगार वैराग्य तरंगिणी. अर्थयुक्त. रु. ०-४-० ,, (जुओ चरित्र संग्रह) (जुओ काव्यमाळा गुच्छक. रू. o-१-o भा. ५ मो.) ,, २५७१ श्रेणिक चरित्र. जिनमभसूरिविरचित. भाषान्तर भा. १लो. ह. ०-१२-० (१४३) २५७२ श्रेणिक चरित्र, संस्कृत (पाना) रु. १-१२-० २५७३ श्रेणिक महाराजा तथा अष्टमकारी पूजानी रास. र.०.४-० २५७४ श्रेणिक रास. अष्टमकारी पूजायुक्त. गु. वांचवायोग्य (५३) २५७५ श्रेणिकरास. (सम्यत्तव सार) अष्ट्रप्रकारी प्रजानो. की. नथी. छपावनारनं नाम नथी (६३) २५७६ श्रेणिकसुबोध. (जुओ शुद्धोपयोग) बुद्धिसागरसूरि. २५७७ खेतांबर तेरापंथी मतसमीक्षा. विद्याविजय भेट. (४६४) २५७८ श्वेतांबर तेरापंथ पत-समीक्षा. रु. ०-४-० २५७९ श्वेतांवर दिगंबर संवाद. रु. १-६-० २५८० श्वेतांबर स्थानकवासी. जैन कोन्फरन्सनी चोथो वार्षिक

२५८१ स्त्रोकासंग्रह (शास्त्रो) रु. ०-५-०

श्लोकासंब्रह] श्लोका स्वाध्याय. १ नेमनायनो.

२१४

[षट्दश्रन

वाध्याय. ५ आदिनाथनो.

नेपनायनो. ६ संखेश्वरनो.

२ शास्त्रिभद्रनो. ७ नेमनाथनो.

३ भरत बाहुबळनो. ८ विमळ मेतानो.

४ संखेश्वर पार्श्वनाथनो. ९ विवेक विळासनो.

१० बार भावनानी सञ्ज्ञाय. सकळचंदजी उपाध्यायकृत.

२५८२ श्लोकासंग्रह. गुजराती. रु. ०-४-०

२५८३ षट्कमेग्रंथ. (जुओ मकरण लघु संग्रह.)

२५८४ पट्कमे दीपिका विगेरे. (५०)

२५८५ षट्कर्म निरुपणम्-सटीकम्-श्री पूर्णानन्द यति विरचि-तम् रु. ०-८-० (५०) [ग्रन्थमाळा)

२५८६ षट्दर्शन समुच्यय. हरिभद्र सुरिकृत. (जुओ हरिभद्रसूरि ,, ,, ,, हरिभद्र गुणरत्ननी टीका. तर्करहस्य दीपिका. एडीटेडवायएल. सुअली (Suali) १ थी २ विभाग पूर्ण. पहेलो विभाग अलभ्य. बीजो त्रीजो रु. १-८-० दरेकनो (२९)

२५८७ षट्दरीन समुच्यय. इरिमद्रसूरिकृत. इ. ०-५-० (१६)

,, ,, राजशेखरकृत. रु. ०-५-० (१६)

,, ,, (६, ६७४)

,, ,, ढघुटीका रु. ०-१२-०

,, ,, राजशेखरसूरि विरचित. ह.०-४-०(१४)

,, ,, भाषान्तर, रु. १-४-० (२७)

,, सटोक, ग्रं, ४९ रु. २-८-० (१७)

षहद्रव्य]

२१५

[षडशीति

,, ,, हरिभद्रसूरिकृत. पणिभद्रकृतयाटीका सहित

२५८८ षड्द्रव्य विचार. ले. बुद्धिसागरसूरि ग्रं. नं. ६५. पृ. २४० रु. ०-४-० (१५, ५८ थी ६२, १८४)

२५८९ षट् पाहुड ग्रन्थ भाषान्तर हिन्दी. कुन्दकुन्दस्वामी विर-चित. (दि.) (७०७)

२५९० षट्पुरुष चरितम्. मुळकर्ताः क्षेमंकर गणि. (पंदरपोसैको) सं. रु. ०-२-० (१६)

२५९१ षट् पुरुष चरित्र भाषान्तर. भाः कः पंः चारित्रविजयः मूळ पंडित क्षेमंकरगणिकृतः संः १९६२ रु. ०-४-० (६) ,, ,, ,, संस्कृत (पाना) क्षेमंकरगणिविरचितः रु. ०-२-० ग्रः नं २४ (१६)

,, ,, ,, ,, ₹, १-°-°

२५९२ षट्मामृतादि संग्रह. कुन्दकुन्दाचार्थ. (दि.) (८१) [म्रुंबह. २५९३ षड्भाषा चंद्रिका. लक्ष्मीधरकृत. व्याकरणगंथ. ए. सो. २५९४ षडशीति नाम चतुर्थ कर्मग्रन्थ. (जुओ प्रकरण रत्नाकर भा. ४ थो)

,, ,, ,, ,, जिनवल्लभगिण पुंगव प्रणीत. हिरभद्रसूरि विरचित हत्त सिहत. आनुं बीजुं नाम ''आगिमक वस्तुविचार सार प्रकरणम्'' बंने टीका वाळो उत्तम ग्रंथ छे मूळ पण जुदो आपेलो छे. ग्रं. नं. ५२ (१७)

२५९५ षडचीति अपरनाम चौथा कर्मग्रन्थ. श्री देवेन्द्रसूरि विर-चित. पं. ग्रुखलालजीकृत. हिन्दी अनुवाद. और टीका टिप्पणी आदि सहित. इ. २-०-० (३९)

षडशीति]

7,28

सङ्झाय

२५९६ षडशीति प्रकाशः प्रणेता नन्दनित्रयः कींमत नथी राखी शेठ माणेकलाल पनसुखभाइः अमदावादः

२५९७ षष्टिशतक भाषान्तर. वेदान्तविचार. लब्धिविजय. ट्रे. नं. ३३ (४८, ९५)

२५९८ षष्टिशतकम्. भाषान्तर सहित, शास्त्री गुजराती, मूळकर्ता नेपिचंद भंडारी, भेट, सं. १९७६ (३२)

२५९९ पोडशक टीका. षोडशक प्रकरणम्. इरिभद्रसूरि विरचितः यशोभद्रकृत विवरण अने यशोविजय उपाध्यायकृतः दीपिकावृत्ति युक्त ग्रं. नं. ६ रु. ०-६-० (१६)

स.

२६०० सकाम निर्जरा अने नारी हितशिक्षा. (१७८)

२६०१ संग्रहणी सृत्र. मूळकर्ता श्री चंद्रसूरि टीकाकार देवभद्रसूरि र. सं. १७९३ रु. ०-१२-० (१६)

२६०२ संघयणी रत्न त्रैछोक्य दीपिकाख्य ग्रन्थ बालावबोध सहित (जुओ प्रकरण रत्नाकर)

२६०३ संखेषरनो श्लोको (जुओ श्लोकासङ्गह आस्त्री)

२६०४ सची प्रभावना (५०)

२६०५ सज्जन चित्त ब्रह्मभ्यातीक रु. ०-३-० (७१०)

२६०६ सज्जन सन्मित्र, इ. १२१३ अमुल्य (७११, ९५)

२६०७ सज्जायमाला अने स्तवनसंग्रह, हीराचंद ककलभाइ सुपर-वाइझर जैन कन्याशाळा अमदावाद, (प्र. ७१२,

२६०८ सज्झाय. (जुओ देवचंद भा. २ वि. १) [१७९, ५०)

२६०५ सञ्चाय पद तथा स्तवनादिकनो संग्रह, रु. २-०-०

२६१० सञ्चाय पद संग्रह. यशोविजयजीकृत. भेट. सं. १९७२ (७१३) सञ्चाय]

२१७

सदुप

२६११ सझायमाळा शिलाछापनी. (लब्लुभाइ करमचंदना छाप-खानामां सं. १९२१ मां छपायुं (ले.) १५,७१४,९५)

२६१२ सझायमाळा भा. १ लो (गुजराती) रु. १-०-० (म. ७१६, ५०)

., भा. २ जो. रु. १-१-० सं. १९६१ (८२)

,, भा. ३ जो. रु. १-०-० (७१७,५०)

,, भा. ३ जो. (शास्त्री मोटी) रु. २-८-०

२६१३ सहिसय. (पष्टिशतक) पयरण. संस्कृत. रु. ०-८-०

२६१४ सती कलावती हिन्दी. सचित्र रु. ०-८-० (प्र. ९)

२६१५ सती चंदनबाला, हिन्दी सचित्र, रु. ०-१०-० (९)

२६१६ सती शीयळवतीचरित्र म्रनिमाणेक. (१७८)

२६१७ सती सरसंदरी हिन्दी सचित्र, रु. ०-८-० (९)

२६१८ सत्यनुं समर्थन याने जैन साहित्यनी सर्वोत्कृष्टता. ले. रामविजय. रू. ३-०-० (९४)

२६१९ सत्यबोध भास्कर. यतीन्द्रविजयजी. सं. १९७१ दुंढकोका संडन. रु. ०-६-० (३७)

२६२० सत्यशास्त्रार्थ. गुजराती. ले. पं. केसरम्रुनिजी गणि शिष्य. प्र. मुनि बुद्धिसागर मुनि. सं. १९७५.

२६२१ सत्य स्वरुप. गु. बुद्धिसागरसूरि. रू. ०-४-० (१५, ५८ थी ६२, १८४)

२६२२ सत्यार्थ रत्नाकर भेट. तीर्थविजय पन्यास. सं. १९७३ त्रिस्तृतिक मीमांसा खंडन. (५८८)

२६२३ सद्बोध सूचना (१९२)

२६२४ सदयवत्स चरित्र संस्कृत. (पाना) रु. ३-८-०

२६२५ सदुपदेश. ले. पंडित. कन्हैयालाल उपाध्याय रु.०-२-६ २६२६ सदुपदेशमाला. रु. ०-८-० [(७१८, ७१९)

٠٤

सद्गुण]

२१८

सिप्तभंगी

२६२७ सद्गुण प्रशंसा. रु. ०-८-०

२६२८ ,, ,, अथवा गुणानुराग कुलकनो भावार्थ. श्रावक हरशीभाइ देवराज कच्छ. सरदीवाळा. सं. १९६१ रु. ०-४-० (७२०)

२६२९ सद्बोध चिन्तामणी अने गुणमाळा. रु. ०-२-० २६३० सद्बोध संग्रह. भा. १ हो. रु. ०-६-०

२६३१ सद्वत्ता. भाषणकळानो प्रथम उपक्रम. (१०९)

२६३२ सनम परस्तिए जैन ले. शान्तिविजय. रु. ०-४-० (प्र. ७२१)

२६३३ सनातन जैन प्रन्थमाळा. पथपगुच्छक. रु. १-०-० पन्ना-लाल वंशीघर संशोधक. चौदप्रन्थनो संग्रह. (दि.) (१०)

२६३४ सप्ततिका नामा पष्टकर्मग्रन्थ. (जुओ प्रकरण रत्नाकर भा. ४ थो)

,, भाष्य सटीक (पाना) श्री अभयदेव विरचित-मेरुतुंगाचार्यकृत टीका सहित. अष्ट्रभा कर्म विवरण मूळ पाकृत अने व्याख्या संस्कृत. रु. १-८-० (६, १०, ५०(

२६३५ सप्तति शत स्थान प्रकरण, सोमतिलकसूरिविरचित, राज-गच्छीय देवविजयविरचित, हत्तियुक्त, सं. १९७५ ग्रं. रत्न ६८. रु. १-०-० (१७)

२६३६ सप्तभंग तरंगिणी. कर्ता श्री विमळदास भाषा टीका हिन्दी २६३७ शास्त्री. रु. १-०-० मुंबइ.

,, ,, भाषान्तर सहित. रु. ०-१२-० ,, ,, (जैन तर्क ग्रन्य) मूळ रु. ०-९-० २६३८ सप्तभंगी जाप हिन्दी. रु. ०-१-०

بر ب_ا ب_ا بر دبر۔ ب

सप्तभंगी]

289

समिकत

२६३२ सप्तभंगी पदीप. छे. पंगलविजय. (७२२, ४, १७)

२६४० सप्तभंगी पदीपक गुर्जर. ले.मंगलविजयजी आगरा(१४,४७)

२६४१ सप्तमगुच्छक. २३ जैन पाचीन स्तोत्र छे. रु.१-०-०(१०)

२६४२ सप्तन्यसन निषेध. ले. मणिविजय. रु. ०-८-० (८२)

२६४२ सप्तन्यसन परिहार. बहुतलालात्मज किशनलाल पटवा. कुकडेश्वर सं. १९८० रु. ०-४-० (३७)

२६४४ सप्तसंघान. महाकाव्यम् मेघविजयगणि. रु. ०-८-० (५६, ७६, ७२३)

२६४५ सप्तसन्धान पहाकाव्य. महोवाध्याय मेघविजयजी गणि. आ काव्यनो पत्येक श्लोक सात महापुरुषोना जीवन हतान्त साथे संबंध राखे छे. संस्कृत साहित्यभरमां आवुं बीजुं कोइ महाकाव्य नथी. रु. १-०-० (७७)

२६४६ समिकत गुजराती छखनार सागरचंदजी गुछावचंदजी हुए। बी. ए. रु. ०-६-० (६)

२६४७ समिकत कौमुदी भाषान्तर. रु. ०-८-० (१७९)

,, ,, रु. ०**-४-०** (६३६)

,, ,, संस्कृत (पाना) रु. १-१२-०

२६४८ समिकत छपानी (जुओ आत्महित बोध)

२६४९ समिकतना सदसट बोळर्ना सञ्ज्ञाय अर्थ सहित. मूळकर्ता यशोविजयजी टी. मोहनळाळ द. देशाइ. इ. १९१२ इ. ०-१-० (अछभ्य)

२६५० समिकतना सदसट बोलनी सज्झाय भेट. (२२९) ,, ,, ,, अर्थ सहित रु. ०-?-० सं. १९६० (३३, १४, ४७)

```
समकिती
                                             समराह
                        २२०
२६५१ समिकतनी सज्झाय. ( जुओ देवचंद भा. २ वि. १ )
२६५२ समिकत परीक्षा संस्कृत (पाना ) रु. ०-६-०
२६५३ समिकत मूळ बार व्रतनी टीप. रु. १-४-०
                        ,, संक्षिप्त टीप रु. ०-१-० (६)
२६५४ समिकत विषे निवंग (हिन्दी) रु. ०-६-० (६)
२६५५ समिकत शल्योद्धार (गुजराती ) (सभानो) रु. १-४-०
२६५६ समिकत शल्योद्धार (शास्त्री ) रु. १-४-० (६) [(६)
२६५७ समिकत सार भा. १ लो. गु. रु. १-४-० (७२४)
          ,, भा. २ जो. सं. १९४२ रु.१-४-० (७२६,७२७)
२६५८ समय प्राभृत. (दि०) कुन्दकुन्दाचार्य पः नालाल जैना
                 सटीक, क्रन्टक्रन्दाचार्य, (दि.) [रु. ४-०-०
२६५९ समयसार टीका. हिन्दी भाषान्तर सहित. (दि.) (५०)
२६६० समयसार, कुंदकुंदाचार्य. (दि.) शास्त्र. मुंबइ.
२६६१ समवसरण स्तवन. ( जुओ देवचंद भा. २ वि. १ )
२६६२ समवायांग 'सटीक मृ. सुधर्मास्वामी. टी. अभयदेवसूरि
          टीका. सं. ११२० रु. १-०-० (२८, १६)
२६६३ समयसार प्रकरण पाना ( रत्न ३९ ) स्वोपइ व्याख्योपे-
          तम्. रु. ०-८-० (१७)
                     सटीक देवानंद कृत.
२६६४ समयसार पगरण पा. मुळ. (प्रति) (१६)
२६६५ समराइच कहा हरिभद्र, एडीटेद बाय जेकोषी, १ थी ८
          भाग. नव भव्व पुरा चालु, रु. ६-०-०
                         सोसाइटीनं (९५)
                        संस्कृत छाया सहित हरिभद्र सुरिवर
          "
                 55
```

समरादि]

228

िसमाधि

विरचित. मृ. मा. सं. १९७२ रु. १-४-०

भा. २ जो. रू. १-१२-०

भा, ३ जो, रू. १-१२-०

२६६६ समरादित्य केवलीनो रास. रु. ३-८-० (६३,७२८) हरिभद्र सुरिए क्रोध निरासार्थे आ चरित्र भारुयुं ते उपरथी पद्म विजयजीए रचेल चरित्र सं. १९२२ जुनी गुजराती नवलंड छे. सर्व गाथा ८५६ प. दोलतचंद हकमचंद.

२६६७ समरादित्य चरित्र भा. २ जो. प्रत. रू. ७-८-०

भा. १ छो. (प्रत) रु. ७-८-०

(40)

संक्षेप श्री प्रद्यम्नाचार्य विरचित. संस्कृत रु. २-८-० (७२९, ६३)

२६६८ समवसरण स्तव अवचृरि सहित धर्मघोष स्रिकृत (पाना) मू. पा. अव. संस्कृत. रु. ०-१-६ (६)

२६६९ समवसरण स्तव अवचृरि सहित मू. मा. अलभ्य. रु. (29) 0-8-0

प्रभृति. (५०) **३**६७०

समवायांग सूत्र मूळ टीका अर्थयुक्त अभयदेव सूरि कृत वृत्तियुक्त. रु. १-०-० (२८) [टीकायुक्त. (२४)

,, सद्वत्तियादिक मेघराजगणि कृत भाषा भा. १ हो. (५०)

"

२६७२ समाचारी प्रकरण आराधक विराधक चतुर्भगी प्रकरण पाना. रु. ०-६-०

२६७३ समाधितंत्र गुजराती. रु. ०-६-० मेरट. (७३०) ,, सं. हिन्दी. मुनिमाणेक कीर्ति प्रसादजी वकील २६७४

समाधितंत्र]

222

सम्भत्याख्य

२६७५ समाधितंत्र गुजराती सं. १९७२ मेट. (७३१)

,, ,, ₹. °-₹-₹

२६७६ समाधि गरण (जुओ आत्महित बोध) २६७७ समाधि विचार. रु. ०-३-० (३३)

. की. मनन सं. १९७१ (३३)

,, आराधनानु स्तवन अने गौतम स्वामीना रास साथे. भेट बीजी आदृति. ४००० (३३)

२६७८ समाधिशतक. (जुओ प्रकरण रत्नाकर भा. १ लो.)

,, समता शतक अने अनुभव शतक. रु. ०-८-० (२३)

,, बुद्धिसागर सूरि (१५, ५८ यी ६२, १८४) २६७९ समाधिशतक रु. ०-४-०

, अने आत्मशक्ति प्रकाश. रु. १-०-०

,, ,, ले. बुद्धिसागर स्नृति सं. १९६३ रु.

०-८-० (१५, ५८ थी ६२, १८४)

,, अने समता शतक. रु. ०–६–०

,, " " अने अनुभव शतक. रु. ०-८-०

२६८० सम्रुचित्तोत्तर दानपत्र हिन्दी विजय राजेन्द्र विरुद्ध छखेछ। जैन भिक्षुने उचित छेख. (५०)

२६८१ समेतशिखरजीनो नकशो (कपडावाळो) रु. ०-६-०

२६८२ समेतशिखर रास. रु. १-०-०

२६८३ समोवसरण स्तव. (१७, १२)

२६८४ सम्पति सूत्र मूळ. (जुओ सिद्धसेन दिवाकर (ग्रन्थमांछा)

२६८५ सम्मत्याख्य प्रकरण सिद्धसेन दिवाकर रचित श्री राजग-च्छीय अभयदेव सूरि रचित तत्त्वबोध विधायिनी व्या-

ख्या सहित. रू. ३-०-० (१४, ४७)

सम्य] २२३ (सम्य

२६८६ सम्यक्त्व अने पिथ्यात्वनो संवाद अथवा जैनकोन्फरसतुं कर्तव्य. रु. ०-१-३ (१४३)

२६८७ सम्यत्तव कौमुदी जिनहर्षगणि विरिचित. सं. १४८७ हित्त करी सं. १४९७ जयचंद (जिनहर्ष शिष्य) चितोडगढे अरुभ्य. ग्रं. रत्न नं. २८ (प्रति) सं. १९७० रु. ०-१२-० (१७)

> ", ,, जपलातुं भाषान्तर ग्रं. नं. ३३ भेट मथमावृति मोतीचंद ओधवजी. (१७)

२६८८ सम्यक्त कौमुदी संस्कृत. (पाना) रु. १-०-०

२६८९ सम्यवत्व दर्शन. गु. रु. ०-१२-०

२६९० सम्यक्त्वना बार व्रतनी टीप पंडित उद्योतसागर गणी वि-रचित द्वितीयादृति. (७, ५०)

२६९१ सम्यक्तना सहसट बोलनी सन्झाय यशोविजयजी कृत. रु. ०-१-० (प्र. २१४)

२६९. सम्यन्त्व निर्णय बुद्धिविजय शिष्य भावविजय हिन्दी ता-त्विक मेट. सं. १९३० (७३२)

२६९३ सम्यक्त्व परीक्षा उपदेश शतक मृ. कर्ता विबुधविमलसूरि सं. गं. नं. २८ रु. ०-२-० (१६)

२६९४ सम्यक्त्व मिथ्यात्वनो संवाद. रु. ०-१-३ [(१८१)

२६९५ सम्यक्त मूळ बार व्रतनी टीप. सं. १९६५ रु. ०-५-०

२६९६ सम्यक्त सप्ति मूळ कर्ता इरिभद्र सुरि दृति संघ तिलका-चार्य दृत्ति. १४१२ सं. ग्रन्थ. नं. ३५ रु. १-०-०

२६९७ सम्यक्त सल्योदार हुकम मुनि (२१) [(१६)

,, ,, हिन्दी विजयानंद सूरि. की. नथी. **२६९८ सम्यक्**त सप्तति संस्कृत (पाना) ह, १–०० [(७३३) २६९९

रु६९९ ,, ,, ,, विगेरे (५०)

```
सिध
सम्य ो
                         २२४
२७०० सम्यक्त्व स्तव. रु. ०-४-० ( १७ )
२७०१ सम्यवत्व स्वरुप स्तवन भाषान्तर. नं. २९ सं. १९७२
                                ह. ०-३-० (.१७ )
२७०२ सम्यक्त्व न्याय सुधारस.
,, ,, ( जुओ सुपतिविलास ग्रन्थ पनसुखलाल )
२७०३ सम्यक्त्व दर्शन. सम्यक्त्व स्वरूप ले. पं. केसरविजय. सं.
           १९७३ ह. ०-१२-० ( २५ )
२७०४ सम्यग्दष्टि गुजराती. कोरोनेशन भेट. (ता. १२-१२-११)
          ले. चारित्रविजयजी. ( ७३४ )
२७०५ सम्यग् ज्ञान दर्शनपूजा. सं १९७८ रु.०-२-० (म.४५६)
२७०६ सर्वे दर्शन संग्रह पाधवाचार्य प्रणीत. (अन्यमतिकृत) आमां
          आहेत दर्शननी बाबत छे. इ. १८९६ रु. ५-०-०
          (भा. क. ७३५)
२७०७ सलोकासंग्रह भा. १ लो. ११ सलोका है. रु. ०-६-०
          ( १७९ )
२७०८ सवासो गाथानुं स्तवन यज्ञोविजय. ( जुओ प्रकरण रत्नाः
          कर भा. ३ जो )
२७०९ सविधि साधु प्रतिऋषण सुत्राणि. ( ३७ )
२७१० सवीर्यध्यान. शुभचंद्र देव विरचित सं. १९५९ रु.०-१२-०
                              (भा. क. ७३६)
           ,, ₹. o- ?o-o
२७११ सहजसमाधि अर्थयुक्त. रू. ०-४-०
२७१२ 'सहस्रकुट् स्तवन '( जुओ देवचंद्र भा. २ वि. १ )
२७१३ साकारसिद्धि गु. अप्रत्य. ( प्र. ७३५ )
२७१४ सागार धर्मामृत सटीकम् (माणेकचंद नं. २) आशाधर-
         ्रकृत ( दि. ) ( ८१ )
२७१६ साध वंदना. रु. ०-१-०
```

रास. र. ०-४-०

२७१७ ,,

साधारण]

224

साध

२७१८ साधारण जैन स्तोत्र संग्रह पंडित कीर्ति विमळगणि शिष्य पंडित लक्ष्मी विजयगणि विरचित. की. नथी. (१९७)

२७१९ साधु आवश्यक क्रिया सूत्र भेट संस्कृत. (१७)

२७२० साधु दिनकृत्य (पाना) रु. ०-१२-० श्री हरिभद्र सूरि कृत. (३२)

२७२१ साधु प्रतिक्रमण (जुओ सोभाग्य पंचपी विगेरे पूर्व कथा संग्रह.)

> ,, ,, सूत्रावचूरि. सं. १९७७ (पाना) रु. ०-४-० (१७, ७३८)

> ,, ,, मूळ सहित अवचूरि छ प. हीरा. हंस. जामनगर. ०-४-०

> ,, ,, सुत्राणि तथा क्षमा कल्याणक उपा-ध्याय विरचित श्री साधु विविध प्रकाश प्र. अमीचंद प्रकालाल मुंबइ.

२७२२ साधुविधि प्रकाशः (जुओ सौभाग्य पंचमी विगेरे पर्व कथा संग्रहः)

,, ,, ,, विगेरे (५०)

२७२३ साधुवंदना रास. नयविपलगणि उर्फे (ज्ञानविपळसूरि) २० सं. १७६१. आसो सुद २ गुर्जरभाषा ग्रं. नं. १० ह, ०-५-० (७३, १२)

२७२४ साधु शिक्षा. रु. ०-८-० (८८, २६१) २७२५ साधु श्रावक आराधना. (जुओ सौमाग्यपंचमी विगेरे पर्व कथा संग्रह).

२७२६ साधु सामाचारी प्रकरणम्. (योगविशेष वाक्ययुतम्)
पूर्वाचार्यकृतः (२८, १६)

साधु]

२२६

सामायक

२७२७ साधु साधवीना आवश्यक विधिओ, ह. ०-२-०

२७२८ साधु साधवी योग्य आवश्यक क्रियानां सूत्रो (भेट) (६) साधु साधवी योग्य आवश्यकना सूत्रो अर्थयुक्त. रु.०-८-०

२७२९ साधु स्वाध्याय. तेना पर ज्ञानसारनो टबो (जुओ देवचंद्र भा. २ वि. १)

२७३० साध्वाबश्यक. (६, ५०)

२७३१ सावरमती काव्य पृ. १९६ रु. ०-६-० बुद्धिसागरसिर.

२७३२ सामाचारी प्रकरण, ग्रं. रत्न ५५ (पाना) रु. ०-८-० यशोविजयवाचक विरचित. स्वोपज्ञवृत्ति समछंकृत. नि-र्णयसागर, सं. १९७३ यशोविजयजीना बनावेला. लभ्य. ३८ ग्रंथोनं लीस्ट अने अलभ्य. २४ ग्रंथोनं

छीस्ट आनी प्रस्तावनामां आपेल छे.

,, ,, योग विशेष वाक्ययुतम्. (५०, १६)

,, ,, आराधक विराधक चतुर्भगी. (५०)

,, ,, अर्थसहित. गुजराती. (५०)

२७३३ सामान्य निरुक्ति. (५०) अजैन.

२७३४ सामायक चैत्यवंदन सूत्रार्थ. रु. ०-१-६

२७३५ सामायक. सं. १९६४ मोटुं. विस्तार भेट. (३३)

२७३६ सामायक चैत्यवंदन सुत्रार्थ. रु. ०-१-०

२७३७ सामायक तथा पहिक्रमणुं, (इंढीयानु) रु, ०-३-०

२७३८ सामायक तथा मूल प्रतिक्रमण. (दि.) भावनगर दिगं-बर समस्त संघ. रु. ०-६-०

२७३९ सामायिक वृत्त तथा देशापकाशिक व्रत, रु. ०-४-० (प्र. १८१)

२७४० सामायक सिद्धयुवाय.

सामायक]

२२७

सिद्ध

,, ,, (जुओ सुमितविकासना ग्रन्थ. मनसुलकार्ज) २७४१ सामायकसूत्र अर्थ सहित. रु. ०-६-०

,, रू, ०–२**–**०

,, (मोटुं) अर्थ सहित. रु. ०-४-०

२७४२ सामायकसूत्र अर्थ (संस्कृत अवचूरि.) रु. ०-२-६

,, पृ. १९२. विवेचनादि कर्ता. मोहनलाल दली-चंद. देशाइ. रु. ०-६-०

२७४३ साम्रुद्रिकशास्त्रतं ग्रुद्ध भाषान्तरः भद्रबाहु स्वामीकृतः पाछळ पाना २१३ मे तेनी नोंध छे. ते जोवीः जैसलमेरः(७) साम्रुद्धिकशास्त्र संस्कृत (पत) रु. ०-७-०

२७४४ साम्लिसंग्रह, पूरणचंद नाहर, हिन्दी, अलभ्य, रू ०-४-० (१०४)

२७४५ सारदीया नाम माला. (बुक) रु. १-०-०

२७४६ सार्वजनिक भा. ७ हिन्दी. जैनतत्वज्ञान. मुनिमाणेककृत.

२७४७ सावचूरि श्रावक व्रतभंग प्रकरण. (पाना) रु. ०-२-०(६)

२७४८ साक्षात्मोक्ष. रु. ०-२-० (६)

२७४९ साक्षात् सरस्वती. (रायचंदनो दृत्तांत) (६)

२७५० सिद्धगिरिना १०८ खमासमण. रु. ०-१-०

२७५१ सिद्धगिरिनां १०८ वांदणां. रु. ०-०-६ (५६१)

२७५२ सिद्धदंडिका स्तव देवेन्द्रसूरि टिप्पणिका समेत सं. १९६८ (देवेन्द्रसूरिनुं स्वर्गारोहण १३२७ छे. एम ग्रुनि सुंदरसूरि पणित गुर्वाविक्ठ जोतां निर्णय थाय छे) मृ. पा. विस्तार संस्कृतमां छे. ग्रं रत्न ७ (१७)

२७५३ सिद्ध दंढिका प्रकरण तथा प्रव्रज्या विघान प्रकरण. बन्ने अवचृरि साथे रु. ०-८-० (३२)

सिख्दत]

226

सिखहेम

- २७५४ सिद्धदूत काच्या अवधूत रामयोगी विरचिता मेघदूत पादपूर्ति रुपम् सं. १९७३ ग्रं. रतन नं. ३ रु. ०-२-०
 (३७२)
- २७५५ सिद्धनी १५ ढाळो. सिद्धना पंदर भेद बताच्या छे. स्त्री मोक्षाधिकार छे हुकमग्रुनि (२१)
- २७५६ सिद्ध पंचाशिका देवेन्द्रसूरि विरचित. अवचृरि सहित. (पाना) मू. पा. टी. सं. ग्रं. रत्न १६. रु. ०-१-० सं. १९६९ (१०, ५०)
- २७५७ सिद्ध प्रतिमा मुक्तावली. मुनिश्री गयवरचंदजी विरचित. रु. ०-८-० (७४०, ५०)
- २७५८ सिद्धपाभृत. रत्न नं. ६४. रु. ०-१०-० (१७, ५०)
- २७५९ सिद्धदंढिका. प्रष्टुच्या विधान. (पाना) रु. ०-८-०
 - ,, स्तव. (१७)
 - ,, ,, विगेरे. (५०)
- २७६० सिद्धसेन दिवाकर ग्रन्थमाला. रु. ०-४-० (प्रति)(६५०)
 १ द्वात्रिशक् द्वात्रिशिकान्तर्गतः एकविश्वतिकाः
 २ न्यायावतार मूळः
 ३ सम्मतिसूत्र मूळः
- २७६१ सिद्धहेम अकारादि अनुक्रमणिका. रत्न ११ सं. १९१५ (१४. ४७. ९५)
- २७६२ सिद्धहेम शब्दानुशासन. छघुद्वत्ति धातु पाठादि सहितम्। हेमचंद्रसूरिकृत. रु. २-०-० (१४, ४७, ५०)
 - ,, ,, मूलमात्रम् रु. ०-५-० (१४, ४७)
- २७६३ सिद्धहेम छघुरुत्ति ५५३१ हेमचंद्राचार्य, जन्दानुजासनरहित नं.३ चुनीछाछ पन्नाळाळनी मदद्यी (१४,४७,७४१)

सिख्हेम]

२२९

ि सिद्धावकनी

२७६४ सिद्धंहम शब्दानुशाळनस्य अष्टमाध्याय सूत्रपाठ अभिधान राजेन्द्रकार्यालयादयक्षः सं. १९७२ रु. ०-३-० (०-४-०)(३७)

> ,, ,, एकथी आउ अध्यायनां सूत्र. हेमचंद्रसूरि (१४, ४७)

२७६५ सिद्धहेम शब्दानुशासनः स्वोपन्न छघुरृत्ति युक्तः रु.२-०-० (१४, ४७)

» » (**११**)

२७६६ सिद्धहेम सूत्रानुक्रम.

२७६७ सिद्धहेन सूत्रपाठ हेमचंद्राचार्य विरचित. सं. १९६२ ह. ०-६-० (१४, ४७)

२७६८ सिद्धहेम शब्दानुशासन. (मूलमात्र) रु.०-५-०(१४,४७)
,, सूत्र पाठस्याकारादि क्रमेण सूचिपत्रम सं.
१९६५ रु. ०-४-० (७४२)

२७६९ सिद्धाचळजीनां स्तवनो रु. ०-२-०

२७७० सिद्धाचळजीनो उद्धार. (शत्रुंजय तीर्थमाला रास. उद्धा-

२७७१ सिद्धाचळजीनी सिद्धवेल. पं. उत्तपविजयजीकृत. सं. १९७९ (७४३)

२७७२ सिदाचलजीनो उदार श्री नय सुंदरजी कृत. (७)
,, ,, नय सुंदरजी कृत. (१२९, ६३)

२७७३ सिद्धाचलतुं वर्णन. रु. ०-६-० गु. (७४४, ५०)

२७७४ सिद्धाचल महासम्य अने गायन संग्रह. रु. ०-१-०

२७७५ सिद्धाचलनी नवाणु यात्रानी विधि. इ. ०-४-० (७४५, ५०)

।सद्धावल ो

२३०

िसिरि

- २७७६ सिद्धाचल संघ प्रमाण, पृ. ४८ सं. १९८० झवेरी मोइन-स्रास्ट गोकलदासना संघनुं वर्णन, (१७१)
- २७७७ सिद्धाचल स्तवन, २ सं. १८०४ मा. सुद. १३ (पाळी-ताणा) (जुओ देवचंद भा. २ वि. १)
- २७७८ सिद्धाचल स्तवन ग्रं. नं. ३९-४०-४१ (जुओ देवचंद भा. २ वि. १)
- २५७९ सिद्धाचल स्तुति. (जुओ देवचंद भा. २ वि. १)
- २७८० सिद्धान्त स्तवन. (जुओ प्रकरण रत्नाकर भा. ४ थो.)
- २७८१ सिद्धान्त रित्नका व्याकरण श्री जिनचंद्र सुरिणा प्रणीतम् ठा. जैन उपाश्रय सं. १९६६ रु. ०-६-० (७४६, ७४७, ९५, १०)
- २७८२ सिद्धान्त सारादि संग्रह. (२१ मो मणको) (दि.) (८१,५०)
 - ,, सारोद्धार हुकमग्रुनि. (२१)
- २७८३ सिद्धियन्त्र विगेरे. (५०)
- २७८४ सिद्धिपिय स्तोत्रम् (हि॰) देवनंदि प्रणीत. (जुओ कान्यमाला गुच्छक भा. ७ मो)
- २७८५ सिन्दुर प्रकरण टीका अर्थ युक्त, रु. ०-६-०
- २७८६ सिन्दुर नकर (जुओ सक्त मूक्तावली भाषान्तर, पं. के-सर विजय,)
- २७८७ सिरि पानयदीयालि कप्पं. पा. सिरि सिणपट सूरि विरइय जिनप्रभ सूरि कृत (पाया बृहत् कल्पो दीपोत्सव पा-वापुरी कल्प देवगिरि नगरे वि. सं. १३८७ भादरवी वदा पक्षे १४
- २७८८ सिरि सिरिपाल कहा. (श्रीपाल चरित) मृ. क. रत्नशे-स्वर सुरि. सं. ग्रं. नं. ६३ रु. १-४-० (१६)

सीताराम]

२३१

1 स्व

२७८२ सीताराम चरित्र, रु. ०-१-०

२७९० सीमंदर जिन स्तवन. (जुओ देवचंद था. २ वि. १)

२७९१ सीमंघर स्वामीने खुङ्घो पत्र. रु. ०-४-० (८८)

२७९२ सीमंधर स्वामीने विनति रुपे कागळ, हुंडी, पेंठ, पर्पेठ अने मेज्झर नाम्रं. ले. ज्ञानसुंदर. रु. ०-८-० (६८)

२७९३ सुकुमाल चरित्र. रु. ०-६-०

२७९४ मुकुमाल हिन्दी कथा. रु. ०-४-०

२७९५ सुकृत सागर (प्रत) (रतन, ४०) रतन मंडन गणि विरचित, रु. ०-८-० (१७, ५०)

२७९६ सुकृत संकीर्तन काव्य. पं. अरिसिंह विरचित. ग्रं. रत्न नं. ५१ रु. ०-६-० (१७, ५०)

२७९७ सुक्त ग्रुक्तावली गुर्जर पद्यबद्ध. (७७२)

२७९८ सुकृत संकीर्तनम्, ग्रां. रत्न ५१ रु. ०-३-० (१७)

२७९९ सुख चरित्र. आणंदसागर महाराज कृत. (७४४, १४६)

२८०० सुख प्राप्तिनां साधनो. रु. ०-४-०

२८०१ सुख बोधिकानाम कल्प सूत्र टीका. संस्कृत पाना. रु. ६-०-०

२८०२ मुलबोधिका हत्ति. (५०)

२८०३ सुख प्राप्तिनां साधनो. रू. ०-४-्३ (१४३, ४४९)

२८०४ सुख विवास मूळ सूत्र. (६८) सुख विवास सूत्र. (६८)

२८०५ सुख सागर गुरु गीता तथा तपागच्छे सागर शाखानी पहाविछ. बु. ग्रं. मा. ३०-३१-३२-३३-३४ मायासागरजीतुं जीवनचरित्र.

सुखसागर]

२३२

्रियार्श्वनाय

रविसागर. ,, स्रुवसागर. ..

ले. बुद्धिसागर सूरि. सं. १९७२ (१५, ५८ थी ६२, १८४) इ. ०-४-०

२८०६ सुरुसागरजीतुं जीवन चरित्र. (जुओ सुरुसागर गीवा.)

२८०७ सूयगढांग सूत्र. (५०)

२८०८ सुगुण स्मरण. रु. ०-४-०

२८०९ सुजन संमेलन हिन्दी. (५०)

२८१० सुद्शेनचरित्र. (पाना) रु. ०-४-०

, (प्रथम भाग) रु. ०-६-० (१७)

२८११ सुदर्शन शेंड. सचित्र हिन्दी. रु. ०-१०-० (प्र. ९)

२८१२ सुदर्शन शेट. गुजराती शील महीमा रु. ०-४-० (म.

ي, याने शील महिमा. रु. ०–१–६

२८१३ सुदर्शना सुनोध गं. ७७ बुद्धिसागर सूरि (१५, ५८ थी ६२, १८४)

२८१४ सुधर्भ गच्छ परीक्षा दशाश्रुत स्कन्य सूत्रनी टीका तथा जंबुद्दीप पञ्चति सूत्रनी टीका कर्ता ब्रह्मिष सायणकच्छ निवासी. सं. १९६८ रु. ०-४-० (प्र. ७४९)

२८१५ सुधारस स्तवनावली. रु. ०-२-०

२८१६ सुपार्श्वमाय चहित्र मागधी पूर्वाधे छायावालु भा. १ हो. हक्षण गणि विरचित. रु. २-०-० (७६, ५६)

,, ,, भा. २ जो. रु. २-०-० (७६, ५६)

,, ,, भा. ३ जो. रु. २-०-० (७६, ५६)

,, ,, रु. २-०-० (१७)

,, ,, अर्थापान्तर मा १ छो भा क अजित-

```
सुबद्ध ]
```

२३३

[सुभाषित

सागर सूरि. (४६७, १७)

,, ,, भा. २ जो. ,, (४६७, १७)

२८१७ मुबद्ध सुशिक्षा रास शालिभद्र मुनि. सं. १९७२ अलभ्य. इ. ०-१-० (६८)

२८१८ सुबोध नियमावली. (६८, ५०)

"," ", を、o->-そ(をと)

२८१९ सुबोध पाठ संग्रह. भेट. (६७, २२३)

२८२० सुबोध रत्न शतकम् (५०)

२८२१ (माणिक्य सुबोध रत्न ज्ञतक माणिक्य सुनि कृत ब्रह्मदत्त ज्ञास्त्री कृत टीका साथे. सं. १९७२ रु. ०-३-०

२८२२ सुबोध रत्न शतकम् माणिक्य स्नृति विरचित राजवैय श्री-तलप्रसाद जैन. रु. ०-०-६ इ. १९१५ (दि.)

२८२३ सुबोध शतक संस्कृत मुनिमाणेक. (३९)

,, ,, भाषान्तर हिन्दी.

२८२४ सुबोधा समाचारि. मुळकर्ता. श्री चंद्राचार्य. १३०० सं. ग्रन्थ नं. ६२ रु. ०-८-० (१६)

२८२५ सुबोध स्तवन संग्रह, भेट, (७५०)

२८२६ सुबोध स्तत्रनावली. रु. ०-२-० (७, ५०)

२८२७ सुबोध पद्य रत्नावली. रु. ०-६-० (७५१,७५२,७५३)

२८२८ सुबोधा समाचारी. श्री चंद्राचार्य संकलिता, रू. ०-८-० (१६)

२८२९ सुबोधिकाख्य द्वतियुतम्, कल्पसूत्रम्, रु. २-०-० (१६)

२८३० सुभद्रा. रु. ०-३-०

२८३१ सुभाषित त्रिंचति. (५०) [०-१२-० (५०, १०)

२८३२ सुमाषित रत्नसंदोइ, अमितगति विरचित. (दि.) रू.

सुभाषित]

२३४

सुमुख

२८३३ ,, रत्नसंग्रह, विगेरे. (५०)

२८३४ सुभाषित स्तवनाविल. भा. १ लो (सभानी छपावेली) रू. ०-६-० (१७,६)

,, भा. २ जो. ,, रु. ०-४-० (१७, ६)

२८३५ सुभाषितावलि. वल्लभदेव संग्रहीता. अंग्रेजी नोट सहित. (७५४, ५०)

२८३६ सुभूग चक्रवतींतुं चरित्र. (जुओ चरित्र संप्रह)

२८३७ सुमति तथा चारित्र राजानो सुखदायक संवाद. रु.०-३-० (१६३, ५०)

२८३८ सुमितिविलास गंथ. कर्ता मनसुखलाल (७५५, ७५६) है. १-८-० सं. १९६३. ''सामायिक सिद्धपुपाय, सम्यक्त्व न्याय सुधारस, आत्मबोध पत्रिका, शुद्धो-पयोग प्रवेशिका, अनुभव प्रवेशिका, पा. ३१६ ''

२८३९ सुमतिनाथ चरित्र. हिन्दी. सुनि माणेक. वा.सं.(१५९,७५)

२८४० सुमितप्रकाश ग्रन्थ छे. मनसुखळाळ. गुत्रेर. पृष्ट ३८० सं. १९६७ ओवीसीओ तथा ढाळो. रु. १-४-० (७५५. ७५६. ५०)

२८४१ सुमित व्यवहार प्रन्थ छे. मनसुख हरीछाछ गोधराबाळा. गुर्जर. सं. १९६४ ए. ३९२. ढाळो तथा सज्झायो विगेरे संप्रह. रु. १-४-० (७५७, ५०)

२८४२ सुमित साधुसूरिनो विवाहलो. (जुओ ऐतिहासिक रास संग्रह भा. १ लो)

२८४३ सुमित्र चरित्र. (पाना) रु. १-०-०

२८४४ सुमुख नृपादि कथानकम् मं. रतन नं. ७५ रु. ०-११-•

स्रवगडांग ो

284

[सुबीकानाई

,, ,, धर्म प्रभावकोनी कथाः चंद्रवीर शुभाः धर्मघन विगेरेनी कथाओ छे. सं. १९७९ जै. आ. ग्रं. माझा नं. ४४ (१७)

२८४५ सूयगढांग मृळ अर्थ टीका युक्त.

२८४६ सूयगडांग सूत्र सटीक (प्रत) रु. २-१२-० (५०)

,, ,, ,, মন (২৪, ৩, ५০)

२८४७ सुरिय म्रनि चरित्र कनकक्कशळ गणि कृततुं गुर्जर भाषा-न्तर, रु. ०-२-० (७५८, ६७)

२८४८ सुरसुन्दरी. हिन्दी सचित्र. रु. ०-८-० (९)

,, चरित्र रु. १-८-०

,, चरिए धनेश्वर ग्रुनीश्वर. चार इजार गाथाओ मा. विस्तृत मस्तावनामां बीजा नामी ग्रंथो तथा नामी आचार्योनो जाणवा योग्य इतिहास. रु. २-८-०(७७)

,, ,, की. नथी. (५६, ५०)

२८४९ सुरसुंदरी चरित्र गुजराती. जै. ध. म. ना ग्रा. मेट. इ.

२८५० प्रसुंदरी. रु. ०-२-६ (४८)

२८५१ सुलसा चरित्र. भाषान्तर (पाना) मूळ संस्कृत पद्यात्मक. सं. १९५५ इ. १-०-० (१५५)

२८५२ सुरसुंदरी रास. (जुओ आनंद कान्य महोदिष मी. ३र्जु)

२८५३ सुव्चन बत्रीशी. गुणी अने भक्तो (७५९, ५०)

२८५४ सुविचार कुसुप पाला.

२८५५ (ग्रुनि) सुत्रत स्वामीनां स्तवनोनो संग्रह. मणिबिजयजी कर्ता. रु. ०-१-० (प्र. ७६०, ५०)

२८५६ सुबीछाबाइ काब्याक्यान. इ. ०-१-०

सिसर 1

236

[सूत्रकृतांग

२८५७ सुसद चरित्र, संस्कृत, रु. ०-२-० (५०)

२८५८ सूक्ष्मार्थ सारोद्धार सार्ध शतक. जिनवह्नभगणिविरचितम् धनेश्वरसूरिविरचित टीका समळंकृतम् रु. १-०-० (६) (मति)

२८५९ सूक्त मुक्तावली. सं. गं. नं. ५७ (१६) रु. २-०-० २८६० स्कि मुक्तावली सोमनभाचार्य विरचित. (जुओ काव्यमा-का गुच्छक भा. ७ मो)

२८६१ स्तूक्त मुक्तावली भाषान्तर, रु. २-८-० रु. १-८-०
पं. केसरविमलजी विरचित.
श्री सोमप्रभाचार्यजी ,,
श्री चारित्र सुंदर गणिजी ,,
तथा सिंदुरमकर, आचारोपदेश, तथा चिदानंद प्रश्रोत्तर मालादि सहित. (७६१. ५०)

२८६२ स्रक्त मुक्तावली. पूर्वाचार्य संकलित. ग्रं. रत्न नं. ५७ रु. २-०-० (१६)

२८६३ स्क मुक्तावर्की संस्कृत (पाना) रु. ०-८-०

,, ,, रु. ०-२०-० (३३) ,, ,, रु. ४-८-० (३२)

२८६४ सक्त रत्नमाला मा. संस्कृत छाया साथे. अंग्रेजी भाषा-न्तर साथे. रु. ०-८-० (५६, ५०)

२८६५ सक्त रत्नावली. विजयसेन सूरि प्रणीता. रु. ०-४-० (६, १७) आ. गं. नं. २३

२८६६ सृक्ताविक. (५०)

२८६७ सूत्रकुतांग. मूल कर्ता सुधर्मास्वामी टी. शीळांकाचार्य. रू. २-१२-० (२९, १६)

```
सुत्रोनी ]
```

२३७

िसेलाना

२८६८ सूत्रोनी नोंध. (५०)

२८६९ सूयगढांग सूत्र सटीक भाषान्तर. विभाग १ छो ग्रुनि मा-

·,, ,, ,, भा. २ जो. रु. १-८-० (१२)

२८७० सुराचार्य ओर भीमदेव. रु. ०-४-० (८८)

२८७१ सुरीश्वर अने सम्राट रु. ३-८-० (१४, ४७)

,, ,, (भा. १ को) रु. ४-८-० पृ. ४५. २८७२ सूर्य प्रज्ञास्युपांग सटीक. (पाना) मलयिति विहित. विव-रण युक्त. रु. ३-८-० (२८, १६, ५०)

२८७३ सुवर्ण वचनावली, रु. ०-०-६

२८७४ सुक्ष्मार्थ विचार सारोद्धार (सार्थ शतकम्) श्री जिनवछ्छभ गणि विरचित. (धनेश्वर सुरिकृत टीका साथे) कर्म प्रस्तावे सुक्ष्म सुक्ष्मतर विचारवर्णन. मूळ प्राकृत. सं.

२८७५ सुक्ष्मार्थ विचार. (५०) [१९७१ (६, १०)

२८७६ सेन प्रश्न पाना. (प्रश्न रत्नाकराभिषः) श्रुभविजयगणि-कृत. प्रश्नोत्तर (१६ ग्रं. रत्न ५१) रु. १-०-०

२८७७ सेन प्रश्ननो उतारो. (५०)

२८७८ सेन प्रश्नाः (५०)

२८७९ सेन प्रश्नः अथवा प्रश्नरत्नाकराभिधः (५०)

२८८० सेलाना (मालवा) सरकारे वकरा नहि मारवानो करी आपेलो परवानो सागरानंदसृरिने ता. १५ नवेम्बर

सोनेरी ी

286

[संग्रहणी

१९२१ नो अभयपद पवर्तक परमधर्म शुपक महाराजा-धिराज श्री दिळीपसिंहजी बहादुर महाराजे सेळाना माळवा. श्रा. वद १२ थी भा. सुद ४ सुधी, दरेक महीनानी आठम १४, एकादशी अने अमावास्या.(१६)

२८८१ सोनेरी भेट. गुजराती. (१६३)

२८८२ सोभन ग्रुनि कृत. चोवीस स्तुतिओ बास्रावबोध. (जुओ प्रकरण रत्नाकर भा. ३ जो)

२८८३ सोभन स्तवनावली अलभ्य. (६५०)

२८८४ सोम सौभाग्य कान्य अर्थ सहित मुनिराज धर्म विजयजी (पछीथी सरि) द्वारा थएछं भाषान्तर. इ. ०-१२-०

२८८५ सौंदर्य कुमारी (दि.) (७६२) [(१३१)

२८८६ सौभाग्य अलंकार कुंकुम तिलक. (४०४)

२८८७ सौभाग्य पंच. मी विगेरे पर्वकथा संग्रह (पाना) रु. १-०-० क्षमाकल्याणकादि विरचित तथा साधु श्रा-वकाराधना. (७६३)

२८८८ सीभाग्य पंचमी विगरे पर्व कथा संग्रह तथा

(१) साधु श्रावक आराधना.

(२) साधु पतिक्रमण तथा. [(७६४)

(३) साधु विधि नकाश्च. मेगा. की. नथी.

२८८९ संगीत दर्पण भा. १ लो. सं. १९६५ रु. ०-८-० संग्रह स्तवनो विगेरे (७६५)

,, ,, भा. २ जो. सं. १९८० रु. ०-३-०

२८९० संगीत पुष्पमाळा संग्रह. रु. ०-२-० (७६७, १६३)

२८९१ रांग्रहणी टीका. (पाना) रु. ५-४-०

२८९२ संब्रह्णी मोटी (अमुल्य) (७)

संग्रहणी]

२३९

संप्रति

२८९३ संग्रहणी सृत्र. (५०)

२८९४ संग्रहणी. मूल और अर्थ. (३९, १)

,, सटीक. रु. ०-१२-० [यी ६२, १८४) २८९५ संघ कर्तव्य ग्रन्थ. ग्रं. नं. ७ बुद्धिसागरसूरि. (१५, ५८ २८९६ संघ पट्टक काव्य. अर्थ सहित. जिन ब्रह्मभसूरिकृत. वि-स्तारवाळी टीका सहित. घटाडेली कि. रु. २-८-०

(3-6-0) (62)

२८९७ संघ प्रगति तथा जैन गीता. रु. १-०-०

,, ,, ग्रं. ४० (जुओ जैन गच्छमतः प्रबंध)

२८९८ संजीवनी बुटी. (सत्यदेव) आत्मसंयम अने स्वमदोषथी बचवानो उपाय विगेरे वर्णन छे. रु. ०-८-०

२८९९ संत स्वरूप पंचासी. "उपदेश" हुकपग्रुनि. (२१)

२९०० संथार पयन्ना. (जुओ दश पयन्ना)

संधारम पयन्ता. (जुओ चउसरण आदि चार पयन्ता मूळ)

संयारा पयन्नो. विगेरे (५०)

संदेह दोलावली टीका (पाना) खरतर विधि. (विधिपक्ष) (विविध) रत्नकर टीकाख्या. मूल कर्ता श्री जिन-

दतसरि टीकाकार जय सागरोपाध्याय टीकानो संवत १४९५ (३२)

,, ,, प्रबोध चंद्रगणि कृत टीका उपरथी रु. २-०-० (५२७, धु. नं. ९)

२९०१ संदेह विषौषधि. (पाना) नामा कल्पसूत्रनी व्याख्या. रु. ३-४-० (३२)

२९०२ संमतितृपति चरित्रम्. सं. १९७६ (६९५, ५४९)

संपति]

२४०

सिविश

२९०३ संप्रति राजा. रु. ०-१-० (८८)

२९०४ संबोध प्रकरण हरिभद्रसृरि विरचितम् रु. १-०-० (७६८, ७६९, २१८, ५०)

२९०५ संबोध सित्तरी. (परचुरण) (डेमी पोकेट साइझ) पान. ७१ सं. १९६५ बालबोध. रु. ०-०-० (२२०)

,, ,, गुजराती. रु. १-०-० (१७)

,, ,, (१५५, ५०)

,, ,, टीका (पाना) रु. १-८-०

२९०६ संबोध सप्तका याने हित गृहण अहित त्याग रूप संवेग मार्गनुं स्वरूप तत्त्वज्ञानना विषयो तथा कथाओ सहित सं. १९७८ आत्मा. म. मा. ग्रा. मेट नं. १९ (१७)

२९०७ संबोध सप्तति सटीक (पाना) (रत्न ५३) रु. ०-१०-० (१७)

२९०८ संपत्यारूप प्रकरणम् भा. १ लो सिद्धसेनदिवाकरविर-चितम् अभयदेवसूरिनी टीका सहित. (१४, ४७)

२९०९ संमेतिशाखर कल्प मूळ. सं. अनुवाद गूर्जर. (धनपाळ पं-चाशिकाना भेगो आ छे. सं. १९६९ (६)

२९१० संयमश्रेणी गर्भित 'श्री महावीर स्तव.' पंडित उत्तम वि-जय गणि विरचित. रु. ०-४-० (७७०, ४३९)

२९११ संलेखना मृत्यु महोत्सव. रु. ०-४-०

२९१२ संवाद सुंदर. ह. ०-८-०

२९१३ संविज्ञ साधु योग्य नियम संग्रह. भेट. सं. १९७२ (१८१, ५०) ५०७५

२९१४ संविज्ञ साधुयोग्य नियम. (जुओ कुलकसंग्रह १७ वाळो)

संवेग]

રક્ષ્ટ ૧

स्तवन

- २९१५ संवेग छत्रीश्वी. आद्यति पहेली तथा बीजी ले. अजितसागर सूरि. छत्रीसद्वारना दरेकनां छत्रीस छत्रीस द्वारनो गुज-राती बोध. (४६७)
- २९१६ संवेगहुम कंदली अर्थ सहित. विमळाचार्य कृत. सरहद. ह. ०-४-० (३२६)
- २९१७ संश्विवदन विदारण. (दि.) स्वे. तुं खंडणग्रंथछे हिन्दी.
- २९१८ संसार दावानछ स्तुति सटीक सावच्रि. हरिभद्रसूरिकृत. हिन्दू इति झानविमछसूरिकृत. (रू. ०-१-० रू.०-३-०) (७३, ५०)
- २९१९ संसारमां सख क्यां छे भा. १ छो. (२२७, ७७१)
- २९२० संसार स्तवन. त्रो. एफ डब्ल्यु बेइनना अनुवाद अ. तथा प्र. रु. १-०-० (७७२, ५०)
- २९२१ संस्कृत. स्वयं शिक्षक जै. ध. प्र. ग्रा. भेट. रु.१-०-० (६)
- २९२२ संक्षिप्त जैन रामायण, जै, ध. प्र. ग्रा. भेट (६)
- २९२३ संक्षिप्त १२ व्रत तथा १४ नियमनी टीप, दोघन रामचंद
- २९२४ सिंहासन बत्तीसी. प्रका. गंगाविष्णु श्री कृष्णदासने अपने लक्ष्मी वेकुंटेश्वर. की. लखी नथी (७१)
- २९२५ स्तवन तथा सञ्चाय संग्रह हिन्दी. (३९)
- २९२६ स्तवनपद समुदाय रु. ०-०-६
- २९२७ (श्री) स्तबन रत्नाकर. व. क्रस्पाक मंडणपूजा. नेमिचंद्रय-तिने छपवाया. (७७५, ७७६)
- २९२८ स्तवन छहरी. मुनि सौभाग्यविजयजी कृत. सं. १९७७ (७७६, ९५) ३१

```
स्तवन ]
```

282

िस्ती

२९२९ स्तवन संग्रह. रु. ०-२-०

२९३० स्तवन संग्रह अमूल्या सं. १९७७ ग्रं. रत्न. १० (३९२, ६३६)

२९३१ स्तवन संग्रह, भाग पहेको, रु, ०-२-० (६८)

- ,, भाग बीजो₊ रु. ०-२-०
- ,, भाग त्रीजो.
- ,, रु. ०-८-• सं. १९६८ (६)
- ,, (११)
- ,, भाग दुसरा. रु. ०-२-० (६८)
- ., भाग तीसरा. भेट. (६८)

२९३२ स्तवनावली. भा. १ लो. रु. ०-८-०

२९३३ (जैन) स्तवनावळी. (सं. क. ७७७)

" " हिन्दी संग्रहीत. रु. १–८–० (३६६)

२९३४ स्तवनावली, भा. २ जो. रु. ०-४-०

,, भा. ३ जो. रु. ०–६–० [(१०४)

२९३५ स्तवनावली. सं. १९६२ त्रीजी आहति. रु. १-८-०

,, द्वितीय खंड (दादाजीका) संग्रह कर्ता सहे-ताबचंद सं. १९०६ हिन्दी लभ्य. रु. ०-४-० (१०४. ३६६)

२९३६ स्त्रीयोकी स्वाधीनता हिन्दी. रु. ०-१२-०

२९३७ स्त्रीयोपयोगी गीत संग्रह. रु. ०-१-०

२९३८ स्त्री शिक्षण. हिन्दी. सं. १९७८ (७७८)

२९३९ स्त्री सुबोधमाळा. रु. ०-३-० पा. ६८ पद्य. (१०८)

२९४० स्त्री सुख द्वेण मासीक भावनगर. (४४)

स्तुति]

583

स्यविरा

- २९४१ स्तुति कल्पळता. (यशो विजयजी कृत) रु. ०-८-० (कींमत नथी) भावनगरना रतनजी वीरजी प्र. की. नथी. (प्र. ७८०, ५०)
- २९४२ स्तुति संग्रह अवचृरि सहित (पाना) बप्पभट्टसूरिबिरचिता. (जिनप्रभस्तरिविरचिता इत्यादि संग्रह. (प्रति) (३३, ३२९, ५०)

२९४३ स्तोत्रभानु, नन्दनविजयकृतः (३८५, ३८६) २९४४ स्तोत्र रत्नाकरः प्रथम भागः सटीकः

- (१) श्री धर्मघोषसूरि कृताभिश्रतुर्विश्वति जिन स्तुतिभिः
- (२) धर्मसिंह कृत. श्री बीर नेमि-सरस्वती स्तुति गर्भित समस्याबद्ध भक्तामर स्तोत्र. त्रयेण संग्रहीतः
- (३) उदयग्रुनिप्रणीत वाक्य प्रकाशेन चमिकितः (३३, २२९)
- ,, ,, दितीय भाग सटीक. जिनवळ्ळभक्कत मश्रोत्तर शतक, जयतिस्कस्रिरकृत चतुर्विशति चित्र स्तव, पूर्व सूरि कृत. मश्रावकी पार्श्वचंद्रकवि कृत, महावीर स्तव तथा वर्षमान स्तोत्र द्वय श्री पार्श्वजिनस्तोत्र पट्केन संग्रहीत, नेमि स्तवन, विहरमाण स्तव, एका- क्षर विचित्र काव्य पट् श्लोकी, चतु श्लोकी स्तुति सं. १९७० इ. १–२–० (३३, २२९, ६०)

२९४५ स्थळ नामकोश मराठी. (५०) २९४६ स्थिनरावली. मेरुतुंगाचार्य इत. (जुओ साहित्य संशोधक संंड २ अंक २) (८८) स्यविरा 288 [स्नात्रपुजा

२९४७ स्यविरावली चरित्र परिषिष्ट पर्व हेमचंद्राचार्यकृत. बाय हर्मन जैकोबी. (४२१)

२९४८ स्थविरावलि चरित अथवा परिशिष्ट पर्वम त्रिष्टि शकाका. पुरुष चरित्रनो विभाग एडीटेड बोय. एच जेकोबी. १ थी ५ विभाग पूर्ण रु. १-०-० (हेमचंद्राचार्य) स्थविरावली टीका. रु. १-०-० િ (૨९)

२९४९ स्थानकवासी बीजी कोन्फरन्सनो रीपोर्ट. रु. ०-६-०

२९५० स्थानांग सूत्र (पूर्वार्थ.) ह. २-१२-० मृ. क. सुधर्मा स्वामी, टी. अभयदेव सरि. (२८. १६)

(उत्तरार्ध) टीका. रु. ४-०-० सं. ११२० (२८, १६)

स्थानांग सूत्र, प्रथमाद, रु. ४-०-०

उत्तरभाग. रु. ०-२-० (२८)

२९५१ स्थलीभद्र. रु. ०-२-० संस्कृत. (१६)

१९५२ स्थूलभद्र चरित्र. मूळकर्ता जयानंदसूरि. रु. ०-२-० स्थूलभद्र चरित्र. (पाना) रु. १-०-० स्थलभद्र चरित्र. जै. ध. प्र. ग्रा. भेट. (६)

रु, ०-२-० (म. ५३९, ६९३, १०)

२९५३ स्थलीभड़नी शीयळ वेल. विगेरे. रू. ०-४-०

एकली मणको. ३ (७०३, ७८१)

२९५४ स्नात्रपूजा रू. ०-६-०

,, आस्पारापजी कृत शास्त्री, रु. ०-३-०

.. वीरविजयजी कृत ग्रजराती. रू. ०-२-०

स्नात्र]

२४५

स्यादाद

,, बुद्धिसागरस्रूरि कृत. रु. ०-२-० (१५, ५६ यी ६२, १८४)

,, (जुओ देवचंद्र भा. २ वि. १)

२९५५ स्नात्र पंचाशिका तथा मुनिदान उपर कथाओ गुजराती.
मुनिसुंदरसृरि शिष्य श्री शुभशीलगणीजी कृत. विद्याशाला. सं. १९३० मां शिला पेसमां रु. ०-१२-०
(१५५, ५०)

२९५६ स्नात्रविधिः बीजी आदृति हिन्दीः सं. पाः सेताबचंद ना-हार (३६६, १०४) रु. ०-३-०

२९५७ स्नात्र सत्तरमेदी, विसस्थानक पूजा. जै. ध. प. ग्रा.मेट(६) २९५८ स्नात्रादि स्तवनावली रु. २-०-०

,, ,, प्रकटकर्ता '' जैन '' की. अमृस्य (४४)

२९५९ स्फोट सिद्धि न्याय विचार.

२९६० स्यादि शब्द सम्रुच्यय. कविराज अगरचंद्रसूरि विरचित. बालचंद्र संशोधित. रु.०-१०-० (१४,४७,१४६,५०)

२९६१ स्याद्वाद अनुभव रत्नाकर सचित्र (हिन्दी) रु. १-८-० (प.९)

२९६२ स्याद्वाद अनुभव रत्नाकर. चिदानंदजी कृतः:सं. १९५१ (प. ७८२, १२)

२९६३ स्याद्वाद कलिकाष्ट्रकानि विगेरे. (५०)

२९६४ स्वाद्वाद बिन्दु दर्शनविजयगणि. रु.२-०-० (३८५,३८६)

२९६५ स्याद्वाद भाष्या. (प्रमाणनय तत्व प्रकाशिका) मूलकर्ता ग्रुभविजयगणी. र. ०-१-६ (१६, ५०) स्याद्वाद]

२४६

[स्वरोदय

- २९६६ स्याद्वाद मंजरी मुळ. (काशीमा छापनी) श्री मछीपेणसूरि विरचित. सिद्ध हेम निर्मित वीतराग स्तुति व्याख्यान रूपा. रु. १-०-० (१४.४७)
 - ,, ,, (५६६)
 - ,, ,, हेमचंद्रकृत. रायचंद् शास्त्रपाळा. अन्य-योग व्यवच्छेदिका नामकस्तुतिकी वि० टीका रु. ४-०-०
 - ,, ,, मूळ (भाषान्तर सहित) रु. ४-०-०
 ,, ,, भाषान्तर गुजराती. मूळकर्ता. हेमचंद्राचार्य. टीकाकार मिल्लिपेणस्रिर. गुर्जरभाषा करता
 तथा छपावीने प्र. कर्ता रु. ४-०-० (३२, ५०)
- २९६७ स्याद्वाद रत्नाकर (५०)
- २९६८ स्वामि विवेकानंदना पत्रो. अंग्रेजी. भा. क. मोहनलाल दल्लीचंद देशाइ. स्वामिजीना जीवनसहित सने १९१२ सं. १९६८ गु. अनेक धार्मिक सामाजिक विषयने च चेतापत्रो. इ. ०-५-० सस्तुसाहित्यवर्धक कार्यालय. अमदावाद.
- २९६९ सृष्टिताद परीक्षा. हिन्दी (११६, २०४) टेक्ट नं. १७ कीं. एक पैसो.
- २९७० स्वम्निन्तामणी भाषान्तर. मराठी (५०)
- २९७१ स्वमनदीप (मत) रु. ०-६-०
- २९७२ स्वरमालिका. (५०)
- २९७३ स्वरोदय ज्ञान, ध्यानमाळा, पुर्वगळगीता विगेरे. रु.०-८-० विदानंदणीकृत. तथा झानविमळसूरिकृत ध्यानमाळा(७)

स्वाध्यय]

380

[इरिभद्र

२९५४ स्त्राध्याय गुंहकीसंग्रह. (६८)

२९७५ स्वाध्यायमाळा. प्रथम रतन रु. ०-१-०

२९७६ स्वानुभव दर्पण. ले. माणेकलाल घेळाभांइ विवेचनकार. लालन. रु. ०-१२-० (७८३)

२९७७ स्वामि दयानंद और जैनधर्म वादग्रन्थ. सं. १९७२ रु. ०-८-० (७८४, ५६९, ७८५)

२९७८ स्वामिवास्सल्य. गु. (इनामी निवंध. नं. २) (७८६, ७८७, ५०)

₹.

२९७९ इनुमान चरित्र. रु. ०-६-०

२९८० इमीरकाव्य. संस्कृत (इम्ब्ली नोट सहित) रु. १-४-०

२९८१ इम्मीरमद मर्दन. जयसिंहसूरिकृत. रु. २-०-० (१३८)

२९८२ इरिबल माछीनो रास. (जुओ आनंदकाव्य महोद्धि. मौ. ३ जुं)

२९८३ इरिबल पछीनो रास. म्रुनि लिब्धिविजयजीकृत. र. सं. १८१० महासुद २ भृगुवारे. (निषधमांथी उद्धृत.) (जुओ कर्त्तानुंकुल दृक्ष माटे विशेष दक्षीकतमां चालु नंबरे) (७)

२९८४ इरिभद्रसूरि ग्रन्थमाला. रु. ०-४-० (६, ५०) मति. इरिभद्र.

(१) ज्ञास्त्रवार्ता समुचय. सस्तवक.

(२) षट्दर्शन समुचय (इरिभद्र)

(३) अष्टक इरिभद्र

हरियद्]

286

इस्त

२९८५ हरिभद्रसूरि चरियं. धनेश्वरसूरि. साधारण संस्करण. रु. २-०-० राजसंस्करण. रु. ३-०-० (५६,७६,५०)

२९८६ हरिभद्रसूरि चरित्रम्. रु. ०-४-० (५६, ७६)

२९८७ इरिविकमचरित्रनुं भाषान्तर, गुजराती, रु. १-८-०

२९८८ हरिविकपचरित्र संस्कृत. रु. ८-०-०

२९८९ हरिश्रंद्र राजानो रास. रु. ०-६-०

,, ,, ,, सं. १६९७ कनक सुंदरनो छखेंछो. (१२९, ६३) [५०)

,, ,, ,, कन**क** सुंदर विरचित. (७,

२९९० इरिषेण चिक्र चरित्र. (संस्कृत) त्रि. प. श्र. चरित्र-ना सातमा पर्वमां बारमा सर्गमां छे. हेमचंद्राचार्य विर-चित. (१०, ६)

२९९१ इरि विक्रम चरित्रनुं मराठी भाषान्तर. रु. २-८-०

२९९२ इरिभद्र सूरि चरित्रम् (५६, ७६, २५)

२९९३ (श्री) इरिभद्राचार्यस्य समय निर्णयः हे, जिनविजयः (८३,५०)

२९९४ इरिविक्रमचरित्र. सने १९०७ मं. ९६ रु. १-८-०

२९९५ इरिइर सुभाषितम् (६) [(३३, ५०)

२९९६ हर्ष हृदय दर्पण. बुद्धिसागर ग्रुनि खरतर गच्छीकी की तर्फसे. (७१)

२९९७ इर्षवार्ता ननामो लेख. (७१)

२९९८ हस्त संजीनीनी भाषान्तर, क. मेघनिजय उपाध्याय सा-

हासक्ली]

285

[श्री

२९९९ हारावली पुरुषोत्तमदेवः मणीतः (जुओ अभिधानः संप्रहः) भा. १ अजैन.

२००० हास्ति दीपावश्यक टिप्पण, (५०) अजैन.

२००१ हारिभद्रीयावश्यक ष्टति टीप्पणकम् मलक्षारमच्छीयः हेम-चंद्र सुरिस्तृत्रितम्. रु. १-१२-० (१६,१)

३००२ हिंगुल प्रकरण अर्थ सहित (पाना) विनवसावरोपाध्याय. रू. ०-५-० (आ. क. ७, ५०)

३०२३ दिसचिक्षा. रु. ०-२-०

३००४ हितिशिक्षानो रास. श्रावक रुपमद्यसणी कृतःसं. १६८२ वीजी आष्टति सं. १९५२. ३. १-०-०(७)

२००५ हितोपदेश. संस्कृत, हंग्रेजी अने पराठी कठीण आखना कोष साथे बाय एडबीन आर्जोहड एम. ए. जीन्सी-पाछ पूना कोलेज. (१६८)

२००६ हितोपवेश. (६८)

,, भाषान्तरं कर्ता धीनतराम. (७८९, ९५)

,, वैदक. रु १-४-०

३००७ हिरायत कुत परस्तिये जैन. चान्तिविजयक्वतः (निपाणी) कुंदनमलजीका लेखका जवाब.

३०४८ : हिंदी जैमितिसा था. १ छो. ह. ०-०-६ (३०१,५०)

,, ,, भा. २ जो. ह. ०-०-६ (३०१, ५०)

,, ,, भा. ३ जो. (३०१, ५०)

,, ,, आ. ४ थो. रू. ०-१-० (३०१, ५०)

३००९ (श्री) हिन्दी जैन साहित्यका इतिहास. सम्म हिंदी साहित्य संमेखन के छीए छिखा गवा किवंध. नाशु-राम मेबी सं. पा. जैन हितेषी (दि.) ह. ०-६-० (९०, १४६)

ક સ

हिंसा]

२५०

[हेमलि

२०१० हिंसा निषेध (निषंध) रु. ०-१-०

३०११ " ही '' ओर " भी '' पर विचार. लब्धिविजय. रु.

३०१२ हीरपश्च. (पाना) रु. २-४-० (५०) [०-१-६ (४८)

२०१३ हीरमश्नावलो. रु. ०-८-० (५०, (७०१. प०))

२०१४ ही प्रश्लोत्तराणि संस्कृतमः पंडित श्री कीर्तिविजयगणि सम्रचितः (५०)

३०१५ हीरमश्राविल रु. ०-८-० (७९३, ७९१, ६३)

३०१६ हीरप्रश्नापर नाम प्रश्नोत्तर सम्रुच्यय (प्रति) पं. कीर्ति-विजयगणि सम्रुचितः श्री हंसविजय छायब्रेरी फी. छोटालाल जेसंगभाइ सुतरीया. अमदावाद. छणसावाडो

३०१७ हीरविजयसूरितुं चरित्र. रु. ०-१-०

३०१८ हीरविजयसूरि रास. संघवी रुषभक्कवि प्रणीतः (जुओ आ-नंदकाव्य महोदधि मौ. ५ मां छे) (१६,११७,१,२८)

३०१९ (श्री) हीरविजयसूरि (जगद्गुरु) ले. लिलतविजय. (८८)

३०२० हीरसूरी महाराजनुं चरित्र. रु. ०-३-० सं. १९४९

३०२१ हीररत्नसूरीन्द्र नमस्कारादि सूत्र. (२२) [(म. ७९४)

२०२२ हीरसूरि रास. नयसुंदर प्रणीत. (जुओ आनंद काव्य महोदधि मो ५ म्र)

३०२३ हीरसौभाग्य कान्य. संस्कृत टीकायुक्त श्री देविबमलगणि विरिचित स्वोपज्ञया न्याख्यया समलंकृतम् हीरविजय-सूरितुं जीवनष्टत्तान्त छे. इ. १९०० मां छपायो छे रू ५-८-० कान्यमाळा ग्रं. नं. ६७ (६, १०)

३०२४ हुकमविलास हुकमग्रुनि. (२१)

३०२५ हेमळघुपक्रिया न्याकरण रु. १-८-०

३०२६ हेमिळिगानुशासन संस्कृत. अवचूरि सिहत. हेमचंद्राचार्यकृत. रु. ०-६-०, रु. ०-८-०, रु. ०-५-० (१४,४७) हेमवि]

268

[हृदय

३०२७ हेमविश्रम सटीक गुणचंद्रसूरि विरचित बनारस गं. नं. ३४ इ. ०-४-० (१४, ४७, ५०, १७, ६,)

३०२८ हेमशब्दानुशासन बृहद्दृहत्ति लघु न्यासयुक्त, ह,१०-०-० चार अध्याय चार पाद सहित हेमचंद्राचार्य.

> ,, ,, बीजो भाग पांचमाथी आठमो पुरो. हेम-चंद्राचार्य कृत. [हित. (७९६, ७९५)

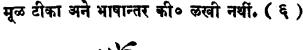
२०२९ हैमधातुपारायण हेमचंद्राचार्य कृत. स्वोपज्ञ कृत टीका स-२०२० हैमलघुमिकया उपाध्याय विनयविजयजीकृत. सं. १९७४ २०३१ होरी संग्रह रु. ०-६-० [संस्कृत व्याकरण (६, १०)

३०३२ इंसराज वच्छराजनो रास. जिनोदयसूरि विरचित शीळादि महात्म्यरुप सं. १९५२ (७,५०) रु. ०-६-०

,, ,, कथा सर्वसन्दरसूरि मलधारी गच्छीयकृत(५०)

३०३३ हंसविनोद स्तवन स्तोत्रनो संग्रह (शास्त्री) रु. ०-१२-० (५२, २३७, १७) सं. १९५९

३०३४ हृदय प्रदीप षड्त्रिंशिका (संस्कृत) (जुओ प्रकरण रत्ना-,, ,, रु. ०-४-० (६) [कर भा. ३) ३०३५ हृदय प्रदीप जपरनानुं गुजराती भाषान्तर सं. १९७३





अववर]

१५६

1

पक्रिकी मछेल होष प्रंथोनुं परिशिष्ट.

१ अ. अकबर और जैनधर्म हिन्दी रु. ०-२-३ (४८)

४ क. अजितनाथ ओर संभवनाथ चरित्र हिन्दी रु. ०-२-०

५ अ. अजितशान्ति स्तवन हिन्दी रु. ०-०-६ (४८) [(४८)

२० अ. अध्यात्म कल्पद्रुप त्रीजी आष्टति गु. रु. २-८-० (६)

४३ अ. अनगार धर्मामृत पं. आज्ञाधरभट्ट. रु. ४-८-०(८४४)

४३ व. अनमोल मोती (शिक्षापद भजन) उर्द रु. ०-१-३(४८)

४३ क. ,, ,, ,, हिन्दी रु. ०-१-६ (१८)

४५ अ. अनाथीम्रनि. हिन्दी रु. ०-१-० (४८)

१२३ ज. अर्थमायधी कोष. भाग पहेलो. सं. हिं. गु. तथा इंग्लोश साथे. (६)

१३० अ. अवधानना प्रयोगो (रत्नचंद्रजी स्वामी) गु. ०-४-०(६)

१५८ अ. आगमसारका हिन्दी भाषान्तर. (७७)

१६० अ. आगमसारोद्धार तथा अध्यात्मगीता गु. ०-६-० (६)

२३२ अ. आदिश्वर भगवानका जीवन चरित्र भाग १-२ प्रत्येक रु. ०-१-३ (४८)

२४४ अ. आप्त मीमांसा ममाणपरीक्षा सं. रु. ०-१४-० (६)

२५७ अ. आर्थो की मलय हिन्दी रु. ०-१-० (४८)

२७४ अ. इश्वरास्तित्व हिन्दी रु. ०-०-६ (४८)

२७९ अ. उत्तमकुमार चरित्र हिन्दी रु. ०-२-० (६)

,, व. उत्तमकुमार हिन्दी रु. ०-२-० (४८)

२८१ अ. उत्तराध्ययन सूत्र कमळसंयमी टीका भाग १ लो छ अ-ध्ययन सं. रु. ३-८-० (६)

३०० अ. उवसर्गहर स्तोत्र छघुरति सं. रु. ३-०-० (६)

३०३ अ. एक भादरीजीवन हिन्दी रु. •-१-० (४८)

कश्या)

243

क्षमा

३२७ अ. कन्या एजन्सीका व्यापार. इ. ०-१-० (४८)

३५५ अ. कलावती विगरेनी कथा रु. ०-३-० (६)

३४४ अ. कर्पग्रंथ चोथो हिन्दी रु. २-०-० (६)

,, व. कर्मत्रंथ भाग १ छो. गु. इ. ०-८-० (६)

३४८ अ. कर्मविचार गु. रु. ०-४-० (६)

३५६ अ. कल्लोयुगियोंकी कुलदेवी हिन्दी रु. ०-०-९ (४८)

३५८ अ. कल्पसूत्र मूळ श्री भद्रवाहु स्वामि विरचित. Edited with an historial introduction notes and a Prakrit glossary by H, Jacobi 1879 Germany 10-0-0.

३६० अ. करपसूत्र सुबोधिका संस्कृत रु. २-०-० (६)

३९९ अ. कीरणावलो भेटनी पत्र २०५ सं. १९७८ (१७)

४०४ अ. कुगारपाल चरित्र पृ. २०० रु. १-४-० (३६९)

४०८ अ. कुमारपालमहाराजा ने हेमचंद्राचार्य रु. १-४-० (६)

४२२ अ. केवळज्ञान पहेला भाग उर्दू. रु. ०-१-० (४८)

४२३ अ. केशीम्रुनि अने परदेशीराजा पृ. १०० रु, ०–६–० (३६९)

४२७ अ. कोल सप्ततिका रु. •-१-६ पत्र ८ सं. १९६८ (१७)

क्ष.

३०३६ क्षत्र चूडामणि काव्य संस्कृत रु. १-०-० ३०३७ क्षमाकुळकादि संग्रह. रु. ०-३-० (६)

१ भगाकुळक.

२ इन्द्रिय विकार निरोध कुछक.

३ अध्यात्म बावनी.

४ पुद्गळ गीता.

५ हित्रिक्षा छत्रीशी.

संवा 1

248

जीवन

६ दया छत्रीशी. ७ प्रश्लोत्तरना छ दुहा.

३०३८ श्रमापना बुद्धिसागर सुरि. (१५, ५८ थी ६२, १८४) २०३९ श्रमाम्रुनिजीका संक्षिप्त जीवनचरित्र. ले. मुनिराज कर्पू-२०४० श्रमा ऋषि मूळ. रु. ०-१-० (८८) [रविजयजी। ३०४१ श्रामणा पत्रिका हिंदी. ले. बुद्धिसागर (केसरविजयना)

(म. ७९८, ५०)

२०४२ क्षुत्तक भवाविक प्रकरणम् धर्मशेखरगणि. सं. १९६८ भवनी आविक्रकाओनुं स्वरूप निरूपण करेल छे. मूळ प्राकृत विवरण संस्कृत. रु. ०-१-० (१७)

३०४३ क्षेत्रसमास रत्नशेखरकृत मूळ तथा बालावबोध सहित. (जुओ प्रकरण रत्नाकर भा. ४ थो)

३०४४ क्षेत्र समास प्रकरण (स्वोपज्ञ टीकया भृषितम्) ग्रं रत्न नं. ४६ रु. १-०-० (१७) (अछभ्य)

४३३ अ. खनककुपार चरित्र हिन्दी रु. ०-२-० (४८)

४३६ अ. खुळासा मजहब उर्दु रु. ०-१-० (४८)

५०३ अ. गुरुगुण छत्रीशी भाषान्तर रु. ०-८-० (१७)

५८० अ. चरित्रसार रु. ०-८-० (८४४)

५८३ अ. चातुरमासका महत्व हिन्दी रु. ०-२-० (६)

५८८ अ. चारित्रपूजा हिन्दी रु. ०-६-० (६)

५९५ अ. विकागों पश्लोत्तर उर्दु ०-१२-० (४८)

६२२ अ. चोरासी प्रबंध गद्य श्री राजशेखर सुरिकृत रु. ६-०-०

६३६ अ. चंदनवाला महासतीनुं चरित्र रु.०-३-० (६) [(८४४)

६८१ अ. जयविजय कथा रु. ०-३-० (६)

६८३ अ. जयानंद केवली रास. ह. १-०-० (६)

७३९ अ. जीवनचरित्र महावीरस्वामी उर्दु ह. ०-२-० (४८)

जैन] २५५ [ज्ञाता

,, ब. ,, श्रीपद विज्यानंदसूरि हिन्दी रु. ०–२–० (४८)

७५६ अ. जैन इतिहास भाग १-२ रु. ०-१-० दरेकनो (४८)

८२८ अ. जैनधर्मकी अनेकान्तात्मिकता हिन्दी रु.०-०-९ (४८)

८३० अ. जैनधर्मके सिद्धान्त हिन्दी रु. ०-०-६ (४८)

८७७ अ. जैनफीलोसोफो हिन्दी रु. ०-०-९ (४८)

८८२ अ. जैनभक्ति आदर्श हिन्दी रु. ०-०-६ (४८)

८९० अ. जैनमतसार तथा हिन्दु मतसार उर्दु रु. ०-२-९(४८)

८३० व. जैनधर्मको अहिंसातत्व हिन्दी रु. ०-१-० (६)

८९६ अ. जैन मेघदुत रु. २-०-० पत्र १७६ सं. १९८० (१७)

'८९८ अ. जैन रामाश्चण हिन्दी रु. ३-०-० (४८)

९११ अ. जैनवार्तिक दृत्ति सहित काशी रु. १-१२-० (८४४)

९१६ अ. जैन विविध ढाळ संग्रह हिन्दी रु. ०-८-० (६)

९२७ अ. जैन शिक्षणमाळा पहेली चोपडी ग्रु. ०-४-० (६)

,, ब, ,, बीजी चोपडी ,, ०-६-० (६)

९६० अ. जैन सुबोध भक्तिमाला गु. रु. ०-५-० (६)

९७० अ. जैन स्त्री रत्नो गु. रु. १-०-० (६)

९७२ अ. जैन स्तुति चरित्र गु. रु. ०-८-० (६)

१०१४ अ. जंबुद्वीप मह्मप्ति, शान्तिचंद्र बाचकेन्द्र विहित विवरण.

ह, २५-०-० (८४४)

₹.

३०४५ ज्ञाताधर्मकथाङ्गम् अभयदेवसूरिसृत्रित विवरण युक्त. रु. १-१२-० (२८, १६)

,, ,, बालाव बोध, (५०) बाबुवाळु.

,, ,, सटीक. (५०)

३०४६ ज्ञाताधर्मकथा. (२४, १२)

इता] . २५६ िज्ञान ३०४७ ज्ञातासूत्र मुळ. टीका, अर्थ युक्त. ३०४८ ब्रातासूत्र सटीक (पाना) रु. १-१२-० ३०४९ ज्ञान थोकडा भा. १-२-३-४ मेट हिन्दी नारवाही. ३०५० ज्ञान दर्पण. रु. ०-४-० [(४३) ३०५१ ज्ञान निबन्ध. (जुओ यशोबिजयजी ग्रंथमाला (समा)) ३०५२ ज्ञाननो बगीचो. भा. १-२-३ रु. १-१-० (इ. १८९०) ३०५३ ज्ञान पचीची (जुओ आत्महितोपदेश) [(३६२) ३०५४ ज्ञान पंचमी. रु. ०-६-० कथा गं. नं. १३ (७३, १९७) फी. (६) 97 अने तेनुं उद्यापन मानजी दामजी शाह इ. १९८० उपदेश, कथा, प्रकार, विधि अने उद्यापन पद्धति सहित. रु. ०-४-० (७९९) िर्कीमत नथी. (२१) कथा (५०) ३०५५ ज्ञानप्रकाश प्रकरण कर्ता हुकप्रमुनिजी महाराज. सं. १९४७ ३०५६ ज्ञान बहुमान स्तुति. (जुओ देवचंद भा. २ वि. १) ३०५७ ज्ञानबाजी (सादी) रु. ०-२-० ३०५८ ज्ञानबिन्द् ज्ञाननं लक्षण (संस्कृत) (१४, ४७, १०,६) ३०५९ ज्ञानभूषण हुकमग्रुनि. (२१) ३०६० ज्ञानमाला भा. १-२ भेट. (८००) ३०६१ ज्ञानमंजरी टीका. २ सं. १७९६ का. सुद. ५ नवानगर (जामनगर) (जुओ देवचंद भा. २ वि. १ हो.) ३०६२ ज्ञानविगल सूरि चरित्र (पत्) मुक्तिविगल कृत. रु.

३०६४ ज्ञान शितळ विस्तास. भा. १ स्त्रो. सं. १९६५-६६ रु. ०-८-० (१०३, ८०१, ८०२, २१)

ज्ञान]

३५७

बानाव

,, ,, भा. २ जो. (५०, १०३, ८०१, ८०२, २१)

- है०६५ ज्ञानसार यशोविजय उपाध्याय कृत. (गंभीरविजय कृत. टीका युक्त) सं. १७२८) बत्रीस अष्टक छे. पूर्णाष्ट-कादि. सं. १९६९ गं. नं. ३७ रु. १-०-० (१७, ६. ८०३)
 - ,, भाषान्तर. भा. क. दीपचंद छगनछाल आह. बी. ए प्र. कर्ता हरीचंद छगनलाल. भावनगर. बीजी आहति. रु. १-०-० भा. क. (८०४) प्र. क. (८०५) ,, सटीक. (५०)
 - ,, (अध्यात्मोपनिषद्) सूत्र कर्ता. ज. यशोवि-जय तथा श्रावकविधि मुळ. कवि श्रनपाळ. मेट. (६७) ,, ज्ञानमंजरी टीका देवचंदजी टीकाकार यशो-विजयजी कृत. (१७)
 - ,, अष्टक अर्थ युक्त. रु. १-०-० ,, ,, टीका यश्चोविजयजी कृत. पं. गंभीरवि-जयजी गणि कृत टीका युक्त. रु. ०-१२-० (६)
- ३०६६ ज्ञानसार अष्टक टीका अधुरी रु. ०-१२-० ३०६७ ज्ञानसार बीजी टीका (पाना) (रत्न ३८) यशोविजय उपाध्याय संकल्लितम् देवभद्रम्रुनिकृत टीका. रु.१-०-० (१७)
- ३०६८ ज्ञानामृत काच्यकुंज (अपूर्व अध्यात्म ग्रंथ) गुजराती ज्ञान-सार अष्टक गद्य, पद्य अनुवाद सहित. रु. ०-१२-० आ. म. ग्रा. भेट (१७)
- ३०६९ ज्ञानावली मूळ भाषा हिन्दी सह. रु. ४-०-० (३२५)

शाना ो

२५८

नवतत्व

३०७० ज्ञानावळी प्रथमखंड संग्रहकर्ता सेताबचंद नहार बहाद्र. सं. १९६६ त्रीजी आष्टति हिन्दी धार्मिक रास सङ्झाय (अलभ्य) (२८३, ३६६, १०४)

,, द्वितीयखंड. रु. १-४-० सं. १९६२ क्रभ्य. (२८३, ३६६, १०४) [१-०-० (६)

११६८ अ. दश वैकालीक सूत्र टीकानुं भाषान्तर भाग १ छो रु.

११५२ अ. दया दर्पण हिन्दी. रु. ०-०-३ (४८-०)

११७७ अ. दानप्रदीप भाषान्तर, रु. ३-०-० पत्र ४९६ भा. क. पं. चतुर विजय महाराज (१०)

११८८ अ. दिल्लगीका बस्ता नसीहतोका गुल्रदस्ता उर्दू. रू. ०-१-३ (४८)

१२०१ अ. दूर्लभकाव्य कलोल गु. रु. १-३-० (६)

१२०४ अ. देवगुरु धर्मका स्वरुप उर्दू रु. ०-१-६ (४८)

१२२४ अ. देवेन्द्र नरकेन्द्र प्रकरण इत्तियुत रु, १-८-० (८४४)

१२४५ अ. दोढसो गाथानुं स्तवन गुजराति रु. २-०-० (६)

१२७१ अ. द्रौपदी हिन्दी रु. ०-१-३ (४८)

१२९० अ. धनपाल पुरीहित याने तिलकपंजरी रु. ०-४-०(३६९)

१२९५ अ. धन्यकथानकम् रु. ०–५–० (८४४)

१३०० अ. धम्मिल कुमालचरित्र शास्त्री रु. १-०-० (६)

१३०४ अ. धर्मकी जड सदा हरी उर्द रु. ०-०-६ (४८)

१३०८ अ. धर्मदत्तकथा संस्कृत रु. ०-२-० (६)

१३२१ अ. धर्मबिन्दु भाषान्तर गु. रु. १-२-० (६)

१३३३ अ. धर्मविधिमकरण माचधी रु. १-८-० (६)

१३७३ अ. नयचक्र सग्रह रु. १-४-० (८४३)

१३९७ अ. नवतत्व याने जैन फिलोसोफी उर्दु रु. ०-६-०(४८)

,, ब. नवतत्व हिन्दी रु. ०-४-० (४८-०)

नवपद ी

२५९

[पंचमी

१४१२ अ. ननपद पूजा अर्थ साथे ननपद्यंत्र तथा मंडळना फोटा साथे रु. १-४-० पत्र १५४ यशोविजयजी उपाद्याय कृत. सं. १९८१ (६)

१४१७ अ. नवस्परण सचित्र भावार्थ साथे गु. रु. २-०-० (६)

१४२५ अ. नळदमयंती उपारूयान सं. रु. १-०-० (६)

१४२७ अ. नेपनाथ चरित्र भाषान्तर रु.२-०-० पृ.२३२ (१७)

१५६८ अ. पर्युषण महात्म्य बालावबोध रु. १-०-० (६)

१५९५ अ. पान्डव चरित्र शुभवर्धन गणिकृत रु.३-०-० (८४४)

१६०५ अ. पारसचरित्र उर्द रु. ०-१-३ (४८)

१६१२ अ. पार्श्वनाथ चरित्र वादिराज सूरिकृत (८४४)

१६२१ अ. पाळी सब्दकोष गप दीपिका पाल रु. ५-०-० (६)

१६२६ अ. पिंड निर्युक्ति भद्रबाहु स्वामि प्रणीत सभाष्य की. रू. ३-८-० (८४४)

१६५५ अ. पूजासंग्रह हिन्दी रु. ०-१२-० (४८)

,, ब. ,, आत्मबङ्घभकृत रु. १-८- पत्र ४८४ आ-चार्य बङ्घभविजयकृत सं. १९८१ (१७)

१६६७ अ. पूर्वतीर्थ स्तवनावली हिन्दी रु. ०-४-० (४८)

१६६९ अ. पेंतीसबोल हिन्दी रु. ०-४-० (४८)

१६७० १ पंचकस्याणक पूजा रु. ०-१-० हिन्दी (४८)

,, २ पंचिनप्रेथी रु. ०-८-० पत्र ५६ सं. १९७४ (१७)

,, ३ पंचपरमेष्टि गुणमाळा भाषान्तर रु. १-८-० (१७)

,, ४ पंचप्रतिक्रमणसूत्र अचळगच्छ १-८-० (६)

,, ६ ,, विधिगच्छ ५-०-० (६)

,, ७ पंचर्किंगी प्रकरण सं. रु. १-८-० (६)

,, ८ पंचमीकहा इतिहासीक ग्रंथ रु. ६-०-० (८४४)

मकरण]

240

भक्ति

१६७२ व. प्रकरण पुष्पमाला पुष्प १ लो रु. ०-६-० (१७)

१६७३ अ. प्रकरण सुलसिन्धु प्रथम भाग सं. गु. .०-८-० (६)

,, ब. ,, बींजो भाग ,, ,, १-८-० (६)

,, क. प्रकरण संग्रह भाग २ हिन्दी रु. १-०-० (६)

,, ड. प्रतिमा छत्रीशी हिन्दी रु. ०-०-६ (४८)

१६७४ अ. प्रबुद्ध रोहिणेय नाटक रु. ०-६-० पत्र ९६ सं. १९७४ (१७)

१६७५ अ. प्रभाविक चरित्र रु. १-८-० (८४४)

१६७६ अ. प्रमाण निर्माण रु. ०-७-० (८४४)

१६८७ अ. प्रवचन सारोद्धार भाग २ जो भाषान्तर प्रा. गु. रू. ४-४-० (६)

,, ब. प्रश्नपद्धति सं. रु. ०-२-० (६)

१६८७ क. प्रश्लोत्तर रत्नमाळा हिन्दी रु. ०-२-६ (४८)

,, ड. प्राकृत शब्द महार्णव कोष भाग १-२-३ वकील केश-वलाल पेमचंद मोदी अमदाबाद तथा(६)हरगोविंददास.

,, इ. प्राचीन चार कर्मग्रंथ सटीक रु. २-८-० पत्र २२२ सं. १९७२ (१७)

,, फ. पाचीन जैन लेखसंग्रह भाग २ जो शास्त्री तथा गु. रु. २-८-० बुद्धिसागरसूरि.

१८७९ अ. बचपनकी शादी उर्दू रु. ०-०-६ (४८)

१९०१ अ. बुटदेवकी स्तुति, या देशी जूतेकी फरियाद हिन्दी रु.

१९१५ अ. बोधवचनो शास्त्री रु. ०-२-० (६) [०-०-३(४८)

१९४० अ. मक्तामर और कल्याणमंदिर स्तोत्र अर्थ सहित हिन्दी

१९४२ अ. भक्तिमाला ए. १५० इ. ०-८-० (३६९)

```
भगवती
                                           िरिसास्रा
                       २६१
१९४३ अ. भगवती आराधना मागधी हिन्दी अर्थ भावार्थ साथे
          ह. ५-०-० (६१)
१९४४ अ. भजन मंजुषा हिन्दी रु. ०-०-९ (४८)
१९४९ अ. भजन विलास हिन्दी रु. ०-२-६ (४८)
१९५६ अ. भद्रबाह और ऋल्पसूत्र हिन्दी रु. ०-२-० (४८)
१९७० अ. भावनाभुषण गुरु, ०-१२-० (६)
                     ,, ₹. 0−8−0 (ξ)
१९९८ अ. भोज पबंध भाषान्तर गु. रु. ०-८-० (६)
२००२ अ. मदनरेखा सतीनी चोपाइ रु. ०-१-० (६)
२००५ अ. मनुष्य कत्तेव्य हिन्दी रु. ०-०-९ (४८)
२०१५ अ. महर्षि गुणमाळा हिन्दी रु. ०-०-६ (४८)
२०१८ अ. महाराणी रुषभसेना उर्द रु. ०-१-० (४८)
२०४८ अ. महासती सीताजी हिन्दी रु. ०-३-० (४८)
२०७५ अ. मुख्तसिर जीवन चरित्र श्री विज्यानंदमूरि उर्दू रु.
२०९२ अ. मेरीभावना हिन्दी (४८)
                                     [ o-o-& (8C)
२०९५ अ. मैथिकी कल्याण नाटक रु. ०-६-० (८४४)
२११४ अ. मंडलमकरण स्वोपन्न दृत्तिसहित रु. ०-८-० (८४४)
२१३८ अ. यशोबिजय विरचित १५० गाथानु स्तवन गु. (६)
         £. 0-8-0
२१६३ अ. रघुनाथजी स्वामीनं जीवनचरित्र गु. रु.०-८-० (६)
२१७४ अ. रत्नमाला (श्विशापदभजन) हिन्दी रु.०-१-६ (४८)
                                 बर्द ह. ०−१−३ (४८)
२१८७ अ. रत्नाकर पत्तीसी (पद्यमय) हिन्दी रु. ०-१-६ (४८)
२२८८ अ. रिसाला मुर्तिमंडन उर्दे रु. ०-४-० (४८)
                      हिन्दी रु. ०-४-० (४८)
    ੑ ब.
               "
```

रुपकि]

२६२

विदान्त

२२२९ अ. रुपिकशोर हिन्दी रु. ०-१-० (४८)

२२३१ अ. रुपसंदरी हिन्दी रु. ०-९-६ (४८)

२२४३ अ. लघीयस्रयादि संग्रह मृळ रु. ०-८-० (८४४)

२२५५ अ. बालजी गु. रु १-०-० (६)

२२५६ अ. लाहौरमें श्री विजयसेनसूरिकी पधरामणी हिन्दी रु. ०-१-० (४८)

२२७९ अ. वर्णबोध हिन्दी रु. ०-१-३ (४८)

२२८२ अ. वर्धमांनदेशना राजकीर्तिसुरिकृत रु. ८-०-० (८४४)

२२९४ अ. विकटनाल हिन्दी रु. ०-१-३ (४८)

२३०५ अ. विजयचंदकेवळी चरित्र रु. ०-६-० (६)

२३०९ अ. विजयधर्भमूरि चरित्र इंग्लीश रु. ४-८-० (६)

२३१२ अ. विजयसेनसूरि हिन्दी रु. ०-१-० (४८)

२३३६ अ. विमल्ज्ञाह चरित्र इन्द्रहंसगणिकृत रु. १-८-० (८४४)

२३४२ अ. विविध पूजासंग्रह शास्त्री भावनगरनी रु. १-०-०(६)

,, ब. ,, सचित्र भाग १ थी ७ गु. रु. ३–१२–० (६)

२३५० अ. विवेकविलास सचित्र गु. रु. २-४-० (६)

२३६५ अ. विश्वलोचन कोष, मागधी हिन्दी रु. १-७-० (६)

२३७६ अ. वीरचंद राघवजी गांधीका जीवनचरित्र हिन्दी रु.

२३७९ अ. वीरवाळ स्तवनावली भाग १ लो गु. रू.०-२-६(६)

२३८१ अ. वीरशीरोमणि वस्तुपाल किंवा पाटणनी चढती पढती गु. रु. २-०-० (६)

२३८४ अ. वीर हनुमान हिन्दी रु. ०-१-० (४८)

२३८६ अ. वीसस्थानक तप तथा पूजाविधि शास्त्रि रु.१-४-०(६)

२३९३ अ. वेदान्त विचार हिन्दी रु. ०-१-६ (४८)

वैराग्य]

२६३

[सप्तभंगी

२३९८ अ. वैराग्य शतक भाषान्तर सहित शास्त्री मूळ तथा भा० रु. ०-१२-० (६)

२४०६ अ. व्याख्यान तिलक हिन्दी रु. ०-०-३ (४८)

२४४१ अ. शत्रुंजय महातम्य. जर्मनी रू. १०-०-० (८४४)

,, ब. ,, तीर्थ महातम्य ज्ञाह फ० रु. ০-८-০ (६)

२४५४ अ. शब्दाणेत्र चन्द्रिका (जैनेन्द्र छघुवृत्ति) सं. रु.३-४-०

२४६० अ. शहिनशाह अकवर और हीरविजयसूरि उर्दू रु. o-३-० (४८)

२४६४ अ. शान्तिनाय चरित्र भाषान्तर गु. रु. २-०-० (६)

२४६९ अ. शारीरिक केलवणी गु. रु. ०-१-० (६)

२४९१ अ. शीघ्रबोध हिन्दी रु. ०-२-० (४८)

२५०० अ. शीलवती सती कथा सं. रु. ०-२-० (४८)

,, ब. ,, हिन्दी रु. ०-९-६ (४८)

२५६३ अ. श्रीपाल चरित्र सत्यराजगणि विर्चित रु. १-४-० (८४४)

,, ब. ,, रु. ०-४-० (१७-३६९)

२५६६ अ. श्रीमाली वाणीआओनी ज्ञातिनाभेद गु. रु.३-०-०(६)

२५६९ अ. श्री हीरविजयसूरि हिन्दी (४८) [१-२-० (६)

२६०३ अ. सचित्र रामायण अथवा आवणा आदर्शो गु. रु.

,, ब. सचा बलिदान हिन्दी रु. ०-२-० (४८)

२६१४ अ. सती दमयंति रु. ०-३-० हिन्दी (४८)

२६२१ अ. सत्य इरिश्चंद्र हिन्दी रु. ०-६-० (४८)

२६३६ अ. सप्तभंगी नय हिन्दी रु. ०-१-० (४८)

,, ब. ,, म्रुनिश्री जिनविजयजीकी भूमिका सहित रु. ०-१:-० (४८)

सप्तब्यसन]

368

स्मिति

्र, क. सप्तब्यसन निषेध इिन्दी रु. ०-४-० (६)

२६७२ अ. समाजके अधः पतनके कारण और उन्नतिके उपाय हिन्दी रु. ०-२-० (४८)

२६७९ अ. समाधिशतक हिन्दी रु. ०-२-०

,, ब. सम्रचित शिक्षा १ ला भाग (ब्रह्मचर्य) हिन्दी रू. ०-१-० (४८)

२६८१ अ. समेदशीखरजीनो प्रवास ग्र. रु. ०-२-३ (६)

२७०५ अ. सरस्वती विगेरेनी कथा रु. ०-४-० (६)

२७१४ अ. साची टेकनी गेबी फतेह अथवा (कान्हड कठीआरो) गु. रु. ०-१२-० (६)

२७३५ अ. सामायकसूत्र अर्थ साथे हिन्दी रु. ०-३-० (६)

२७६० अ. सिद्धसेनदीवाकरसूरि याने विक्रमना समयनुं हिन्द पाकु बाइन्डींग ए. ३०४ रु. १-८-० (३६९)

२७७६ अ. सिद्धाचळ संघ प्रयाण तथा गहुलीसंग्रह रु. ०-४-० रु. १-८-० (६)

२७९० अ. सीमंधर स्वामी विनतिरुप सज्जायो गु. रू.०.२-० (६)

२७९७ अ. सुक्तमुक्तावली विगेरे शास्त्री रु. ०-१०-० (६)

२८०६ अ. सुखा हुवा चपन कैसे हरा हो सक्ता है (हम और हमारा फर्ज) उर्द रु. ०-१-६ (४८)

२८१५ अ. सुंदर राजानी सुंदर भावनाओ याने शीलसत्वनी क सोटी मनहरिवजयकृत रु. १-०-० (विद्याशाळा अमदावाद)

,, ब. सुंदरविलास हिन्ही रु. ०-२-० (४८)

,, क. ,, उर्दू रु. ०-१-६ (४८)

२८४२ अ. सुमति स्तवन संग्रह हिन्दी रु. ८-६-० (६)

सुरपाछ]

२६५

| हैसराज

२८४७ अ. सुरपाछ विगेरेनी कथा रु. ०–३–० (६)

२८४२ अ. सुमित स्तवन संग्रह हिन्दी रु. ०-६-० (४८)

२८४६ अ. सूरतमें जयन्ति महोत्सव हिन्दी (४८)

२८८८ अ. सौभाग्य रत्नमाळा हिन्दी रु. ०-९-० (४८)

,, ब, संखेश्वर पार्श्वनाथ चरित्र पृ. २५६ रु.१-८-० (३६९) २९०५ अ. संबोध सत्तरी गु. रु. ०-३-० (६)

२६८३ अ. सम्मित्तिक प्रकरणम् (गुजरात पुरातत्व ग्रंथावछी)
सिद्धसेन दिवाकर प्रणितम् जैन वेताम्बर राजगच्छीय
प्रयुक्तसूरि शिष्य-तर्क पंचानन श्रीमद् अभयदेवसूरि
निर्मितया तत्वबोध विधायिन्या व्याख्या विभूषितम्
प्रथमो विभाग रु. १०-०-० पुरातत्वपंदिर अमदावाद.

२९२९ अ. स्तवनसंग्रह तथा बारह मासा हिन्दी रु. ०-२ ०(४८) २९४४ अ. स्तोत्रसंग्रह अवचूरि तथा वंकचूलियासूत्र सारांस शास्त्री रु. ०-४-० (६)

२९९२ अ. स्थूलभद्र चरित्र पृ. ५० रु. ०-३-० (६)

,, ब. ,, हिन्दी रु. ०-२-६ (४८)

,, क. ,, जयानंद सूरिक्वत रु. १-८-० (८४४)

२९८१ अ. हरिचंद्र कथा सं. रु. ०-८-० (६)

२९८२ अ. हरिभद्र समय निर्णय सं. ०-४-० (६)

,, ब. ,, सूरि चरित्र काञ्ची रु. ०-८-० (८४४)

३०२३ अ. हीराचंद्रकान्त गु. रु. १-०-० (६)

३०३२ अ. हुंसराज वच्छराज कथा सं. रु. ०-८-० (६)

एक फेन्च विद्वान डॉ. गॅरीनो ए इस्तीसने १८९५ नी साल सुवी जैन गंथोनी नोथ लीथेलो ते उपरथी कर्ता वार-गंथ तथा श्रीलालेख जे छपाइ गया छे तेनी याद— Auteurs et Oudrages.

1	Adhidvipano nakso
2	Ajitaasantistavanadi carasmaranono
3	Alpubetical Index of Mss. in oriental Mss. Library Madras.
4	ALWIS, J. The six Tirtaka
5	Anandaji Khetasi Jainaprabodha pustka
6	ANANTACHRYA, PB. Ed. Saptabhangitaraugini de Vimala-
	dasa
7	- Ed. Sarvdarsanasiromani de Rama-
	nujacarya
8	ANDERSON, J. Catalogue and Hand-book of the Collectons
	in the Indian museum (Callcutta)
9	Annual Progress Report of the Archaeological Survey
	Circle, North Westrn Procinces and Oudh
10	Annual Progress Report of the Archeological Survey
	Circle Panjab and United Provinces
11	Annual Report of the Archeological Survey, Bengal Circle
12	Archæological Survey, of India. Annual Report 1802-03
13	ARIEL, E. Kur al de Tiruvalluvar, fragments
14	— Tiruvalluvar teharitra
15	Atmarajana
L 6	AUERECHT, Th. Catlocgue sk. mss in Trinity College
	Oambridge
17	— Catalogus catalogorum
18	- Catalogus sk mss Biblothccao Bodleianae
19	- Florentine sk. mss
0	 Katalog d. sk. Handschriften der Univaesita-
	tbibliothek Leipzig
Ĺ	- wei Erzahlungen

2 2	— Zwei Eozahlungen aus der Bha.ratakadvatri
	ncatika und dem Katharnava
2 3	BALABHI CHAGANLALA. Jaini kakko
24	BALFOUR E. Cyclopædia of India
25	Ballini, A Agadatta
26	- Un ciclo anedottico del Sultano Firuz II
	$del\ \ Pancacatlprabodhasamband\ hah$
27	— Ed. Pancacatl-Prabodhasambadhah
	La Upamitabhavaprapanca Kutha di Sid-
	dhars i
2 8	BARRIQUE de FONTAINIEU G. de Le livre de l' Amour de
	Tirouvallouva
29	Brath, A. M. Buhler et la tradition jaina
30	- Bulletin des religions de l' Inde. Juinisme
31	- Religione de l' Inde
32	- Religions of India, trad. J. Wood
33	BEAL, S. Si-yu-ki. Buddhist Records of the Westeon
	World
34	Beames, J. Outlines of indian Philology
35	BEAUCHAMP, H. K. Voir DUBOIS, JA
36	BACANARAMA TRIPATHI. Ed. Balabharata d'Amarreandra
37	Benarasi Dass, L. Lecture on Jainism
3 8	BANDALL, C. Ancient Indian Sects and Orders mentioned
	Buddhist Writers
39	- Catalogue sk mss. British Museum
4 0	- Journey in Nepal and Northern India
41	BENETT, WC. Netes connected with Sahet Mahet
42	BERTFEY Th. Indien
43	BERTRAND, A Dictionnaire des religions
44	BHAGWANLAL INDRAJI. Antiquarian Ramains at Sopara
	and Padana
45	— The Hathigumpha theee ouher inscriptions
	in the Udayayiri Caves
46	- A new Yadava Dynasty
47	et J. Burgess. Kahaun Inscription of Ska-
	ndagupta.
18	- Vir Burgess, J

4 9	BHANDARI VIRACAND BHUTAJI. Vinati patra
50	BHANDARKAR, DR. Epigraphic notes and questions
51	- Gurjaras
52	BHANDARKAR, R. G. Larly History of the Dekkan
53	- A Peep into the early History of
	India,
54	- The Prakrits and the Apabhramsa.
55	- Principal results of my studies in sk.
	mss. and literature
56	- Report on the search for mss. 1882-83
57	
58	— 1884–87
59	— 1887-91
60	BHANDARKAR, SR. Catalogue of the Collections of mss
•	in the Deccan College
61	- Report on sk. mss. in Central India.
62	BHAU DAJI, Brief Notes on Hemachandra
63	- The Inroads of the Scythians into India
64	- Merutunga's Theravali
65	- Report on photographic copies of inscrip-
	tions in Dharwar and Mysore
66	- On the sanskrit Poet, Kalidasa
67	BHIMASIMHA MANAKA Ed. Bhaktamarastotra
68	- Jivavicara
69	- Navatattva
70	- Samayika-Pratikramanasutra
71	— Jainakavyaprakasa
72	- Laghu-prakarana-samgraha
73	- Prakarana-ratnakara
74	BHURABHAI BEHECAR JOSI. Astapadaji bimba pratistha
75	Biggs, Col. Voir Fergusson, J
7 6	BIRD, J. Historical Researches on Bauddha and Jaina
	raligions
77	BJORNSTJERNA. British Empire in the East
•	BLACK, FG. Voir SMITH, VA
	3 ų

78	BLOCH, Th.	Vararuci und Hemacandra
79	BLONAY, G.	de. Histoire de Sanamkumara
80	BOHTLINGK,	O. Bemerkungen zu Ginakirti's K'ampaka-
		kathanaka
81		et Ch. RIEU. Ed. Abhidhanacintamani
		de Hemacandra
82	Bose, R-C.	Hindu Philosophy
83	BOWER, H.	Introduction to the Nannul
84	Bowring, I	1. (Traces of Jains in Mysore)
85	BOYER, A,-	M. L'epoque de Kaniska
86	BRIGGS, H	G. the cities of Gujarashtra
87		AM. the buadhistic Remains of Bihar
88	_	On identification of Pleces in Magadha
89	Brown, Cb	-P. Cyclic tables of hindu and mahomedan
		Chronology
90	BUCHANAN	HAMILTON, F. Description of jaina Temples
.		in South Bihar and Bhagalpur
91		The Srawacs or jains
9 2	BUHLER, G	On the Age of the Naishada-Charita
93		Additional Remarks on the Age of the Naishadiya
94		On the Authenticity of the jaina tradition
95	B	The Author of the Paialachhi
96		On the cclebrated Bhandar of sk. mss at
i Jane 21		jessalmir
97	-	On the Chandikasataka of Banabhatta
98		The Desisabdasamgraha of Hemachandra
99		Digambara jainas
100		Dr, Fuhrer's excavations at Mathura
101		Dr. Stein's discovery of a jaina temple,
. *		desceribed by Hiven Tsiang
102	-	Ed. Paiyalacchi Namamalu de Dhanapala
108	-	Ed. Vikramankadevacarita de Bilhana

104	-	Eleven Land-grants of the Chaulukyas of
		Anhilvad
105		Epigraphicais Ceverees at Mathura
106	_	Further jaina inscriptions from Mathura
107		Further proofs of the Antheuticity of the
		jaina tradition
108		Indische Palaeographie
109	****	Die indische Secte der Jaina
110		The indian Sect of the Jains, trad. J.
		Burgess
111	-	The Jagaduchrita of Sarvananda
112		A Jaina Account of the End of the Va-
		ghelas of Gujarat
113		The Jaina inscription in the temple of
		Baijnath at Kiragrama
114	-	The Jaina inscriptions from Satrunjaya
115		Jaina Sculpturs from Mathura
116		Ueber das Leben Jaina Monches Hmachandra
117		Legend of the Jaina Stupa at Mathura
118		Lexicographical notes Dharmavahika
119	=	Meaning of iti and cha
120	-	Miscellaneous Notes
121	-	New Excavations in Mathura
122		New Jaina incriptions from Mathura
123		On the pedestal of an image of Parsva-
		natha in the Kangra Bazar
124	_	On Prakrit Glossar Paiyalachhi
125		Prasasti of the temple of Vadipura-Pars-
		variatha at Pattana
126	-	Pushpamitra or $Pushvamitra$?
127		Recension: 1G. PHANDARKAR, Reports on
		sk mss. 1882 83, 1883 84
128		- Feterson, 1-6 Reports on
		sk, 11188
129		Report on sk. mss. 1869
180		

181	-	1871-72
132		— 1872-73
183	222	— 187 <i>3-74</i>
184		— <i>1874–75</i>
135		<i> I879-80</i>
136		Report on sk. mss. in Kasmir, Rajputana
		and Central India
137		Sammlung con sk. und pk. Handschriften
		fur die Wiener Universitat
138	_	Specimens of Jaina Sculptures from Mathura
139		Das Sukritasamkirtana des Arisimha
140	•	The Sukritusamkirtana of Arisimha, trad.
		J. Burgess
141	-	Three new Edicts of Asoka
142		Two Lists of sk. mss
14 3		Voir PISCHEL, R.
144	Burgess,	J. The ancient Monuments, Temples and
		Sculptures of India
145	_	The Dharasinva Rock Temples
146		Digambara Jaina Iconography
147		Extracts from the Journal of C. Mackenzie's
148		Pandit
149	_	Gujarat and Rajpulana
150		The Iconography of the Digambara Jains.
100		Lists of the antiquarian remains in the
151		Bombay Presidency On the Muhammadan Architecture in
		Gujarat
152		The Muhammadan Architecture of Ahmeda-
		bad
153	-	Note on Jain Mythology
154	-	Notes of a visit to Satrunjaya hill
155	_	Notes of a visit to Somnath Girnar
156		Notes on hindu Astronomy
	4.4	-

157	-	Papers on Satrunjaya and the Jains
158	-	Report of the first season's operations in
		the Belgam and Kaladgi Districts
159	<u> </u>	Report on the Antiquities in the Bidar
		and Aurangabad Districts
160		Report on the Antiquities of Kathiawad
		and Kachh
161		Report on the Elura Cave temples and the
		brahmanical and jaina Caves in Western
		India
162	-	Somanath, Girnar, Junagadh
163		Supara, Surparaka, EORHAPA
164		Tamil and sanskrit Inscriptions
1 65	_	The Temples of Satrunjaya
16 6		et BHAGWANLAL INDRAJI Inscriptions
		from the Cavetemples of Western India
167		et H. Cousens The architectural Antiquities
		of Northern Gujarat
		— Revised Lists of antiquarian
		remains in the Bombay
		Presidency
168		et Lewis Rice. The Merkara Plates
169		Voir Bhagwanlal Indraji; Euhler, G.;
		FERGUSSON, J; FUHRER, A.; GRUNWEDEL,
		A., et Weber, A.
170	Burnell,	A - C On the Aindra School of sanskrit Gram-
		marians
171		Classified Index to sk. mss in the Palace at
		Tanjore
172		On the colossal Jain statue at Karkala
173		Elements of South-India Palæography
	Burnes, A	A. Account of the Jain Temples on Mount Abu
175	-	Notice of a remurkable Hospital for Animals
		at Surat

176	BURNOUF, E. Introduction a l'histoire du Buddhisme
	indien
177	BUTERAYA. Muphatti vise carca
178	CALDWELL, R, A comparative Grammar of the Dravidian
	Languages
179	CAMANLAL SANKALCAND MARFATIYA Jain Ramayana
180	CAMPAT RAE. Qaumi Apil
181	Caritrasangraha
182	Catalogue of sk mss. in the Lahore Division
183	Catalogue of sk. mss. Sanskrit College Benares
184	Census of India, 1881
185	
186	
187	CHALMERS, The Jains
18 8	CHANTEPIE de la SAUSSAYE. Lehrbuch des Religions-
	geschichte
	— Manuel d'Histoire des re-
	ligions, trad. H. Hub-
	ERT et I. LEVY
189	Classified List of sk mss. Library Bombay Branch R. A.
	Society Bhagwanlal Indraji Collection
190	COLEBROOKE, HT. Inscription at temples of the Jains
	Sect in South Bihar
191	- Miscellaneous Essays
192	 Observations on the Sect of Jains.
193	- On the philosophy of the Himius
194	- Essais sur la philosophie des Hind-
	ous, trad. G. PAUTHIER
195	Collection of Prakrit and Sanskrit Inscriptions
196	CONOLLY, E Observations upon the condition of Uj, a, ani
197	COPLESTON, RS. Papers on the first fifty Ja'akas
198	M'CORKELL, G. A Legend of old Belyam
199	Corpus inscriptionum indicarum. Voir Cunningham, A.,
	et Fleet, J.F

200	Cousens, H. Lists of antiquarian remains in His High-
	ness Nizam's Territories
201	- Lists of antiquarian remains in the Central
202	- Provinces and Berar
20 3	- Notes on Bijapur and Satrunjaya
204	- Voir Burgess, J.
205	COWELL, EB. Prakrit-Grammar of Vararuchi
206	- Short introduction to the ordinary Prakrit
207	et AE Gough Trad. Sarva-darsana
	samgraha
2 08	CROOKE, W. An introduction to the popular religion
	and tolklore of Northe n India
209	The tribes and castes of the North-Western
	Provinces and Oud'i
210	CUNNINGHAM, A Archaelogical Survey of India; Reports
211	— Book of indian Eras
212	- Corpus inscriptionum indicarum. I.
	Inscriptions of Asoka
213	Cust, R. Religions et ngues de l'Inde
214	DAHLMANN, J. Buddha
2 15	— Das Mahabharata als Epos uud Re-
	chtsbuch
216	Dalton, ET. Descriptive Ethnology of Bengal
217	DAMODARA LAL GOSVAMI. Ed. Saddarsanasamuccaya de
	Haribhadra
218	— Ed. Syadradamanjari de Mal-
	lisena
219	DELAMAINE, J. The Srawacs or Jains
22 0	Delius, N. Radices pracriticae
221	DEVIPRASADA Voir NESFIELD, J-C.
222	DHRUVA, H A copperplate Grant of King Trilocha-
*	napala
223	- The Dohad Inscription of the Chaulukya
	King Jayasimha-Deva
224	- The Nadole Inscription of King Albanadera

225	— Prasastis of Nanaka
226	- Sanskrit Grants and Inscriptions of Gujrat
	Kings
227	DHUNDHIRAJ SASTRI Catalogue of sk. mss. in North-
	Western Provînces
228	DIPACAND DEVACAND et JAVERI CHAGANLAL Siddhaca-
	lanum varnana
2 29	Dowson, J. Ancient Inscriptions from Mathura
230	- On the geographical Limits, History and
	Chronology of the Chera Kingdom
231	DROPATTI. Arithant-puja-khandana
232	Dubois, J.A. Mœurs, institutions et ceremonies des
	peuples de l'Inde
23 3	- Hindu manners, customs and ceremonies,
	trad. HK. BEAUCHAMP.
234	Dubois de Jancigny et X RAYMOND Inde
235	Duff, C. M. Chronology of India
2 36	Dulicand Paksika Bats abhaksya tyaga
237	— Jaina Yatradarpana
238	DURGAPRASADA, P. et KP. PARAB, Ed. Dharmasarma-
	bhyudaya de Hari-
	candra
239	— Kavyama/a, Part ▼
	- Part VII
240	Durgaprasada, P. Voir Mahamahopadhyaya.
241	DUTT, R-Ch. Hostory of civilization in ancient India
242	Dvadasakosa-Samgraha
243	The Dvaiasharaya
244	EGGELING, J. et E. WINDISCH. Catalogue of sk. mss.
	Library India Office
245	ELLIOT, HM. Memoirs on the races of the North
	Western Provinces of India
24 6	ELLIOT, W. Hindu Inscriptions
247	ELPHINSTONE, M. History of India
248	Epigraphia carnatica Voir RICE, Lewis.

249	Epigraphia	indica		
250	ETTINGHAU	ETTINGHAUSEN, M -L. Harsa Vardhana empereur et poete		
251	Famed Rikhabnath			
252		Nataputta et les Niganthas		
25 3	<u> </u>	Tirthikas et Bouddhistes		
254	Feigl, H.	Buddha und Jina		
2 5 5	FEISTMANT	EL, O. Die Sekte der Dschains		
2 56	FERGUSSON	, J. History of indian and eastern Architecture		
257		On the rock-cut Temples of India		
2 58		et J. Burgess, The Cave Temples of India		
259		PIGOU, A. NEILL, Col. BIGGS et Col.		
		TAYLOR. Architecture in Dharwar and		
		Mysore		
260	FICK, R E	ine jainistische Bearbeitung der Sagara-Sage		
261	FLEET, JF	f. Bhadrabahu, Chandragupta, and Sravana-		
	•	Belgola		
262	-	Corpus inscriptionum indicarum. III.		
	•	Inscriptions of the early Gupta Kings		
		and their successors		
263	-	Epigraphic Researches in Mysore		
264		Inscri tions at Ablur		
2 65	-	Inscriptions at Bail Hongal		
2 66	_	Kaluchumbarru Grant of Vijayaditya-		
		Amma II		
267		Nisidhi and Gudda		
2 68		Note on a Jain inscription at Mathura		
269	· <u>—</u>	Notes on Indian History and Geography		
270		Sanskrit and Old Canarese Inscriptions		
271	 -	On some Sanskrit Copper-plates found in		
		Belgaum		
272		Spurious Sudi copper-plate Grant		
273		Sravana-Belgola Epitaph of Marasimha II		
274		— Prabhachandra		
275		Two Passages from the Acharatika		
		34		

276	— et HV. LIMAYA. Translations of inscript- ions from Belgaum, Kaladgi, Kathiawad
	and Kacch
277	Forbes, AK. Puttun Somnath
27 8	— Ras Mala
279	Foucaux, Ed. La guirlande precieuse des demandes et
	des reponses
280	FOUCHER, A. L'art greco-bouddhique du Gandhara
281	- Voir Oldenberg, H.
282	Foulkes, Th. The Pallavas
283	Francis, W. Madras District Gazetteers
284	FRANCKLIN, W. The temple of Parswanat'ha at Samet
* * * * *	Sikhar
285	- Tenets and Doctrines of the Jeynes and
	Boodhists
286	FRANKE, RO. Ed. Linganusasana de Hemacandra
287	- Die indischen Genusechren
288	FUHRER, A. The monumental antiquities and inscriptions
	in the North-Western Provinces and Oudh
289	- Pabhosa Inscriptions
290	EW. SMITH et J. BURGESS. The Sharqi
	architecture of Jaunpur
291	_
.401	candra
- 000	
292	GANDHI, VR. Contribution of Jainism to philosophy,
293	history and progress History and religion of the Jains
294	GARBE, R. Samkhya und Yoga
295	Gazetteer of the Bombay Presidency
296	Genealogical Tree illustrating the Chronology of the Jain
	Religion
297	GERSON da CUNHA, J. Notes on the History and Anti-
	quities of Chaul
298	G ESON, A.C. Voir GRUNWEDEL, A.

299	GOLDSCHMIDT, S. Bildungen aus Passive-Stammen in
	Prakrt.
300	— Der Infinitiv des Passivs im Prakrt
301	- Prakrtica
302	- Prakrtische miscellen
303	GOUGH, AE. Papers relating to the collection and
-	preservation of Records of sanskrit
504	Literature.
304	- Voir Cowell, EB.
30 5	GRANT, Ch. Gazetteer of the Central Provinces
306	GRIERSON, GA. The modern vernacular literature of
	Hindustan
307	- Recension: R. Hoernle, Uvasagadasao
308	R. PISCHEL, Grammatik der
000	Prakrit-Sprachen
309	- Voir SENART, E., et WEBER, A.
310	Growse, FS. Mathura Inscriptions
311	GRUNWEDEL, A. Buddhistische Kunst in Indien
312	— Buddhist Art in India, trad. AC.
	Gibson et J. Burgess
313	GUBERNATIS, A. de. Le iscrizioni del Kathiavar
314	GUERINOT, A. La doctrine des etres vivants dans la
0.5 =	religion jaina
315	- Le Jivaviyara de Santisuri
316	GULAL CHAND. Jainism. 28 Labdhees or Miraculous
	powers
317	HAACK, A. Trad. Kirtikaumudi de Somesvaradeva
318	HALL, F. Contribution towards an index to the biblio-
	graphy of the indian philosophical systems
3 19	- Ed. Vasavadatta de Subandhu
320	HARDY, Ed. Indische Religionsgeschichte
321	HARIDAS SASTRI. A Note on Vimala
322	HARI RAMAJI. Grabhasangraha
323	HATTHI SIMHA. Anjanasilakanam dhaliyam
324	HENRY, V. Les litteratures de l'Inde

325 326 327 328	HERTEL, J. Uber Amitagatis Subhasitasamdoha Uber dis Jaina-Rezensionen des Pancatantra Eine vierte Jaina-des Pancatantra Voir Schmidt, R.
329	HEWITT, JF. Notes on the early History of Northern India
330	HIRANANDA SHASTRI. Jaina - Images from Tonk
331	Hoefer, A. De Prakrita dialecto
332	Holler, P. Manual of Indian Literature
333	HOPKINS, EW. Notes from India
334	- Religions of India
335	HOERNLE, R. Ed. Prakrta Lakshanam or Chanda's Gra-
	mmar
336	Ed. et Trad. Uvasagadasao
337	
338	— Jainism and Buddhism
339	- The Patiavali of the Upakesa Gachchha
340	Two Pattavalis of the Sarasvali-Gachchha
341	- Three further Pattavalis of the Digambaras
3 42	- et A. STARK. A History of india
343	HUBERT, H. Voir CHANTEPIE de la SAUSSAYE.
344	HUET, G. Voir KERN, H.
845	HURM MUNIJI. Adhyatma-prakarana-sangraha
346	— Jnanaprakasa-prakarana-sangraha
347	HULTZSCH, E. Inscriptions on the three Jaina Colossi of Southern India
348	— Jaina rock-inscriptions at Vallimalai
349	— Reports on sk. mss. in Southern India
350	- Sammlung indischer Handschriften and
	Inschriften
351	- South-indian Inscriptions. Vol. I
352	Vol. III
353	Sravana-Belgola Epitaph of Mallishena.
	• • • • • • • • • • • • • • • • • •

28%

354	-	Two inscriptions from Cunningham's
		Reports
355	***	Two Jaina inscriptions of Irugappa
356		WW. The Imperial Gazetteer of India
357	IMFEY, E.	Description of a Colossal Jain Figure
358	Inscription	ns on Jain images from Central India
35 9	ISWARCHA	NDRA VIDYASAGARA. Ed. Sarvadarsanasam-
		graha
360	JACOB, G	-A. Notes on Alankara Literature
361	JACOBI, H	. Der Akzent im Mittelindischen
862	-	Anandhavardhana and the date of Magha
363	P	Ausgewahlte Erzahlungen in Maharashtri
364		Betonung in Sanskrit und Prakrit
3 65		On Bharavì and Magha
366		Ueber den Cloka im Pali und Prakrit
367		Die Cobhana Stutayas des Cobhana Muni
368		Ed. Ayaramga Sutta
369		Ed. Kalpasutra
370		Ed. Sthaviravali Charita or Parisishtaparvan
371	Јасові, Н	. Entstehung der Cvetambara und Digambara Sekten
372		Entwicklungd, indischen Metrik
373	-	Zur genesis der Prakritsprachen
374		Indische Hypermetra und hypermetrische
		Texte
375	-	Die Jaïna Legende von dem Untergange
		Dvaravatt's und von dem Tode Krishna's
376	-	Jaina Sutras translated
377		Ueber den Jainismus und die Verehrung
		Krischna's
378		Das Kalakacarya-Kathanakam
379		Ueber Kalacoka-Udayin
380		Liste von indischen Handschriften
381		On Mahavira and his Predecessors,

382		Mîscellen	
383	-	Das quantitatsgesets in den prakrtsprach	
384		Recension: S.J. WARREN, Nirayavaliyasu	
385		Ueber unregelmassige passiva im Prake	rit
3 86		Upamitabhavaprapancae kathae specim	
387		Ueber vocaleinschub und vocalisirung d	les y
•		im pali und prakrit	•••••
388		Zusatzliches zu meiner Abhandlung; U	Teber
		die Entstehung der Cvetambara	
		Digambara Sekten	
389	_	Zwei Jaina-Stotra	
390		Voir KERN, H. et PETERSON, P	
391	JACMANDE	ER LAL JAINI. Some Notes on Digambara Jo	
001		aphy	
39 2		rma dilkus stavanavali	
393		rma jnana pradipaka pustaka	
394		rma-jnanaprakasaka	
395	Jaima dh	arma sara sangraha	
3 36	Jaima dh	arma siddhanta sara pustaka	••••
397		aratnakosa	
398		ya-sara-sangraha	
3 99		arthdnamala	
400		ra-katha-sangraha	
401		rasangraha	
402	Jambudni	pdno nakso	****
403		GARA. Jinamurti pujapradipa	
404		HAGANLALA. Voir DIPACAND DEVACAND	
405		ligrantha	
406		t. Histoire de la Vie de Hiouen-Ihsang.	
407	-	Memoires de Hiouen-Thsang	
40 8	KALIVAR V	VEDANTAVAGIS et RAM DAS SEN, Ed. Abhidh	
		cintaman	
		Hemacan	
409	Kashi Nati	H Kunte. Report on sk. mss. in Punjab, 1880	<i>9</i> ≈81
410			

411	KATHAVA	TE AV. Ed. Kirtikaumudi de Somesvaradeva
412	_	Report on the search for sk. mss.
		1891-95
413		CAND. Trad. hindie du Kalpasutra
414		la Voir Durgaprasada, P. et KP. Parab.
415	KEARNS,	J. F. Archwology in North Tinnevelli
416	KERN, H	Geschiedenis van het Buddhisme in Indie
417		Der Buddhismus und seine Geschichte in
		Indien, trad H. JACOBI
418		Histoire du Bouddhisme dans l'Inde, trad.
		G. Huet
419		Manual of iudian Buddhism
420		Over eenige Tijdstippen der indische Geschiedenis
421	Кнакнаг	R, D-P. Castes and Tribs in Kachh
422	-	Report on the architectural and arch-
		cological remains in the province
		of the Kachh
423	KIELHORI	N, F. Account of Hemchandra's Sanskrit Gra-
* *		mmar
424		Aihole inscription of Pulikesin II
4 25	_	Ancient palm-leaf Mss
4 26	-	Bamani inscription of the Silahara Vi-
		jayaditya
427		Dubkund stone inscription of the Kachchha-
400		paghata vikramasimha
428 429	*	On the Grammar of Sakatayana
430	-	Inscriptions from Khajuraho
431		On the Jainendra-Vyakarana On a Jaina statue in the Horniman
401		Museum
432		Kolhapur inscription of the Silahara
7.UA		Vijayaditya
433		Konnur spurious inscription of Amogha-
		varsha I
434	, –	Lists of sk. mss 1877-78, 1879-80, 1881-82

435		A Note on one of the Inscriptions at
		Sravana Belgola
436		Report on sk. mss. 1869-70
437		1880-81
4 38		Die Sakatayana Grammatik
439		Three inscriptions from Northern India
440	Kirste,	J. Ed. Dhatupatha de Hemacandra
441		Ed. Unadiganasutra de Hemacandra
442	-	Epilegomena zu Hemachandra's Unadiga-
		nasutra
443	-	Hamsakhyayika
444		Ueber Hemacandra's Dhatupatha
445		Inscriptions from Northern Gujarat
446		Notes de paleographie indienne
447	KIRTANE,	NJ. The Hammira Mahakavya of Naya-
		chandra Suri
448	KITTEL, I	F. Ed. Sabdamanidarpana de Kesiraja
4 49		Old Kanarese Literature
450	-	Three Kongu Inscriptions
451	-	Ursprung des Lingakultus in indien
452		-J. Report on Census of Berar, 1881
453	Klatt, J	. Eine apokryphe Pattavali der Jains
454		The date of the poet Magha
455	-	Dhanapala's Rishabhapancacika
4 56	-	Extracts from the historical Records of the
		Jains
457		The Samachari-Satakam and Pattavalis of
		the Anachala-Gachchha and other Gach-
		chhas
458		Specimen of a Jaina-Onomasticon
459		Surparakd
460	KRISHNA	MAHABALA. Ed. Prakrat vyakarana de Hema-
	candr	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
461	KRISHNA	Sastri, H. Karkala inscription of Bhairava II.
462		Der Mann in Brunnen

463	KUNTE, M.	Nirvana
464	KUPPUSWAM	I SASTRI, TS. Ed. Gadyacintamani de
		Vadibhasimha
465	KUPPUSWAM	I SASTRI, TS. Ed. Ksatracudamani de
		Vadibhasimha
466	LABHAYIJAY	A. Jainakavyasangraha
467		, E. L'Inde apres le Bouddha
468	LA MAZELIE	BE, Mis de. Essai sur l'evolution de la civi-
		lisation indienne
4 69	Property	Moines et ascetes indiens
470	Lanman, Ci	AR. Voir Sten, Konow.
471	LAOUENAN,	Fr. Du Brahmanisme et de ses rapports avec
	•	le Judaisme et le Christianisme
472	LASSEN, Ch	. Indische Alterthumskunde
473		Translation from Lossen's Alterthums
		kunde, par E. Rehatsek
474		Institutions linguae pracriticae
475	Lavanisang	raha
476	LAZARUS, J.	Trad. du Nannul
477		. G. Les civilisations de l'Inde
4 78	_	Les monuments de l'Inde
479	LEUMANN, I	E. Die alten Berichte von den Schismen der
	_	Jaina
480		Die Avasyaka-Erzahlungen
481		Ueber die Avacyaka-Literatur
482		Beziehungen der Jaina-Literatur zu andern
		Literaturkreisen Indiens
483	. 	Billige Jaina-Drucke
484		Dasavaikalika sutra und niryukti
485	-	Ed. Aupapatika Sutra
486		Die Hamburger und Oxforder Handschri-
		ften des Pancatantra
487	. - -	Jinabhadra's Jitakalpa, mit Auszugen aus
		Siddhasena's Curni
488		Die Legende von Citta und Sambhuta
		39

489	Liste von Abschriften und Auszugen aus der Jaina-Literatur
490	LEUMANN, E. Prabhacandra's Epitaph
491	- Recension: G. BUHLER, Leben des Jaina
	Monches
492	- Hemachandra
493	- R. Hoernle, Uvasagadasao
494	- MAX MULLER, India, what can
	it teach us?
495	- Zum siebenten Kapitel von Amitagati's Su-
	bhasitas a mdoha
496	— Strassburg Collection of Digambara Manus-
	cripts
497	- Zwei weitere Kalaka-Legenden
4 98	LEVI, Sylvain Djainisme
499	- Les donations religieuses des rois de
	Valabhi
500	 La science des religions et les religions
	de l'Inde
501	LEVY, I. Voir CHANTEPIE de la SAUSSAYE.
502	LIMAYA, H-V. Voir FLEET, J-F.
503	List of ancient monuments in Bengal
504	List of mss in Sanskrit College, Benares, 1897-1901
505	— — 1902
506	LORD, PB. Letter to Sir Alex. Johnston
507	LOVARINI, E. La novellina gainica del re Papabuddhi
508	LUDERS, H. Epigraphical Notes
509	— Kadaba plates of Prabhutavarsha
510	— Sravana-Belgola inscription of Irugapa
51 l	MACDONELL, A. History of Sanskrit Literature
512	MACKENZIE, C. Account of the Jains
518	MACKENZIE, SF. The temple at Halabid
514	- Sravana Belligola
515	MAHAMAHOPADHYAYA et P DURGAPRASADA. Ed. Candra-
	prabhacarita de
	Viranandin.

í

516	MAINDRON, M. L'art indien
517	MARTINENGO-CESARESCO. The jaina precept of non-killing
518	MAX MULLER. A history of ancient sanskrit Literature
519	- India, what can it teach us?
520	MEYER, JJ. Dandin's Dacakumaracaritam ubersetzt.
521	- Kavyasamgraha
522	MILES, W. Jainas of Gujerat and Marwar
52 3	MILLETT, M. Some modern Jain Sects
524	MILLOUE, L. de Conferences au Musee Guimet
525	- Essai sur la religion des Jains
526	- Etude sur le mythe de Vrisabha
527	- Histoire des religions de l'Inde
5 2 8	— Introduction au Catalogue du Musee
	Guimet
529	- et Senathi Raja, W. Essai sur le Jainisme
	par un Jain
530	MIRONOW, N. Die Dharmapariksa des Amitagati
531	Modern Jain Antipathy to Brahmans
532	MONIER WILLIAMS, M. Hinduism
533	- Religious Thought and Life in
	India
534	- Remarks on the Jains
535	Morris, R. Notes on some Pali and Jaina-Prakrit
	words
536	Muir, J. On the Era of Buddha and the Asoka Ins-
	criptions
537	- Original sanskrit texts
538	MUKHABJI, PC. An independent hindu view of buddhist
	Chronology
539	MUKHARJI, TN. Art-Manufactures of India
540	MULLER, E. Beitrage zur Grammatik des Jainaprakrit
541	MURRAY-AYNSLEY, G. M. The asiatic Symbolism
542	NANA DADAJI. Stavanasangraha
543	NANA KOLEKAR. Bhajana sadbodha malika
544	NANAK CAND Jinapujasangraha

545	NANAR CANDRAJI. Padarainavali
546	NANDARGIKAR, GR. Ed. Raghuvansa de Kalidasa
547	NARASIMHACHAR, R. Ed. Kavyavalokana de Nagavarman
548	NATHA LALUBHAI. Mahoti pujasangraha
549	Neill, A. Voir Fergusson, J.
550	NESFIELD, JC. et DEVIPRASADA. Catalogue of sk. mss.
	in Oudh
	et Rajendralala Mi
	TRA. List of sk. mes.
*	in Oudh, 1876
551	NEVILL, HR. District Gazetteers of the United Provin-
	ces of Agra and Oudh
552	New Jaina Temple at Palitana
553	NILMANI MUKHOFADHYAYA. Sahityaparicaya; an Intro-
	duction to Sanskrit Lite-
	rature
554	Notes on Inscriptions in Kacch
555	OLDENBERG, H. Buddha, sein Leben, seine Lehre, seine
	Gemeinde
556	— Le Buddha, sa vie, sa doctrine, sa com-
	munaute, trad. A. Foucher
557	— Recension: H. JACOBI, Kalpasutra
558	— Der vedische Kalender und das Alter
	des Veda
55 9	OLDHAM, CF. Serpent-Worship in India
560	OPPERT, G. Ed. Sakatayana's Grammar
5 61	- Lists of sk. mss. in Southern [India
562	ORELLI, C. von. Allgemeine Religionsgeschichte
563	OZHA, VG. The Somnathpattan Prasasti of Bhava
	Brihaspati
564	Padmaraja. Smrtisamgraha
565	— A Treatise on Jain Law and Usages
566	PARAB, KP. Ed. Hirasaubhagya de Devavimala
567	- Voir Durgaprasada, P.; Sastri, Bh., et
	SIVADATTA, P

568	PATHAR, KB.	Bhartrihari and Kumarila
569		The date of Mahavira's Nirvana, as
		determined in Saka 1175
570	-	The date of Trivikrama
571		Ed. Kavirajamargga de Nrpatunga
572	-	Explanation of term Palidhvaja
573		On the Jaina Poem Raghavapandaviya
574	_	Note on the early Kadamba Inscriptions
575	-	Nripatunga's Kavirajamarga
5 76		An Old Kanarese Inscription at Terdal
577		A Passage in the Jain Harivamsa
		relating to the Guptas
578		The position of Kumarila in Digambara
		Jaina Literature
579		Pujyapada and the Authorship of the
	_ ^	Jamendra Vyakarana
580	PAUTHIER, G.	Voir COLEBROOKE, HT.
581	PAVIE, Tb. La	legende de Padmani
582	PAVOLINI, PE	Bharatakadvatrimeika
583	- 10-11-11	Il compendio dei cinque elementi. Pan-
.584		catthiyasam-gahasuttam
-0-		Eroine brammaniche in un novelliere
58 5	~	giainico
F00		Meghadutiana
586		Sulla leggenda deì quattro Pratyeka-
587		buddha
588		La novella di Brahmadatta secondo la
900	_	versione di Hemacandra
589		La novella di Brahmadatta tradotta ed
eoe		annotata
590		Le novelline pracrîte di Mandiya e di
280	 -	Agaladatta
591		Una redazione pracrita della Pracnot-
ώ 81		tararatnamala
g n o	<u>i</u>	Gli scritti di Somaprabhacarya
592	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	was so one we wo notion produced yeursessess

593		77mc 20	i letana li ca	ainied ta	nonima
594					ca di Muni-
084	-		•		
		TT: a con a	vrusuri	Ji Ma	u la dev a
595	D				1882-83
596 597	PETERSON,	Second	neperi on	816, 71688. -	1883-84
598		Secona Third		• -	1884-86
599		Fourth			I886 - 92
600		Fifth			1892-95
_		Figth Sixth			1895-98
601			cont Ed	Unamit	ibhavap rapa n-
602	—				
603	Риплев. М	. The seven	Pagodas.		
604	Proof. Voir	Fergusson	ī. J.		
605	PISCHEL, R.	Der Akzen	t des Pra	krit	
606	PISCHEL, R.	Die decicab	das be i T ri	vikra m a	•••••
607		De gramm	aticis prac	riticis	
608					k der Prakrit-
000	•				•••••
609					rachen
610		Gutmann	und Gutre	ib in	Indien
611		et G. Bu	HLER. Ed	. $Desine$	amamala de
-					
612	POINTET, J.	Voir WARR	en, SJ.		
613	POPE, GU.	The Nalad	liyar		• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •
614	-				
615					ruvalluva
616	Prakaran-m	a l a		••••	
617					>>
618	Prarthanave	ılî	~		
619	PREMCHAND	Mody, K. I	Ed. Prasav	narati c	l'Umasvati
620					ıdhigam a
621	PRINSEP, J.	Essays on i	naian An	nquities.	Imagagini mud
622	•	Ivote on in	scriptions	at Ua task	layagiri and
		Knanagu	i in Cut	local Carre	near of Wastern
623					vey of Western
	India				• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •

624	Pulle, FL. La cartografia antica dell' India
625	 Catalogo dei manoscritti gianici di Firenze.
626	- Florentine Jaina manuscripts
627	- Della letteratura dei G'aina
628	- Les manuscrits de l'Extra-Siddhanta de
	Florence
629	— I novellieri gianici
630	- Originali indiani della novella Ariostea
	nel XXVIII canto del Furioso
631	— Un progenitore indiano del Bertoldo
632	- Satdarcanasamuccaya-tika
633	— Shatdarcanasamuccayasutram
634	Purushottama Kakal. Astotri sanatra mahotsava
63 5	RAJARAM BODAS, M. Historical Survey of Indian Logic
63 6	RAJENDRALALA MITRA. The Antiquities of Orissa
637	— Buddha Gaya
638	- Catalogue of sk. mss. of the
	Maharaja of Bikaner
639	— Notes on Sanskrit Inscriptions
	from Mathura
640	- Notice of sk. mss
641	- Report on sk. mss. 1874
642	- Sanskrit buddhist Literature of
	Nepal
643	- Voir Nesfield, JC.
644	RAMACANDRA DINANATHA. Ed. Prabandhacintamani de
	Merutunga
645	RAM DAS SEN. Voir KALIVAR VEDANTAVAGIS.
646	RAYMOND, X. Voir Dubois de Jancigny.
647	REA, A. Chalukyan Architecture
648	- Liste of ancient Monuments in the Madras
	Presidency
649	 Lìst of architectural and archæological remains
	in Goorg
650	- South indian buddhist Antiquities

651		see. Nouvelle Chine	geographie a	universelle. Indo
652			hæologic al re n	ains in Sindh.
653	RHYS DAVI	ids, T W.	Buddhism, its	s History and
654		. I		lian Buddhism.
655	-			r Schools in the
				Buddha
656	RICE, Lewis.	Bhadra Bahi	ı and Sravan	a Belgola
657		Catalogue of	sk. mss. in M	ysore and Coorg
658	-	Edrly History	y of Kannad	a Literature
659		Early Kanna	da Authors	
660	-	Ed. Karnatal	ca-Bhasha-Bh	ishana de Naga-
		varman	Dl woods	*************
661		Ed. Pampa	Dam dagma	,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,
662		Ed. Pampa	mmutica I	Coorg inscrip-
663	,	Epigraphia co	er maticus. 1.	tions
004			II.	Inscriptions at
664				Sravana Bel-
				gola
665			III-IV.	. Inscriptions
000				in the Mysore
				District
66 6		_	v.	Ins. Hassan
	•		_	District
667	-		VI.	Ins. Kadur
•			*****	District
668			A11-Á111	I. Ins. Shimoga
			1X.	District Ins. Bangalore
669			IA.	District
			X.	Ins. Kolar
670			∠ Σ.•	District
			XI.	Ins. Chitald-
671				roog District.
0.20		-	XII.	Ins. Tumkur
672				District

673	The Ganga Inscriptions in Coorg
674	— A Jaina-Vaishnava Compact
675	Jain Inscription at Sravana Belgola
676	— Mysore
677	- Mysore and Coorg
6 78	— Mysore inscription translated
679	Nagamangala copper plate Inscription
680	The Poet Pampa
681	A Rashtrakuta Grant from Mysore
6 82	- Voir Burgess, J.
688	RICKHAH DASS JANI. Doctrines of Jainism
684	RIEU, Ch. Voir BOHTLINGK, O
685	ROCKHILL, WW. Life of the Buddha
686	ROUSSELET, L. L'Inde des Rajahs
687	ROWLAND, J Mount Abu
688	Sajaydmala
6 89	SAMINADEIVA. Ed. Sindomani
690	Samskrta-puja patha
691	Sanatana-Jainagran: ha-mala
692	SANKALCAND MAHASUKHARAMA. Dilkus stavanvali
693	- Pujusangraha
694	SASTRI, Bh. et KP. PARAB Ed. Subhasitaratnasamdoha
4	d'Amitagati
695	Satrunjaya tirthamala
696	SCHMIDT, R. The Kavyamala Edition of Amitagati's
*	Subhasitasamdoha
697	et. J. HERTEL. Amitagati's Subhasitasam-
***	doha
698	SCHRADER, FO. Uber den Stand der indischen Philo-
	sophie zur Zeit Mahaviras und
	Buddhas
699	SCHROEDER, L von. Indiens Literature und Cultur
700	Schubring, W. Das Kalpa-sutra
701	SENABI, E. Les inscriptions de Piyadasi
702	- The inscriptions of Piyadasi, trad GA.
	GRIERSON

703	SENATHI RAI	IA, W. Voir MILLOUE, L. de.
704	SESHAGIRI S.	ASTRI. Report on sk. and tamil mss. 1893-94
705		— 189/6-97
706	SEWELL, R.	List of inscriptions and sketch of the Dyna-
*	,	sties of Southern Indid
707	 .	List of the antiquarian remain in the
		Presidency of Madras
708	SHANKAR PAR	NDURANG PANDIT. Ed. Gaudavaho de Vakpati
709		Ed. Kumarpalacharita de
		Hemacandra
710	SHERRING. A	. Hindu tribes and castes
711	SINCLAIR. W.	.F Notes on Castes in the Dekhan
712		AHAR. Jaina stavanavali
713		P. et KP. PARAB. Abhidhana-Samgraha
714		— Ed. Balabharata d'Amar-
		acandra
715		— Dvisandhana de Dha-
		nanjaya
716		- Kavyanusana de
		Hemcandra
717		- Kavyanusasana de
		Vagbhata
718		— — Neminirvana de
		Vagbhata
719		 — Vagbhatalamkara — Yasaxtilaka de
720		Somadeva
HA1	G1-handanaux	ha
721		Iandbook of sanskrit Literature
722		
72 3		. Voir Fuhrer, A.
724	SMITH, VA.	The early History of India
725		The Jain Stupa and other Antiquities of
-40		Mathura
72 6		of Indian History
		A * 1 ACCOUNTS TT 00001 A

7,27	SMITH, VA. Notes on the Bhars and other early Inna-
-0 0	bitants of Bundelkhand
7,28;	- Vaisali
729	- et FC. Black. Observations on some Chandel Antiquities
730	SMYTH, W.: Voir WEBER, A.
731	SPENCE, HARDY, R Eastern Monachism
732	STARK, A. Voir HOERNLE, R.
733	Statistical Atlas of India
734	Stefani, L. de La novellina jainica di Madiravati
735	- Nota alla novellina di Madirvati
736	STEIN, A. Notes on an archæological tour in South
	Bihar and Hazaribagh
737	STEINTHAL, P. Specimen der Nayadhammakaha
73 8	STEN KONOW. Maharashtri and Marathi
738	- Recension: R. PISCHEL, Grammatik der
	Prakrit Sprachen
739	et ChR. LANMAN. Ed. Karpura-manjari
	de Rajasekhara
740	STEVENSON, J. On the Intermixture of Buddhism with
¢	Brahmanism
741	— Some Remarks on Relation between the
	Jain and Brahmanical systems of
	Geography
742	Tithyas or Tirthakas
743	- Trad. Kalpa Sutra and Nava Tatva
744	Stirling, A. An Account of Orissa Proper, or Cuttack.
745	Suali, L. Ed. Suddarsanasamuccaya
746	— Il Lokatattranirnaya di Haribhadra
747	— I sistemi filosofici nell India alla fine
D 40	del secolo XIV
	SULTAN SINGH JAINI. Account of the Jains in India
	SYAMSUNDAR DAS. Report on hindi ms. 1900
750,	
191	TAMODARAMPILLEI. Ed. Sulamaní

752	TAWNEY, CH. A Folklore Parallel
753	- Kathakoca or Treasury of stories
754	- Trad. Prabandhacintamani de Meru-
	sunga
755	TAYLOR, Col. Voir FERGUSSON, J.
756	TAYLOR, W. Catalogue of mss. College Fort Saint George
757	TELANG, KT. Subandhu and Kumarila
758	- Three Kadamba Copperplates
759	THIBAUT, G. Astronomie, Astrologie und Mathematik
760	— On the Suryaprajnapti
761	THOMAS, E. The early Faith of Asoka
762	- Jainism
768	THORNTON, D. Parsi, Jaina, and Sikh
764	THORNTON, E. Guzetteer of the East-India Company
765	Tod, J. Annals and Antiquities of Rajast'han
766	- Comments on an Inscription at Madhucarghar
767	- Travels in Western India
768	Umetanam dhaliyam
769	Varanasi-vidyamandîra-pustakanam sucipatram
770	VAVIKAR, YS. Some Remarks on the Svastika
771	VENKAYA, V. Jaina rock-inscriptions at Panchapand-
	avamalai
772	VIDYABHUSANA, SC. The Saraka Caste
773	VINSON, J. Un episode du poeme epique Sindamani
774	- La grande epopee de l'Inde dravidienne, le
	Sindamani
775	— Legende tamoule relative a l'auteur des Kur'al
776	- Legendes bouddhistes et d jainas
777	 Litterature tamoule ancience; le Sindamani
778	- le Sulamani
779	- Manuel de la langue tamcule
780	- La religion des J'aina
781	- Les religions actuelles
782	WADDELL, LA. Discovery of the exact site of Pataliputra

788	Witnesten	MJ. Archæological notes
784		J. Ed. Nirayavaliyasuttam
785	WARREN, C.	Godsdienstige en wijsgeerige Begrip-
100		pen der Jaina's
786		Les idees philosophiques et religieuses
100		des Jainas, trad J. Pointet
4		-
7 87	WARREN, W	F. Problems still unsolved in Indo-Aryan
	_	Cosmology
788	WATHEN, W	7H. Ancient Inscriptions
789		Ten ancient Inscriptions
790		Rajputana District Gazetteers
791	WEBER, A.	Ahalya, ' und Verwandtes
792		Akademische Vorlesungen uber indische Lite-
		raturgeschichte
793		Ueber Bhuvanapala's Commentar zu Hala's
	•	Sapta catakam
794	*****	Ueber das Compakacreshtikathanka
795		Ueber das Catrunjaya Mahatmyam
796		The Satrunjaya Mahatmyam, trad. J. Bur-
		GESS
797		Chronologische Notie
798	tuestin.	Ueber einige Lalenburger Stresche
799	***	Uber ein Fragment der Bhagavati
800	-	Ueber die heiligen Schriften der Jaina
801		Sacred Literature of the Jains, trad. W.
		Smyth
802		Zur indischen Religionsgeschichte
80 3	Weber, A.	History of religion in India, trad. GA.
		GRIERSON
804		Ueber den Kupakshakaucikaditya des Dharma-
		sagara
805		Pancadandachattraprabandha
806		Ueber die Pracnottararatnamala
807		Uber die Samyaktvakaumudi
808		Das Saptdcatakam des Hala

809	- Ueber die Sinhasanadvatrincika
810	— Ueber die Suryaprajnapti
811	— Uber das Uttamacaritrakathanakam
812	— Verzeichniss der Sanskrit und Prakri
813	— Handschriften der K. Bibliothek zu Berlin
814	WHEELER, JT. History of India
815	WHITWORTH, GC. Anglo-indiam Dictionary
816	WICKREMASINGHE. Z. Index of the Prakrit Words in Pischel's Grammatik
817	WILSON, HH. Dictionary sanscrit and english
818	Essays and Lectures on the religion of
	the H indus
819	— The Mackenzie Collection
820	— Sanscrit Inscriptions at Abu
821	Sketch on the religious sects of the Hindu
822	— Two Lectures on the religious practices
	and opinions of the Hindus
823	WILSON, J. Memoir on the Cave-Temples and Monasteries
	of Western Indig
824	Windisch, E. Hemacandra's Yogacastra
825	— Ueber den sprachlichen Charakter des Pal
826	— Voir Eggeling, J.
827	, , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,
828	Wodehouse, Ch. Sravaka Temple at Bauthli
829 .	Wood, J. Voir Barth, A.
8 30	Wurm, P Geschchichte der indischen Religion
831	YAJNIK, JU. Mount Abu and the Jain Temples of
,	$m{\it Dailwada}$
832	ZACHARIE, Th. Ed. Anekarthasamgraha de Hemacandre
833	— Epilegomena zu der Ausgabe des Ane
	karthas amgraha
834	Die indischen Worterbucher
835	— Das Jainendravyakaranam
836	- Die Nachtrage zu dem synonymisch
	Worterbuch des Hemacandra

Dr. A. Guerinot, Repertoire D. Epigraphie Jaina.

डॉ. ॲ. गेरीनो कृत. ॲपीग्राफी जैन. (जैन शिलालेखो.,) आ ग्रंथमां इस्वी. १८९५ सुधीमां कया कया स्थळना केटला शिला-लेखो. कया कया पुस्तकोमां छपाइ गया छे; तथा तेना अंग्रजी— विगेरे भाषाओमां तरजुमा थया छे. तेनी संपूर्ण नोंध लीधी छे तेमांथी मात्र स्थळ अने लेख संख्या नीचे ग्रुजब छे. (जुओ नं.)

संख्या

स्थळ

- १ अबाद्धवाडी (Abalvadi)
- २ आब्लुर Ablur
- १७ आबु Abu
 - १ आदुर Adur
 - 3 आइहील Aihole
- ६ अजमेर
- १ अलहल्ली Alahalli
- १ अलसन्द्रा Alesandra
- १ अल्तेम Altem
- १ अमरापुरा (अमरपुरः)
- १ अनवेरी Anaveri
- २ अनवालु Anevalu
- ९ अंगाडी Angadi
- ३ अणहीलवास (पाटणः)
- १ अंजनगिरि
- १ अरसकेरे Arsikere
- १ बदामी Badami
- १ बहादूरपुर
- १ बहुल हाँकल Bail-Hongal

संख्या

स्थळ

- ६ बाला गांव (बेल गांव) Balagamve
- १ बालेहोनुर Balehonur
- १ बामणी Bamani
- ६ बन्दालीक Fandalike
- १ बंदर Bandur
- २ बाङ्कापुर Bankapur
- १ बरनगर
- १ बसवानपुर Basavanapur
- १ बास्टी Basti
- १ बास्टीपुरा Bastipura
- ३ बावागंज Bawagang
- १ बेपुर Begur
- १ वेका Bekka
- १ बेलावटी Belavatte
- १ बेलगांम Belguam
- १ बेलूर Belur
- १ बेलुर Beluru
- १ बेरामवाडी Berambadi
- २ भीलरी Bhilri

संख्या स्थळ १ बीदार Bidre १ बीदरपुर Bidarpur २ बीजोली Bijoli १ बीलीडर १ बोगाडी Bogadi १ बोम्मणहल्ली Bommaan. halli १ ड्यान Byana १ खंभात Cambay १ चर्तननाथ Chaitnath १ बाल्य Chalya १ चामराजनगर Chamrajnagar १ चात्रदहल्ली Chatradahalli १ चीद्रवल्ली Chidarvalli ध चीतोड (राजपताना.) २ दणसाळ Danasali १ देवनगर Davanagare १ देल्ही Delhi 3 तेवनढ Deogarh 3 देवनिरि Devagiri १ देवालपुर Devalpur १ देवरहरूली Devarhalli १ धमेपुर १ दोवागुर Didaguru

१ दोलमाल Dilmal १ Dodda-Kanaguru १ दोहद Dohad २ दुवर्डंड Dubkand

संग	च्या स्थळ
Į	प्रचीगनहरुली Echigana- halli
	इलेबाला Elevala
Ş	र्छुरा Elura
₹	गेडी Gedi
ह	गिरनार (पवत)
ş	गोगा Gogga
Ł	गोवरधनगिरि Govar-
	dhangiri
Ą	गुबी Gubbi
1	गुडीगेरे Gudigere
Ł	गुण्डलुपेट Gundlupet
	गषाळीअर
१	हडीकल्लु Haddikallu
Ş	हागरहल्ली Hagalahalli
१	हालेबेलगोला Hale-Bel-
	gola
	हालेबीह Halebid
-	हालेसोराव [Hole-Sorab
	हालसी Halsi
Ę	हणसोज (चीका) Hana-
_	soge
	igs Hanturu
_	हराकर Harakere
	Tive Harave
	हन्ता Hanta
	हरून Hattana
	Earel Hebbande
	हेमी Heggere
3	हेमचती Hemyati

संख्या स्यळ ३ हेराग Heragu ३ हेरकेर Herekere २६ हीरे-अवाली Hire-Avali २ हीरेहल्ली Hirehalli ३ होगेकर Hogekere २ होलेलकर Holalkere १ होनेनाहल्ली Honnenshalli १ होत्र Honnur १ होनवड Honvad १ होसाहोलालु Hosaholalu १ हल्लीगर Hulligere १ हुल्लुहल्ली Hulluhalli १९ हुम्बा Humcha (२२) १ हुनासिकट्टी Hunasikatti १ इसर Isure १ आबागल्ल Javagallu २ जेससमेर १ कबाली Kabli १ कटन Kadaba ध कहकोल Kadkol १ कडवन्ति Kadvanti १ कद्वर Kadur १ कहउन Kahaun १ कर्दाल Kaidal १ कालसा Kalasa १ कळभाची Kalbhavi १ कलहोली Kalholi १ कल्लाबास्ति Kallabasti १ कल्छुरगुरा Kallurgudda

संख्या स्थळ Kaluchum-१ कालुचम्बर barru १ कालुगमालाइ Kaluguma-१ कल्य Kalya ३ कम्बाद्यल्डी Kambadahalli ३ कानवे Kanave १ का॰मा Kangra २ कन्यकोट Kanthkot २ करदञ्ज Karadala ३ कर्केट Karkala १ कहनन्द्रा Karuganda १ कसलगर Kasalagare १ केळासूर Kelasuru ११ बज़रा Khajuraho १ किरशाम Kirgram २ कोल्हपुर Kolapur १ कोलूर Kolur २ कोन्त्र Konnur २ कोनुर Konur १ कोष्पा Koppa १ कोडार Kothara १ कलिंगिर Kulgeri १ कम्बरहरूकी Kumbarahalli १ कुम्बेन इल्ली Kumbenhalli १ क्रमही Kumsi

४ कृष्यत्व Kuppaturu

रघळ

802

संख्या

संख्या स्थल २ क्येतनहल्ली Kyatanahalli -५ लक्ष्मेश्वर Lakshmeswar १ लोन्डेस Londres १ मादलपुर Madalpur १ मदने Madane १ मेदनुर Madanur १ महगिरि Maddagiri १ मद्रास Madras ६ मगडी (बोक्का) Magadi २ मगलुर (चीक) Magalur ८ महोबा Mahoba १ मलालकर 'Malalakare ११ मलेयर Maleyur र मन्डावी Mandavi र मान्त Manue १ मरकुली Markuli २ मसार Masar ८५ मथ्रा Mathura 3 मत्तावर Mattavara १ मेलीग Melige १ मरकारा Markara १ मुद्दहल्ली Mudahali मुगुलुर Mugular १ मलगुन्ड Malgund ६ मुखर Mullur १ मृतिच Munich १ मुटसंद्रा Mutsandra

१ मुट्टति Muttatti १ (मथुराः) मटा

44.	७५। ५५०
, २	नादोस्र Nadol
	नागदा Nagada
१	नाखुर Nakhur
\$	नल्लुर Nallur
	नन्दी Nandi
	नारलाइ Naralai
	नरसीपुर Narasipur
	नसारजी Nesargi
	नीदीगी Nidigi
?	नीदुगल्लु (पर्वतः) Ni-
	dugallu
3	नीतुरु Nitturee
	नोना मंगल Nonamaugala
१	नवसारी Nosari,
	पमोस Pabhosa
	पालगपुर
3	पांच पांन्डवामाला Pan-
_	ehapandareamalai
१	पंडितराहल्ली Pandita-
	rahalli
	पटणा Patana
	पेगुह Peggur
	पुराली Purale
	राइवाग Raibag
	राजगिर Raggir
۲.	रामनगर (औध) Ram
	nagar
8	राणपुर Raupur
	रावणदुर Ravandur
3	रोहो Roho

संख्या

स्थळ

- १ सालिग्राम Saligram
- १ सन्डा Sanda
- १ सारागुर Saraguru
- ३ सोरोत्रा Sarotra
- ७७ दोबुजय (पर्वत.)
- ५ सुन्दत्ती Saundatti
- १ सम्बनुर Sembanur
- १ सोग्गांच Siagamybe
- १ सीका Sikra
- २ सीन्डिगेरी Sindigare
- १ शिरोही Sirohi
- ६ शिवगंज (पर्वतः) Sivagangce
- ध शियालबेट Siyal-bet
- ध सोमवार Somavara
- १ सोराब Sorab
- ८८ श्रवणबेलगोला Sravana belgola
 - १ सुडी Sudi
 - २ सुहनीय Sueaniya
 - १ सुकाद्द Sukadare
 - १ सन्ध (पर्वत) Sundha
 - १ तगदुर Tagaduru
 - १ तलगुन्ड Palgund

संख्या स्थळ

- १ तारंगा Taraega
- १ टट्टेकर Tattekere
- ६ तवनन्दी Tavanandi
- ३ तेरदल Terdal
- १ तेवरतेष्पा Teverteppa
 - १ टीप्पुर Tippur
- ५ तीरुमलाइ Terumalai
- र तीरुप्य रुत्तिककुरणु Tirupparutkkunru
- १ टोन्क Tonk
- ३ उदयगिरि
- १ उदयगिरि
- ६ उदरी Udri
- १ बाक्कलगेरे Vakkalagere
- ध वालीमलाइ Valemalai
- १ वहण Verunae
- २ वेनुर Venur
- १ विजयनगर Vig
- १ बुद्री Vudri
- १ यरूलाडहल्ली Yalladahalli
- १ योदागुर Yidagurv
- १ योदुवानी Yiduvani

फ्रेन्चविद्वान डॉ. गेरीनोप पोतानी बीबलीओ ब्रा-फीमां लीधेला ग्रंथोनुं ककावारी खीष्ट.

अक्रुंकस्तोत्र अकलंकाष्ट्रक अजापुत्र कथा अजित तीर्थकरपुरण अजितशान्तिस्तव अजितशान्तिस्तोत्र. अज्ञातितिमिरभास्कर अज्ञान चरित्र अज्ञान सुंदरी संबंध अंजना सतीनो रास. अढार दुषण निवारक अहार पापस्थानकनी सज्जाय अनुयोगदारमृत (अनुयोगः द्वारसूत्र) अनुकम्पारी **अनुत्तरोववाइदसाओ** (अनुत्तरोपपातिक दशा. अध्यात्मकलपद्रम अध्यात्म चितापणि अध्यात्म मत परीक्षा अध्यात्मसार

अध्यात्मसार-प्रश्लोतर अध्यात्मोपनिषद् (योगञ्चास) अध्याष्ट्रक स्तोत्र अनंतना कथे अनुत्तरोपपातिक दशा अनुभूत सिद्धसार अनुयोगद्वार सुत्र अछेक शास्त्र सार सम्बद्ध अनेकार्थ कैरवाकर कौमदि अनेकार्थ संग्रह अंतकृत दशा अंतगढ दशाओ (अंतकृतदशा) अंतर कथा संग्रह अन्ययोगव्यबद्धेद (वीतराग स्तुति) अन्योक्ति प्रकावली अपराजित स्वर शतक अभिधान चितामणि अभिशेक संधि अमम स्वामि चरित्र अमोघ वृत्ति

अयदन्ति सुकामारनां तेर दाळीयां अरिइंत स्तुति संप्रह अर्थ रत्नावळी अर्हन्नीति अछंकार चुढामणि अछंकार तिलक अष्ट माभ्रत अष्ट लक्षी-(अर्थ रत्नावळी) अष्टर्गतिलक अष्ट सती (देवागमस्तोत्र न्यास) अष्ट सहस्र टिप्पणी अष्ट सहस्रो अष्ट सहस्रो विवरण अष्टापदादि महोत्सव वर्णन अस्पदशद्ध नव स्तवी आउरपच्चरुखाण (भातुर प्रत्याख्यान्) अख्या मणि कोष आगमसंग्रह आगम सार भागम सारोद्धार आचार छोत आचार पदीप आचार सार

आचार सूत्र आचारांग सूत्र आचारोपदेश आदिश्वरनो श्लोको आतुरप्रत्याख्यान आत्म ख्याति आत्म निदा आत्मनिया अष्ट्रक आत्म प्रबोध आत्मबोब अने जीवनी उत्पत्ति आत्मातु शासन आत्मारांमजी आनंदविजयजी आदित्य कयाबदी (वस्त्री) आदिनाथ स्त्रति आदि प्रराण आनंद सुंदर आप्त परीक्षा आप्त विपांसा आप्तिमिमांसार्छकार सहस्री) आयारंगम्रत (आचारांगम्) आयार विहि आरंभ सिद्धि आराधना कथा कोष आरामनंदन कथा

आरोग्यनय सिद्धिः आर्य विन्दु सद्धर्मनी त्रत्तदर्पण आर्यस्त सहस्रोक आलाप पद्धति आछोचना पाठ आवश्यक सूत्र. आवश्यक नियुक्ति आश्चर्य योगमाला लघुरत्ति **उक्**त्युनुशासन उणादि गण सूत्र वृत्ति उणादि नाममाला उत्तम चरित्र कथानक उत्तम शिखर पुराण उत्तराध्ययन (सूत्र) उत्तर पुराण उत्तराध्यन बृहद्दीत कथा **उत्तराध्यन**सूत्र खदयराज देवरापद उपदेश कंदली उपदेश चिन्तामणि **चपदेशपद** उपदेश मसाद उपदेशमाळा-,, दृत्ति 17

उपदेशरत्नाकर उपदेशरसाळ उपदेश शत-(महापुरुषचरित्) उपदेश सिद्धान्त रत्नमाला उपमिति भवप्रपंचा कथा वृत्तिकःरुपा 5) उपिति भववपंचा सारोद्धार उपमितिभव प्रपंचा नाम सम्रुचय उपमितिभवप्रपंचवृत्तिरूप उपसर्गपाठ **उपसर्गहर**स्तोत्र उपाशकदशा उपासकाचार उल्लासिकम स्तोत्र उन्नासगद्शाओ उपासकद्शा ऋषभपंचाशिका ऋषिदत चरित्र ऋषिमंडलटीका ऋषि मंडल पकरण सुत्र; स्तोत्र एकाक्षर नाम मालीका एकी भाव भाषा एकी भाव स्तोत्र ओघ निर्यक्तिः

ओवाइय=औपपत्तिका सूत्र ओप पातिकसूत्र कथाकोष कथाकोष (ग्रमशीलगणि) (पंचास्ति प्रबंघ संबंध कथा महोदधि कथा रत्नकोश कथा रत्नाकर कथा संग्रह कपल जीलतर्फ कम्मययडि (कर्म प्रकृति करुणा व ज्रायुध्ध नाटक करणाटक भाषा भूषण शद्धानुशासन कर्परम कर=सभाषितकोश कपूर प्रकरण क्रप्रेकास्ट क्रमेग्रांथ कर्षग्रंथी प्रथमाविचार कर्वनिर्जरा कर्म प्रकृति क्रपेबतिसी

कर्षे विपाक कर्भ स्तव कर्प स्तव टीका कर्म इरा स्तमियनीवि Karmaharastamiyanomhi कल्पिकरणाविल. करूप कुजडनोम्पि Kalpakujadanompi करुप चूर्णि कल्पद्रम कलिका करपपदीपिका कर्वमंजरी ब.स्पलता कल्पस्रत्र करपसुत्रस्यव्याख्या कल्पान्तर बाकानि कल्याण कारक कल्याण मंदिर स्तीत्र कविता रहस्य कविराज मार्ग कवि शिक्षा ,, दृत्ति

कान्नढ चोपाइ कापन कथे Kamanakathe कारिका वृत्ति कार्त्तिकेयानु मकाञ्च कालकाचार्य कयानक काळ सत्तरी काळ सरुव कान्यकरप छता काव्य प्रकाश काच्य प्रकाश संकेत काव्य संग्रह काव्यानुशासन काव्यानुशासनवृत्ति (अलंकार तिलक) काव्य अंबुधि काव्यावलोकन काशिका विवरण पंचीकागद्वलि कोंशीकन्याय सटीक क्रपक्ष कौशिकादित्य क्रवेर प्रराण क्रपारपाक चरित्र

क्रमारपालप्रतिबोध महाकाच्य कुमारपाल शबंध कुमारपालराजा नोरास. कुमारविवाहप्रशस्ति काव्य क्र्राल (Kural) कुलक दृति कुम्मा पुत्र चरित्र कौम्रदि कथेंड (Kaumudikathai) क्रिया करपलता पुस्तफ क्रियार**स्नसम्र**श्चय क्रियास्थानक विवार क्षत्र चुहामणि क्षेत्रं संग्रह क्षेत्र समास गच्छाचार पकीणक सुत्र गणकक्रमद कौम्रदि गणधर सार्धशतक गणित शास्त्र गणितसार संग्रह गद्य चिन्ताप्रणि

गंभीर विजय गमनीकासूत्रहत्ति गाथाकोश गायासहस्री गीरनार तीर्थोद्धारमहिमा गुणमाङा गुणरत्न महोदेधि गुणवर्मा चरित्र घुणस्थानकर्मारोह गुणस्थान पकरण गुरुदत्त चरित्र गुरुपरिपाटी गुरु स्तुति गुर्वावलीसूत्र गुर्वावली (मुनि सुंदर) गुहुली संग्रह गोहीपार्श्वनाथजीनां ढालीयां गोतम प्रच्छा गौतमक्रलकृत्रचि गोतपस्तव गोमठसार गोरखमच्छेन्द्रचरित्र गौतमीय प्रकाश गौतमीय महाकाव्य (प्रह्माव मकाश)-(भावना-

दीपक) ग्रहशान्ति**स्तव** चउशरण (चतु: शरणपकरण) चरितावछी चारित्रसार चतुःशरणप्रकिण चतुर्विशजिनेन्द्र स्तवनावछी चतुर्विश्वति जिनस्तव चतुर्विति जिन स्तवन चतुर्विश्वति जिनस्तुति चतुर्विश्वतिपुराण चन्द पन्नित्त (चन्द्रभन्नित्ति) चन्द्र दर्शन नोम्पि चन्द्र मज्ञित चन्द्र प्रभ चरित्र चन्द्र प्रम जिनगद्यमालिका चन्द्र प्रभ पुराण चन्द्र राजानो रास चन्द्र राजा अने ग्रुणावली रा-णीना कागळ चम्पकश्रेष्टिक्यानक चंपु जीवन धारा चामुण्डरायपुराण चार प्रत्येक बुधरास

चार स्ताननो संग्रह चित्रसेन पद्मावती चरित्र चिन्तामणि चिन्तामणि टिप्पणी चेतन कर्म चरित्र चैत्यवंदनस्रत्र चैत्यवंदनाकुछबृत्ति चोबीस जिन स्तुति चोवीसीनाम स्तवन छन्दोनुशासन **छन्दोम्बुधि** छन्द रत्नावली छ भाइनोरास छह ढाला छेको कि विचार लीला जगड चरित जगतसंदर योगमाला जन्मपत्रिपद्धत्तिः जन्मपत्रि छच्छन प्रकार जमालीसूत्र । जम्बुदीवपन्नति (जम्बुद्दीप प्रज्ञिप्त) जम्बुपुच्छ चोपाइ जम्बु चरित्र जम्बुद्दीप मृज्ञप्ति जम्बुद्दीप समास

जम्बुदीप संग्रहणी जयतिह्यण स्तोत्र जय जयन्त विजय जयन्तकाच्य जयानंन्द केवलीना रास जरुपकरुपलता जिन कथा जिनचतुर्विशिती (भूपाछ स्तोत्र जिनचतुर्विशतिटीका जिनदत्तरायचरित्र जिनधर्म जिन पींजर स्तोत्र जिनपूजा महोदधी जिन मुनि तन्य जिन**य**जकल्प जिनरास जिनवचनामृतशर्घी जिनशतक जिनसहस्रस्तोत्र (सहस्र-नाम पंत्र) जिन संहिता जिन सिद्धागम जिन स्तुति जिन स्तवन जिनागम

जिनेन्द्रमतदर्पण जितकरप जितकरूप चूर्णि जीवक चिन्तामणि जिनेन्द्रमत इपेण जीवंधर स्वामिचरित्र जीवंघर प्रराण जीव विचार जीव समास प्रकरण जीव हिताथें जीवाभिगमसूत्र जिनकथा द्वावींशति जीन काव्य प्रकाश जीन कोहीनुर संग्रह जीनगुण प्रबोधरतन चिन्तामणी जैन कदंब जैन गणित जैन ज्ञानप्रकाश जैनतस्व शोधक जैन तस्वादर्श ग्रंथ जैन तर्क भाषा जैन तीर्थेकर स्तवन पंजरी जैन तीर्घावली प्रवास जैन देवता पूजाविधि . जैन देवता स्तोत्र जैन धर्म तस्व संग्रह

जैन धर्म प्रदाञ जैन धर्म पाचीन इतिहास जैनधर्भवीर संस्तवन जैनधर्मामृतसार जैनधर्मावरुंबिता जैनधर्म पाचीन इतिहास जैनधर्मावास स्तवन जैनधर्पविषयक प्रश्लोत्तर जैन नित्य पाठसंग्रह जैन पूजा विधान जैन पूजा होम जैन प्रभाकर् जैन पायमीक शिक्षण जैन बाछ गुट्टीका जैन बाल पाठमाला जैन भजन संग्रह जैन मतवृक्ष जैन छप्तविधि जैन छघुसार संग्रह जैन बाछज्ञान सभा जैन बीरुदावली जैनमतनी परीक्षानो प्रत्युत्तर जैनमत विद्यय जैनमत सारसंग्रह Jainrabastiyadhayalad. haadu

जैन राजी जैन चर्णाश्रद जैन व्रत शिक्षा पत्रि जैन 'शतक जैन श्लोकवार्त्तिक जैन संगीत रागमाळा जैन स्तोत्र जैन स्तोत्र रत्नाकर जैनस्तोत्र संग्रह जैनीप्रतिपाप्रतिष्ठा विधि जिनेन्द्र धातुपाठ जैनव्रत शिक्षापत्रि जैनेन्द्रयज्ञ विधि जैनेन्द्र व्याकरण जैन गति ज्ञाता धर्मकथा ज्ञान प्रदीपक जान सार ज्ञान स्रयोदय ज्ञानार्शव ज्ञानावली ज्योतिष्य सारसंग्रह ज्योतिष्य सारोद्धार थाण= (स्थाणाङ्ग सूत्र) थाणाङ्गसुत्तरिसय

तस्व प्रकाशं तस्व रत्नदिपीका तस्वार्थे दिपीका तस्वार्थ वार्तिक तस्वार्थसार तस्वार्थ सारदिपीका तत्त्वार्थाधिगम सुत्र तंदुल वैयालिय तपविधि तपागच्छ पट्टावछी (गुर्वावछी-सुत्र तपोतमत क्रइण तक तरंगिणि तर्क फक्कीका तिजय पहुत्त स्तोत्र Tirunurrantadi तिरुवस्छवर चरित्र तिलक पंजरी तिलय सुंदरी स्यणचूडकहा तीर्थ कल्प तीर्थर्वदन स्तोत्र तीर्थेश पूजा संधि तीर्थेशस्तुति (चतुर्विश्वति जिन-स्त्रति) तेरापंथीकृत ग्रंथ संग्रह

तोलका पीयाम (Tolokappiyam) त्रिपंचाशत क्रीया कथा त्रिपुर दहन संगत्य त्रिभ्रुवन दीपक प्रबंध त्रिलोक शतक त्रिछोकसार त्रिवर्णाचार त्रिविक्रमदेव त्रिविक्रम व्याकरण वृत्ति (प्रा-कृत शब्दानुशासन) त्रिषष्टिपुराण स्रक्षण (महापुराण) त्रिश्रष्टिशलाका पुरुष चरित त्रिषष्ट स्मृति त्रैलोक्य दिपीका (संग्रहणी) त्रैलोक्य रक्षामणि शतक स्थुलीभद्रनी शियलवेल दंडक दमयती कथा दृत्ति दर्शन ग्रुद्धि पकरण द्श द्रष्टान्त कथा दर्शन सार द्श लक्षणी पूजा दश्रसन्यादि पूजासंग्रह दशवैकालीक सूत्र द्शाश्रुत स्कंध सूत्र

दश वैयाळीय (दशवैकाळीक सूत्र) द्शाओ द्शाश्चतस्केष सूत्र दानकल्पद्रुप दानादिकुलक दायभाग दिगंबरद्शेन दिहीवाय द्रष्टिवाद दीवाकर दीवाकरम् दीप संग्रह दीपाछीकरप दुरितहरस्तोत्र दुर्गाप्रबोदव्याख्या दुर्वादिग्रुख चपेटीका (संवेगी हित्रशिक्षा द्रष्टाष्ट्रक स्तोत्रं द्रष्टिवाद देवग्ररुधर्मनी ओळखाण देवचंद्र प्रभा स्तोत्र देवागमस्तोत्र (आप्तमिमांसा) देवांगमस्तोत्र न्यास देशीनाममाला देशी शद्धसंग्रह देशीशद्ध संग्रह देवज्ञदीपकटीका द्रव्यगुण पर्यायनो रास

द्रव्य संग्रह द्रव्यानुयोग तर्केणा द्रात्रिशिका द्वादशभावना द्वादशवत द्वादशासुप्रेक्षा द्विजवंदन चपेटीका द्विसंघानकाव्य द्राश्रयकाव्य धनंजयकोश धनद कथा धनपाल चरित्र धनासाछीभद्र धन्ना साली भद्रनो रास. धन्यशालीचरित्र धम्मिल कुमारनीरास धर्मेतत्वभास्कर् धर्भदत्तचरित्र फर्म परिक्षा धर्मपरीक्षानी रास धर्म परीक्षे धर्मरत्नाकर धर्मविधि धर्पेबिद धमेबिदुष्टत्ति

धर्मश्रमभ्युदय धर्मसारमभ्यु**दय** धर्मसंग्रह धर्माभ्युदय महाकाव्य धर्मामृतकथा धर्मामृतपुराण धर्मोत्तरवृत्ति धर्मोपदेशमाला धात तरंगिणी धातु पाठ धातु रत्नाकर. (क्रीया कल्प-लता) नंदीसूत्त कहा नंदी सूत्र नंदयाध्यन टीका नणुक नमस्कार पंत्र नमस्कार स्तव-नय कर्णिका नय चक्र टीका नय चक्रसार नय विवरण नल दवदंतीनोरास नलायन (क्रुबेरपुराण) नवतस्व

नवतत्व चोपाड नवनिधी भंड।रदनोम्पी नवपदमकरण नवपदार्थ-तस्त्रवबोध नवपदार्थना तेरेद्वार नवीननंदीश्वर महोत्सव नव्य बृहत क्षेत्र समास नाग कुमार कथा नाग क्रमार चरित्र नाग कुमार पंचमीय नोम्पी नागर पंचमी नाटकसमयसार कळश नाडी परीक्षा नानार्थ रत्नाकर नाममाला नामपावा शेष (शेष संग्रह) नाम सारोद्धार नायपम्य कहा (ज्ञाताधमकथा) नारचंद्र नालढीयार निघंद नियंदु शेष (शेषसंप्रह्) निघंदु समय नियम सार **निरयावछीयस्त्र**

निर्येक्ति भाष्य निषिथ सूत्र निविधाध्यन (निविधसूत्र) निति कान्ड निति काव्यामृत निति व्याक्यामृत नितिसार नेमविवाह नेमिचंद्र चरित्र नेमिजिन पुराण नीत्य पाठक्रीया निर्वाण कान्ह नेपिचरित्र नेमिदुचकाव्य नेमिदुत्त नेमिनाथ प्रराण नेपिनिर्वाण नेमिनिर्वाण काव्य नेमिजिनधर्म न्यायकुमुद चंद्रोदय न्याय तात्पर्य दीविका न्याय दीविका न्याय निश्चय वार्तिकालंकार न्याय प्रवेशटीका न्याय बोधनि

न्याय मंजुसा न्यायमणिदीपिका न्यायदृत्ति न्यायावतार वृत्ति न्यायार्थ मंजुषिका (न्याय मंजुषा) पण्णवागरण (प्रश्नवाकरणः) पंचकस्याणनी पूजा पंचतंत्रसूत्र पञ्चाध्याय संग्रह सूत्त (प्रव-चनसार) पंचदंड छत्र प्रबंध पंच निग्रंथी पंचपरमेष्टि स्वरुप निरुपण पंच ममाण पंचमतिक्रमण सुत्र **पंचमार्गोत्पत्ति** पंच वस्तुक पंचसती प्रबोध संबंध पंचसूत्र पंचाख्यान पंचाख्यानक पंचाख्यानोद्धार पंचाशद गाथा पंचास्तिकाय समयसार

पंजिका पट्टाविक वाचना पट्टावलीसारोद्धार पहिकमण पञ्चवणाभगवती (मज्ञापन भग-वती) पद्मचरित्र (पद्मपुराण पद्मनाभ काव्य पद्म चरित्र पद्म पुराण पद्मावति चरित्र पम्प भारत पम्प रामायण परमात्म प्रकाश परमीत विचारामृत संग्रह परमोरी परिशिष्ट पर्वेन् परीक्षामुख लघुरुचि परीक्षा मुख सूत्र परीक्षा मुखालंकार पयेुषणकल्पदशश्चतस्कंघ (श्री पर्येषण शतक पश्चिषणाष्ट्रान्हिका पवयण सार (पवचनसार) पाइअलच्छी पाक्षिक सूत्र

पाणीनी शब्दावतार पान्टव चरित्र पान्डव पुराण पात्रीश बोछनो थोकडो पालण संधी पार्श्वजिन स्तवन पार्श्वनाथ काव्य पार्वनाथ चरित्र पार्श्वनाथ स्तव पार्श्वनाथ स्तोत्र पार्श्वनाथ स्वामि पुराण पार्श्व स्तव पाश्वाभ्युदय पिंगलन्देइ पिण्ड निर्भृक्ति पिण्ड विश्रद्धि पिशाचकाल चक्रायुद्ध वर्णन प्रण्डरीक स्तवन पुण्यचंद्रोद्य पुराण पुद्गलषदित्रिशिका पुरुषार्थ सिध्युपाय पूष्प दंत प्रराण पूष्पांजली पूजा जापमाला पूजा आदि पुजा मकरण

पूजा प्रकाश पुज्यपाद चरित्र पूर्व कर्पा-अपर कर्पी पृथ्वीचंद्र गुणसार गीता पुजवी चंद्र चरित्र पकाशिका प्रक्रीय कौम्रुदि **मक्रीयावतार** मकीया संग्रह प्रज्ञापना सूत्र मज्ञापना प्रदेश व्याख्या मज्ञापना भघवती ं प्रज्ञापना सूत्र प्रतापसिंह रास प्रतिक्रमण विधि **मौतक्रमणसूत्र** मतिष्टा विधि मत्येकबुध चरित्र **प्रत्याख्यान** मद्युमन चरित्र प्रबन्ध कोश प्रबन्ध चिन्तामणि प्रभंजन चरित्र मभात व्याख्या पद्धति मभावक चरित्र प्रमाण नयनस्वाळोकाळंकार

प्रमाणनिर्णय-प्रमाण रत्न प्रदीप **ममे**यकणिका ममेव कुमार तण्ड (परीक्षामुखा कंकार **भमेयरत्नमा**ळा प्रमेयरत्नमालाच्याख्या (न्यायमणि दीपिका) भवचन परीक्षा (कुपक्ष कौशि-कादित्य **प्रवसनसार** प्रवचनसार प्रकरण प्रवचैन सारोद्धार प्रशमरति प्रश्न न्याकरण सूत्र प्रशावली पश्चोतर रत्नमाळा प्रश्लोत्तरशत प्रश्नोत्तरीकाषष्ट्रिस्तवनावली प्रश्लोत्तरोपासकाचार माकृत प्रबोध त्राकृत मणिदीप ग्राकृतं लक्षण माकृत व्याकरण पाकृतश्**द्ध**पदीपिका

पाकृतशद्धानुशासन**ः** (त्रिविक्रमव्याकर्णवृत्ति) प्राभृतकत्र व्याकरण **प्राभृतसार** बंध स्वामित्व बप्पभट्टीस्रि चरित्र बलीनरेत्द्राख्यानक बार व्रतनी टीप बाछभारत विजाल चरित्र बीबाधा रत्नप्रकाश बुद्धजन मनोरंजनी बृहत् कथाकोश बृहत कन्पसूत्र बृहत स्वयंभ्र स्तोत्र बृहत् शान्ति भक्त परिन्ना भक्तामर स्तोत्र भगवतीं भगवती गीता भगवत्याराधना भयहरस्तोत्र भत्तपरिन्ना (भक्त परिज्ञा) भद्रबाहु चरित्र भयहर स्तोत्र

भरठकहात्रिशिका भरतादिकथा (पंचसति प्रबोध संबोध भरतेश्वरचरित्र भरतेश्वरवै भव भलाइनी चोपाइ भव भावना भव वैराग्यशतक भव्यानंदनोमिव भाष्य मंजरी भावना सुंदरी कथा भीखणजी चरित्र श्वनेश्वरी स्तोत्र (सिद्धसार श्वत स्तोत्र) अवनदीपक-ग्रहभाव प्रकाश भूगळा चौवीशी भुवनभानु केवळीनो रास भूपाछ स्तोत्र भोज चरित्र भोज प्रबंध भ्रमविध्वंसन मंगळकळश-क्रमारनो रास मच्छ प्रबंध मंजरी मकरंद मदन पराजयनाटक

मनोरंजक स्तवनावछी मंत्राधिराज स्तोत्र मल्लीजिन महात्म्य मरलीनाथ चंद्र प्रकाश मस्लीनाथ पुराण मशनवी (Masnavi) महानिषिध (महानिश्चिष्यसूत्र महानिषिय सत्र महा**पूराण** महापुरुष चरित्र महावीर चरित्र महावीर स्तवन महावीर स्तति महावीर स्वामि स्तोत्र महावीर स्वापिना सत्तावीस-भवनं स्तवन महावीर स्वामि चरित्र महावीर स्त्रामिन स्तवन महावीराष्ट्रक स्तोत्र महिम्न स्तोत्र महीपति राजाप्रधान महीपाल चरित्र महीसुर शान्तीश्वर (प्रतिष्टानाटक माघ काव्य टीका माघनंदीश्वर मानतुंग मानवतीनो रास

मार्गणाशतक मलीयागीरीनो रास मिगेयनोम्पि (Migeyanompi) मित्र चतुष्क कथा म्रुक्तिद्वात्रिशिका म्रुक्तिमार्गसोपान म्रिनपतिरास मुनि सुव्रत काव्य म्रुनिसुत्रत स्वामि चरित्र म्रत्र परीक्षा म्रुक्शुद्धि प्रकरण मुहि मृलाचार आचारसूत्र मेघद्त काव्य मैथीछि नाटक मोक्षमार्ग पग्रही मोक्षमार्गे प्रकाश मोक्षमाला मोतीशानां ढालीयां मोहन चरित मोहराज पराज्य यति जितकस्य यात्रधम-श्रावक्रधम यमक स्तुति यशस्तिलक यशोधर चरित्र

यपारंग छक्तरि गेइ Yapparungalakkarigei युकत्यानुशासन युगमधान स्वरूप युष्पंत्राद्धनवस्तवन थोगचितापणी योगद्रष्टि योगपदीपाधिकार=ज्ञानार्णव योगविद योगशास्त्री योगशास्त्रवृत्ति योगसार योगीन्द्रसार रघुटीका ँ रघुविलास रत्नकर न्हक रत्नकरण्डश्वाबकाचार रत्ननाथ चंद्रोदय रत्नपाल चरित्र रत्न सागर रत्न सार रत्नाकर गांगलपढजाति रत्नाकर पंचवीसी रत्नाकरावतारीका रयण आर रयणसार सुत्र वृत्ति

रस रतनाकर रसीफ स्तवनावली राघवपान्डवीय-द्विसंभानकाव्य राजपश्चिय राजवात्तिक राजा प्रदेशीनो रास राजावलिकथा रापचँद्रचरित्रप्रराण=पम्पा रा-मायण रामचरित्र रामायण (रामचरित्र) रायपसेणीय्य (राजमश्लीय) रायमल्लाभ्युदय महाकाच्य रिषद्देव चरिय रुषित दंडक स्तुति छप्र क्षेत्र समास लघुवृत्ति **छघु शान्ति प्र**राण लघुसंग्र**ह**णी छित विस्तरा पंजिका **छिगानु**शान **ळी**ळावती छप्पाकमत कुट्टण **लोकतत्त्रनिर्णय छोकना**ळद्वात्रिशिका छोक प्रकांत्र

लो**क**स्वरुप वजालगा Vajjalagga वज्जालया—वज्जाकगा वरदत्तगुणमंत्ररी कथा बराङतृप चरित्र वर्धमान प्रराण वसदेव हिण्ड वस्त कोष बस्त पाछ चरित्र वस्तु पाल प्रशस्ति वाक्य प्रकाश वाक्यमंजरी वागभद्दाळंकार वासु पुज्य चरित्र विशति विहरमान जिनस्तवन विक्रम चित्र विक्रम प्रबंध विक्रपादित्य चरित्र (सिंहा-सन दात्रिशितकथानक विक्रमार्ज्जन विजय=पम्पा भारत विचार मंजरी विचाररत्न संग्रह विचारश्रेणि विचार षट् त्रिशक (दंडक) विचार सार

विचार सार प्रकरण-मार्गणा विचारामृत संग्रह-परिमित विचारामृत संग्रह विजय क्रमारिय चरित्र विजयचंद्र चरित्र विजय राजेन्द्र जन्म चरित्र विज्ञालराय चरित्र विध्यातस्व रत्नाकर विधि प्रपा विधि मार्ग प्रपा विनोद विछास रास विपाकसूत्र विभ्रमसुत्र विमलनाथ पुराण विवागसूय-विपाकसूत्र विविधवोछ रत्नाकर विविधरत्न प्रकाश विवेक मंजरी विवेक विलास विवेकसार विशमपदादिरोहिणी विशेषावश्यक विषापहार स्तोत्र विसंवादशतक विहार शतक

विहिमग्ग**पवा** वीतराग स्तुति वीर चरित्र निर्वाण कल्याणक स्तव बीर स्तव वीर स्तुति वृत रत्नाकर बृहन्नव्यक्षेत्र समास वैराग्यकल्पळताव्रत फळवर्णन वैराग्य शतक व्यवहार सूत्र व्रत्त कथा कोश व्रतोयाख्यान कथा-व्रत कथा को ज शकुन शास्त्र शक्रस्तव शतक शतक दृत्ति शतपदिका शतपदि शतपदि सारोद्धार श्रुजय महात्म्य शत्रुंजय महातीर्थ महात्म्य शत्रं ज्यादि स्तवन संग्रह श्रृंज्योद्धार शद्विंशति प्रराण

शब्द भूषण शब्दमणि दर्पण शब्दानुशासन शब्दाणिव चंद्रिका शकटायन व्याकरण शान्त सुधारस शान्तिनाथ चरित्र शान्तिनाथ स्तुति शान्ति प्रराण शान्ति स्तव शान्तिश्वर पुराण शान्त्याष्ट्रक स्तीत्र शाली भद्र चरित्र शास्त्रीभद्रशाहनो रास शास्त्रमार शिन्थामणी शिलापदिगारम शोछोञ्ज शीलोपदेश ग्रंथ शीवरात्री कथा शीश्च हितैषिणी श्रीष्य हिता ञील कथा शीलतरंगिणी शीख समुध शीलोपदेशमाळा

शुदादामणी निघंद **ग्र**कामणी शोभनस्तवनावली शोभन स्तुति श्रंगार पंजरी श्रंगार वैराग तरंगिणी शेठ क्यवन्नाशाहनो रास शेष नाममाला शेष संग्रह शेष संग्रह नाममाला शोभन स्तुति-चतुर्विश्वति जिन स्तुति श्राद्ध गुण संग्रह श्राद्धजिन करप श्राद्ध प्रतिक्रमण वृत्ति श्राद्वपतिक्रमण सूत्र श्राद्ध विधि श्राद्ध विधि कौष्ट्रदि श्रावकदीन क्रुस्य श्रावक प्रज्ञाप्त श्रावक त्रत्त श्रावकाचार श्री करूप सिद्धान्त श्री चंद केवलीनो रास श्री चंद्र चरित्र श्री जिनेद्र चरित्र

श्रीपाल गोपाल कथा श्रीपाल चरित्र श्री वीर चरित्र श्री संघपट्ट प्रकरण श्रुत सागरी श्रुत स्कंदनोम्पि श्रुत प्राभृत श्रेणिक पुराण सदृष्टि टोका सदावस्यक सूत्र सुदर्शन विचार सदर्शन दृत्ति सुदर्शन संक्षेप सदर्शन सम्रुचय ,, दोका सष्टि शतक सष्टि शत पकरण सष्टि संवतसरी संवेग रंग शाला संस्कृत जिनेद्रमाला संग्रहणी संधपति चरित्र-धर्माभ्युदय संघथणी-संग्रहणी सज्जन चित्तवछ्रभ सनम क्रमार कथा सतर मेदी पूजा

सता सतीओनी सज्जाय सं-तिकर स्तोत्र संथारग पय-सथार मकरण संथार प्रकीरण संधारा विधि संदेह दोलावली संदेहविशौषधी सप्त जोतिय कथा सप्त टीका सप्त भंगी तरंगिणी सभा श्रंगार समकित सार समक्ति शल्योद्धार समय पाभुत समय भूषण समय सार समय सारना समरादित्य कथा समरादित्य केवलीनो रास अमरादित्य चरित्र समरादित्य संक्षेप समवायोग सूत्र समाधि मरण समाधि मरण भाष्य समाधि शतक समेदशिखरजीविधान संगीत

संगेदिशिखर विभान पूजा संवेगिहितशिक्षा संवोधिपंचाशिका समायक जैन धर्मबोध सम्यकत्व कौग्रुदि सम्यकत्व सम्यकत्व सम्यकत्व सम्यकत्व सहस्रव बोळ सम्यकत्व शिक्षय सम्यकत्व शिक्षय

,, सप्ततिका

, संभव

,, हपस्तव सरस्वती स्तोत्र क्षरोपणी

सर्वदर्शन शिरोमणी सर्वरस सुभाषिताबळी सर्वार्थ सिद्धि सवासी गाथानुं स्तवन सहस्रनाम स्तोत्र

,, ,, मश्र ,, स्मृति साकार दीपिका साडा त्रणसो गायानुं स्तवन साघारण जिन स्तवन साधुवधन समाचारी समाचारी शतक समायार विहि समायिक

,, ,, भाष्य सार संग्रह सारस्वत व्याकरण दीपिका सारस्वतीय घातुपाठ सारोद्वार सिंहासन दात्रिशिका

सिद्ध जयन्ति चरित्र सिद्धहरनोम्पि सिद्धसारस्वत स्तोत्र सिद्धान्त धीमार सिद्धान्तसार सिद्धान्ताला ३ क सिद्धान्तागम स्तव सिद्धि पिय स्तोत्र सिदुरप्रकर-सूक्त प्रकादकी सिधुर मकर सिरिनाइ चरिय सीलरास स्रक संकीर्त्तन स्रव बोधिका स्रगमन्वय सदर्भन चरित्र

ष्ठप्रभात स्तोत्र स्रुवोध स्रुवोधिका सुभासित स्रुभासित कोष

रत्नसंदोह

,, संदोइ
सुमतिप्रकाश
सुर संग्रह
सुल्साचरित्र—सम्यकस्वसंभव
सुसाघ कथा
सुक्त सुक्तावली

ध्क्ति ग्रुक्तावकी-सिधुर

मकरण

सूत्रकृताङ्ग सूयगढाङ्ग स्रुरिमंत्र कल्पसारोद्धार स्रुर्यपञ्जचि (सूर्य प्रज्ञप्ति) सूर्यप्रज्ञप्ति सोळकारणपूजा सोळक्वरन स्तोत्र संग्रह स्यविरावली चरित्र-परिशिष्ट्र पर्वेन्

स्थानाङ्ग सूत्र स्थूळ भद्र चरित्र स्नात्र पंचाशिका स्नात्र पूजा स्याहाद मंजरी

रत्नाकर स्वदष्ट तरगिणी स्वामि कार्त्तिके यात वेक्षा इंसराज वत्सराजनो रास इनुमंत मोक्ष्यगामिकथा हनुम चरित्र इपीर मदमदेन हमीर महाकाव्य हरिचंद राजानो रास हरिबळमाछीनो रास हरिवंश प्रराण हरिवंश हीर विजय चरित्र हीर सौभाग्य हुकमविकास हेमळघ प्रकीया

